कैदी और बुलबुल

[तेरह कहानियाँ]

श्री पहाड़ी

१९५०

प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद

प्रकाशक : प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद २

प्रथम संस्करण : १९५०.
चार रुपया

मुद्रकः मगन कृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस प्रयाग

भूमिका

आज अमरीका के रूढ़िवादी अपनी मार्शल-योजना, अटलांटिक पैक्ट, पैसिफिक पैक्ट आदि योजनाओं के द्वारा युद्ध का आह्वान करके दुनिया की संस्कृति की रक्षा का ढोंग रच रहे हैं। उनकी अन-अमरीकन कमिटी ने वहाँ के प्रगतिशील लेखकों, कलाकारों, फिल्म स्टारों तथा अन्य ईमान्दार बुद्धिजीवियों को देश के लिए खतरनाक गिन कर, वहाँ की नागरिकता से अलग कर दिया है। कमिटी का कहना है, 'ये लोग कम्यूनिस्ट-नीति पर चलते हैं या उसका पोषण करते हैं।' इसके लिए उनको निर्वासित किया गया है। अमरीका में बेकारी बढ़ रही है। लाखों नागरिक उसके शिकार हो गये हैं। वहाँ के सेठों की सरकार ने इससे छुटकारा पाने का एक नया सांस्कृतिक मोर्चा बनाया, जिसका नारा है—विश्वव्यापी युद्ध ही सारी बेकारी और भुखमरी की समस्या हल कर सकता है!

यह कम आश्चर्य की बात नहीं है, कि हमारी संस्कृति की रक्षा का भार बिड़ला तथा अन्य पूँजिपतियों के अखबारों के सिर आ पड़ा है। स्वयं सरकार रजतपसन्द लेखकों को इनाम बाँट रही है। तथाकथित सांस्कृतिक संस्थाएँ भाषा और संस्कृति के नाम पर 'हिन्दी राष्ट्र' की कल्पना कर रही हैं। अमरीका-ब्रिटेन के चंगुल में फँसी हुई पूँजीवादी सरकार तथा बिड़ला-डालमिया आदि थैलीशाह अपने अखबारों में संस्कृति की रक्षा के ऊँचे नारे लगा रहे हैं। जनता के दुश्मन कुत्ते लेखकों को भाड़े के टट्टुओं की भाँति खरीद कर, वे उन से मेहनतकश जनता के आन्दोलनों के खिलाफ विष वमन करवाते हैं। पूँजीपतियों के टुकड़ों पर पलने वाले ये कुत्ते लेखक अपने मालिकों के इशारे पर पूँछ हिलाते हैं। वे अमरीकी-डालर तथा पूर्वी एशिया को गुलाम बनाए रखने वालों के गुणगान करते हैं। जनता के खिलाफ रचे जाने वाले षड्यंत्रों

के गीत गाकर पुराने सड़े-गले सामन्ती-जागीरदारी ढाँचे की रक्षा करना चाहते हैं।

संस्कृति केवल म्यूजियम और विश्वविद्यालयों की धरोहर ही नहीं है। हमें संस्कृति का निरंतर निर्माण करना है। उसके लिए देश की मेहनतकश जनता ने एक नया शान्ति का मोर्चा बनाया है। वे रोजी, रोटी और बेकारी तथा जनता की आजादी के खिलाफ, पूंजीपतियों से संघर्ष कर रहे हैं। वे एक शान्तिपूर्ण समाजवादी राष्ट्र के निर्माण के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं; जहाँ कि मनुष्य-मनुष्य का शोषण नहीं करेगा। वे गाँधी की उस अहिंसा पर विश्वास नहीं करते, जिसमें कि वे कभी नेतृत्व नहीं कर सके। वे लड़ाकू जनता के जागरुक समाजवादी देश रूस और चीन की परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

संसार में जो कुछ सजीव और मूल्यवान है, उसकी सृष्टि उन्हीं लोगों के द्वारा हो रही है; जो साधारण जनता के निकटतम सम्पर्क में हैं। प्रगतिशील लेखक ने प्रण किया है, कि वह मजदूर के नेतृत्व में, जो जनतंत्र और समाजवाद के लिए लड़ रहा है; उसके कंधे से कंधा मिलाकर चलेगा। वह सबल पुरानी संस्कृति की रक्षा करके, उसे आगे की ओर ले जाना चाहता है। भारत की मेहनतकश जनता तो निरंतर संस्कृति का निर्माण कर रही है। प्रगतिशील लेखक संघ उसी जन संस्कृति पर विश्वास करता है। वे लेखक इतिहास की उसी गति पर चल रहे हैं। हम मेहनतकश जनता के दुश्मनों का पर्दाफास करते हैं, तथा साथ ही साथ अपनी आलोचना भी करते हैं, कि हम आगे बढ़ते हुए अपने उन साथियों के साथ चलने में हिचक तो नहीं रहे हैं। यदि हम उनके बढ़ते हुए आन्दोलनों में रुकावट डाल रहे हैं, तो यह एक बहुत बड़ा अपराध है।

आज मानव संस्कृति खतरे में है। अमरीका में एक नया सड़ा गला, निष्क्रय, अर्थलोलुप मदान्ध, स्वार्थपूर्ण राक्षस-समाज का

निर्माण हुआ है। उसका नेता ट्रूमैन हाइड्रोजन बम वाली योजनाओं के दानवी चक्र से दुनिया की जनता को एक नई लड़ाई में झोंकना चाहता है। वे युद्ध इसलिए चाहते हैं, कि उनको विश्वास है सोवियत-रूस के नेतृत्व में साम्यवाद की विजय अवश्यंभावी है। वे नए युद्ध की खून खराबी से इतिहास की उस नई धारा को पलटने का झूठा प्रयास कर रहे हैं।

हमारे देश के प्रतिक्रियावादी लेखक तथा आलोचक, जो कि सेठों के टुकड़खोर हैं, उनका पर्दाफाश होता जा रहा है। वे अपनी बौखलाहट में पागल कुत्तों की भाँति अपने को नोच रहे हैं। आज उनको इतिहास में कुछ भी सजीव और गतिवान नहीं मिलता है। या वे पिछले उस साहित्य को उभारते हैं, जो प्रतिक्रियावादी है। उनके चेहरों पर अमरीकी संस्कृति का नकाब पड़ा हुआ है। वे अमरीकी दलालों के उस जनविरोधी साहित्य के निर्माण के हामी हैं; जो जासूसी तथा कामपूर्ण उपन्यास, नंगी फिल्में तथा युद्ध के साहित्य के प्रचार में लगे हुए हैं। वे मेहनतकश जनता के उन नेताओं पर अविश्वास करते हैं, जो कि आज सोवियत साहित्य में उठे हैं। जिन्होंने अपने देश की मेहनतकश जनता के साथ समाजवादी-समाज के निर्माण में सक्रिय भाग लिया है।

पुस्तक के अंत में 'मतवाला सम्पादक' के नाम मेरा पत्र है। साथी नागार्जुन और मैं राष्ट्रीय सरकार की हवालात में जुलाई, १९४९ में इसलिए बन्द कर दिए गए थे, कि जनता की 'नागरिक स्वतंत्रता' के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई में हमने भाग लिया। साल भर से अधिक होने पर भी अभी तक उस मुकदमे का कोई फैसला नहीं हुआ है।

प्रकाशगृह
३१ ए, बेली रोड, इलाहाबाद

पहाड़ी

पुनः यह कहानी-संग्रह अगस्त १९४९ में प्रेस में दिया गया था, कई अड़चनों के कारण आज सितम्बर '५० में प्रकाशित हो रहा है।

विषय सूची

मेहनतकश जनता के आन्दोलनों में शहीद होने वाले
साथियों को

कैदी और बुलबुल

आधी रात को अविनाश की नींद टूटी। मच्छर बार-बार पिंग-पिंग-पिंग कर रहे थे और खटमलों के बच्चों का हमला पूरे शरीर पर फैल चुका था। उनकी अजीब सी महक से उबकाई आने लगती थी। कमरे की दीवालों पर सालों से पुताई नहीं हुई थी। ऊपर छत के खपरैल कई जगह टूटे हुए थे, वहाँ से टिमटिमाते हुए तारे साफ-साफ दीख पड़ते थे। किसी मनचले कैदी ने अखबार से काट कर एक तसवीर दीवाल से चिपका दी थी। जिसमें कि गायन-प्रतियोगिता में इनाम पाने वाली कुछ लड़कियों का फोटो था। रद्दी छपाई के कारण वह सौन्दर्य की राशि न होकर कुरूप सा लगता था। सामने दीवार पर कोयले से बनाया गया एक बड़ा 'हँसिया-हथौड़ा' साफ-साफ उभरा हुआ था।

दूसरे बैरिक में बन्द कैदी गुसाईं जी की याद तभी उसे हो आई। उनको आठ-नौ साल के कैद की सजा हुई है। उन्होंने किसी व्यक्ति को बेहोश करके, उसके घर से कई हजार का माल चोरी किया था। वे पकड़े न जाते, यदि उनका एक मित्र पुलीस को सूचना न देता। उनका दावा था, कि अन्यथा वे पुलीस और दुनिया की आँखों में सफलतापूर्वक धूल झोंक रहे थे। माल और रुपया भले ही उनसे वसूल नहीं हुआ, पर सजा जरूर मिली थी।

वे अपने घर की ओर अधिक रुचि व्यक्त नहीं करते थे। पूछने पर बताते कि उनकी पत्नी और दो बच्चे हैं। वे जेल के पुस्तकालय से

जासूसी उपन्यास मंगवाकर पढ़ते थे। कताई का काम करते और शान्ति-प्रिय थे। जब एक बैरिक में ऊब जाते, तो दूसरी में तबादला करवा लेते थे। घर और परिवार की ओर भले ही वे उदासीन हों, एक शौक उनको हो गया था। एक बुलबुल उन्होंने पाल ली थी। वह बहुत मरियल सी चिड़िया भले ही हो, फिर भी उनके अकेलेपन की साथी थी और वे अपनी कोठरी में इस बात का अहसास करते थे, कि अकेले प्राणी नहीं हैं। उनकी वह पन्द्रह-बीस हाथ लम्बी और पाँच छै हाथ चौड़ी कोठरी अजीब तरीके से सजाई हुई थी। फाटक के पास एक ओर कोने से लगे वे सोते थे और दूसरी ओर कोने में पानी का घड़ा, पीतल का तसला और कटोरी धरी होती थीं। ऊपर की ओर दूर टट्टी का डिब्बा था। सिरहाने की दीवाल पर अखबारों से काटे गए कई नवविवाहित जोड़ों के चित्र चिपकाए हुए थे। लगता था कि सब से श्रेष्ठ जोड़े पर उनकी आस्था रहती है। वे उसकी पूजा भी करते हैं। वे उसे भक्तिपूर्वक माला से ढकते थे।

अविनाश ने उनसे पूछा था, कि यह सब क्या है?

तो वे हँसकर बोले, "अकेले-अकेले दिल ऊब जाता है, दिल बहलाने के लिए वे और क्या करें?"

वे बार-बार छुपाने की चेष्टा करते, कि घर का अभाव उनको खास सा नहीं सताता है। वे एकान्त प्रिय थे तथा लोगों से बातचीत कम करते। उन जासूसी उपन्यासों से उनके मन को काफी सन्तोष मिलता था। अपने में उनका विश्वास था, कि वे बहुत दृढ़ हैं। वे अधेड़ व्यक्ति थे। भविष्य का प्रश्न न उठाकर फिलहाल वर्त्तमान पर ही अपना भाग्य टिका कर निश्चित रहते थे।

अविनाश उठ बैठा। उसकी कमर दुःख रही थी। बनिआयन बिछा कर वह कंबल के ऊपर सोया था। चटाई के रेशे तो कम्बल छेद कर उसके शरीर पर चुभ रहे थे। उसने पहले तो पानी पिया। उसमें

मिट्टी की बू आ रही थी। फिर सावधानी के साथ फाटक पर बैठा और वहाँ के मोटे-मोटे सीकचों से बाहर देखने लगा। बरसाती बादल बरस कर छँट गए थे। नीले आकाश पर तारे टिमटिमा रहे थे। सामने नीम के पेड़ों के ऊपरी हिस्से दीख पड़ते और निचले भाग को बारिक के घेरे वाली ईंटों की दीवाल ने ढक लिया था।

उसे एक बात पसन्द नहीं है। वह फाटक शाम को ताला लगा कर बन्द कर दिया जाता है। लगता है, कि वे पशुओं की भाँति बाड़े में बन्द हैं। बार-बार मन घुटने लगता है, कि वे बाहर नहीं जा सकते। मानो कि रात में वह उस ऊँची दीवार को फाँद सकते हैं। वे परतंत्र हैं। वैसे दिन को भी वे एक छोटे हाते से बाहर नहीं जा सकते हैं। वे लोग बाहर की बरसाती हरियाली नहीं देख पाते हैं। समाज से ही नहीं, प्रकृति की अपार छटा से भी उनको अलग रखा गया है। वे उगता सूरज नहीं देख सकते हैं और अधिकारियों तथा चंद कैदियों के अलावा साधारण जनता से उनका कोई संपर्क नहीं है।

डिपुटी साहब ने उनसे कहा था, कि उस बैरिक में पण्डित मदन मोहन मालवीय और पण्डित मोतीलाल नेहरू कभी रहे थे। उनके जमाने की यादगार सिमेंट का एक चबूतरा और ऊपर बन्द की गई खिड़कियाँ तथा बैरिकों के बीच के बन्द दरवाजे हैं। तब तीनों बारिकों को एक करके, उसे बँगले का रूप दे दिया गया था। वे कॉंग्रेस के भद्र नेता थे। अँग्रेज सरकार उनको इज्जत के साथ रखती थी, कि उनके साथ ठीक समय पर समझौता कर जनता के आन्दोलनों को बढ़ने से रोक सकें।

एक बहुत पुराने जमादार ने तो बताया, कि वह कुत्ता-बैरिक कभी था। वहाँ की सेलें ऐसी थीं कि उनमें कैदी केवल कुत्ते की भाँति बैठ और लेट सकता था। ब्रतानियाँ की सरकार, जिसके कॉमनवेल्थ के सदस्य होने का गौरव आज नेता करते हैं, वे उपनिवेश में रहने वालों

3417

की यही इज्जत समझते थे। वह दाग देश के माथे पर लगा-का-लगा रह गया है। नेता उसे पोंछने को तैयार नहीं हैं। आज ब्रिटेन उनका दोस्त है। पुराना जमाना तो केवल इतिहास के पन्नों भर में सीमित रह गया; जिसकी अवज्ञा वे करते हैं।

कुछ लड़कों ने बताया था, कि वह आजकल 'छोकरा बैरिक' कहलाती है। वहाँ बच्चे कैदी रखे जाते हैं, जो कि भले ही अपने-अपने अपराधों की मीमांसा न कर सकें, पर उनको कानून ने कैद की सजा दी है। वे सब मिल कर आज भी शाम को गाते हैं

हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिए,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

भगवान पर उनका विश्वास हो चाहे न हो, पर पुरानी-सामाजिक व्यवस्था पर आस्था रखने वाले कवि की वे लाइनें एक साथ गाने में उनको काफी आनन्द आता है।

× × × × वह तो बारी-बारी से अपने सब साथियों की ओर देखने लगा। भूख हड़ताल से सबके चेहरे मुरझा गए हैं। दो कमजोर साथी तो बहुत थके लगते हैं। वे कल दिन भर चुपचाप लेटे रहे। उसका चेहरा देखकर वे सब हँसते हैं। चार-पाँच रोज की उगी दाढ़ी से सच ही वह अजीब सा लगता होगा। कल दिन में साथियों ने तय किया था, कि वे जमानत पर नहीं छूटेंगे। अपने बुनियादी राजनैतिक अधिकारों के लिए लड़ेंगे। सियासी कैदियों के साथ सभ्य व्यवहार होना चाहिए। उन्होंने निश्चय किया था, कि आज वे बन्द नहीं होंगे।

तभी दुबले-पतले ऑफिस के बाबू आ धमके थे। साथ में दो मरियल सिपाही लाए थे। आते ही धौंस से बोले, "एक-एक कर अपनी शिनाख्त कराइए।"

"हम नहीं लिखाएँगे।" एक साथी ताव से बोला।

"ऐ, अपने डिपुटी साहब को भेजना। अभी तक कमरे में डी० डी० टी० नहीं छिड़का गया है। कहता था, कि चादरें भेजेंगे और दे दीं इस गरमी में सड़ी-गली बदबूदार कम्बलें !"

बाबू कुछ अड़ियल से थे। कुछ जोश से बोले, 'देखिए साहब…!"

"भाग जा बे !" एक बोला।

"सी० आई० डी० का कुत्ता !" दूसरे ने आवाज कशी।

"चला जा, जो मरजी आवे करना !!" तीसरा चिल्लाया।

बाबू जी तो सट्टी-पट्टी भूल गए और रजिस्टर बगल के नीचे दबा कर चुपचाप खिसक गए। उनके वे बरकन्दाज भी अदा के साथ पीछे हो लिए।

उनके चले जाने पर सब ठहाका मार कर हँस पड़े थे। तभी गोसाईं महाराज की बुलबुल उड़ कर एक के कन्धे पर बैठ गई। दो लड़के घड़ों पर पानी भर रहे थे। वे चुपचाप भरते रहे। सब को बाबू जी के उस प्रकार भाग जाने पर खुशी थी। वे जितने दुबले-पतले दीखने में लगते, उतने ही तेज तर्रार थे। कैदी उनकी कितनी ही सेवा करें, कोई उनको खुश नहीं कर पाता था।

"यही सत्तर-अस्सी पाता होगा, पर अकड़ देखो।"

"यह वर्ग भेद की बात है—अराजनैतिक !" दूसरे साथी ने कहा। उनको मानो कि उसके इस उपहास से घोर असन्तोष था।

"ये चापलूस लोग मध्यवर्ग की सड़न को व्यक्त करते हैं। एक ओर अफसरों की चापलूसी करते हैं, दूसरी ओर……।"

"यहाँ की समाज व्यवस्था ही ऐसी है ?"

"पर वह तो अँग्रेज ने हुकूमत करने के लिए बनाई थी, पर काँग्रेस भी तो हुकूमत करना सीख रही है। उन सड़े-गले अफसरों के बूते पर ही तो गाँधी जी का 'राम राज्य' चल रहा है।"

(२)

टप, टाप; टप, टाप; टप, टप, टाप !

वार्डरों के भारी जूतों की आवाज तथा आपसी बातचीत के शोर गुल से अविनाश चैतन्य हुआ। चार बज गए थे। पहरा बदला जा रहा था। नए पहरे वाले को कैदी गिना कर बतला दिए गए, कि वे आठ हैं। बैरिक के दोनों फाटकों पर भारी-भारी तथा मोटे-मोटे लोहे के छड़ लगे हुए थे। फाटक से हटकर बाहर की ओर बने हुए आलों पर ताले बन्द थे, कि कहीं कैदी उनको खोल न लें।

उन कैदियों की जिम्मेवारी से बरी होकर पहला वाला वार्डर जैसे कि निश्चित हो गया। अब दूसरे से बोला, "दस बजे आऊँगा। गाँव से एक आदमी आया है। उसको सौदा-पत्ता दे कर विदा करना है।"

जब वह चला गया तो उस वार्डर ने कुछ झुँझलाहट इस पर प्रकट की, कि रोज ही वह इस तरह एक दो घंटे की देरी करता है। इसका नतीजा यह होता है, कि उसे कुल मिला कर तेरह-चौदह घंटे की ड्यूटी करनी पड़ती है। एक कठनाई और है; ये जो नये कैदी आए हैं, वे साहब, डिपुटी-साहब, जेलर और जमादार किसी से नहीं डरते। फर्राटे से अँग्रेजी में न जाने क्या-क्या बोलते हैं। साहब लोग उनकी बातों को सुनकर गुस्सा नहीं होते। वे शाम को बैरिक के भीतर बन्द नहीं होंगे। चटाई, कम्बल, तसले, घड़े आदि सब सामान दिन को कैदियों से बाहर रखवा लेते हैं। शाम को जमादार जब बन्द करने आता है, तो जमादार से कहते हैं, कि उनका सामान भीतर रखवा दे। उस समय तक सब कैदी बन्द हो जाते हैं और जमादार झुँझला कर भी चुपचाप सामान भीतर रखवा देता है। जमादार और कैदियों के लिए भले ही शेर बना रहे, इनके सामने तो भीगी बिल्ली बना रहता है। फिर इस तरह के कैदी तो चार नम्बर में रखे जाते हैं। इन लोगों को 'सी' क्लास में रखा गया तो इन्होंने 'भूख-हड़ताल' कर दी। ये

कहते हैं, कि चार नम्बर में अपने साथियों के साथ रहेंगे। आज चार रोज हो गए हैं।

उस वार्डर की नौकरी अभी दो साल की हुई है। वह दूर गाजीपुर का रहने वाला है। कल उस इन लोगों ने अखबार पढ़ कर बताया था, कि वहाँ पुलीस ने किसानों पर गोलियाँ चलाई हैं। पुलीस कुछ बागी औरतों को पकड़ना चाहती थी, जिन्हें कि गाँव वालों ने छुड़ा लिया था। ये बताते थे, कि खेतिहर मजदूर ने वहाँ जमीन्दारों के खेतों को छीनना शुरू कर दिया है। वहाँ पुलीस गाँधी जी का नाम लेकर जुल्म कर रही है। वहाँ नंगे-भूखों ने इस सरकार से लड़ाई ठानली है। उसकी वे हँसी उड़ाते थे, कि वह तो बेकार यहाँ नौकरी कर रहा है।

शाम को उसने उनका गाना सुना था :—

> 'उठो जागो भूखे बन्दी, अब खींचो लाल तलवार !
> कब तक सहोगे भाई, जालिम का अत्याचार !!
> तुम्हारे रक्त से रंजित-क्रन्दन, अब दश-दिश लाया रंग।

फिर उन लोगों ने नारे लगाए थे :—

> मजदूरों की पार्टी—कम्यूनिस्ट पार्टी।
> किसानों की पार्टी—कम्यूनिस्ट पार्टी।

उसी समय चार नम्बर चक्कर से भी ऐसे ही नारों की गूँज सुनाई पड़ने लगी थी। वह तो यह जानकर अचरज में पड़ गया था, कि वहाँ के नजरबन्द अठारह कैदियों ने भी इनके साथ सहानुभूति रखने के लिए भूख-हड़ताल कर दी है। वे तो उससे कहते हैं, 'दोस्त, कमर तोड़कर मेहनत से नौकरी तो तुम करते हो और मौज उड़ाते हैं; तुम्हारे साहब लोग। देखा नहीं था सुबह को जब सुपरन्टेन्डेन्ट आया तो साथ में मुसाहिबों की फौज थी। वह वार्डर ऐसा रंग-बिरंगा छाता ·· ब को ऊपर से उढ़ाए हुए था कि मानो उनकी बरात निकल रही हो। जमादारों को नहीं देखा, कैदियों को चोर-बाजार से भी चौगुने दामों पर सौदा चोरी

से बेचते हैं, मिट्टी का तेल तक पी जाते हैं ; पर उस समय तो पूरे बराती बने हुए थे। एक तुम हो कि पचास रुपल्ली पाते हो।'

………तभी अविनाश ने पूछा, "दोस्त माचिस होगी।" उसने अब बीड़ी सुलगाई और कई भारी-भारी कश खींच कर, बाहर फेंक दी। मुँह जम गया था। बार-बार प्यास लगती, पर पानी पीकर भी वह नहीं बुझती है। उसे भारी थकान लग रही थी। हृदय तेजी से धुक-धुक करता हुआ, लगता कि बीच में एकाएक बन्द हो गया है। उसके सात साथी चुपचाप लेटे हुए थे। वह अकेला नहीं है। सामने खूँटी पर टँगी हुई नीले रंग की लालटेन मन्दी सी जल रही थी। वह चुपचाप अपनी जगह पर आकर बैठ गया। एक साथी कुनमुनाया और फिर करवट बदल कर सो गया। वे सब भले ही निर्बल हो गए थे, फिर भी उनमें एक केन्द्रित ताकत थी—वे कम्यूनिस्ट थे।

वे १४४ तोड़ने के अपराध में पकड़े गए थे। उन पर आगे मुकदमा चलेगा। अभी तो वे 'हवालाती' कैदी थे। मजिस्ट्रेट ने उनको सियासी कैदी नहीं माना था। अपने अधिकारों के लिए इसीलिए उन लोगों ने भूख-हड़ताल शुरू कर दी थी। बड़ी सुबह नाश्ता का चना आया। वे अधकच्चे-पक्के चने, फिर सड़ी-गली दाल और मोटे चने-बाजरे की मिश्रित रोटी आई थी। उनके मना करने पर वह साँवला पहलवान महाराज हँस पड़ा था। इस भूख-हड़ताल की बात अब जेल के भीतर एक 'नया इतिहास' बनाने जा रही है। हर एक कैदी उनसे हमदर्दी रखता है। वह मसखरा महाराज अदावट के कारण फँसा था। पाँच साल की सजा हुई है। वह बहुत मस्त था और मटक-मटक कर चलता था। यदि गरीब का राज्य होता, हर एक को सही तरह से पनपने का मौका मिलता तो वह किसी भी थियेटर में प्रमुख अभिनेता होता। उसकी लच्छेदार बातों से सब का मुरझाया दिल, खिल उठता है।

लेकिन वह जेल, जहाँ मनुष्य का मूल्य नहीं है; वहाँ तो आज भी वही साम्राज्यशाही परम्परा सड़े-गले रूप में चल रही थी। उसका साथी तो एक बड़ी बाल्टी में दाल लिए था। वह मसखरा पंडित तो रोटियाँ दोनों हाथों में इस प्रेम से थामे हुए था, मानो कि मेम साहिबा अपना प्यारा कुत्ता लिए हो। वह तो सरकश वालों की भाँति मटकता था। सच ही कलयुगी भीम था।

वह तो बोला, "जेलर ने कहा है कि खाना वहीं रख दिया करो।" इससे पहले, कि वह रोटियाँ रखे, एक साथी बोला, "ये पंडित जी, हम बाहर उठा कर फेंक देंगे। जाकर जेलर के सिर पर पटक दो। उसकी भैंस खा लेगी, बेचारा दुबला गया है। सुना कि उसकी भैंस कम दूध देती है। आमदनी कम है, खली कहाँ से खिलाए, बेचारा!"

लेकिन वह अब मटकता हुआ, हँसता बैरिक से बाहर हो गया था। उस महाराज की दरियादिली उसे पसन्द है। वह भला मानुस जीवन-मुक्त सा लगता है। जेल में आकर भी वह बिलकुल नहीं बदला है। यहाँ के वातावरण में रहने का आदी हो गया है।

······अविनाश ने एक बार उस कमरे का फिर निरीक्षण करना शुरू कर दिया। उस कोठरी में आज तक न जाने कितने कैदी रहे होंगे। जेल वाला दरबान रोज शाम को रजिस्टर पर आमद लिखा करता है। जब सब बैरिकें बन्द हो जाती हैं, तो जोर से घंटे बजते हैं; वह डिपुटी जेलर तब जाकर काम से छुट्टी पाता है। बस नीम के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर उसका दरबार लगता है। वह बातों में मिश्री घोलता है, पर कैदियों को साधारण से साधारण अपराध पर खूब दंड देने में प्रवीण है। उसके अपने खास जमादार हैं, जो कि जासूस का काम करते हैं। वह काफी चौकन्ना होकर, सब बातें सुना करता है।

लेकिन वहाँ बात-बात पर झूठ चलती है। मानो कि कोतवाली से चलकर वह रोग यहाँ पहुँचा हो। और ये अफसर चाहे जेलर हो, दरोगा हो, मजिस्ट्रेट हो, या और कोई हो, सब एक ही बात कहते हैं कि वे सरकार के बन्दे हैं। लगता है कि वे अंग्रेजी-शासन की सड़ी-गली लीक पर हुकूमत का पहिया चला रहे हैं। आज उस परम्परा को राष्ट्रीय नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त होने से अब वे स्वयं हुकूमत भी करते हैं। कहेंगे कि नेता उनकी कार्य-कुशलता पर जी रहे हैं।

—वह आकर लेट गया। याद आया, कि उसकी पत्नी चुपचाप अपने नन्हें बच्चे के साथ सो रही होगी। वह जानती है, कि पति किसी भी दिन जेल जा सकते हैं। पहले झुँझलाती थी, कि मौज के दिन तो यों ही बीत गए हैं। तब वह बड़ी-बड़ी रात को पार्टी की बैठकों से लौटता था और पाता कि पत्नी उसकी प्रतीक्षा में जागती है। वह उन दिनों बड़ी भावुक रहती थी, वह उसे हृदय से प्यार करता है। और वह छोटा बच्चा ! पत्नी अपने और बच्चे की छोटी दुनिया में सिकुड़े रहने की बात याद कर सरलता से पूछती थी, 'जेल बहुत दिन रहोगे, तो बुरा लगेगा ही।"

बुरा……! वह फिर-फिर उन कोमल बन्धनों को फैला कर अपने को वहाँ जैसे कि कैद कर रहा हो। वह गुसाईं क्या किसी ऐसे ही अभाव की पूर्ति के लिए उन तसवीरों को नो नहीं टाँगता है। वह उस बुलबुल को पाल कर जीवन में गति लाने का प्रयास भी करता है; पर वह तो उस सबके लिए उसे दया का पात्र नहीं मानता। फिर वह पत्नी और बच्चा ! इस याद को वह मानव के सही और मजबूत बन्धन मानता है, यह संघर्ष से भाग जाने का प्रयास नहीं है। वह उस माँ की स्वस्थता पर इधर दंग रह गया था। वह बच्चा मानो कि उसके जीवन में एक नया प्रवाह और गति लाया है। वह उसकी पत्नी जीवन में कभी उसके आगे रुकावट सी खड़ी नहीं होती है।

वह उसे पहचान करके भी, फिर-फिर उसे समझना चाहता है। वह बच्चा भी तो अनायास सा हँसता रहता था, वह उसे प्यार करता, तो वह टुकुर-टुकुर उसे देखता ही रहता।

वह पत्नी जब सुनेगी, तो शायद उस बच्चे को गोदी में लेकर चुपचाप प्यार करने लगेगी। वह उसे मानो कि समूचा विश्वास सौंप कर, उस सहारे के लिए, लोभ बढ़ा देगी। और फिर·········

वह वार्डर बाहर टहल रहा था। आकाश पर फिर काले-काले बादल छा रहे थे। तेज बरसाती हवा चलने लगी थी। वह तो अब पास की दूसरी बैरिक में चला गया था। मेह की झड़ी लग गई थी। वह फाटक से हट गया। फिर उसने अपने साथियों को देखा। वे साथी लोहे की भाँति मजबूत हैं। वे कई मजदूरों की यूनियनों के नेता हैं, विद्यार्थियों में काम करते हैं, जन-नाट्य-संघ में काम करते हैं। वे अपनी-अपनी यूनियनों में आदर के साथ देखे जाते हैं। उनके पीछे जनता की एक बड़ी शक्ति है। आगे ये जेलें उस जनता की अपार शक्ति के आगे टूट जावेंगी। फिर कई समस्याएँ सुलझ जावेंगी और एक समाजवादी राष्ट्र का निर्माण होगा।

लेकिन वह थक गया था। चुपचाप लेट गया। पास जो साथी पड़ा है, उसकी गहरी-गहरी धीमी साँस की गति सुनाई पड़ रही थी। वह तो शिशु के समान अबोधता से सो रहा है। उसने एक बार सो जाने की चेष्टा की। पत्नी की याद फिर उभर आई। वह बच्चा माँ से अलग हाथ-पाँव फैला कर सो रहा होगा। क न जाने जग गया हो और वह उसे दूध पिला कर सुलाने का प्रयास कर रही हो। सुबह मीठी नींद आती है। पत्नी देर तक सोने की आदी है। यह उसकी आदत है। अपनी इस बात को वह किसी से नहीं छुपाती। पत्रों में भी पहले लिखती थी, कि बच्चा बहुत शरारती है। बड़ी सुबह उठ कर उसे परेशान करता है। उसकी नींद टूट जाती है। वह विवश है।

सुबह की मीठी नींद। बाहर मेंह की झड़ी। वह स्वयं उस मीठी नींद को अपनाना चाहता है। आँखें दुख रही थीं। शरीर चूर-चूर थक गया था। सारे शरीर पर अजीब सी बेचैनी फैल रही थी। वह अब चुप हो रहा। नींद के झोंके आते और फिर वह चौंक सा उठता था। अन्त में नींद आ गई।

(३)

फाटक पर चाबियों की झंकार हुई। अविनाश की अधकच्ची नींद टूट गई। सुबह हो गई थी। जमादार ताला खोल रहा था। पर चाबियों का ठीक ज्ञान न होने के कारण वह कई बार गुच्छों को टटोल रहा था। बार-बार पिछले जमादार को कोस रहा था, कि उसने सब तालियाँ मिला दी हैं। उसके पास सैकड़ों तालियाँ थीं। वह बाहर कैदियों के निकलने की आवाज सुन रहा है। कुछ के शायद बेड़ियाँ भी थीं। उनके हाथों से बाहर एक नया जीवन आ गया है। रात जितनी निराशापूर्ण थी, सुबह उतनी ही आशाप्रद लगी।

फाटक खुल गया। वह जल्दी-जल्दी बाहर आया और उस खुले हुए सिमेंट के चबूतरे पर लेट गया। उस कमरे की ओर उसने दृष्टि फेरी, जहाँ कि रात भर उसका दम घुटता रहा है। बाहर की खुली हवा में वह गहरी-गहरी साँसें लेने लगा, मानो कि रात भर की बेचैनी से अस्वस्थ हुए फेफड़ों को स्वस्थ कर रहा हो। सामने पानी की टंकी बनी थी। उसकी ढीली टोंटी से पानी बह रहा है। आखिर बैरिक के बाहर वाले आले में से बर्रें उड़ रहे हैं। लगता था कि वह बैरिक महीनों से उजड़ रही हो। उसने आकाश की ओर देखा, बादल छितरे से नीले आकाश पर फैले हुए हैं। वे संभवत कालीदास के यक्ष की कल्पना वाले बादल नहीं हैं। ये तो संघर्ष के बादल हैं, जो कि किसान को लड़ने का सबक पढ़ाकर, उसे बलवान बनाते हैं। वे सामन्तवादी कवि, राजा-महाराजा और दरबारियों के विनोद के लिए परदेशी नायक-

नायिका के प्रेम का जाल बिछाते थे। ये मानसूनी बादल तो समस्त देश में फैले किसानों को एक करके खेतों की ओर भेजते हैं। वहाँ वे मेहनत करते हैं और जब जमींदार उनके ऊपर जुल्म करता है, तो सब मिल कर उससे जंग छेड़ देते हैं। पिछले कवियों के प्रति उनकी आस्था नहीं है, वे संघर्ष से भागते थे। ये तो आज जमीनें छीन कर ज्यादा पैदावार बढ़ाने वाले हैं।

वह उन बादलों से अपनी पत्नी को सन्देशा नहीं भेजना चाहता है। उसे वह अबला नहीं मानता। वह जानता है, कि वह संघर्ष करेगी और इस निज़ाम से अपनी सहेलियों के साथ मिल कर लड़ेगी। वह सत्याग्रह पर विश्वास नहीं करती है। वह जानती है कि पूंजीवादी राष्ट्रीय सरकार औरतों पर भी गोली चलाती है। जनता के आन्दोलनों को रोकने के लिए अब उनको केवल फौजी और उनकी टॉमी गनों का भरोसा है। मध्यवर्गीय परिवार की वह पत्नी, जिसे कि समाज के निर्माण करने वालों ने बेड़ियाँ पहिना कर, घर के भीतर बैठा दिया है। वे वहीं हजारों वर्षों से रहती आईं। फिर मजदूर और किसानों की औरतों ने उनको रास्ता दिखलाया और आज वे अपने अधिकारों के लिए लड़ती हैं। पुलीस और फौज का डर उनको नहीं सताता है।

वार्डर फाटक के पास खड़ा था। कभी वह उसे खोल कर बाहर निकलता और फिर भीतर आ जाता। बैरिक के भीतर साथी अभी लेटे हुए थे। वे अस्वस्थ हैं, वे इस पूंजीवादी सरकार के खिलाफ लड़ाई लड़ने में पकड़े गए थे। वे सब शहरी आजादी चाहते थे। पर यह अधिकार आज जरूरी नहीं है। इसीलिए वे कैद कर लिए गए हैं। पर इस कैद के दौरान में भी वे राजनीति पर बातें करते हैं। चीन का आन्दोलन आगे आता; अटलांटिक पैक्ट और अमेरिका के जंगखोरों की दुनिया में फौजी अड्डे बनाने की साजिश पर तर्क होता। भारत की सही आजादी की तसवीर पर वे सोचते थे। और जो जनता

नेताओं से गुस्सा है। उनके बड़े-बड़े वादे तो केवल काँग्रेस वर्किंग कमेटी की फाइलों में प्रस्ताव बन कर रह गए हैं......

तभी वार्डर ने दातून दी। वह चुपचाप नीम की उस दातून को चबाने लगा। उसका कड़ुआपन फीके जमे मुंह में एक सनसनी फैला रहा था। बार-बार कै करने को जी करता। वह उठ बैठा और धीरे-धीरे टहलने लगा। फिर जमादार के शोर-गुल से चौंका। वह जोर से बोल रहा था, "ये सफैया भीतर भी देख लो।"

सफैया! किसी कस्बे के भँगी का छोकरा। आबनूस की भाँति रंग और ठिगना कद! वह बहुत कम बातें करता है, अपने काम के अतिरिक्त मानो कि दुनिया की किसी गपशप से उसे मतलब नहीं। साथियों की बार-बार कोशिशों के बाद भी वह केवल इतना ही बता सका था, कि झूठी साजिश करके पुलीस ने उसे फँसवा दिया है। उनके और सवालों पर वह उनका मुँह ताकता रहता है। अधिक बातें नहीं करता, अपने काम के अतिरिक्त मानो कि इस जेल के जीवन में उसे और किसी से सम्पर्क नहीं बढ़ाना है।

वह सफैया भीतर गया। उसने वहाँ रखे गमलों को देखा। क्षण भर उन साथियों की ओर निगाह फेरी। अब बाहर आकर नाली साफ करने लगा। फिर मैले पानी को बाहर बहा दिया। अपने इस काम की आदत उसे बचपन से है और जेल के भीतर भी उसे वही खान्दानी पेशा सौंपा गया है। वह जल्दी-जल्दी सफाई करके चला गया। सैकड़ों बारिकों का मैला उसे ढोना पड़ता है। इतनी मेहनत सुबह-शाम बाहर करता, तो सौ रुपया माहवारी कमा लेता। जबकि यहाँ उस पर बीस-पच्चीस खर्च होता है। पर जेल तो मनुष्य को तोड़ कर निकम्मा बना देती है। उससे कस कर काम लिया जाता है। पूँजीवादी व्यवस्था उसका शोषण यहाँ भी करती है। सेठों का बनाया हुआ कानून यहाँ भी लागू होता है।

इस सफैया के प्रति सब साथियों को न जाने क्यों मोह हो आया है। उसका आगमन हृदय में हरियाली ले आता है। वह मजदूर का बलवान बेटा है। जेल के भीतर भी संघर्ष करता है। स्वयं उनको बाबू समझ कर उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। सोचता है, कि इनका मैला बाहर भी ढोता था, यहाँ भी वही काम करता है। वह उनसे संभवतः इसीलिए हिल-मिल कर नहीं रहता है। वह तो काम निपटा कर तेजी से बाहर भाग जाता है।

उसके चले जाने पर बड़ी देर तक उसकी चर्चा होती है। एक साहब तो उससे इतने खुश हैं, कि सोचते हैं जनता का राज जब होगा, वे उसे जेलर बना देंगे। आखिर उसे यहाँ का पूरा ज्ञान है। वह पाँच नम्बर के हाते का सफाई करने वाला भँगी है। इतनी तेजी से काम न करे तो जमादार उसे सजा देगा। बाबू लोग या और कैद तो केवल गपशप ही करते हैं। अपनी इस कड़ी मेहनत के बाद वह बाजरे-चने की सड़ी-गली रोटी, चने का नाश्ता और नहाने के लिए रुजी मिट्टी पाता है; जब कि बाबू लोग यहाँ मौज उड़ाते हैं, उसकी सही मजदूरी का उपभोग भी यह सरकार उसे नहीं करने देती है। कारण कि पूँजीपतियों ने अपने वर्ग के दुश्मनों के लिए आज जेलों का उपयोग करना शुरू किया है।

लेकिन अब डॉक्टर आ गया था। वह भीतर उसके साथियों को देखने लगा। बारी-बारी से वह सबको देखकर कुछ लिख रहा था। वह अभी किसी कस्बे से नया-नया आया है, अतएव जेल की वह क्रूरता और हृदयहीनता अभी नहीं अपना पाया। उसकी हमदर्दी से सब खिल उठे। अन्यथा यह जेलें हैं, जिनका अपना अनुशासन है। जहाँ कैदियों पर जुल्म होता है, पर बाहर दुनिया उससे अनभिज्ञ रहती है।

और तभी एकाएक गोसाईं जी का दरवाजा खुला। वे अपना सामान लादे चले जा रहे थे; वह बुलबुल उनके कन्धे पर बैठी थी, उसने पूछा, "कहाँ जा रहे हैं, गुसाँई जी?"

"तबादला हो गया है, तीसरे चक्कर में।"

"अभी पाँच-सात रोज हुए थे।"

गोस्वामी चुप रहा, जमादार के आगे वे क्या बोलते। भूख-हड़ताल से जेल का अनुशासन बिगड़ जाता है, अतएव इस रोग से अन्य कैदियों की रक्षा करनी जरूरी होती है। हुकूमत नहीं चाहती, कि सब कैदी अपने अधिकारों के लिए लड़ें। यह बगावत है। राष्ट्रीय पूँजीवादी सरकार ने जनता की आजादी की सीमाएँ बनाई हैं। वे अभी रोजी और रोटी देने में असमर्थ हैं। शासन करना सीख रहे हैं, जब दस-पन्द्रह साल बाद स्थिति समझ जावेंगे, तो फिर देखा जायगा। आज तो मूली-गाजर खाकर पेट भरना चाहिए।

वह गोस्वामी को देखता रहा। वह बुलबुल उसे मानो कि पहचानती थी। वह बार-बार उड़ती थी; फिर उसके कन्धे पर बैठ जाती। वह उस फाटक से बाहर चला गया था। वार्डर ने फिर बाहर हाते का फाटक बन्द कर दिया। अविनाश उस पास के हाते में पहुँचा, जहाँ से कि गोस्वामी चला गया था। उसकी कोठरी खाली सूनी-सूनी सी लगती थी। उसके मन में तभी बात उठी, कौन जाने कल सफैया भी वहाँ नहीं आवे।

डॉक्टर ने उसकी परीक्षा लेकर कहा कि वह अभी स्वस्थ है। उसके कई साथी तो काफी कमजोर पड़ गए हैं। जब डाक्टर चला गया, तो वह अपने साथियों के पास पहुँचा। कमजोर साथी कह रहे थे, कि वे अस्पताल नहीं जावेंगे। सब यहीं साथ रहेंगे, पर यह जेल का अनुशासन है। जहाँ कि गुंडों को पालकर अधिकारी रखते हैं कि

कैदियों की एकता और नैतिकता तोड़ी जा सके। वे जोर-जबरदस्ती साथियों को ले जाकर उनको दूध पिलावेंगे। लेकिन सब उस मोर्चे से लड़ने के लिए तैयार थे।

बाहर चबूतरे पर धूप आ रही थी, वह कोठरी अभी भी वही मायूसी का वातावरण लिए थी। दीवाल पर वह फोटो और 'हँसिया-हथौड़ा' चमक रहा था। कोई बोला "मानते हैं उस्ताद को, क्या यहीं फोटो टाँगने को मिला था।"

अविनाश ने तभी कहा, "गोस्वामी चला गया।"

"कहाँ!" सब साथी एक स्वर में बोले।

"तो क्या तुम उसे भी 'बागी' बनाने की सोच रहे थे। अधिकारी हवा भी नहीं लगने देंगे कि यहाँ क्या हो रहा है?"

अधिकारी और जेल का शासन! गोस्वामी और उस बुलबुल की याद हरएक को आई······

× × × लेकिन इस सड़े-गले समाज में सफैया गुसाईं और न जाने किस-किस तरह के कैदियों को रचने की क्षमता है! जिसे बदलना ही है।

उस कांटे पर वाली बुलबुल को भी समाज मुक्त करेगा, अन्यथा कैदी की यह कहानी पूरी नहीं होगी।

कुँवर साहब

राय साहब ने भीतर बरामदे में आकर पुकारा, "सुमित्रा की माँ, राजिव कहाँ है ?"

पत्नी को बहू के साथ बातें करते हुए देख, वे चुपचाप उल्टे पाँव बैठक में लौट आए। आरामकुर्सी पर लेट कर हुक्के की नली मुँह से लगा ली। अपने में ही न जाने क्या सोचते रहे। वे कुछ चिन्तित से लगे और उन्होंने एक बार छत की ओर देख कर ठंडी साँस ली।

उधर सास बहू को समझा रही थी, कि भंडार की ताली नौकरों को नहीं देनी चाहिए। भला छोटी कौम का क्या ऐतबार हो सकता है। उनकी सास तो दफ्तर से लाल फीता मँगवा कर, उसमें ताली बाँध, गले में हार की तरह लटकाए हुए रहती थी। उनके मरने के बाद ही कोई और व्यक्ति उस ताली को छू सका था। स्वयं पति को आश्चर्य हुआ था, कि उनकी माँ संचय करने में कितनी निपुण थी। उसके सन्दूक से उनको काफी धन प्राप्त हुआ था।

वे स्वयं भंडार की ताली अपने पास रखती थीं, पर बड़ी-बड़ी बहुओं के आगे कहाँ तक घर सँभालें। लेकिन नया जमाना आ गया है, बहुएँ अपनी शान समझती हैं कि पलंग पर से न उतरें। नौकरों के हाथ में तालियाँ सौंप देती हैं। इसीलिए तो चीजों में बरकत नहीं होती है। इस बात को वे दूसरे-तीसरे दिन दुहराती रहती हैं। नौकरों की बेईमानी, उनकी नमकहरामी, आदि उस कौम की पूरी व्याख्या

वे सुनाती थीं। जमाने पर झुँझलाती हैं कि घोर कलयुग आ गया है। उनके जमाने में तो आठ आना या एक रुपया तनख्वाह पर आसानी से नौकर मिल जाता था। वे सहनशील होते थे, आज तो बीस-तीस से कम तनख्वाह कोई नहीं माँगता है और फिर हर सातवें दिन छुट्टी! इस पर भी सीधे मुँह बात नहीं करते हैं।

बड़ी बहू इस प्रकार के प्रवचन प्रति दिवस सुनने की आदी हो गई है। नौकरों की मक्कारी और नमकहरामी के अध्यायों को समझाने में सास उदार है। उसके पति दुनियादार नहीं हैं, अन्यथा वह भी अपनी जिठानी की भाँति स्वतन्त्र होकर अलग रहती। आज तो उसकी हैसियत सास के दासी के रूप में ही है। घर की व्यवस्था पर उससे कोई सलाह नहीं ली जाती है। सास बड़ी-बूढ़ी है, अतएव वह अधिकार उनका है। कहने को घर में दो-तीन नौकर हैं। सास किसी के हाथ की कच्ची रसोई नहीं खाती है। अतएव चौके में उसे जाना ही पड़ता है। उसके बाद घर की देखभाल, तीन बच्चे! ये सब परेशानियाँ लगी रहती हैं। बाहर से देखने में काफी सुख है, पर वह अपने को कहीं स्वतंत्र नहीं पाती है। पति से कभी यह बात कहती है, तो वे हँसकर उसकी बात का मजाक उड़ा देते हैं, अब इसीलिए वह अलग होने की चर्चा नहीं छेड़ती है।

सास तो अब बैठक के कमरे में पहुँची। राय साहब अखबार पढ़ रहे थे। वह चुपचाप एक ओर खड़ी हो गई। आहट पा उन्होंने मुड़ कर देखा और कुरसी के हाथ पर रखे लिफाफों को उठा कर बोले, "यह तुम्हारे शाहजादे के बिल हैं—तीस होटल, बीस पान-सिगरेट, एक सौ साठ कपड़े वाले के, और यह पैट्रोल का। तुमने लाड़-प्यार से उसे बिगाड़ दिया है। मैं बार-बार कहता था न, कि डाँट-डपट से रखना चाहिए, पर तुम तो सदा उसी का पक्ष लेती रहीं। अब सँभालो

हैं। जात में सैकड़ों लड़कियाँ हैं। नालायक ही रहेगा, तो अपने घर पड़ा रहेगा। किसी का कुछ नहीं बिगाड़ेगा।

पहले तो ये लड़कियों और पति से राजिव का पक्ष लेकर लड़ती थीं। अब आज अधिक नहीं बोलती हैं। हाँ, यदि बहुएँ कुछ कहें तो ताना मारेंगी, कि उन का बाप क्या है? यहाँ दस और की गुजर हो सकती है।

राय साहब फिर भी परेशान हैं। इन लड़कों के लिए क्या-क्या नहीं किया। १६३० में शान्ति सभा बनाई, काँग्रेस के खिलाफ झूठे गवाह लाकर उनको कैद करवाया। अखबार निकाला। अँग्रेजों की पूरी खिदमत की। लेकिन अँग्रेज आदमी की कद्र जानता था। उनको खिताब मिला, जमीन इनाम के तौर पर मिली। सरकारी ठेके मिले। लड़कों को नौकरी मिली। १६४२ में पहले तो उन्होंने सोचा था, कि सच ही अँग्रेज हार रहे हैं, इसीलिए खुले हाथों काँग्रेस की मदद की। पर जब एंग्लो इंडियन कलक्टर ने बँगले पर बुला कर फटकारा, तो उनकी घिग्घी बँध गई। कलक्टर के समझाने पर उन्होंने फिर १६३० के करिश्मे शुरू कर दिए थे। उनको पूरा विश्वास था, कि अब के राय बहादुरी मिलेगी, पर लड़ाई का चंदा जमा करते-करते उनकी कमर टूट गई और उस पर अधिकारी कहते थे, कि कम से कम एक तिहाई वे डकार गए हैं। भले ही कन्ट्रोल की दूकानों से कुछ पूर्ति उनकी हो गई थी। लोगों ने बहुत समझाया, कि लड़कों को फौज में भरती कर दो, पर यह उनको मान्य नहीं हुआ। उनकी वही पुरानी धारणा थी, कि नंगे-भूखे परिवारों के लड़के फौज में भरती होते हैं।

जब सच ही काँग्रेस का राज्य आया तो वे नजदीक के रिश्तेदार के पास गए और अपना सारा दुःखड़ा रोया। वे सज्जन कई बार सत्याग्रह करके जेल हो आए थे। राय साहब ने अपनी टोपी उनके चरणों पर रख दी। बताया कि नालायक लड़कों के कारण उनको यह

स्वब करना पड़ा था, अन्यथा हृदय से तो वे गाँधी जी के भक्त हैं। उनको अवतार मानते हैं। छोटे-छोटे घरों के लड़के पलटन में बड़े-बड़े ओहदे पा गए, पर उन्होंने अपने लड़कों को नहीं भेजा। और अगले दिन अखबारों में छपा कि इन्होंने अपना खिताब वापिस कर दिया है। कलक्टर के मार्फत सरकार को चिट्ठी भेजी थी, कि अब देश-सेवा का व्रत ले लिया है। जिला काँग्रेस कमेटी ने उनकी सराहना में प्रस्ताव पास किया और उनकी कार्यवाही का यह समाचार शहर के हरएक घर में आलोचना का विषय कुछ दिनों तक बना रहा। पत्नी को जब यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ, तो उन्होंने उसे समझाया कि यह युग धर्म है। बिना सही नीति के कलयुग में आसानी से गुजर नहीं हो सकती है। छोटी बहू ने इसका मजाक उड़ाया था। सास को बताया कि वह तो अवसरवादिता लगती है। इस पर सास बहुत नाखुश हुई थी और बहू से कई दिनों तक बातचीत नहीं की।

राजिव और उसकी भाभी में इस विषय पर काफी बातचीत हुई, दोनों ने इसे खास महत्व नहीं दिया। राय साहबी भले ही छूट गई थी, पर मोहल्ले के लोगों ने वही खिताब कहना जारी रक्खा। पहले वे कलक्टर तथा सिटी मैजिस्ट्रेट के यहाँ जाया करते थे, अब नेताओं के यहाँ जाना शुरू कर दिया। कुछ धर्म की ओर अनायास श्रद्धा बढ़ गई थी और एक सफल कीर्तन भी कराने में वे सफल हुए थे। पत्नी के आगे एक कठिनाई जरूर आई, पहले अचकन और पायजामों की ओर नौकर ध्यान देते थे, पर खादी के कपड़ों की ओर उसे भी देखना पड़ता है। वे मैले जल्दी हो जाते, तथा कब किस जगह पर उनकी सिलाई उधड़ जावेगी, कोई नहीं जानता था। पत्नी को भी वे खादी की धोतियाँ लाए थे, पर पत्नी उतनी भारी धोतियाँ पहनने को तैयार नहीं हुई। इस सब से कठिन बात तो यह थी, कि वे घर पर एक चर्खा ले आए और नित्य परिवार वालों को उस पर कातने के लिए व्याख्यान देने

लगे। पहले तो बहुएँ भी उस अनुष्ठान में सम्मिलित होती थीं, फिर उन्होंने बीमार बनने का बहाना बनाया और अंत में उससे दूर रहने लगीं।

अब राय साहब बड़ी सुबह उठ कर "रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम" गाते थे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि पत्नी भी गाँधी जी के फोटो की उस पूजा में उनके साथ शामिल हुआ करे। इस भजन का उच्चारण करते हुए, उनका हृदय गद्गद् हो उठता था। तिरंगा झंडा उनके मकान पर फहराता और एडवर्ड तथा क्वीन विक्टोरिया के फोटो कबाड़खाने की धूल चाट रहे थे। कभी-कभी नेता जी सुभाष बाबू के त्याग पर भी वे सोचते, पर बङ्गाली लोगों के प्रति उनकी खास आस्था नहीं थी। उनका ख्याल था कि वे बहुत प्रान्तीयता की बातें सोचते हैं और नौकरियों के मामले में अपने आदमियों को भिड़ाते हैं। अन्यथा उनका लड़का कभी का पक्का तहसीलदार हो गया होता। चुनाव कमेटी में एक बङ्गाली हैं वे अपनी कौम की बहुत तरफदारी करते हैं। इस पर भी नेता जी का फोटो उन्होंने अपनी बैठक में टँगवाया था। कारण कि नेता जी की मौत और उनके जिन्दे रहने के किस्से काफी चल रहे थे। वे स्वयं उस गुत्थी को नहीं सुलझा पाते थे।

काँग्रेसी नेताओं से वे काफी चौकन्ने होकर चलते थे और बिना ठीक लिखा-पढ़ी के किसी के साथ कारोबार नहीं करते थे। मन में वे जानते थे कि लुच्चे हैं, कभी भी मुकर जावेंगे। इसीलिए वे सूझ-बूझ के साथ कदम उठाया करते थे। काँग्रेस के राज्य संचालन पर उनको काफी शक थे, लेकिन इस बात की चर्चा वे पत्नी से भूले भी नहीं करते थे।

(२)

राजिव चुपचाप पिछवाड़े के दरवाजे से भीतर भाभी के कमरे में पहुँचा। भाभी से उसने इतना मालूम कर लिया कि आज घर में काफी हलचल है। यह तो हर महीने ही होता है और अपनी इज्जत का ख्याल करके बाबू जी चुपचाप चेक काट दिया करते हैं। वे उससे कुछ नहीं कहते। माँ जब गुस्सा होती है, तो वह उसे अपनी भावी योजनाएँ बताना शुरू कर देता है, कि वह बम्बई जाने की सोच रहा है। पढ़ने-लिखने पर उसका खास मन नहीं लगता है। बम्बई में वह फोटोग्राफी सीखेगा, या फिर और कोई पढ़ाई करेगा। वह झूठ ही कह देता, कि यही पाँच-सात रोज बाद चला जायगा। माँ से विनती करता था, कि वह पिता जी से स्वीकृति ले ले। इसके बाद माँ अधिक बात-चीत न करके समझाती थी, कि माहवारी कुछ रुपया वह उससे ले लिया करे, पर इस तरह बिलों के आने से उसके पिता जी बहुत नाखुश होते हैं। वह स्वयं परेशान हो उठती है। लाड़ से कहती है, कि वह कहीं बाहर जाकर क्या करेगा? जब उसकी बहू आ जायगी त उसी के साथ अलग रहेगी। तीन-चार दिनों तक इसकी चर्चा रहती है, पर फिर सब शान्त हो जाता है।

उसके भाई साहब को इस सब मे कोई मतलब नहीं है। वे 'कोर्ट साहब' हैं। पुलीस वालों के साथ अधिकतर रहते हैं। दिन भर अदालत में कोतवाली तथा और शहर के थानों के सरकारी मुकदमों की पैरवी करते हैं। उन मुकदमों में पुलीस के झूठे गवाह अक्सर टूट जाते हैं। वे इस पर भी कानून की हाँकते हैं। मजिस्ट्रेट जान कर भी कि पुलीस सदा मुकदमे बना कर लाती है, कानून से पुलीस की रक्षा करता है। पुलीस वैसे ही क्या कम बदनाम है! लेकिन सेसन-जज कुछ स्वतंत्र विचार का है, अधिकतर मुकदमे छूट जाते हैं। कोर्ट साहब का इससे क्या? अपनी अदालत में तो वे अस्सी-नब्बे प्रतिशत मुकदमे जिलवा देते हैं। पुलीस

वालों से वह काफी दून की लेते हैं। जो दीवान जी गद्दी पर बैठ कर चार-आसमान की बातें करते हैं, उनके सामने उनकी घिग्घी बँध जाती है। साथ ही मुलजिमों के परिवार के लोग भी उनको घेरे रहते हैं, भेंट स्वरूप चीजें भी पहुँचा देते हैं। अब तो काँग्रेसी राज्य है, अतएव उनकी इज्जत और बढ़ गई है। वे अपने को एक स्वतंत्र देश का मुलाजिम समझते हैं। एक बात से उनको बड़ी खुशी है, कि उर्दू का बोरिया-बिस्तर बँध गया है। उस लूली भाषा को सीखने में उनका काफी वक्त खराब हुआ था। इस पर भी वह ठीक तरह नहीं आई थी। आज अब उनकी तरक्की का काफी मौका था। पिता की हैसियत के साथ अब उनकी भी एक हैसियत बन गई है।

पत्नी बार-बार अलग रहने के लिए अनुरोध करती है। उसकी एक शिकायत और थी, कि वे अब पीना तेजी से सीख रहे हैं। वह कुछ ऐसा भय भी व्यक्त करती थी, कि उनमें कई और ऐब आ गए हैं। वे उसकी हँसी उड़ाते हुए कहते हैं, कि अब तो काँग्रेसी मिनिस्टर भी पीते हैं और काफी मौज उड़ाते हैं। अँग्रेजों ने तो स्वयं मौज किया पर हिन्दुस्तानी को उससे अलग रखा था। अब गाँधी जी की तपस्या के बाद आजादी मिली है, तो सब चैन की बन्सी बजाते हैं। वे उसे समझाते थे कि 'एन्टी करप्शन' वाले उन पर मुकदमा चलाने की सोच रहे थे, पर वे बच गए हैं। स्थानीय नेताओं के भ्रष्टाचार की बातें सुनाते थे। कहते थे कि आज तो रिश्वत लेना कोई पाप नहीं रह गया है। हरएक अपना-अपना उल्लू सीधा कर रहा है। पत्नी कई बार अपनी मटर माला बनवाने की बात कर चुकी है, उसी पर बताया था कि एक सुनार का छोकरा अब के फँसा है। अतएव हफ्ते डेढ़ हफ्ते में माला आ जायगी। पत्नी का मायका गरीब था। पिता एक दफ्तर में बाबू थे। वे तीन बहिनें और दो भाई हैं। वहाँ उसे घर का सारा काम करना पड़ता

था। माँ सदा बीमार रहती थी, यहाँ आकर पहले तो उसने गृहस्थी के काम में कुछ उत्साह दिखलाया, पर जब देखा कि जिठानी अपने कमरे से बाहर कम निकलती है, तथा अपने ही मिजाज में रहती है, तो वह भी घर के काम से दूर रहने लगी। जिठानी का पति तहसील-दार था, वह तो यहाँ से निकल भागी; पर वह क्या करती? आमदनी काफी है, पर उसे खर्च करने की स्वतन्त्रता नहीं है। बल्कि घर तो जेलखाना सा है, फिर यहाँ से निकल भागना आसान काम नहीं। अपने शहर की नौकरी में कई खामियाँ होती हैं। वे चाहें तबादला करवा सकते हैं, पर कहना नहीं मानेंगे।

पति एकाएक काँग्रेस वालों की बुराइयाँ भी अब यदा-कदा करते थे। उनका ख्याल था, कि आगे अब सोसलिस्ट लोग ताक़त में आवेंगे। कभी-कभी वे सोसिलिस्टों का साहित्य भी घर पर लाकर पढ़ते हैं और पत्नी को जयप्रकाश नारायन की सन् १९४२ की बहादुरी की कहानियाँ सुनाते हैं। पत्नी मुड़ कर सन् १९४२ की ओर देखती तो याद आता, कि कई गाँवों के लोगों को फौजों ने दबाया था; घर जला डाले थे; हजारों आदमियों को गोलियों से उड़ा दिया था। ऐसा आतंक छाया था, कि मध्यवर्ग तो हिल उठा था। शहरों में भले ही आन्दो-लन कुछ दिनों में दब गया, पर गाँवों में तो महीनों तक किसान उस आजादी के लिए तेजी से लड़ता रहा। कई शहर, थाने और तहसीलें किसानों ने अपने अधिकार में ले ली थीं। उस सब की याद भले ही धुँधली पड़ गई हो, पर वह उभर कर एक पीड़ा आज भी पहुँचाती है।

वह आज अखबार पढ़ती है, पुलीस और फौज तो अब औरतों के जलूस पर भी गोलियाँ चलाती हैं; कई औरतें अब तक उन गोलियों से मर चुकी हैं। ससुराल में तो कोई कठनाई नहीं है, पर वह पाँच साल से मायके नहीं जा सकी है। वहाँ के लोगों की हालत भली नहीं है,

परिवार का आर्थिक ढांचा बिल्कुल टूट गया है। उसका छोटा भाई भले ही प्रथम श्रेणी में इन्टर पास हुआ है, पर आगे कालेज पढ़ने नहीं जा सका है। आज तो विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए सौ रुपया माहवारी खर्चा चाहिए। माँ की तबियत तो बहुत खराब रहती है। किसी भी दिन मर सकती है। यह संभव है, कि वह उसे अन्तिम बार शायद ही देख सके। पिछले साल बहिन की शादी में भी उसे नहीं बुलाया गया। कारण कि उसकी शादी अमीर घर में हुई है और उसकी ठीक विदाई करने की सामर्थ्य, उस परिवार में नहीं है। उस पिछली सामन्त-वादी प्रथा पर उसका विद्रोह उमड़ पड़ता है। आज सुना कि आजादी आई पर उनकी बेड़ियाँ तो वैसी की वैसी ही पड़ी हैं। उसका बड़ा भाई बी० ए० में फर्स्ट क्लास में निकला था, पर बड़े आदमी का लड़का न होने के कारण कमिश्नरी में नौकरी कर रहा है। पिता जी पच्चीस साल की नौकरी के बाद अब कहीं एक सौ चालीस रुपया पा रहे हैं। माँ आठ-दस साल से रोगणी है। न जाने उसकी आँतों पर क्या हो गया है। कोई कहता है, कि एक तरह का क्षय का रोग है। बहिन की शादी पर उनका सुना छै सात हजार रुपया खर्च हो गया, फिर भी भैया ने लिखा था कि वे लोग सन्तुष्ट नहीं हैं। बहिन की चिट्ठी आई थी, काफी दुःख भरी थी।

वह समझ नहीं पाती कि यह कैसा समाज है? उसकी और उसकी छोटी बहिन की हैसियत में कितना अन्तर है। इस परिवार की जब अपने पिता के परिवार से तुलना करती है, तो एक बेचैनी मन में उठती है। ससुर अँग्रेज और काँग्रेस दोनों की हुकूमत में मौज करते रहे। उसका बड़ा भाई भी १६४२ में जेल गया था। अच्छे घनार के उसके साथी बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पा चुके हैं। वह बाबू का लड़का है। अतएव उसकी सिफारिश कौन करता! वह छोटे नेता, पार्लियामेन्टरी सिक्रेटरी और मिनिस्टिरों सब से मिला। सब ने उससे

यही कहा कि सरकार किस-किस को नौकरी दे। हजारों विद्यार्थियों ने आन्दोलन में भाग लिया था। सब को उनके मन माफिक नौकरी तो नहीं मिल सकती है। हार कर पिता ने उसे समझा-बुझा अपने दफ्तर में ही नौकरी करने की सलाह दी थी। कमिश्नर साहब भले आदमी थे। पिता की ईमान्दारी की बात सब जानते थे। अन्यथा उसकी अपनी और सामाजिक हैसियत क्या थी।

उसका भाई जब आता है, तो इन कॉंग्रेस वालों को खूब गालियाँ सुना कर कहता है, कि बड़े घरानों के लड़के, सेठों से मिल कर हुकूमत चला रहे हैं। आज भी गरीब वैसा ही कुचला जा रहा है। बहिन को वह बताता था, कि आज गोलियाँ चला कर नेता जनता पर विजय पाना चाहते हैं। वह गाँधी जी को सेठों का गुमाश्ता कहता था। उससे कहता है, कि उसका श्वसुर स्वयं उनके वर्ग का शत्रु है। वह अवाक् सब कुछ सुनती थी। वह हँसता था, कि अच्छा ही हुआ शहर का मध्यवर्ग मर रहा है। वे अपने को न जाने क्यों सुफेद पोश समझते थे। लेकिन खेतिहर किसान और मजदूर किसी की हालत भली नहीं है। चीजों के दाम चौगुने-पँचगुने हो गए हैं। लड़ाई के बाद इस बार जान-बूझ कर सेठों ने दाम नहीं घटाए हैं।

राजिव और उसके भाई की खूब पटती थी। राजिव ने वैसे ही कई बातें रट ली हैं। वह तो यह भी बताता था, कि कहीं उसका भाई कम्यूनिस्ट तो नहीं हो गया है। कम्यूनिस्ट ! जैसे कि वह चौंक उठती थी। ससुर के मुँह से कई बार वह उस शब्द का उच्चारण सुन चुकी है। उनके बीस क्वाटर हैं, जिनकी पुताई और मरम्मत कई साल से नहीं हुई, तो वहाँ के किरायेदारों ने नोटिस देकर, एक महीने का किराया न चुका, मरम्मत आदि करवा ली थी। ससुर उस घटना से उद्विग्न हो उठे और सास को बताया था, कि साले कम्यूनिस्ट मेहनत की कमाई भी अब चैन से नहीं खाने देते हैं।

उसे एक बात अवश्य अखरती थी। पंडित जवाहर लाल नेहरू भी तो यही कहते हैं कि कम्यूनिस्ट गुंडे हैं। वे देश के दुश्मन हैं। आज जब कि वे लोग रचनात्मक कार्यक्रम में लगे हुए हैं, वे हड़तालें करवाते हैं तथा और कई खुराफातें करते हैं। इधर ससुर नेहरू जी की बातों को बात-बात में उगल कर कहते हैं, कि चुनाव के द्वारा वे सरकार को उलटें तो ठीक होगा। वे अब यह बात जरूर महसूस करते हैं, कि एक पार्टी की सरकार गड़बड़ कर सकती है। अतएव सोशिलिस्टों का विरोधी दल असेम्बली में संगठित करना ठीक बात है।

लेकिन उसका भय्या तो नेहरू जी का मजाक उड़ाता हुआ कहता है, कि बड़े घरानों की इज्जत की रक्षा का सवाल उनके आगे है। वे यह कभी नहीं सोच सकते हैं, कि गरीब और भूखे को भी रोजी-रोटी मिलनी चाहिए। वह सब कुछ सुनती थी। जब भैय्या चला जाता तो उन बातों को मन में दुहराती है। इस बात का दुःख उसे अवश्य है कि भैय्या जितने अच्छे हैं, भाभी उतनी ही ओछी है। पर भैय्या तो हंस कर कहते हैं कि वह भगवान का दोष नहीं। समाज इसके लिए कसूरवार है। समाज को बनाने वाले सदा से राजा और अमीर रहे हैं। अपने आराम के लिए उन लोगों ने समाज के कायदे-कानून बनाए हैं।

राजिव ने जब एक दिन सुनाया था, कि कम्यूनिस्ट पकड़े जा रहे हैं, तो वह बहुत चौंकी थी। कहीं उसका भाई तो नहीं पकड़ लिया जायगा। पति से उसने चर्चा की तो उन्होंने अचरज में पूछा कि क्या वह कम्यूनिस्ट है? उनके कहने में ऐसा व्यंग था, कि मानो वह एक पतित दल हो। उनका वह हाल देखकर वह बहुत दुःखी हुई थी कि पिता ने उसे एक गलत परिवार में दे दिया है। यदि ये बच्चे न होते, तो वह उनको छोड़ कर चली जाती। पति तो बोले थे, कि कम्यूनिस्ट चरित्रहीन और आवारा होते हैं।

वह वहाँ से चुपचाप उठ आई थी। पति आजकल खूब ह्विस्की पी कर बड़ी रात को लौटते हैं। तीन-चार रोज हुए, भंगिन की नौजवान लड़की ने उससे कहा था, कि वह काम पर आगे नहीं आ सकेगी। वह मजदूरी करती है; अपनी इज्जत बेचने नहीं आई है।

पति की उस हरकत की बात सुन कर वह बहुत गुस्सा हुई और सास जी को जब वह हाल सुनाया तो उसने उल्टे उसी को डाँटा। सच ही भले घर की औरतों को अपने पति के 'खोटों' का वर्णन नहीं करना चाहिए। अन्यथा अभिजातवर्ग का शासन डोल जायगा। सास ने सारी बात बहुत आसानी से सुनी थी, मानो कि ऐसी घटनाएँ होती ही रहती हैं। उल्टे उस लड़की को धमकाया था, कि वह कितनी बेशर्म है। उसकी माँ तो इस बुढ़ापे में चुप नहीं बैठी है। अब तक चार-पाँच घर बदल चुकी है।

उस अपमान की बात का ज्ञान आज तक उसे नहीं था। पति तो देवता हैं, सोचकर वह अकेले में खिलखिला कर हँसी थी। उसका भाई ठीक ही कहता था, कि ये अमीर इस सारे समाज का संचालन करते हैं। अन्यथा सास ऐसी भौंडी नजीर सामने न रखती।

(३)

राजिव तो इतमीनान से बच्चों को एक नया गाना सिखला रहा था :—

रघुपति राघव राजा राम,
बिड़ला-टाटा एक ही नाम।

लड़के दादा जी के मुँह से इस गीत को कई बार सुन चुके थे। पर इस नए रूप को पाकर उनको कौतूहल हुआ। फिर राजिव आज उनके लिए टॉफी लाया था। अतएव बच्चे उच्च स्वर में गाना गाने लगे।

उनकी माँ कमरे में आई और उस 'कोरस' को सुनकर हँसने लगी। राजिव को बताया कि आज बूढ़ा काफी नाखुश है। भलाई इसी में है कि शरारत न करें। अतएव उसने भाभी को एकदम अपना नया 'प्लान' बताया कि वह एक रुपये पाँच आने के कन्सिशन में एक साथ तीन फिल्म देखकर लौटेगा; खाना किसी रिस्तोरां में खाएगा। भाभी से पाँच रुपए उधार देने की माँग की और विश्वास दिलाया कि वह एक हफ्ते में लौटाल देगा।

और दिनों की बात होती तो शायद वह आनाकानी करती, पर इधर वह पति की हरकतों से बड़ी दु:खी है। इस जेलखाने में चार बातें कोई उससे करता है, तो वही राजिव। उसने सास से पूछा था कि यदि भाई के लड़के को पढ़ने के लिए यहाँ बुला लें, तो उसका जीवन सुधर जायगा। सास ने जवाब दिया, कि क्या बी० ए० पास करके उसको डिपुटी-कलेक्टरी मिल जायगी। यह सुनकर वह चुप रह गई थी। अपने मायके की गरीबी को व्यक्त करने के लिए दु:खी थी। अपने भाई को उसने समझाते हुए लिखा था, कि यहाँ रहने से उसका मान घटेगा और फिर उसे स्वयं यहाँ निम्न आत्मभाव घेरेगा। यहाँ के लोगों की बुराई की थी। वह अपना सारा दु:ख व्यक्त करना चाहती थी। लम्बा पत्र लिखकर जब उसने उसे फिर पढ़ा, तो सोचा कि वह क्या कर रही है। पिताजी पत्र पढ़ेंगे, तो कितने दु:खी नहीं होंगे। वह अपनी इस भावुकता की बात पर चुप हो रही।

राजिव चला गया था। वह न जाने क्या सोच रही थी। एकाएक सास ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। कि वह अपने बच्चों को भी ठीक तरह नहीं संभाल सकती है। लड़के बैठक में घुसे और सब लोगों के सामने अपना गीत गाने लगे। वे बहुत गुस्सा हैं। कहते थे कि बापू के गीत का यह अपमान! वे राजिव को आज पिस्तौल से मार

देंगे। उनकी आत्मा आज स्वर्ग में तड़प रही होगी, कि ऐसी नालायक सन्तान पैदा की है।

सास ने पति की इज्जत की रक्षा के लिए बच्चों की पिटाई की थी। वह पूरा काफिला उस कमरे में अब ऊँचे स्वर में रुदन करता हुआ प्रवेश कर चुका था। सास ने एक-एक चाँटा सब के फिर मारा, तो रोने का वेग और तेज हो गया।

सास चली गई। बच्चे रो रहे थे, पर उसे हँसी आ रही थी। ससुर ने जीवन भर कभी 'पिस्तल' शायद ही चलाई हो, पर आज उसका मौखिक प्रयोग कर, चार भले आदमियों के बीच अपनी इज्जत जरूर बना ली थी। नौकरों ने आकर बताया, कि साहब ने गुस्से में कुँवर साहब के कमरे के बाहर टँगी तख्ती—कुँवर राजिव कुमार, रईस और जमींदार; उखाड़ कर फेंक दी है। ऐलान किया था कि वे आगे इस नास्तिक घर में नहीं रहेंगे। बापू की आत्मा की शान्ति के लिए उन्होंने दो दिन का व्रत लेने का निश्चय किया है।

राजिव की उस शरारत से फिर भी उसका मन खिल उठा। पति जब कोर्ट से आए, तो उसने उनको वह तुकबन्दी सुनाई थी। पर उन्होंने बताया था कि उसका भाई फरार हो गया है। वह कम्यूनिस्ट है। सरकार ने उसे 'गुन्डा एक्ट' के मातहत पकड़ने का वारंट निकाला है। वह यह सुन कर अवाक् रह गई; फिर सँभल कर पति से विनती की, कि यह खबर कृपया घर में किसी को न सुनावें। उस कम्यूनिस्ट विरोधी परिवार में एक ईमानदार भाई की बहिन होना भी मानो कि गुनाह था। उसका भाई सच कहता था, कि ये अमीर हमारे वर्ग के दुश्मन हैं। इनसे हमें लड़ना है।

पति तो कपड़े बदल कर क्लब चले गए। वह चुपचाप बैठी की बैठी रही। मायके पर सोचा, वह सारा गृहस्थ जैसे कि संघर्ष का नया दौर पार करके, एक अंतिम तूफान में फंस गया हो। वह उस परिवार से दूर है, ऐसे वर्ग में है जो कि उनका दुश्मन है।

× × × संध्या ढल चुकी थी; रात हो आई। वह चुपचाप अपने कमरे में बैठी हुई थी, तभी एकाएक सुना, "सुमित्रा की माँ मेरी पिस्तौल लाना। अब मेरा जीना बेकार है। हमारे खानदान की इज्जत मिट्टी में मिल गई है।"

वह हड़बड़ा कर उठी। ससुर तेज होकर बक रहे थे, "ऐसे नालायक बेटे से अपूता रहना ही ठीक होता। क्यों वह रिफ़्यूजियों के जलूस में गया और फिर पुलीस से लड़ाई की। 'गुन्डा एक्ट' में औरों के साथ पकड़ लिया गया है। मैं जमानत नहीं दूँगा।"

उसकी सास कुछ नहीं बोली। बैठक में पड़ोस के लोग, इक्ट्ठा हो गए थे। फिर सुना कि किसी ने जमानत दे दी है। वह अपने मन में चुप रही। घर में एक अजीब वातावरण छाया हुआ था। बच्चे सोए हुए थे। पति रात बारह-एक बजे से पहले कभी नहीं आते हैं।

तभी चुपके राजिव ने कमरे में प्रवेश किया, माथे पर पट्टी बाँधी थी। आकर बोला, "भाभी, शरणार्थियों के कच्चे मकान बरसात में बह गए। वे अपनी परेशानी कहने के लिए जलूस बना कर जा रहे थे, तभी पुलीस ने लाठी चार्ज किया। एक बच्चे को पुलीस वाला पीट रहा था, कि मुझे ताव आगया। बस खूब गुत्थम-गुत्था हुई।"

भाभी तो मुसकराते बोली, "कुँवर साहब, तुम्हारी कुँवर साहब वाली तख्ती भी आज ससुर जी ने उखाड़ कर फेंक दी।"

"अच्छा किया, भाभी! मैं अब यहाँ नहीं रहूँगा।"

"कहाँ जायेगा रे?"

लेकिन राजिव कुछ बोला नहीं, भाभी के पास आकर रोने लगा। उसे आज न जाने क्यों इन पुलीस वालों पर इतना गुस्सा आया। वे तो हैवान होते हैं, और ये अफसर!

उसने भाभी के आगे कसम खाई, कि वह कभी अफसर नहीं बनेगा और एक अच्छे लड़के की तरह पढ़ेगा। वह अपनी पुरानी शान-शौकत को छोड़ कर ईमानदार लोगों की लड़ाई लड़ेगा!

आठ साथी

कोतवाली की हवालात; एक कोने में पेशाबघर, वहीं आवश्यकता पड़ने पर बिना आब-दस्त लिए हाजत भी रफा की जा सकती है, रात को पानी पीने तक को नहीं मिलता है। टट्टी-पेशाब तथा सीलन की बदबू; शरीर पर रेंगते हुए जूं, पिस्सू और खटमल ! अँग्रेजी साम्राज्यवाद की अन्तिम धरोहर, एक बड़ा भारी कम्बल ! जिस पर कि पिछले दस साल में हजारों कैदी विश्राम ले चुके हैं। फिर जब से स्वदेशी सरकार हुई हवलात भी आजादी के साथ रोज भरी रहने लगी हैं। श्रावण की अँधेरी रात, उमेश वाली बरसाती गरमी और भूखा पेट ! सरकार हवालातियों को चार आना फी खुराक खाने को देती है, कारण कि वे इन्सान नहीं हैं। साथियों ने उसे लेना स्वीकार नहीं किया। वे आठ कैदी आपस में बातचीत करते हुए बीच-बीच में ठहाका मार कर हँस पड़ते हैं। वे कम्यूनिस्ट बिरादरी के हैं, जिसकी महान परम्परा है। ये मजदूर-किसान का राज चाहते हैं, जहाँ कि सब को रोजी और रोटी आसानी से मिल जाय; वे मध्यवर्गीय परिवारों के नौजवान थे जो, कि मजदूरों के नेतृत्व में विश्वास करते हैं।

साथी महमूद बीड़ी फूँक रहा था। वह मजदूरों में काम करता है। पिछली रात को पार्टी के कुछ पोस्टर चिपकाने के अपराध में पकड़ा गया। साइकिल पुरानी टूटी थी, टायर-ट्यूब का बुरा हाल था; पँचर हो गई और तीन पुलिस-मैनों ने धर दबोचा। पहले तो वह बहादुरी से लड़ा पर फिर असफल रहा। उसकी पिटाई हुई। हथकड़ी लगा कर दिन में सी०

आई० डी० के दफ्तर ले जाया गया। उसे परेशान किया गया, कि वह अपने छिपे हुए साथियों का नाम-पता बता दे। डिपुटी साहब ने काँग्रेस राज की दुहाई देते कहा कि कम्यूनिस्ट गद्दार हैं; फिर समझाया कि सच ही काँग्रेस में खराबियाँ आ गई हैं, लेकिन अभी तो पहले सोसिलिस्टों का राज आवेगा। क्यों क्या रूस से हथियार आते हैं? एक अधेड़ व्यक्ति हँस कर बोला, "ये कम्यूनिस्ट गूंगे होते हैं। अच्छा दोस्त, अब तो छपे हुए पर्चे बाँटने लगे हो, अपना प्रेस है या कहीं छपा लाते हो; और देखो ये अजीब-अजीब नाम किसके हैं?"

लेकिन सच ही वह उनके लिए गूँगा था। वह जनता का नेता है। मजदूरों ने उसे दिलेरी सिखलाई है, सेठों की पुलीस के फौलादी घूंसे भी उसे नहीं तोड़ सकते हैं। सी० आई० डी०''''''? अनोसी के हवाई अड्डे पर उनको एक बम मिला, पर कोई दुबला-पतला व्यक्ति वहाँ पकड़ कर, वे ऐलान करने में असफल रहे, कि एक कम्यूनिस्ट भी उन्होंने पकड़ लिया है? वह नेहरू का कलकत्ते से पीछा कर रहा था!!

तभी महमूद चिल्लाया, "ओ' दिवान जी?"

उसने फिर हमें एक कार्टून की भाँति तीन पट्टों वाले मुसलमान सज्जन को दिखला कर कहा, "ये ही कल अपना मुगली जोर दिखला रहे थे।"

एक साथी चिल्लाया, "गवाह कहाँ से लाइएगा दीवान जी। सात बजे तो वे चाय पर थे। हमारे पास कई गवाह हैं।"

दीवान जी सटपटाते पास आए, कहा, "क्या आप लोग झूठ भी बोलेंगे।" फिर चुपचाप न जाने क्या सोचने लगे।

कहा महमूद ने, "क्या करे बेचारा, मुसलमान है; इसीलिए मुझे पकड़ कर सोचता है, कि अफसरों की आँखों में चढ़ जायगा। कल ऐसा शेर बन कर बातें कर रहा था, कि मानों सारी सल्तनत इसी की हो।"

महमूद को हवालात में चौबीस घंटे हो गए थे। पिछली रात को उसके साथ इस कोठरी में चार और कैदी थे, जो कि किसी सेठ के यहाँ सेंध लगाते हुये पकड़े गए थे। एक उनमें कुछ कमजोर निकला, पुलीस की सख्ती से टूट गया था। वे चारों खूब शराब पिए हुए थे। उस हरामखोर को तीनों ने मिल कर चेतावनी दी थी, कि तीन-चार साल में छूट कर वे उसका खून जरूर करेंगे। मानों इतने साल के जीवन को जेल में काटना साधारण सी बात हो। और ये अदालतें तथा जेलें समाज की रक्षा का ढोंग रच कर, अपराधियों की संख्या बढ़ाती हैं। गुमराह व्यक्ति आज चोरी के अपराध में पकड़े जा कर, कल डाकू और खूनी बन कर निकलते हैं। वही पुरानी कोतवाली, कचेहरी और जेल हैं; इंगलैण्ड के राजा के स्थान पर गाँधी जी का फोटो लटका दिया गया और यूनियन जैक की जगह पर तिरंगा फहराता है। उपनिवेश के राजाओं की परम्परा स्वदेशी देशभक्तों ने भी अपना ली है।

कवि तभी गदगद स्वर में बोल उठा, "मेरी लाइन सार्थक हो गई।"

कवि की लाइन, जो कभी उसके हृदय से फूट निकली थीं:—

'सच कहने वालों को भइया, पुलीस पकड़ ले जाती है।'

सब उस लाइन को दुहराने लगे, एक गूँज उठी,

'चापलूस ही करते हैं, इन मिनिस्टरों का अभिनन्दन,

देश नहीं है खतरे में, खतरे में हैं नेता गण।'

ताली पीट-पीट कर सब उसे गाते रहे। पहरे वाला चौंका। बाहर दालान पर लेटे हुए सिपाही, उठ कर हवालात के फाटक के सीकचों से झाँकने लगे। वे गीत की लाइनों पर गंभीरता से विचार कर रहे थे। वे किसानों के बेटे हैं, जो कि आँधी-पानी धूप-ठंड आदि में पचास रुपया तनखा पर सोलह-सत्तरह घंटे काम करते हैं। जब कि उनके

अफसर ऊँची तनख्वाह और रिशवत उड़ाते हैं। वे यहाँ दाँव-पेंच सीखते हैं, झूठ बोलने की शिक्षा पाते हैं; अपनी आत्मा को पैसे के लिए बेच कर इन्सान से हैवान बन जाते हैं। पूँजीवादी सरकार की पुलीस! जो कि जनता के आन्दोलनों को कुचलती है; उसी जनता की जिसके कि वे बेटे हैं।

साथी महमूद ने अब बीड़ियाँ बाँटीं; फिर हँस कर बोला, "ये सी० आई० डी० के कुत्ते भी अजीब जानवर होते हैं।"

"कुत्ते!" महेन्द्र ने बात काटी। "अब तो गाँधी जी के चेले भी यही काम करते हैं। खद्दर पहनना आज 'मजाक' बन गया है। नेता लोग तो पुलीस के बल पर अपनी इज्ज़त बचाए हुए हैं।"

"लेकिन यार, तेरे घर वाले भी सोचते होंगे कि उनकी सारी इज्जत किरकिरी हो गई। कहीं ठाठ की नौकरी आज करता होता, बेचारे जमानत देने आए तो तूने दुधकार दिया।"

"जो हमारे वर्ग के दुश्मन हैं, हम से सहानुभूति नहीं रखते; मैं उनकी दया का भूखा नहीं।" महेन्द्र गर्व से बोला।

"हजूर साहब!" एक सिपाही बाहर से किसी रिक्शे वाले को पकड़ कर ले आया। उसका कसूर यहीं था, कि उसने पिछले किसी दिन सिपाही को मुफ्त में सवारी इसलिए नहीं दी थी, कि उसे रिक्शा वक्त पर जमा करना था। जब कि रोजनामचे में लिखा गया, कि उसके पास रोशनी नहीं थी। वह हुज्जत करने लगा। बदमाश दस नम्बरी है। गवाह कोई कल्लू पान वाला था।

दीवान जी बाहर आए; फिर फुस-फुस-फुस! शायद सौदा नहीं पटा। तो कोई जोर से बोला, "रिक्शा छोड़ दो, सुबह इंचार्ज साहब आवेंगे, नौ बजे पेशी होगी।"

"सरकार रात और कल का किराया मालिक ले लेगा।"

"गुलाम मोहम्मद, इसे बाहर निकालो। शाला टें-टें करे, रात भर हवालात में बंद कर दो।"

किसान के दो बेटे—एक सिपाही और दूसरा रिक्शे वाला! एक इस सड़ी गली हुकूमत की रक्षा करने का ढोंग रचता है। दूसरा दिन भर रिक्शे पर सेठ, बाबू तथा और सवारियाँ ढोता है और फिर पुलीस के चंगुल में फँसता है। हुकूमत सुना कि गोरी से काली हो गई है। अब पुलीस अँग्रेज के गुणगान न कर, गाँधी जी की दुहाई देती है। दरोगा साहब 'जय हिन्द' का अभिनन्दन कर नेहरू का मजाक उड़ाते हैं। शहर के काँग्रेसी छुट भैया अब कोतवाली में बैठ कर दरोगा जी से गपशप करते हैं। वे दरोगा जी ताव से कहते हैं, "जनाब, हम तो आपके ताबेदार हैं; जिसकी हुकूमत, उसी के हुक्म की पाबन्दी।"

रात को हवालात बन्द करवाते समय बोले थे, "इसी तरह काँग्रेसी भी बन्द हुए थे, देखिए आज उनका राज्य है। हमें तो नौकरी करनी है। गुप्त फरमान आया है कि कम्यूनिस्टों के साथ सख्ती की जाय। पर आप तो भले घरों के लड़के हैं।"

उस रिक्शे वाले ने फिर एक बार अन्तिम समझौता, दिन भर की मजदूरी के तीन रुपए भेंट चढ़ाने पर करना चाहा। वह सौदा भी मंजूर नहीं हुआ, तो गिड़गिड़ाया और एक झाँपड़ खा कर बाहर बुदबुदाता चला गया।

अब मेंह की झड़ी लग गई थीं। कमरे के भीतर तक छींटे आने लगे। महेन्द्र बोला, "दिमाग में बदबू भर गई है। सिर दर्द कर रहा है।"

"बदबू!" महमूद ध्रुपद में हँस पड़ा। "कल रात तो दोस्तों ने सारा कमरा बम-पुलीस बना दिया था। रात भर दोस्त नशे में झगड़ते रहे और पुलीस को इस बेशर्मी से गालियाँ देते थे कि......! इनका दिल पत्थर का है। अभी न जाने कै दिन पुलीस हवालात में

रखे। सारा मामला उगलवा कर झूठा-सच्चा मुकदमा तो चलाना ही होगा।"

बाहर वे सिपाही सो रहे थे, उनके चेहरे तो ऐसे खौफनाक नहीं लगे, फिर यह हवालात! जहाँ कि खूनी, चोर और राजनैतिक कैदी सब आते हैं। यह कोतवाली जो सारे शहर पर हुकूमत करती है। वे कैदियों की भेद भरी बातें, वह झूठा रोजनामचा!'

लेकिन महमूद ने बताया कि यहाँ कुछ दिन पहले जरूर और साथी भी बन्द रहे हैं। आज दिन भर वह जाँच-पड़ताल करता रहा है। कई जगह उसने हँसिया-हथौड़ा वाला झंडा देखा है। एकाएक कई साथियों के नाम याद आए। एक नई लहर दौड़ी, कवि ने मुक्का उठा कर कहा, "हम उन साथियों का अभिनन्दन करते हैं।"

साथी उमाकान्त की पत्नी घर पर उनकी प्रतीक्षा कर रही होगी। उसे यह ज्ञान नहीं होगा कि मियाँ हवालात की हवा खा रहे हैं। मजिस्ट्रेट बिना किसी मुरौव्वत के कई महीने की सजा दे देता। उमाकान्त बेकार है। पार्टी का पूरा समय काम करने वाला साथी है। बीस-पच्चीस रुपए में पति-पत्नी और बच्चा किसी भाँति पलता है। दोस्त कहते हैं, 'कल तुम्हारा राज आवेगा; परमिट बेचोगे, मौज करोगे। गाँधी जी की अहिंसा के फौज के नेता आज महलों में रहते हैं और माल पुआ उड़ाते हैं। छुट भैया एम० एल० ए० बने, चेयरमैन बने; वालिंटियर, रक्षक-दल में भरती हुए, पँचायती राज में नौकरी पा गए!'

उमाकान्त उनकी हँसी उड़ाता था; पर अब पत्नी और बच्चे का क्या होगा?

तभी महमूद ने फैसला सुनाया, "कानपुर का मजदूर नेता जेल में नजरबन्द है। बीबी, बच्चों को लेकर भीख माँगती है।"

मध्य वर्ग का साथी उमाकान्त, जैसे उलझन में पड़ गया। काँग्रेसी जब जेल जाते थे, तो सेठ उनके परिवारों का प्रबन्ध करते थे। मध्य वर्ग के लिए खास कठिनाई नहीं थी। वे मजदूर-किसान के संघर्ष की नींव पर समझौता करके, आजादी का महल बना रहे थे।

कवि तभी हँस पड़ा। जोर से बोला, "ये मध्य वर्ग के साथी। इसमें घबराने का सवाल नहीं है। यह जनता की लड़ाई है, जिसमें मोह-बन्धन तोड़ने ही पड़ेंगे।"

महेन्द्र ने बताया कि काँग्रेसी हुकूमत हमारा संगठन तोड़ना चाहती है; लखनऊ में स्टूडेंट फेडरेशन की नेता पन्द्रह-सोलह साल की लड़की को तनहाई में बन्द कर रखा है। वे उससे इकरार करवाना चाहते हैं, कि बाहर छूटने पर, वह राजनीति में भाग नहीं लेगी। वह बहादुरी के साथ जनता के दुश्मनों से लड़ रही है।"

जनता के दुश्मनों से लड़ाई? वे आठों साथी उसी लड़ाई के मोरचे पर आगे बढ़ रहे थे। सुराज आया, देश के दो टुकड़े हुए। साम्प्रदायिक झगड़ों की आँधी लाकर पूँजीवादी-राष्ट्रीय-सरकार ने जनता की लड़ाकू शक्ति को नष्ट करने का षड्यंत्र रचा। महँगाई बढ़ी; चोर-बाजार फला-फूला, बेकारी बढ़ी। सेठों ने राष्ट्रीय सरकार की गरदन पकड़ ली। सरकार जनता के आन्दोलनों पर प्रहार करने लगी। जनता में गुस्से का तूफान उठा। मजदूरों ने हड़ताल करके फैक्टरी छीनने का हथियार उठाया; खेतिहर मजदूर ने जमीन पर कब्जा करना शुरू किया और बाबू मास्टरों ने भी बड़ी-बड़ी हड़तालें कीं। सारे देश पर दफा १४४ छा गई। नागरिक अधिकार छीन लिए गए—प्रेस बन्द, बोलने और सभा करने की आजादी नहीं, बिना मुकदमा चलाए, जनता के नेता जेलों में बन्द! मजदूर-किसानों के २५,००० साथी, नेता जेलों में बन्द!! देश में राम राज्य और गांधी जी की जय-जय कार!!!

चार साल से शहर पर १४४ लगी थी। जेलों में राजनैतिक बन्दियों के साथ दुर्व्यवहार हो रहा था। राजबन्दी-दिवस मनाया गया, जलूस निकला, जनता में एक नया-जीवन आया, फिर नारे लगे :—

मजदूरों की पार्टी	—	कम्यूनिस्ट पार्टी
किसानों की पार्टी	—	कम्यूनिस्ट पार्टी
सड़ी-गली सरकार को	—	एक ठोकर और दो
दफा १४४	—	तोड़ दो
राजनैतिक कैदियों पर	—	मुकदमा चलाओ
शहरी आजादी	—	वापिस दो

छोटे-छोटे बच्चे गलियों से निकल कर ऊँचे स्वर में इन नारों को दुहराने लगे। वे ही बच्चे जो कि एक साल पहले साम्प्रदायिक नारे लगाते थे; आज वे नई पीढ़ी का सही भार सँभालने के लिए जलूस के साथ-साथ चल रहे थे। जनता उलझन में थी, कि यह नई आजादी क्या सच आ जायगी। दूकानदार ग्राहकों को महँगा सौदा बेचना छोड़ कर जलूस देख रहे थे। वह दफा १४४, जिसका प्रयोग कि साम्राज्यवादी राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने का हथियार बनाती थी; उसी को लागू करके राष्ट्रीय सरकार अपने आलोचकों का मुँह बन्द करने तुली थी। वह मजदूर, किसान तथा विद्यार्थी आन्दोलनों से घबरा कर लाठी और गोलियों की हुकूमत पर अपना पूरा विश्वास टिकाए थी।

सात साथी अगुआ थे। दफा १४४ टूट चुकी थी। जनता उस नई आजादी को पाकर खुश थी। कोतवाली वाले अपने आकाओं को फोन पर फोन कर रहे थे। १९४२ में जनता पर अत्याचार करने वाले अफसर, आज देशभक्त बन गए थे। वह सेठों की सरकार उनके वर्ग की रक्षा करने का आश्वासन दे चुकी थी।

पुलीस आई थी। साथियों ने उसका मुकाबला किया, लाठियों से सजी पुलीस घुड़ सवार······साथी उमाकान्त उचक कर एक दूकान पर

पर खड़े हुए। उन्होंने बोलना शुरू किया, "आज शहरी आजादी का मिलना हमारा बुनियादी सवाल है। सेठों की सरकार······।"

पुलीस के सिपाहियों ने उनको नीचे घसीट लिया। फिर एक बार नारे गूँज उठे। हजारों की संख्या में जनता खड़ी थी। गाँधी जी की पुलीस लार्ड लिनलिथगो के हथियार से जन अन्दोलनों को कुचल रही थी। उस आजादी की परम्परा को, जिसकी रक्षा के लिए आज तक हजारों मजदूर, किसान, विद्यार्थी बलिदान हो चुके थे।

—काफी रात पड़ चुकी थी। दो बज गए, वे साथी थक कर ऊँघ रहे थे। कभी कोई भीषण गरमी के कारण उठ कर टहलने लगता था। वहीं सीलन, वहीं बदबू······! फिर वह साथी कम्बल पर लेट जाता। बाहर हवालात के सीकचों वाले दरवाजे पर ताला पड़ा हुआ था। वे सीकचे व्यर्थ ही उनको उनकी जनता से दूर रखने का ढोंग रच रहे थे। जब कि जनता में एक नया जोश था। अङ्गरेजों ने साम्प्रदायिक-झगड़ों का बहाना करके दफा १४४ का राज हिन्दुस्तान में रखा और ये कथित जनता के नेता······? वह आई० सी० एस० अफसर, किसी सेठ की दावत से लौट कर मौज में सो रहा होगा।

तभी पलटनी बूटों का खटका हुआ। पहरे की बदली हो रही थी। वह सिपाही एक, दो, तीन, चार······गिनता हुआ, जोर से अन्त में बोला—आठ कैदी हैं—ठीक!

साथियों की नींद टूट गई, महमूद बोला, "अपना राज आवेगा तो पहले इस हवालात को तोड़ डालेंगे······।"

महेन्द्र ने तभी कहा; दरोगा काँग्रेसी मिनस्टर की हँसी उड़ा रहा था, कि तीन साल से फरश लगाने की बात कहते हैं। नेता लोग तो चुनाव के चक्कर में हैं। कभी हुकूमत तो की नहीं है।

चुनाव का चक्कर······!

अब वे सो गए थे। कोठरी में घना अँधियारा था। वह राष्ट्रीय सरकार की हवालात थी। वे कम्यूनिस्ट कैदी थे, जो काँग्रेसी राज के खिलाफ विरोध करने के लिए कैद किए गए हैं!

नींव का पत्थर

मुरलीधर चुपचाप उस पहाड़ी रास्ते को तय कर रहा था। फरवरी का महीना; रास्ते में कहीं-कहीं अभी तक बरफ नहीं गली थी। दोपहर हो आई, पर हवा के तेज सर्द झोंके बार-बार हड्डी-हड्डी के भीतर कँपकँपी फैला रहे थे। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की वह टूटी सी अपाहिज सड़क सूखे पत्तों से ढकी हुई थी। चारों ओर सूना-सूना था और अभी-अभी सामान ढोने वाले खच्चर पीछे की ओर बढ़ गए थे। वह कभी तो तेज चलने लगता था। फिर कोई गीत गुनगुनाता हुआ चेष्टा कर रहा था कि अकेलापन महसूस न करे। लेकिन अपने चलने की प्रतिध्वनि के अतिरिक्त और कुछ सुनाई नहीं पड़ता था। एक बार एक लोमड़ी तेजी से नीचे की ओर भाग गई थी और उसके फिसलने की आवाज की खड़-खड़ कुछ देर तक कानों में पड़ी। वह जंगलात का घना बन्द जंगल था। जिसके बड़े-बड़े मोटे पेड़ों के तनों पर जंगलात वालों ने छील कर नम्बर डाल रखे थे। कभी-कभी कोई चिड़िया अजीब बेमने स्वर में बोलती थी। फिर भी वहाँ प्रकृति का जो सौन्दर्य था, उसे वह निहार रहा था। उसके मन में बार-बार एक बात उठती थी, कि वह बेकार मायूसी महसूस कर रहा है। उसे एक नया जीवन और सौन्दर्य प्रकृति प्रदान कर रही थी।

अब वह एक जगह पर बैठ गया। वहाँ नीचे तक काफी कटाई हो चुकी थी और लगता था, कि बाँज का कोयला कभी बनाया गया

हो। वैसे आजीवन उसने कोयला नहीं जलाया था। वह तो केवल अमीरों का घर गरम करता है। वहाँ पर फैली हुई एक चट्टान पर वह बैठ गया। रात को कस्बे में डाक के हरकारे ने उससे कहा था। कि वह कस्बे से सात बजे चलेगा और उसे पकड़ लेगा। वह बूढ़ा हरकारा बताता था कि तीस साल से वह इसी प्रकार रात-दिन, आँधी-पानी में डाक ढोता है। कई बार जंगली पशुओं से उसकी मुठभेड़ हो चुकी है। उसके पास अपनी रक्षा के लिए केवल एक भाला होता है। जिस पर कि सात-आठ घुँघरू बँधे हुए होते हैं। वह जब उसे टेकता है, तो वह बजकर एक आवाज करती है—छु न न न न !

उसने उसे बताया था कि बघेरे से उसे खास डर नहीं लगता है। पर रीछ काफी होशियार जानवर होता है। वह आदमी पर हमला कर देता है। लेकिन वह तो रीछ से भी नहीं डरता है। ऐसे दिलेर व्यक्ति की बात सुन कर उसका हृदय गर्व से भर आया था। और उसने तो यह भी कहा था, कि वह एक सैनिक की हैसियत से १९१४–१८ के युद्ध में लड़ा था। घायल हो जाने के कारण डिसचार्ज सार्टिफिकेट लेकर उसने यह नौकरी की थी। इस जीवन से उसे सैनिक जीवन पसन्द था, पर मजबूरी में वह क्या करता? उसने उसे अपने सैनिक जीवन के कई किस्से सुनाए थे। अपने परिवार और गरीबी का हाल बताया था। उसे यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ था, कि उन लोगों ने हड़ताल करने का फैसला लिया है। उसको समझाया था। कि वे हड़-ताल तोड़ने वालों के बहकाने में न आवें। फिर अपनी हड़ताल की बात सुनाई थी, कि किस तरह पोस्ट आफिस के बाबू लोगों ने केवल 'भूखे कर्मचारियों' का बिल्ला अपने कपड़ों पर टाँग कर सोचा था कि सरकार डर कर उनके अधिकारों को मान लेगी। वे संघर्ष करने के लिए तैयार नहीं थे। फिर केवल दबाव डालने से तो काम नहीं चल सकता था। इसीलिए वे नेता लोगों की चाल में फंस कर समझौता करने

तुल गए थे। अफसरों ने कहा था कि कुलियों, हलकारों, लाइनमैन आदि का मामला और है, जब कि बाबू लोगों का सवाल दूसरा। इसी तरह फूट डलवा करके उन्होंने हमारा संगठन तोड़ डाला था। बाबू लोग कमजोर निकले तो भी हम पीछे नहीं हटे। पोस्ट मास्टर ने धमकी दी थी, कि वे खुद डाक का थैला कन्धे पर लाद कर ले जावेंगे। जब वह चाल नहीं चली तो दाँव-पेंच डाला कि गाँधी जी के नाम पर, यह न किया जाय और अंत में पुलीस में पकड़वा देने की धमकी दी थी। हमारा संगठन मजबूत नहीं था, फिर भी हम लड़े और कुछ अधिकार पाकर ही रहे। यही नहीं बाबू लोगों को भी कुछ दिला दिया।

उसने तो आश्चर्य प्रकट किया था। कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मास्टरों ने आज तक अपने अधिकारों की लड़ाई क्यों नहीं लड़ी। फिर बताया था कि सब गरीबों की लड़ाई एक सी होती है। वह अपने हकों की लड़ाई है। अपनी पूरी सहानुभूति उनको दी थी। यह भी कहा था, कि वक्त पड़ने पर हलकारे और छोटे कर्मचारी उनका पूरा-पूरा साथ देंगे। फिर आगाह किया था कि स्कूल के हेडमास्टरों पर वे अधिक विश्वास न रखें। वे उनके जमादारों की तरह हो दुतरफा वाली बातें करते हैं, फिर गाँव के उन सब-पोस्ट मास्टरों की बात कही थी, जो कि एक दूकान भी रखता है और गाँव के मुकदमों में दिलचस्पी लेता है। सूद पर रुपया देता है। अफसरों की आवभगत करता है। हेड मास्टर साहब भी उसी के पक्ष के होते हैं।

मास्टर मुरलीधर बीस साल से प्रायमरी स्कूल में पढ़ाते हैं। हर साल वही पढ़ाते, भले ही किताबें बदल जाती हैं। वही पाँच-सात महीने के बाद तनख्वाह का मिलना, सब-डिपुटी साहब का दौरा, स्कूल खुलने पर हेड मास्टर का बनियों के साथ मिल कर किताबों के मुनाफे का एक हिस्सा डकार जाना। इम्तहान के नतीजे के बाद गुरु दक्षिणा लेकर

सार्टिफिकेट देना। वे बीस साल में अपने गाँव के आस-पास की स्कूलों में हो रहे हैं। आज तक हजारों विद्यार्थियों को उन्होंने अपर प्रायमरी पास कराया है। कुछ बड़े-बड़े ओहदों पर हैं, पर अधिकतर या तो खेती करते हैं, या फिर सिपाही बन कर फौजों में चले गए हैं। उनके कई शागिर्द उनके लिए छोटी-मोटी चीजें भेंट-स्वरूप आज भी लाते हैं, तो उनका हृदय फूल उठता है। वे अपने को छोटा स्कूल मास्टर न समझ कर जनता का एक सेवक मानने में नहीं चूकते। वे सभी लोगों को समझाते हैं कि भले ही खुशहाल हों, पर उनको गर्व है कि उनका पेशा जनहित वाला है। अपने अच्छे विद्यार्थियों के नाम उनको याद हैं। कई कलक्टरी में नौकर हैं। सैकड़ों बाहर मैदान में छोटी-मोटी नौकरी करते हैं। उनको दुःख है कि उनके अधिकतर शागिर्द गाँव के जीवन से ऊब कर मैदान में भाग जाते हैं और वहाँ साधारण घरेलू नौकरी करते हैं। परिवार के बूढ़े उस प्रकार लड़कों के भाग जाने पर खास अफसोस नहीं मनाते हैं। वे स्वयं उनका आर्थिक भार लेने के लिए असमर्थ पाते हैं। यदि कोई लड़का नौकरी से रुपया भेज देता है तो वे लगान चुकाते हैं, या साहूकार का कर्जा पाटते हैं। स्वयं मास्टर भी एक बार देश भाग गया था; पर फिर लौट आया और किसी तरह पढ़ कर मिडिल पास किया, ट्रेनिंग और तेरह रुपए माहवारी तनखा पर मास्टरी मिल गई। फिर तब से हजारों पाटियाँ और स्लेटें देखीं; लड़कों को पढ़ाया और रोज वही काम करते-करते थका नहीं।

उसे नटखट और शैतान लड़कों के नाम भी याद थे। जब उसने शुरू-शुरू में नौकरी की थी तो वह जरा-जरा बात पर काफी सजा देता था। उसका ख्याल था कि डंडे के बिना, वे नहीं सुधर सकते हैं। लड़के उससे काफी घबराते थे। कोई उससे ठीक बात तक नहीं करता था। किन्तु एक नटखट लड़के ने स्कूल में प्रवेश किया था, उसने बोर्ड पर मास्टर साहब की तसवीर बनाना, कुकड़ू कू लिखना और न जाने

क्या-क्या शरारतें शुरू नहीं की थीं। वह एक पेन्शनयाफ्ता फौजी का लाड़ला बेटा था। उसने उसे पहले तो पीटा, पर वह मार खाकर भी बेशर्मी से हँसता रहता था। उसे वह किसी तरह वश में नहीं ला सका था। उसके पास एक छर्रेवाली बन्दूक थी और वह स्कूल के लड़कों को साथ लेकर चिड़ियों की शिकार के लिए चला जाता था। सारे स्कूल के लड़कों का नेतृत्व उसने शुरू कर दिया था। वे लड़के उसे सुबेदार कह कर पुकारते थे। उस दस-ग्यारह साल के बच्चे ने स्कूल का अनुशासन खराब कर दिया था। उसने हेड मास्टर से शिकायत की तो वे चुपचाप बोले थे, कि वे उसके परिवार वालों से झगड़ा नहीं बढ़ाना चाहते हैं। सबसे आश्चर्य तो उनको तब हुआ था। कि एक दिन उसका पिता स्कूल आया और उनसे निवेदन किया था कि क्या वे कुछ समय उसे घर पर नहीं पढ़ा सकेंगे। उनके अस्वीकार करने पर कहा था। कि उस लड़के का भविष्य उनके हाथ में है। काफी कहने-सुनने के बाद उनको राजी किया था।

फिर उन्होंने उस लड़के को पढ़ाना शुरू किया। पर पढ़ाई से अधिक उसकी शैतानियों के नए-नए सबक लेकर वह लौटते थे। काफी परेशान होकर उसके पिता से एक रोज अनुरोध किया, कि उनको अवकाश दे दिया जाय। तो बस पिता ने लड़के को बुला कर इतना पीटा था, कि उनको विश्वास हो गया कि अब वह बचेगा नहीं। कई रोज तक वह स्कूल नहीं आया; और जिस दिन आया तो पाँच-सात साथियों को लेकर आया, कि वे लोग दिन की छुट्टी चाहते हैं। पास की छोटी नदी के किनारे मछली मारने जावेंगे। वे अस्वीकार नहीं कर सके थे। आगे उन्होंने उस लड़के की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वे उस ओर उदासीन रहने लगे। वे उसे पढ़ाने घर पर जाते, उसकी शरारतों की परवा न करके, चुपचाप पढ़ा कर लौट आते थे। फिर स्कूल में भी उसे कोई सजा उन्होंने नहीं दी थी। अब वे किसी लड़के को नहीं

पीटते थे तथा जो अच्छे लड़के होते उनको कुछ न कुछ उपहार दिला दिया करते।

लेकिन बात यहीं पर नहीं निपटी। एक दिन जब कि डिपुटी इन्स-पेक्टर मुआयना करने आया तो उस लड़के ने एक गधे की शक्ल मेज पर बना कर लिख दिया—डिप्टी साहब! साहब ने उसे देखा और रिपोर्ट लिखी कि अनुशासन खराब है। उनका तबादला दूसरी स्कूल में कर दिया गया। इस मुक्ति से उनको बहुत प्रसन्नता हुई। दूसरे ही दिन बड़ी सुबह एक कुली के सिर पर सब सामान लाद कर वे उस गाँव से चले गए थे। उस छुटकारे पर उनको बड़ी सान्त्वना मिली थी। वे सच ही उस स्कूल से ऊब उठे थे। पिछले सात महीने भर वे काफी चिन्तित रहे थे।

फिर वह लड़का एक दिन उनसे मिलने के लिए आया था। गुरु-जी के पाँव पर माथा टेकते हुए बताया था, कि वह बच्चों की पलटन में भरती होकर जालन्धर जा रहा है। उनसे अपने पुराने अपराधों की माफी माँगते हुए कहा, कि वह उनको चिट्ठी भेजता रहेगा। वे अवाक् उसे देखते रह गए थे। आगे वह कई बार फौजी पोशाक में उनसे मिलने आया था। बार-बार वह कई चीजें लाता और उनको फौज की बातें सुनाता था। कई साल बाद उसने बताया था, कि वह लेफ्टनेन्ट हो गया है, तथा अब शीघ्र ही युद्ध पर चल जावेगा। इसके बाद दो-तीन साल तक उसका कोई समाचार नहीं मिला। जब कि एका-एक एक रोज उसके परिवार वालों को समाचार मिला, कि लीबिया की लड़ाई में वह खो गया है, अनुमान लगाया जाता है कि मर गया।

मास्टर साहब रात भर सो नहीं सके थे। अगले दिन सम्मान के साथ उन्होंने उसका फोटो स्कूल में लगाया था।

(२)

मास्टर साहब उठ बैठे। अभी तक डाक का हरकारा नहीं आया था। वह बहुत जीवट व्यक्ति है। जीवन में किसी संघर्ष से नहीं घबराता है। जब पिछली बार हरकारों ने हड़ताल की थी, तो वह दस रोज तक हर एक के पास गया और समझाया था, कि यह उनके हकों की लड़ाई है। वे वर्षों से मेहनत करते आए हैं। दो-तीन जमादारों की उसने पिटाई की थी और अधिकारियों ने दरोगा से कह करके उसे एक हफ्ता हवालात में बन्द करवा दिया था। उसके साथियों ने जब उनकी नींद हराम कर दी तो वे उसे छोड़ने पर मजबूर हो गए थे। वह तो सबसे कहता था, कि गाँधी जी ने कई लड़ाइयाँ अपने वर्ग के लोगों के लिए लड़ीं, पर उनके लिए तो एक भी नहीं लड़ी है; अन्यथा आज देश आजाद हुआ, तो उनको ठीक से खाना-कपड़ा तो मिलता। इस राम-राज्य में वे ही पुराने खुशामदी टट्टू मौज कर रहे हैं। गरीब मजदूर और किसान की हालत तो मँहगाई से और बदतर हो गई है। वह बताता था, कि उसके दो भाई फौज में हैं और एक पुलीस में; पर सबकी हालत खराब है। अपना-अपना पेट भरने के अलावा वे और कुछ नहीं कर पाते हैं।

उन्होंने अपना झोला सँभाला, उसमें कई पर्चे थे, जिनको कि सूबे की स्ट्राइक कमीटी ने भेजा था। वे अपने हलके की ओर से जिला की हड़ताल-कमीटी की बैठक में शामिल होने के लिए गए थे। वहाँ उन्होंने देखा था कि मास्टरों के बीच भी दो वर्ग अधिकारियों ने बना दिए हैं। एक तीव्र संघर्ष के पक्ष में था तो दूसरा ढुलमुल समझौतावादी। वहीं उनको पहले-पहल ज्ञात हुआ था, कि हजारों अध्यापकों का यह सवाल है। काँग्रेस वालों ने बताया था कि यह हड़ताल गाँधी जी के उसूलों के खिलाफ है। उनको दूसरे गैर जिम्मेदार लोगों ने बहका दिया है, कि राष्ट्रीय सरकार बदनाम हो जाय। नेताओं के सामने कई समस्याएँ हैं और वे उनसे निपट कर इस मसले पर भी जल्दी ही गौर करेंगे।

हड़ताल के नेताओं को वे गद्दार कहते थे। स्कूलों के अधिकारी धमकी दे चुके थे, कि यदि एक निश्चित तिथि तक वे अपने काम पर नहीं लौट आवेंगे तो सब को बर्खास्त कर दिया जायगा। अधिकारी कुछ अवसर-वादियों से बातचीत करके, उनको प्रलोभन दे रहे थे। लखनऊ से खबर आई थी, कि स्कूल और कालेज के लड़कों ने जलूस निकाल कर अध्या-पकों की माँगों का समर्थन किया; तो पुलीस ने लाठी चलाई और अश्रु गैस फेंका था। उसमें कुछ लड़कियाँ भी घायल हुई थीं। यह सुन कर सब में एक नया जोश आया था। बड़ी-बड़ी रात तक मीटिंगें होती थीं और सब एक स्वर में केन्द्रीय समिति के फैसले को स्वीकार करने की बात करते थे।

नौजवानों में एक नया जोश था, पर अधेड़ों में अजीब ढुल-मुल पन था। मास्टर मुरलीधर अधेड़ों के साथ रहते और पाते कि सब की समस्या उनकी ही तरह की थी। सब के परिवारों का आर्थिक ढाँचा टूट चुका था। हरएक पर साहूकार का कर्जा था। वे अपने बच्चों को आगे नहीं पढ़ा सकते थे और परिवार के बढ़ जाने के कारण बहुत दुःखी थे। सब की कमर टूट चुकी थी और इसलिए जिन्दा रहने के लिए सब ने यह आखरी जंग अधिकारियों से छेड़ी थी। वर्षों की परेशानियाँ ढोते-ढोते वे थक चुके थे। उन्होंने निश्चय कर लिया था, कि अब के वे किसी भाँति अधूरा समझौता नहीं करेंगे।

मास्टर साहब की पत्नी दस साल से बीमार है। स्वयं रोगिणी भले ही हो, फिर भी अब तक पाँच कन्याएँ प्रदान कर चुकी थी। हरएक कन्या के बाद वे अपने और पत्नी के भाग्य पर झुँझलाते थे। बड़ी लड़की चौदह पार कर चुकी थी और वे शीघ्र ही उसे किसी मझोले किसान परिवार में दे देना चाहते हैं। लड़का कहीं मिलिटरी में नौकरी करता था। परिवार के पास काफी खेत थे और लड़की खेती के काम में निपुण है। लड़के वाले स्वयं गहना-कपड़ा तथा और थोड़ा बहुत खर्च करने के

लिए तैयार थे। लड़की की माँ को यह रिश्ता पसन्द नहीं था। लड़के की सौतेली माँ थी और सुना जाता था, कि वह बहुत तेज स्वभाव की है। पहले उसने इसका विरोध किया था, पर फिर काफी समझाने-बुझाने के बाद समझौता कर लिया और यह निश्चित सा हो गया था, कि जाड़ों में शादी हो जायगी। उनका कहना था कि लड़का अच्छा है। वे उसे पढ़ा चुके थे। यह तो मौका था कि लड़के को यही घर पसन्द आ गया, अन्यथा आजकल लड़कियों की क्या कमी है ?

उनका हेड मास्टर कई बार उनसे कह चुका था, कि उस लड़की को वह अपने लड़के के लिए चाहता है। पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। यह आमफहम बात थी कि हेड मास्टर का कुल शुद्ध नहीं है। उनके दादा की पैदायश के बारे में सही बातें कोई नहीं जानता था। वे गरीब हैं तो क्या हुआ, फिर भी कुलवान थे और अच्छे कुल में लड़की देना स्वाभाविक माँग थी।

अपने हेड मास्टरों से उनकी कभी नहीं पटी। वे अपने को सदा उनसे ऊँचा मानते तथा गाँव के धनी परिवारों, पटवारी, पोस्ट मास्टर, बनिया आदि से दोस्ती रख कर मुकदमे लड़वाते थे या फिर कोई और तिकड़म करते थे। जब कभी अधिकारी आते तो उनकी आवभगत करते और कुछ चरित्रहीन अफसरों के लिए शराब तथा आराम का प्रबन्ध करते थे। वे आशा करते थे कि लड़के अपने अभिभावकों से माँग कर उनके लिए फसल की चीजें लाया करें। वे कभी-कभी गवाही पर अदालत में भी जाया करते थे। उनमें काइयाँ व्यक्ति भी उसे मिले थे; पर उसने तो सदा ही अपने काम के अतिरिक्त और बातों पर ध्यान नहीं दिया। यही कारण था कि सदा अपने में सन्तोष रहा है।

शुरू-शुरू में उनको अधिकारियों ने अच्छी रिपोर्टें नहीं दीं। पर आगे वे सुधर गईं और फिर उनको भी मालूम हो गया कि उनके बल पर नौकरी में खास परिवर्तन नहीं होगा। अतएव वे चुपचाप अपना

काम करते हुए जीवन व्यतीत करने लगे। फिर भी गाँव के समाज को देखकर वे दुःखी थे। वहाँ लोग मेहनत करके भी भूखे मरते हैं। उनके बच्चों की रोजी और रोटी का कोई खास प्रबन्ध नहीं है। जब कॉंग्रेस के नेताओं ने एलान किया, कि वे आजादी के लिए चुनाव लड़ रहे हैं तो उनको बड़ी खुशी हुई थी। उन्होंने कॉंग्रेस का घोषणा पत्र पढ़ा था। उनको विश्वास हो गया कि सदियों की गुलामी अब मिट जावेगी। उन नेताओं पर उनकी अपार श्रद्धा थी। चुनाव के बाद जब देश आजाद हुआ तो उन्होंने भी स्कूल सजाया था। अपनी लड़कियों के भविष्य की चिन्ता उनको अब न रह गई थी। उस दिन उनकी लड़की ने स्कूल के जलसे में 'जन गण मन अधिनायक जय हो', गाया था। जलसे की सदारत एक पेनशन-याफ्ता तहसीलदार साहब ने की थी। तिरंगा झंडा कॉंग्रेस के एक सदस्य ने फहराया था, जो कि कई बार जेल जा चुके थे।

उस रात्रि को वे बड़ी देर तक सो नहीं सके थे। पत्नी को नेताओं की बातें सुनाई थीं। बताया था कि अब अपने देश में अपना राज आ गया है। अँग्रेजों को कोसा था कि वे अरबों रुपया यहाँ से लूट-खसोट कर ले गए। वे सारे झगड़े की जड़ थे। नहीं चाहते थे कि यहाँ के लोगों में जागृति फैले। इसी लिए यहाँ बड़ी-बड़ी फैक्टरी नहीं खोलीं, लोगों का पढ़ने-लिखने का ठीक सा सुविधा नहीं दिया। वे हुकूमत करने आए थे और देश को गुलाम बना कर राज करना चाहते थे। नेताओं की तपस्या और त्याग की बात वे बार-बार सुनाते थे। सब कुछ सुना कर चैन की साँस ले, बच्चों के भाग्य की सराहना की थी कि आगे अब उनको ठोकरें नहीं खानी पड़ेंगी।

एक बार अपने जीवन का इतिहास भी सुनाया था कि किन कठिनाइयों के साथ उन्होंने जीवन शुरू किया था। पिता साधारण चपरासी था। एकाएक मर गया। माँ ने किसी तरह गाय का दूध बेचकर और दूसरों की खेती तिहाई नाज पर करके, उनको पढ़ाया था। जब वे

मिडिल स्कूल में पढ़ते थे तो प्रति शनिवार को घर आकर, आगे हफ्ते के लिए आटा, चावल आदि ले जाते थे। अपनी उस गरीबी की गाथा को सुनाते हुए उनका गला रुँध गया था। उनकी आस्था इसीलिए इस सामाजिक व्यवस्था पर से उठ गई थी, कि उसमें मनुष्य को जीने के लिए कोई साधन नहीं हैं। वह लूला और अपाहिज सा उस समाज में है। अपनी इस रक्षा के लिए पग-पग पर उसे सेठों के आगे झुकना पड़ता है। उसका शोषण हर एक करता है। इसीलिए वे गाँव के उस समाज से मैदान भाग गए थे। पर माँ का प्यार उनको फिर घर खींच लाया था। माँ की इच्छा थी कि वे और पढ़ें, पर परिस्थितियों के कारण विवश होकर उनको मास्टरी करनी पड़ी थी। उनके साथ के संभ्रान्त कुलों के नालायक लड़के, अपनी अच्छी आर्थिक-स्थिति के कारण आज बड़ी नौकरियों पर थे; जब कि वे पनप नहीं सके हैं।

उनका सालों का जमा हुआ विद्रोह उस दिन उमड़ आया था। रात भर वे अमीरों, सेठों आदि उन सब को गालियाँ देते रहे। रात के तीसरे पहर निश्चिन्त होकर सोए, कि स्वतंत्रता के बाद अब आगे भविष्य में सब कठिनाइयाँ कम हो जावेंगी और जीवन आराम से कटेगा। अस्वस्थ पत्नी की कोई बात समझ में नहीं आई। युद्ध-काल की मेहनत ने उसे बिलकुल बेकार बना दिया था। आज उसमें कोई शक्ति नहीं बची हुई थी। वह तो पंगु की भाँति वहाँ पड़ी हुई थी। यदि लड़कियाँ देखभाल करने वाली न होतीं तो शायद अब तक वह कभी की मर गई होती। आज तो उसका स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा हो गया है। बात-बात पर वह गुस्सा होकर खरी-खोटी सुनाती है। स्वयं अपने पर झुंझलाती है कि क्यों वह बेकार इस भाँति जीवित है। अपने खोटे भाग्य के लिए तो सालों से रोती आई है। वैद्य जी की दवा फिर भी चालू है।

पति की बातों को उसने उस रात सुना था। लेकिन आगे तो वे ही मुसीबतें थीं। सुराज आया। अँग्रेज चले गए। हाकिम तो फिर भी वे पुराने ही थे। आठ साल की लड़ाई ने घर का सारा ढाँचा तोड़ दिया था, पर आजादी के दो सालों की मंहगाई ने तो परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ लाद दिया। वे अब काफी चिन्तित थे। मास्टर साहब ने इस बीच परिवार की सारी सम्पत्ति बेच कर किसी भाँति रक्षा की थी। साथ-साथ वे इधर कर्जदार भी हो गए हैं। पर वह तो सब का हाल था।

आजादी के बाद जिस खुशहाली का आश्वासन नेताओं ने दिया था। वह 'सोने का मृग' निकला। अँग्रेज जिस तरह विरोधियों को जेलों में डालते थे, वही रवैया राष्ट्रीय सरकार ने अपनाया था। हजारों राज-बन्दी जेलों में कैद थे। नेताओं के वादे सुनते-सुनते जनता का सब्र निपट चुका था। सब अपने को अजीब परेशानी और संकट में घिरे हुए पाते थे। तभी एक दिन जिला अध्यापक-समिति का पत्र आया था, कि प्रान्तीय कार्यकारिणी ने हड़ताल का नोटिस दे दिया है। उस दिन उन्होंने कई बार सावधानी से उस 'परिपत्र' को पढ़ा था। उस पर वे न जाने क्या-क्या सोचते रहे। हलके की कमीटी के आगे वह प्रस्ताव रखा गया, सब लोगों ने एक स्वर में उसकी स्वीकृति दे दी थी। गाँव का मालगुजार, पटवारी, बनिया, पोस्ट मास्टर ने उनका मजाक उड़ाते हुए कहा था, कि हड़ताल तो मजदूर व छोटी जाति के लोग करते हैं। इस पर उन्होंने दलील दी थी, कि वे भी मजदूर ही हैं। बस निश्चित तिथि को सब लड़कों को इकट्ठा करके समझाया था, कि यह हड़ताल उनकी अकेली ही नहीं है, उन बच्चों के भविष्य बनाने के लिए भी है।

गाँवों के भीतर उस हड़ताल के हथियार का पहुँचना इतिहास की एक नई घटना थी। कुछ काँग्रेसियों ने अपनी प्रतिष्ठा को बचाने

के लिए स्कूल चलाने की चेष्टा की, पर वे असफल रहे थे। विद्यार्थियों ने अध्यापकों का साथ दिया था। मास्टर साहब ने जिस उत्साह से उसमें भाग लिया था, उनका मन उतना पक्का नहीं था। बार-बार उस प्रान्तीय पर्चे को उन्होंने पढ़ा था। उसकी दलील थी, कि यह सरकार से एक नया जंग अपने अधिकारों की माँग के लिए कई हजार अध्यापकों ने छेड़ा है। यदि उनका संगठन मजबूत होगा, तो उनको सफलता मिलेगी। उन्होंने फिर भी इस पर विचार किया। सरकार नौकरी से निकालने की धमकी दे चुकी है। हड़ताल के नेताओं को सजा देने की बातें भी उड़ी थीं। कुछ लोगों ने उड़ाया था कि स्ट्राइक कमीटी वाले पकड़ लिए गए हैं। मास्टर साहब सब कुछ चुपचाप सुनते थे। उसकी ज्यादा चर्चा अपनी पत्नी से नहीं करते थे। रोज के जीवन के संघर्ष से निकलने का यही आखरी हथियार था।

हलके कमीटी ने उनको अपना प्रतिनिधि चुनकर भेजा था। उस सम्मान का पद पाकर उनको गर्व हुआ था, कि वे एक काफी महत्वपूर्ण बैठक में जा रहे हैं। हलके के अध्यापक उनको दूर तक पहुँचाने के लिए आए थे। उनको आश्वासन दिलाया था, कि यदि वे पकड़ लिए गए तो वे पीछे नहीं हटेंगे। विद्यार्थियों का दल भी उनको दो मील तक छोड़ने के लिए आया था। जब वे चले गए तो उनको लगा था कि वे एक बड़ी तादाद का प्रतिनिधित्व करने के लिए जा रहे हैं। उनको पूरा विश्वास हो गया था कि उनकी शक्ति अजेय है। वे समझ रहे थे कि अँग्रेज जिस 'नीव के पत्थर' को हुकूमती ढाँचे के रूप में छोड़ गए थे, वह आज हिल चुका है। उन छोटे अध्यापकों की उस लड़ाई की आग से, नई सच्ची आजादी की नीव पड़ेगी।

(३)

एकाएक आकाश पर बादल छा गए थे और कुहरा चारों ओर फैल गया था। सामने दूर पहाड़ की चोटी पर बिजुली कड़क रही थी और कहीं

एक भारी धमाके के साथ वह गिरी थी। कुछ देर तक धरती काँपती रही। आगे कुछ खुली सी धरती पर एक गाय मरी पड़ी हुई थी और उसके शरीर को गीद्ध नोच रहे थे। उनकी आहट पाकर वे फड़फड़ाते उड़े और आस-पास के पेड़ों पर बैठ गए। उसे लगा कि उनके अपने वर्ग को इसी भाँति मृत्य प्राय: अँग्रेज छोड़ गए थे और राष्ट्रीय सरकार ने उनको नवजीवन न देकर; इन गीद्धों वाली हिंसा अपना कर, उनको नोचना शुरू कर दिया। उनका अध्यापक वर्ग सच ही मर गया होता, यदि वे संगठित हाकर एक नया मोर्चा न खोलते। शहर में उसने पाया था कि उनके उस संघर्ष के साथ मजदूर, विद्यार्थी, निचला मध्यवर्ग, बाबू लोग तथा और तबकों की पूरी-पूरी सहानुभूति है। उसने तो वहाँ पाया था कि उनका वर्ग औरों से बहुत पिछड़ा हुआ रहा है। वहीं उसने अनुमान लगाया था, कि नंगे और भूखे आज सब एक होकर रोटी और रोजी की माँग कर रहे हैं। उन सब का मिला हुआ संगठन देश की एक नई ताकत है।

वह तेजी से बढ़ने लगा। लगभग एक मील पर पड़ाव था और वहाँ उसे बर्फ के तूफान से पहले ही पहुँच जाना चाहिए। वह भागने लगा। हवा के तेज झोंके चल रहे थे। सर्द हवा के साथ साथ कुहरे की पानी बनी बूँदें पेड़ों पर से टपक रही थीं। उसके चेहरे पर भी कभी-कभी कुहरा थपेड़ा मारता था। उसे हरकारे की याद आई। वह रोज प्रकृति से संघर्ष करता है। अपने इन संघर्ष के अनुभवों को वह जीवन पर लागू करता है। उसमें उसने कोई घबराहट नहीं पाई थी। वह तो कहता था कि बिना एक आखिरी लड़ाई के सेठों और उनकी गुमाश्ता वाली राष्ट्रीय सरकार से अधिकार नहीं छीना जा सकता है। वह हँस-हँस कर कहता था, कि अफसरों ने ऊपर के अधिकारियों के पास उसकी रिपोर्ट भेजी थी, कि वह कम्यूनिस्ट है। ऐसा सा सुझाव दिया था, कि उसे किसी बहाने नौकरी से बरखास्त कर देना चाहिए।

पर उनकी एक चाल नहीं चली। उसने तो पोस्ट मास्टर से साफ-साफ कहा था, कि रोटी दो, यह कम्यूनिस्ट का हौव्वा बेकार है। वे उनकी गीदड़-भभकियों में पड़ने वाले नहीं हैं। अधिकारी चुप रहे और मजबूर होकर उनका थोड़ा भत्ता बढ़ा दिया था। यदि उनका संगठन फौलाद की भाँति मजबूत होता तो शायद अधिकारी हार जाते। पर वे तो फूट डलवाने में निपुण होते हैं। अँग्रेज उनको आपस में लड़ा कर हुकूमत करना सिखला गया है। वे उनके सच्चे अनुयाइयों की भाँति, उनके बतलाए हुए रास्ते पर चल रहे हैं।

अब वे पड़ाव पर पहुँच गए। नीचे की ओर दूकान पर खच्चर वाले बैठे थे। वे दूकानदार का माल ढोते हुए बता रहे थे कि आज की आमदनी में कोई बरकत नहीं है। खाने-पीने, पहनने की चीजों के दाम चौगुने हो गए हैं, पर वे ढुलाई दुगने से अधिक नहीं ले पाते हैं। पहले खच्चरों के लिए भूसा-चना ही कन्ट्रोल पर मिल जाता था, पर सुराज के बाद तो जीना हराम हो गया है। सामने कुछ औरतें सड़क के किनारे की मुँडेरी पर घास के गट्ठे टिकाए हुए सुस्ता रही थीं। एक दूकानदार घास का भाव तोल कर रहा था। कुछ गाँव वाले कपड़े के मारवाड़ी दूकानदार से किसी शादी का सामान खरीद रहे थे। व्यापारी चिल्ला-चिल्लाकर बता रहा था कि छपे दामों से ज्यादा पैसे देकर तो वे माल खरीद कर लाए हैं। वहाँ लूट मची है, तो हम क्या करें। हजारों रुपया का कपड़ा पड़ा है, हम बेच नहीं पाते हैं। रुपया लागत का निकल जाय तो समझेंगे कि प्राण बचे। आज तो सब से खराब पेशा दूकानदारी है।

वह मारवाड़ी वहाँ हजारों का व्यापार साल भर में करता है। पास की मिडिल स्कूल के बोर्डिङ्ग के खाने-पीने का उसी का ठेका है। वह वहाँ के विद्यार्थियों को और जरूरी सामान भी मँहगे दामों पर बेच कर एक के दो रुपए बनाता है। उस पड़ाव की चंद दूकानों में उसका बड़ा रुतबा है। उसकी सोने के गहनों से लदी पत्नी को देख कर आसपास

के गाँवों की रमणियाँ आश्चर्यचकित रह जाती हैं। पहले उसकी वहाँ पर कन्ट्रोल की दूकान भी थी, आज तो अब वह मनमाने दामों पर अपना माल बेचता है। उसकी दूकान पर गरीब किसान गहने व और सामान 'रेहन' भी रखता है, कि कर्जा मिल जाय। उसकी दुबली पतली पत्नी घर के काम काज में ही जुटी हुई रहती है। बाहर दुनिया की ज्यादा चिन्ता उसे नहीं रहती है। वह बनिया बड़ी मीठी बातें करता है। बार-बार कहता है, कि चार पैसे कमाने के लिए ही तो वह घर से हजारों मील की दूरी पर पड़ा है। अन्यथा अपने वतन में कौन नहीं रहना चाहता है।

मुरलीधर एक दूकान पर खाली कनस्तरों पर टिकाए लकड़ी के तख्ते पर बैठ गया। उसने दूकानदार से एक चाय के गिलास की माँग की और दो आने की मूली की पकोड़ियाँ खरीदीं। अब वह गरम-गरम पकोड़ियाँ खा रहा था। उसे बड़ी भूख लग रही थी। बीच-बीच में वह चाय की गरम घूँट भी पी लेता था।

हवा तेज चलने लगी थी। मेह भी बरसने लगा और फिर एका-एक बर्फ गिरने लगी। रुई के छोटे-छोटे फुहों की भाँति कुछ देर में सारी धरती पर सुफेदी छा गई थी। वह चुपचाप प्रकृति की उस निराली छटा को निहारता रह गया। आज से पहले उसने उस में इतना अद्भुत सौन्दर्य नहीं पाया था।

अब वह चुपचाप हुक्का पी रहा था। अभी तो उनको लगभग अठारह मील का सफर तय करना है। तभी हरकारे के भाले की झनझनाहट कानों में पड़ी। अब वह उस दूकान पर आ पहुँचा था। उसे यहाँ सब लोग जानते हैं। वह शहर, देश-विदेश और न जाने कहाँ-कहाँ की खबरें रोज लाता है।

उसने मास्टर साहब को सुनाया कि रेलवे वाले भी हड़ताल करने वाले हैं। मजदूरों ने ६५% वोट हड़ताल के लिए दिया है। यदि

नकली नेताओं ने धोखा न दिया, तो मजदूर अब के सरकार के छक्के छुड़ा कर के ही दम लेंगे। फिर यह भी बताया कि पोस्ट और टेलीग्राफ में भी इस मसले पर सोचा जा रहा है। अन्त में सुनाया था कि कलकत्ता में मजदूर आज फौजियों से डट कर लड़ता है। यह सा बताया कि दूर जो चीन देश है, वहाँ भी मजदूरों का राज हो गया है।

वे बातें नई थीं। उनके कहने में एक जोश था। वहाँ बैठे सब लोग चुपचाप उन आन्दोलनों की बातें सुन रहे थे। मास्टर साहब का मन स्वस्थ हो गया था। सामने सारी धरती बरफ से ढक चुकी थी। हरकारे ने जल्दी-जल्दी चाय पी और रोटियाँ खाईं। वह फिर तैयार हो गया। बरफ का तूफान निपट चुका था। कहीं-कहीं कुहरा तेजी से उड़ कर घना होता जा रहा था। मुसाफिर अपना रास्ता तय कर रहे थे। वह मारवाड़ी किसी ग्रामीण को फँसा कर, उसके कागज पर गवाही लिखवा रहा था।

हरकारे ने डाक का थैला कँधे पर डाल लिया था। मास्टर साहब भी उठ खड़े हुए। दोनों चुपचाप आगे बढ़ रहे थे। आज के तेज संघर्ष ने उनके झूठे वर्गों को तोड़ कर, उनको एक वर्ग में मिला दिया था। मास्टर साहब को आज लगा कि वे सब एक ही लड़ाई लड़ रहे हैं।

—धरती पर बरफ बिछी थी। उन पर उनके पाँवों के निशान बन कर मिट-मिट जाते थे। पर वे दोनों आगे बढ़ते हुए, एक ही बात सोच रहे थे, कि अपने हकों की लड़ाई वे अकेले नहीं लड़ सकते हैं। यूनियनों के संगठन और हड़ताल के हथियार से खोद कर, वे एक नए खुशहाल भविष्य बनाने का निश्चय कर चुके थे।

नासूर

भोंपालू और उसके साथी रिक्शे को चढ़ाई की ओर खींच रहे थे। मेंह की झड़ी लगी थी और कुहरा बार-बार घना होकर बीच-बीच में धुँधला पड़ जाता था। रिक्शे पर कोई मोटी जवान औरत और एक युवक बैठा हुआ था। लगता कि दोनों नशे में चूर हैं। बीच-बीच में वे आपस में अँग्रेजी में बातचीत करते हुए, फिर एकाएक चुप हो जाते थे। एक-दो बार युवती ने अपने बटुए पर से आइना निकाल कर चेहरा देखने की चेष्टा की, पर असफल रही। कभी एकाएक तिरछी तेज बूँदें भीतर तक पहुँच रही थीं। वह बरसाती में सिकुड़ कर तभी बैठ जाती। वह युवक चुपचाप उसे निहारता हुआ, अनायास अपनी आँखें हटा लेता था। ऊपर से नीचे की ओर, पानी की तेज धाराएँ बह रही थीं और आसपास खड़ी ऊँची अट्टालिकाओं के पतनालों से पानी नीचे गिरता हुआ, एक अजीब ध्वनि फैला रहा था। वे आठों कुली हाँफ रहे थे। यह साधारण चढ़ाई नहीं है, पर म्युनिसिपेल्टी वाले तो चढ़ाई-उतार का ध्यान न रख कर, रेट घंटे या मील के हिसाब से रखते हैं। सवारियाँ भी आज पूरी मजदूरी तक नहीं देतीं, फिर बख्शीश का सवाल ही कैसे उठ सकता है! वे सब नंगे पाँव थे और उनके शरीर पर नाममात्र को कपड़े थे। बरसात भर भीगे कपड़े पहने रहना मामूली बात हो गई है।

अब एक विशाल होटल के पास रिक्शा रुका और वह युवती उतर पड़ी। युवती ने शुभ रात्रि का अन्तिम अभिनन्दन किया। युवती चुपचाप

होटल की ओर बढ़ गई। होटल के दो-चार कमरों को छोड़ कर बाकी सब में अँधियारा था। भोंपालू अपने साथियों के साथ रिक्शा चढ़ाई पर चढ़ाता रहा। इस युवती पर वह सोचता है। कई बार वह उनके रिक्शे पर चढ़ चुकी है। उसके साथ नए-नए युवक प्रति दिन रहते हैं। वह वेश्या नहीं है। वह अभिजातवर्ग के किसी परिवार की युवती है। उसके जीवन में संघर्ष नहीं है। ये सैलानी लोग यहाँ मौज उड़ाने आते हैं। इनका चरित्र नहीं होता है। ये कमीने होते हैं; और वह अपने साथियों के साथ इन हरामजादों और जादियों को रिक्शे पर इधर-उधर ले आया करता है। दिन भर कमर तोड़ कर मजदूरी करता है। शाम को चोरबाजार से खाने-पीने की चीजें खरीदता है और पाता है कि वह उससे ठीक तरह अपना पेट तक नहीं भर पाता है। भविष्य के लिए कुछ बचा कर अच्छा जीवन व्यतीत करने का सवाल ही नहीं उठता है। आज की जिन्दगी में निभना ही मुश्किल है।

घंटे-घर की घड़ी ने बारह बजाए। मेंह अभी भी तेज़ी से बरस रहा था। कोई एकला-दुकला मुसाफिर यदा-कदा नजर पड़ जाता। या फिर नीचे जाने वाले किसी रिक्शे की घंटी की टन, न, न, न; की एक बेसुरी ध्वनि गूँज उठती। आजकल सवारियाँ मिलनी आसान बात नहीं है; बहुत कम घुमक्कड़ आते हैं और फिर वे किराया देने पर बड़ी तकरार करते हैं। ये शरणार्थी न जाने कहाँ से चले आए हैं; चाट खाने में इनकी औरतें बड़ी तेज होती हैं और फिर जो रंग-बिरंगी चिड़ियाँ बनी इधर-उधर डोलती हैं। ये बच्चों को गोदी में लिए मीलों पैदल घूमेंगी, न कुली लेंगी, न डाँडी और न रिक्शा। फिर जिधर देखा ये ही लोग दिखलाई देते हैं। वे ही पंजाबी—शरणार्थी! सुना कि उनका पँजाब में सब कुछ लुट गया है; पर वे तो यहाँ खूब कारोबार चला करके धूक के पाँच बना रहे हैं। आज दिन भर में उनको केवल दो

सवारियाँ मिली हैं। नाचघर के बाहर वे चार घंटे प्रतीक्षा करते रहे, तब जा कर यह सवारी मिली है।

आजकल सच ही मजदूरी का बुरा हाल है। शाम को वे लोग बस-स्टैंड पर थे। नीचे मैदान से लारियाँ आई थीं। जब वे रुकीं तो मजदूर दौड़-दौड़ कर सामान उतारने लगे। एक ड्राइवर ने सब को गालियाँ दीं और कुछ को पीटा था। एक 'फावटू' तो गिर पड़ा और उसके चोट आई थी। वे ड्राइवर पहले तो इतने बेरहम नहीं थे। तब सरकारी बसें नहीं चलती थीं और वे कम्पनी के नौकर थे। कम्पनी के मालिक सदा यही कहते रहे, कि उनको मुनाफा नहीं हो रहा है। आज तो ये ड्रायवर सरकारी मुलाजिम हैं, उनकी नौकरी सुरक्षित है; इसी लिए शायद इस तरह का बर्त्ताव बरतने लगे हैं। वह ड्रायवर ऊँचे तबके के मुसाफिरों के साथ हँस-हँस कर बातचीत करता हुआ, क्लीनर से सब का सामान उतरवा रहा था। फिर कुलियों को सामान सौंप कर बताया था, कि साहब कहाँ जावेंगे। वह उन सैलानी बाबू लोगों की ऐसी चापलूसी कर रहा था, मानों कि उसके उस व्यवहार से उसका रुतबा उन कुलियों के बीच बढ़ गया हो। पर इन ड्रायवरों से वे घृणा करते हैं। उनके साथ कोई उठते-बैठते हैं, तो वे मोटर के क्लीनर! वे लड़के बताते हैं, कि सरकारी मोटरों में खास मुनाफा नहीं हो रहा है। वहाँ के साहब लोग खूब खा-पी रहे हैं। पैट्रोल का चोर बाजार बढ़ गया है। मुँह लगे ड्रायवरों को छोड़ कर और लोग दुःखी हैं। वे तो अपना रोना रोते थे, कि एक चवन्नी रात रुकने का भत्ता उनको मिलता है। उससे क्या पेट भरेगा! वह भी आठ महीने से नहीं मिला है।

वह उस युवती के बारे में सोचने लगा, जो कि मेमों की तरह रहती है। पर वह जानता है कि बड़े लोग अपनी रमणियों के आचार-विचार पर खास ध्यान न देकर, उनके बनाव-ठनाव पर ही रीझते हैं। जब वह पहले-पहल आया था, तो नारी के इस व्यवहार पर दंग रह गया था!

उसके संस्कारों पर बड़ा धक्का लगा था, कि वह पति-पत्नी नहीं, प्रेमी-प्रेमिका वाला दरजा है। तब उसे अपने भाई पर काफी क्रोध आता था, कि क्यों उसने भाभी का गला गँड़ासे से काट डाला था। भाभी का इतना ही कसूर था, कि वह एक युवक से बहुत घुलमिल कर बातें करती थी। भैय्या के बार-बार मना करने पर भी वह उससे अलग रहने में असमर्थ रही। इस पर भैय्या ने उसकी पिटाई की, पति के सब अधिकारों का उपयोग किया। पंचायत करने की धमकी दी, पर भाभी एक न मानी। अन्त में भैय्या ने पशुबल का प्रयोग किया और गँड़ासे से उसका सिर काट डाला। भैय्या के उस कर्तव्य की गाँव वालों ने सराहना की, कि वह 'मर्द' है। आसपास कई गाँवों की औरतों के आगे अब वहाँ के पुरुष उस नजीर को रखने लगे। लेकिन उसके भाई को फाँसी लग गई। भाभी की शादी में जो एक हजार रुपया कर्जा निकला गया था, उसके भुगतान का प्रश्न भौंपालू के सामने आया। वह जानता है, कि सारी जिन्दगी वह कर्ज को चुकाने में व्यतीत कर, अब सफल किसान नहीं बन सकता है। पहले वह नोकरी करने के लिए खास उत्साहित नहीं था। कभी भी उसने अपनी इस प्रकार की आयोजना नहीं बनाई थी।

वह भाभी, भैय्या से भले ही नाखुश रहती हो, उसके प्रति उदार थी। वह उसे मोटी मँडुए की गरम रोटी में मक्खन खाने को देती थी। वह पोदीना, लहसुन आदि का चटपटा नमक बनाने में उस्ताद थी और नारंगी की फसल पर वे दोनों देवर-भाभी पच्चीस-तीस नारंगियाँ तोड़ कर उसमें नमक-मिर्च मिला खा जाया करते थे। अखरोट भी दोनों बाजी लगा कर खाते थे। वह उससे बार-बार कहती थी, कि उसका भाई उसे बिलकुल नहीं भाता है। वह देवी-देवताओं की मनौती करती थी, कि वह मर जाय। भाभी के उस रूप से वह डर जाता था कि, भाभी चली जायगी। भाभी का व्यक्तित्व उसे उस परिवार के संचालन का

एक प्रमुख अंग लगता था; वह पाँच बजे सुबह उठ कर घास और लकड़ी लेने के लिए जंगल जाती थी। आँधी-पानी, जाड़ा-गरमी सदा वह शाम तक लौट आती; फिर झरने पानी लेने जाती; लौटकर खाना बना, चका बरतन करके, खेत चली जाती थी। वह सारे घर की व्यवस्था इस तरह करती थी, कि वह दंग रह जाता था। अन्यथा उसका निकम्मा भाई तो दिन भर अपनी तिबारी पर बैठ कर हुक्का फूँकता रहता, या फिर जुआ खेलने चला जाता था।

वह कई क्लीनरों को जानता है। वे उसी के वतन की ओर के हैं। वे उसके लिए नीचे से सौदा-सुलफा सस्ता ले आते हैं। जब कभी रात टिकते हैं, तो उनके साथ रह कर बहुत सारी बातें सुनाया करते हैं। भले ही मैदान और उस हिल स्टेशन के बीच बीस मील का फासला हो, पर दोनों की अपनी-अपनी दुनिया हैं। वे लड़के उस फासले को दूसरे तीसरे दिन तय कर लिया करते हैं। वे बताते हैं, कि शरणार्थियों ने वह सारा शहर बिगाड़ डाला है। उनके लड़कों की तारीफ़ करते हैं, कि वे घरेलू नौकरी न करके, व्यापार करते हैं। उस आत्म सम्मान की बात को सुनकर वे उलझन में पड़ जाते हैं। गरीब से गरीब शरणार्थियों ने कभी कुली-गीरी नहीं की। पहले भोपालू सोचता था, कि पंजाब में अमीर ही लोग रहते हैं। वे प्रति वर्ष बरसात की मौसम में आते थे। एक-दो महीने खूब मौज उड़ा कर अपने वतन को चले जाते थे उनकी रमणियों का अपूर्व सौन्दर्य पाकर वह दंग सा उनको देखता रहता था। वे लोग पैसा खर्च करने में कंजूस नहीं थे और न सरे बाजार खड़े होकर, उनकी रमणियाँ चाट ही खाती थीं। वे तो अँग्रेजों के समान ही रहते थे और उनकी औरतें गिटपिट-गिटपिट अंग्रेजी बोलती थीं; उनके हाव-भाव तथा आकर्षण की तुलना वह अंग्रेज और कृस्तान मेमों से किया करता था। जब एकाएक पंजाबियों ने शरणार्थी के रूप में आना शुरू किया तो वह दंग रह गया। वह सुनता था, की उनकी छोटी-छोटी

बस्तियाँ बन गई हैं। वे नीचे के शहर में बसाए जा रहे थे। फिर वे कुन्बे ऊपर भी आने लगे और अब इस हिल स्टेशन पर सच ही छा गए हैं। बाहर के सैलानी उनके इस आगमन से प्रसन्न नहीं हैं। वह उनकी बातें सुन चुका है, कि अब वहाँ वह पुराना आनन्द नहीं रह गया है। सच ही अब केवल चकाचौंध करनेवाली अमीरी ही वहाँ नहीं दीख पड़ती है। स्वयं उसे लगता है कि बड़े-बड़े सेठ और सौदागर जैसे की वहाँ नहीं आते हैं। साधारण लोग आते हैं, जो कि पैसा बड़ी किफायतशारी से खर्च करते हैं।

भाभी का भय्या के प्रति वाले रुख को समझने की उसने बार-बार चेष्टा की, पर असफल रहा। भाभी से एक-दो बार उसका झगड़ा भी हुआ। उसने कहा कि यह सब उस परिवार को छोड़ने का षड्यंत्र है। लेकिन भाभी ने बताया था, कि उसके भाई के साथ वह नहीं रहना चाहती है। उस युवक से हिल मिल कर इसीलिए रहती है, कि उसका भाई उसे छोड़ दे। उसे आश्वासन दिया था, कि यदि उसका भाई मर जाय, तो वह उसके घर बैठ जावेगी और उसकी गृहस्थी को सुचारु-रूप से चलावेगी। वे बातें सुन कर वह अवाक् रह जाता, तो भाभी उसे जौ की रोटी में शहद खाने को देती थी। भाभी को समझाने में वह असफल रहता था, कि भय्या ने उसका खून कर डाला और उसको फाँसी हो गई थी।

उसके बाद उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूटा। पुलीस, अदालत और न जाने कहाँ-कहाँ वह नहीं गया। भैंस बेची, खेत सेठ के यहाँ बन्धक रखे, कर्जा लिया। काफी दौड़-धूप के बाद पाया कि उसके मुख्तार और वकील उसे धोखा देते रहे। दरोगा ने दो-सौ रुपया लेकर भी कुछ नहीं किया। गाँव में साहूकार के कर्जे के अलावा और कुछ बाकी नहीं था। गाँव की स्मृतियाँ उसके मन में चोट करतीं। भाभी की याद आती। उसका भइय्या भी तो उसे बहुत प्यार करता था।

उसकी योजना थी, कि उसे वह कम से कम मिडिल पास जरूर करावेगा। वह कहता था कि आज अब मेहनत-मजूरी करने कहाँ जाँय खेतों में भी ठीक उपज नहीं होती है। पहले घी, अदरक, प्याज, आलू बेच कर नकद पैसा मिल जाता था; अब वह खाने भर को ही पूरा नहीं होता है। नमक, कपड़ा, आदि कैसे खरीदा जाय ! वह दिन भर तकली कातता रहता था। उसका ख्याल था, कि अब कोई कारोबार करना चाहिए। वह ऊपर सड़क पर एक चाय और पकौड़ी की दूकान खोलने की बात सोचा करता था। लेकिन प्रतिशोध की एक तीव्र आग उसके हृदय में सुलग रही थी। वह भाभी उससे समझौता कहाँ करती थी ! इस शादी के लिए वह अपने को कोसता था, कि वह अपने ही हठ पर वहाँ शादी करने तुला, अन्यथा तीन-चार सौ रुपये में अच्छी लड़कियाँ उसे मिल रही थीं। कभी भाभी के पिता को गाली देता, कि उसके बारह-तेरह सौ रुपए खर्च करवा दिए और लड़की खोटी निकली।

भाभी की बातों की तुलना वह भाई की योजनाओं से करता और इस नतीजे पर पहुँचता था, कि दोनों ने गलती की। पर उस सब से अब क्या हो सकता है। उसे गाँव छोड़ देना पड़ा। उसकी आजादी चली गई। उसे अपने खेत छोड़ने-पड़े और वह किसान से मजदूर बन गया, जहाँ कि पग-पग पर उसे अपमानित होना पड़ता है। अपने आत्म-सम्मान की बात भूल गया। उसका यह अक्खड़ स्वभाव बदल गया था। वह कभी अपने को पिछले किसान युवक के रूप में पहचानने की चेष्टा करता, तो असफल रहता। पर एक हूक गाँव के लिए उठती थी। वहाँ का जीवन उसे सादा और सच्चा लगता था। वह बार-बार सोचता था, कि कुछ रुपए जमा करके गाँव जायगा और साहूकार से अपने खेत छुड़ा लेगा, एक बार गृहस्थ बन कर गाय-बैल बकरी, भेड़ आदि पालेगा ! गाँव की मौसमों की बातें वह मन में दुहराता था।

वहाँ के उस प्राकृतिक सौन्दर्य की झाँकियाँ मन में उठ कर ओझल हो जाती थीं।

लेकिन 'हिल स्टेशन' में आकर गाँव के समाज से दूर 'नारी' का एक नया रूप उसने पाया। वह नारी पति की मौत न चाह कर भी आजाद थी। वह पति, पत्नी की स्वतंत्रता पर हत्या की बात नहीं सोचता था। वे एक-दो नहीं सैकड़ों नारी-पुरुष थे। वहाँ नारी केवल दासता की जंजीरें नहीं पहने थी। वह अपना एक दावा सा पेश करती थी। लेकिन भले ही वे टीम-टाम से रहती हों, वे एक भद्दी छाप मन में फैलाती थीं। वे सैलानी नारियाँ थीं, जो कि मौज करने के लिए वहाँ आती थीं। वे सेठ और अमीर घरों की नारियाँ थीं, जिनका व्यक्तित्व कि कदापि उसकी भाभी के समान नहीं था। वे भाभी की भाँति रूपवती भी नहीं लगती थीं। वे उसकी भाभी की भाँति बरसात, गरमी और जाड़ों में प्रकृति से संघर्ष कब करती थीं! पर वह भाभी एक यादगार थी, जहाँ कि वह लौट कर नहीं जा सकता है। वह उसे बार-बार भूलने की चेष्टा करता, पर पाता कि वह उसे अपने हृदय से निकाल फेंकने में असमर्थ है। भाभी कभी मजाक करती थी कि वह मर जायगी, तो भूत बन कर उसका पीछा करेगी।

भाभी का कटा सिर उसने देखा था। उसकी आँखें मुँदी थी; उसकी काले मूँगों की माला टूट गई थी। कानून ने उसके पगले भाई को भी जीवित रहने का मौका नहीं दिया। वह 'हत्या और फाँसी' जैसे की भैया- भाभी की कहानी मात्र रह गई। वह आज भूत बन कर पीछा नहीं कर सकती है। मौत के बाद का ज्ञान किसी को नहीं था।

—अब रिक्शा चढ़ाई के पास वाले बड़े होटल पर रुक गया था। मेंह की झड़ी कम हो गई थी साहब ने किराया चुकाया, तो उनका एक साथी विनीत स्वर में बोला, "साब-बख्शीस ?"

युवक ने बिना किसी उलझन के बटुए पर से कुछ रेजगारी निकाली और उनको दे दी, फिर चुपचाप कुछ गुनगुनाता हुआ होटल की ओर बढ़ गया था। वे पास बड़े देवदारु के पेड़ की छाह में कुछ देर के लिए ठहर गए। एक ने बीड़ियाँ निकालीं और सबने सुलगा लीं। वे चूर-चूर थक गए थे। शरीर से पसीना भीतर ही भीतर बह रहा था भोंपालू की छाती धुक-धुक-धुक कर रही थी। उसकी पीठ पर जूँ रेंक रहे थे। उसने ऊपर से हाथ डाल कर एक को पकड़ लिया और दोनों अँगूठे के नाखूनों के बीच पिचका लिया। आज दिन भर में हर एक ने दो रुपया कमाया था, जो कि इस साल की भीड़ देखते हुए बुरी कमाई नहीं थी।

अब उनका रिक्शा नीचे की ओर चल रहा था। भोंपालू के मन में एकाएक ख्याल उठा कि भाभी मर न जाती और उसके घर बैठती; या वह उसे भगा कर यहाँ ले आया होता, तो शायद काफी मुसीबत हल हो गई होती।

(२)

भोंपालू अब अपनी कोठरी में पहुँचा। एक विशाल होटल के पिछवाड़े खड्ड में वह कोठरी थी। वहाँ बरसात भर सीलन रहती व कभी-कभी पानी की धाराएँ भी दीवालों से फूट निकलती थीं। छै आदमियों ने वह कोठरी आठ रुपया माहवारी किराए पर ले रखी है। उसका सारा बदन ठंड से काँप रहा था। उसके कपड़े तरबतर भीग गए थे। बाहर तेज हवा चल रही थी। वह चुपचाप कुछ देर खड़ा रहा। दियासलाई जला कर उसने अपने सोने की जगह देखी और फटा पुराना टाट ठीक तरह बिछा लिया। अब उसने लँगोटी के अतिरिक्त सब कपड़े खोल डाले और कंबल ओढ़ कर लेट गया। यह जिन्दगी उसे पसन्द नहीं है। कभी वह रिक्शा खींचता है। वे छै-सात व्यक्ति किराया पर रिकशा लाते हैं, या फिर वह मुसाफिरों का सामान ढोता है। कभी

वह साहब लोगों के बच्चों को अपनी पीठ पर टोकरी में लाद करके ले जाता है। कुलीगिरी उसे खास पसन्द नहीं। अकेले डेढ़-दो मील की चढ़ाई पर मन, डेढ़-मन सामान चढ़ाना आसान काम नहीं है। इस पर यहाँ कैन्टूनमेंट और म्युनिस्पैलिटी वालों की अपनी-अपनी हद्दें हैं। दोनों टैक्स लेते हैं और आश्वासन देते हैं, कि वह रुपया मजदूरों के क्वाटर बनाने में खर्च किया जायगा। एक रुपया माहवरी तो यही टैक्स है। इस पर साहब लोग धौंस गाँठते हैं, कि आगे वे कुलियों की संख्या कम कर देंगे। बेकार लोग यहाँ आकर गन्दगी फैला रहे हैं।

शाम को उसने जिस होटल में खाना खाया था, वहाँ तरकारी में मिरचें बहुत थी; फिर अब तो लूट मच गई है। मोटी रोटी तीन आने में एक मिलती है। पहले यहाँ एक मुसलमान होटल था, वह काफी सस्ती रोटी देता था। बरसात में खुद खाना बनाना एक बहुत बड़ी समस्या है। भुना चना खा कर पेट नहीं भरता है। होटल-बोटल इधर-उधर खाना खाने से उसका पेट और मन नहीं भरता है। उसे इन नैपालियों की बात पसन्द है। वे सपरिवार मेहनत-मजूरी करते हुए, सुख-दुख में साथ-साथ रहते हैं। अपने देश की चिन्ता उनको खास सी नहीं रहती है। फिर उनकी औरतें बड़ी मजबूत होती हैं। पहले कुछ दिनों तक वह नैपालियों के साथ रहा है। वहाँ एक परिवार की लड़की के साथ वह शादी करके, एक नई जिन्दगी बसर करना चाहता था। उस लड़की से उसने बात की तो वह हँस पड़ी और बताया था, कि वे अपने कौम वालों के साथ शादी करती हैं। उसका ख्याल था, कि वह उससे प्रेम करती है। पर इसका कोई उत्तर न देकर, उसने यह सुझाव दिया था, कि उसे चुपचाप उनका घर छोड़ देना चाहिए। उसे डर है, कि कहीं अपनी भावुकता के कारण वह किसी मुसीबत में न फंस जाय। उसने अपनी विवशता में आँसू न बहा कर कहा था, कि वह लाचार

है। उसका कोई भी उपहार लेना स्वीकार नहीं किया; शादी पर अधिक चर्चा बढ़ाने का प्रश्न न उठा कर, उसे उसी दिन वहाँ से विदा कर दिया था।

यह मुसीबत; क्या उसका गला भी कोई काट देता ! बात उसकी समझ में नहीं आई। इस लड़की में क्यों वह एक ऐसा अहसास न भर सका, कि वह उन पुराने बन्धनों को तोड़ देती। सब लोग उसी पुरानी व्यवस्था का पालन क्यों करते हैं ? क्या इस समाज में कभी परिवर्तन नहीं होगा ? आखिर यह हिंसा की भावना क्यों लोगों के मन में उठती है ! वे जो ऐसी जिन्दगी बसर कर रहे हैं, इसके लिए पुराने जन्म के पाप होंगे ! सारी बातें मन में उठी थीं; उसे बहुत दुःख हुआ और काफी सोच-विचार करके भी वह यह निश्चय नहीं कर सका, कि इस सबका उपाय क्या है ?

फिर भी आज वह अकेला व्यक्तिवादी जीवन कहाँ व्यतीत करता है ? वह पाता है कि सैकड़ों फालटू उसी की भाँति मजबूर हो, अपने घरों को छोड़ कर आए हैं। हर एक की पारवारिक समस्या और घर की बुरी आर्थिक स्थिति है। यहाँ आकर वे ठीक सा पेट भर खाना तक नहीं पाते हैं। उसके अधिकतर साथी तो जाड़ों में पहाड़ चले जाते हैं। और गेहूँ की फसल काट कर फिर यहाँ कमाने के लिए आते हैं। वे अपने परिवारों की बात सुन कर बताते हैं, कि लड़ाई के बाद तो गाँवों की हालत और खराब हो गई है। वह स्वयं अपने गाँव की बातें सुनता है। लोग वहाँ उनको भूल गए हैं। एक-दो, तीन-चार, अलग-अलग व्यक्ति मानों अपना कोई अस्तित्व नहीं रखते हैं। यहाँ तो फिर सब मिल कर एक बड़ी बिरादरी के प्रतिनिधि हैं। वह उनका 'फालटू' होना एक बड़े मानव परिवार का ढाँचा है। जिस संगठन से कि वे मजबूत हो सकते हैं। अन्यथा गाँव का साहूकार भले ही मर जाय, उसका बेटा पैदायशी साहूकार होता है।

अमीरों के बच्चों को कभी कोई संघर्ष नहीं करना पड़ता है; मानों कि वे उन पर हुकूमत करने के लिए ही पैदा हुए हों।

वह तो सोच रहा था, यह सब वह किसी की बातें उगल रहा है। तीन-चार साल पहले उनके वतन से एक खद्दरधारी आए थे। उन्होंने मजदूरों की संगठन की बात कही थी। आने वाले समाज में उनकी हालत सुधर जायगी, यह समझाया था। सेठों की कोठियों की ओर इशारा किया था, कि वे खाली पड़ी रहती हैं। जब 'फालटू' लोगों के पास सोने तक की जगह नहीं हैं। उस समय एक जलूस उन लोगों ने निकाला था। उससे इतना लाभ हुआ था, कि म्युनिस्पेलिटी वालों ने उनके बैठने के लिए कुछ पक्के स्थान बना दिए थे। उनको इन्सपेक्टर भी परेशान नहीं करते थे। वह सारी स्थिति ऐसी थी कि स्वयं अपनी सामूहिक शक्ति पर वह विश्वास करने लगा। उन खद्दर पोश सज्जन ने जो तसवीर आगे रखी थी, वह बहुत सुन्दर और उजली थी। मानों कि आगे अब एक नई दुनिया बसने जा रही हो, जहाँ कि रोजी और रोटी की तकलीफ नहीं होगी। उनके रहने के लिए 'हिल स्टेशन' में सस्ते क्वाटर बन जावेंगे और उनके बच्चों के पढ़ने के लिए स्कूल खुलेंगे। ऐसी स्थिति पैदा होगी, कि देश खुशहाल हो जायगा। वह उस दिन काफी खुश था। सचा कि आगे जीवन में अब कठनाई नहीं होगी। उसे शादी करने के लिए लड़की के माँ-बाप को हजार या पन्द्रह सौ रुपया नहीं देना पड़ेगा। पिछले साहूकार से जमीन वापस मिल जायगी। वह गृहस्थ बनेगा। यहाँ भविष्य में मजदूरी करने भी आवेगा, तो फिर सपरिवार साथ रहेगा। खाने-पीने की तकलीफ तो कम से कम मिट जायगी। वह स्वयं कच्चे-पक्के खाने से बीमार रहता है। उसका पेट गड़बड़ चलता है। एक कम्पाउंडर ने बताया था कि उसका खून नहीं बनता है। ठीक खाने-पीने से ही शरीर बनता है।

उसके बाद उन नेताजी के फिर दर्शन नहीं हुए। मालूम हुआ, कि वह सब तो किसी चुनाव के लिए तैयारी थी; जिसमें कि वे भी चुन लिए गए थे। उसे लोगों की इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। वे तो गाँधीजी की बातें करते हैं। क्या गाँधीजी के चेले झूठ बोलेंगे। तभी उसके साथी ने बताया था, कि गाँधीजी कभी उस हिल स्टेशन पर आए थे, तो एक भारी भरकम सेठ की कोठी पर टिके थे। फिर वे स्वयं मजदूरों के झगड़ने वाली प्रवृत्ति से सन्तुष्ट नहीं थे। भोंपालू ने उन सब बातों पर विचार किया और उसे गहरी निराशा हुई थी, कि स्वराज्य के बाद भी वे उसी तरह जानवरों वाली जिन्दगी बसर कर रहे हैं। बल्कि आज उससे भी बदतर हालत है। मँहगाई बढ़ गई है; कपड़ा चौगुने दाम पर मिलता; भुना चना तक एक रुपया सेर है। ऐसा अन्धेर तो पहले कभी नहीं हुआ था। वे अक्सर मजाक में बैठकर गुनगुनाया करते हैं—अन्धेर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा!

लेकिन वह वहाँ की दुकानों की सजावट देख कर दंग रह जाता है। कपड़ा, फल, तरकारी, मिठाई और क्या-क्या सामान वहाँ नहीं भरा रहता है। अमीरों के पास आखिर इतना पैसा कहाँ से आ गया है? उनको क्या कोई तकलीफ नहीं होती है। एक पंडित जी ने उसकी जन्म कुंडली बना कर बताया था, कि कुछ ग्रह खराब हैं। अतएव उसे पूजा आदि करवानी चाहिए। दुःष्ट ग्रहों के बाद बृहस्पति की दशा आवेगी और वह खुशहाल होगा। पाँच रुपए उस पूजा के करने की व्यवस्था में उसने खर्च किए थे। एक हाथ देखने वाले ने उसकी हथेली की रेखाएँ देख कर उसकी पीठ थपथपाई थी, कि उसका योग काफी कमाने का है। वह मिट्टी की भाँति पैसे कमाएगा। उसके तीन लड़के-बाले होंगे। बुढ़ापा सुख से कटेगा। वह उन लोगों की बातों से आश्चर्य चकित रह गया था। सच ही सोचता कि भाग्य की बात है। कब उसके जीवन में क्या हो जाय, वह

स्वयं नहीं जानता है । अभी हाल में एक कुली के नाम दस हजार की लॉटरी आ गई थी। वह धनवान बात की बात में बन गया था। उसने इसलिए कुछ हनुमान चालिसा के श्लोक गलत-सलत याद कर लिए थे। हनुमान जी के मन्दिर में वह हफ्ते में एक बार जाता और पत्थर की उस विशाल मूर्ति के लिए उसके मन में श्रद्धा उमड़ पड़ती। पुजारी सिन्दूर का टीका उसके माथे पर लगाता। एक बात जरूर उसकी समझ में नहीं आती थी, कि राम-लक्ष्मण ज्यादा शक्तिशाली थे या हनुमान ? उस विशाल मूर्ति के कन्धों पर पिद्दी की भाँति वे दोनों लगते हैं।

पुजारीजी के प्रति उसकी अपार श्रद्धा बढ़ गई थी। उनकी दया के कारण मन्दिर की कोठरियों में शरणार्थी बस गये थे। कभी वे किसी युवती से साधारण ठठोली भी कर लिया करते थे; पर उन सब युवतियों को वे बेटी मान कर पुकारते थे। उसके साथी कभी-कभी पुजारी जी की चर्चा करते बताते कि वह चरित्रहीन हैं। इस बात को भोपालू हजम नहीं कर पाता था। वह स्वयं आगे कहीं-कहीं सन्देह उन पर करता। लेकिन पुजारी की आलोचना करके, भगवान को नाखुश करने के लिए वह तैयार नहीं था। पिछले दिनों श्रावण में वहाँ झूलों का उत्सव हुआ था। वहाँ की रासलीला ने उसके मन में काफी भद्दी छाप लादी थी। वह उस पर अधिक जैसे कि नहीं सोचना चाहता था। उसके साथी ठीक ही कहते थे, अमीरों को जीवित रहने के लिए तो संघर्ष नहीं करना पड़ता है अतएव वे पशुओं की भाँति जीवन व्यतीत करते हैं। व्यभिचार करना तो अपना जन्म-सिद्ध अधिकार समझते हैं। उनकी नारियाँ स्वयं घर से ऊब, यहाँ आकर उच्छृंखल जीवन व्यतीत करती हैं। औरों के लिए वे समाजिक व्यवस्था बना कर भी स्वयं उसका पालन नहीं करते हैं। वे मेमों की तरह रह कर हराम का खाना खाती हैं, और फिर चरित्रहीन जीवन व्यतीत करती हुई, उसे हजम करती हैं।

उस आलोचना से भी उनकी समस्या नहीं सुलझती है। दिन-प्रति दिन मुसीबतें बढ़ती जा रही है। वे स्वयं अपने को कच्चा सा पाते हैं। पिछले दिनों उनके एक साथी को निमोनिया हुआ, दूसरे को दस्त लगे, तीसरा रपट पड़ा; तीनों बिना किसी ठीक इलाज के मर गए। पिछले साल तक तो साधारण किसान ही यहाँ आते थे, पर अब तो फौज से निकाले गए सिपाही भी बड़ी तादात में आ गए हैं। वे उस युद्ध की बातें सुनाते हैं, कि किस भाँति जान-हथेली पर रख कर उन लोगों ने युद्ध में जापान को हराया था। तब वे नहीं जानते थे, कि आगे यह हाल होगा। उनको तो बताया जाता था, कि अब बेकार सिपाहियों के लिए रोजगार खोले जावेंगे। उनकी नई-नई बस्तियाँ बसेंगी और वे अपने बाल-बच्चों के साथ अमन-चैन से जीवन व्यतीत करेंगे। उनके हजारों साथी इस लड़ाई में आगे की सन्तान को खुशहाल देखने के लिए मरे थे। वे युद्ध की कठिनाइयाँ बताते। जापान की लड़ाई का हाल सुनाते हुए कहते थे, कि इस लड़ाई ने हम सब को तबाह कर के कहीं का नहीं रखा हैं। अमीर ज्यादा धनी हो गया और गरीब मर रहा है। अब बेरोजगारी बढ़ रही है, तो सुना कि फिर दूसरी लड़ाई छेड़ने की बात चल रही है। मानों कि इस लड़ाई ने ही दुनियाँ को अधिक नष्ट नहीं किया है। वे कहते हैं कि आगे की लड़ाई के लिए अब हम कभी भरती नहीं होंगे। सब झूठे वादे करते हैं, और अपनी प्रतिष्ठा के लिए लड़ते हैं।

वे फौजी आज अपने को फालतू कहलाते हुए शर्माते थे। बताते कि गाँव में रह कर वे क्या करते। पेट भरने का सवाल है, इस पर एक कठिनाई और आ गई है, कि कोटा और कराँची पहले वे नौकरी पर जाते थे तो कुछ बेकारी इससे कम हो जाती थी। आज वहाँ का रास्ता भी बन्द था। नेताजी की फौज के सिपाही हँसते हुए कहते थे, कि लाल किले पर तिरंगा तो लगा, पर वे तबाह हो गए। यदि नेताजी

जिन्दा होते, तो यह दिन देखना न बदा होता। सच्चे नेता तो वे ही थे, जो कि सदा उनका साथ देने को तैयार रहते थे। 'आजाद फौज' के कई किस्से सुनाया करते और बताते कि अमीरों के लड़के जो कि अफसर थे, वे आज बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पा गए हैं। यहाँ के नेताओं को गाली देते थे कि चुनाव के समय बड़े-बड़े वायदे किए थे, कि 'आजाद हिन्द फौज' का सम्मान करेंगे; पर आजादी के बाद भी उनके भाग्य से कुलीगिरी नहीं मिटी। लुच्चे-बदमाश, जब कि मौज उड़ा रहे हैं।

भौपालू उन सब की बातें सुनता है। वह बहुत छोटा था, इसी लिए फौज में नहीं जा सकता था। लेकिन इन फौजियों की बातों को सुन कर उसे दिलासा नहीं मिलता है। लड़ाई के जमाने में इन फौजियों की क्या शान थी। उनसे सब डरते थे। जब ये छुट्टियों पर आते तो बहुत सा सामान साथ लाते। गाँव में एक नया जीवन आ गया था। लगता था, कि जिन्दगी आगे अब आराम के साथ कटेगी। वह सब नहीं हुआ। मानों कि पिछला जीवन एक सपना था। फिर अफसर मौज आज भी कर रहे हैं; मुसीबतजदा तो बस ये सिपाही लोग हैं। पहले भले ही वे लोग उनको छोटा समझते रहे हों, पर आज परिस्थितियों ने सब को एक कर दिया है। फिर भी समझ में नहीं आता है, कि कब तक ऐसे ही दिन कटेंगे और जीवन में बार-बार एक कमजोरी वह इधर क्यों महसूस करता है। वह अपने से जैसे कि बहुत असन्तुष्ट हो।

उस नैपाली छोकरी की शादी इस बीच हो गई है। वह वहाँ दावत खाने गया था। वहाँ उसने देशी शराब पी थी। वह लड़की तो जरा भी नहीं बदली है। उसका पति उनके परिवार में ही रहता है। वह हाल में ही नैपाल से आया था। अब वह उस युवती को लेकर पहाड़ चला जावेगा। इस घटना ने उसका मन जरूर विचलित कर दिया। गाँव लौट जाने की हूक मन में उठती। वहाँ मानों कि कोई उसे

बुला रहा हो; कह उसकी भाभी ने भूत बन कर उसको मोह तो नहीं लिया है। वह वहाँ आजीवन नहीं जा सकेगा। एक दिन यहीं बीमार होकर मर जायगा, जैसे कि अपना निश्चित भविष्य वह जान गया हो।

वे आजाद फौज के साथी, फिर भी मस्त रहते हैं। कहते हैं कि इस तरह कुलीगिरी करने वे नहीं आये हैं। वे तो मौका देख रहे हैं। ठीक सा नेता मिलते ही वे बगावत करके, सेठों और अमीरों को खतम कर देंगे। वे अपनी पलटनें बनाने की सोच रहे हैं। जल्दी ही उनकी एक सभा होने वाली है। आगे वे नेताओं की धोखाधड़ी में नहीं पड़ेंगे। वे लड़कर अपने लिए रोजी और रोटी की माँग करेंगे। अपनी सरकार होती तो क्या आज तक हमारा प्रबन्ध नहीं करती। आखिर अपने परिवारों की रक्षा की चिन्ता नेताओं को है। वे आगे पचासों साल तक का प्रबन्ध अपने बच्चों के लिए करने की बात सोचते हैं।

भौंपालू से एक ने बताया था, कि वे जल्दी ही अपनी लड़ाई छेड़ देंगे। इस जिन्दगी से वे परेशान हो उठे हैं। उस लड़ाई की बात वह स्वयं नहीं समझता था। हाँ, एक नौजवान उन लोगों से न जाने क्या-क्या बातें करता है। वह उनके यहाँ पड़ा रहता है। साथी बताते हैं कि वह फरार व्यक्ति है। सरकार ने उसे पकड़ने के लिए पाँच हजार की बोली लगाई है। वह मजदूरों का नेता है, वह उनको न जाने क्या-क्या किताबें पढ़ कर सुनता है। वह उनका रूखा-सूखा खाना खाता है। उसका शरीर बहुत दुर्बल है, आँखें गड्ढे में धँसी लगती हैं। वह बीमार लगता है। वह भौंपालू की पीठ पर हाथ मार कर थप-थपाता हुआ कहता, कि वह बेकार न जाने क्यों घबराता है। एक दिन सारी दुनिया में मजदूर राज करेंगे। वह दिन बहुत दूर नहीं है।

(३)

तीन-चार दिन तक भौंपालू बीमार रहा। उसे मलेरिया न जाने कैसे हो गया। उस रात वह बहुत भीग गया था और फिर रात भर

ठीक तरह सो नहीं सका था। उस युवक ने न जाने क्या दवा दी थी। वह अब कुछ स्वस्थ है। वह ऊपर एक चट्टान पर बैठकर नीचे की ओर देख रहा है। आजकल आसमान साफ है, नीचे टेढ़ी-मेढ़ी काली सड़क पर लारियाँ ऊपर की ओर आ रही हैं। चारों ओर पहाड़ी पर छाई हरियाली न जाने क्यों बहुत सुन्दर लग रही थी। जब वह बीमार था तो एक दिन वह नैपाली युवती आई थी; बड़ी देर तक उसका गरम माथा दबाती रही और अंत में बताया था, कि वह अपने पति के साथ नैपाल जा रही है। उसे यहाँ रहना पसंद नहीं था, अन्यथा वह उससे शादी कर लेती। वह अपने देश जाने की बात न जाने कब से सोच रही थी। बिना किसी खास भावुकता के उसने बताया था कि उसे गाँव की जिन्दगी पसन्द है। फिर इशारा किया था कि उसकी बहिन उससे भिन्न है। वह इधर आवारा होती जा रही है। वह समझदारी के साथ यदि उससे बातचीत करे तो वह स्वीकार कर लेगी। भेद की बात यह भी बताई थी कि वह स्वयं उससे तथा माँ से उसकी वकालत कर चुकी है आज अकेले उसके पिता की मजदूरी से तीन प्राणियों का पेट नहीं भर सकता है। उसकी माँ अस्वस्थ रहती है। बहिन को अपने शृंगार तथा आवारागर्दी से अवकाश नहीं मिलता है। वह चाहे तो आसानी से सारी गृहस्थी ठीक तरह चलने लगेगी।

वह सच ही पहाड़ चली गई थी। लेकिन ये लोग सोच रहे हैं कि एक-दो रिक्शे स्वयं खरीद करके चलाया करें। इसके लिए सब मिल कर आपस में चंदा करने की सोच रहे थे। एक बार फिर वे हड़ताल करके अपने लिए क्वाटर बनवाने की बातें सोच रहे हैं। वे लड़ाई लड़ के अपनी रोजाना राशन बढ़वाना चाहते हैं। कई और माँगें भी उनकी हैं। एक बात उसकी समझ में नहीं आती है, कि मजदूरों का राज्य जब आएगा तो क्या वे सच ही हुकूमत करेंगे? ये अफसर और अमीर तब क्या करेंगे? क्या यह थानेदार तब भी इसी तरह घूस

लिया करेगा और वह साहूकार जो एक हजार का पट्टा लिखा करके केवल आठ सौ बीस नकद देता था। एक सौ बीस पहले साल का सूद, खजाना खोलने की फीस बीस रुपया, चालिस रुपया लक्ष्मी की पूजा तथा स्टाम्प आदि में खर्चा होता था। वे आजाद फौज वाले तो ताव में कहते हैं, कि उनके अफसर सब नालायक थे। कुछ काम नहीं जानते। बस ह्विस्की पिया करते और गप्पे हाँकते थे। उनका चरित्र नहीं होता और हर जगह बदमाशी किया करते थे। दिलेर भी नहीं होते हैं। यदि उनके हाथ में फौज दे दी जाय तो वे उसका इन्तजाम काफी कम खर्चे में कर सकते हैं। वह कहता था कि जल्दी ही सारी सेठों की फैक्टरियाँ को वे छीन लेंगे। जमीन बराबर बाँट देंगे और नए सिरे से सारा इन्जाम ऐसा करेंगे कि सब को रोटी ठीक तरह मिल जाय।

भौंपालू की समझ में यह बात भी नहीं आती है। वह पहले तो समझ नहीं सकता, है कि वह उस लड़की से शादी करेगा। वह भले ही बड़ी बहिन की तरह सुन्दर न हो, फिर भी बन-ठन कर काफी रहती है; सस्ता पाउडर क्रीम मुँह पर मलती है और काफी आकर्षक कपड़े पहनती है। उसे देख कर गुंडे सीटी बजाया करते हैं। वह सिगरेट बहुत पीती है। उसे ये बातें मालूम हैं। लेकिन उसकी बड़ी बहिन ने बताया था कि वे गरीब लोग हैं; अपनी इज्जत बेचना उनके लिए आसान नहीं होता है। हमें एक दूसरे को उबारना ही होगा। अपनी बहिन का कसूर न बताकर, वह एक खानसामा को गालियाँ देती थी, जिसने कि पहले-पहल उसे प्रलोभन देकर चंगुल में फँसाया था। वह साफ साफ बताती थी, कि गरीबों की लड़कियों के पीछे सेठों के गुन्डे लगे रहते हैं। उनका ख्याल है कि गरीबों की औरतों की कोई इज्जत नहीं होती। उसे चंद पैसे में आसानी से खरीदा जा सकता है। अपनी बहन की चिन्ता उसे थी। वह चाहती थी, कि वह अच्छा जीवन व्यतीत

करे। इसलिए उसके भविष्य के लिए निश्चित हो जाना चाहती थी; किन्तु उस बात पर वह उस युवती को कोई आश्वासन नहीं दे सका। वह स्वयं उस स्थिति को समझ लेना चाहता था।

भाभी की हत्या के पीछे भी तो एक साधारण घटना थी। भाभी के चरित्र पर कभी किसी ने लाँछन नहीं लगाया था। एक युवती यह है, जो चरित्रहीन है। क्या वह उसे अपने गृहस्थ में लावेगा। फिर अभी तो वह स्वयं अपना पेट नहीं भर पाता है। उस युवती के अनुरोध का मूल्य चुकाना आसान नहीं लगा। लेकिन जो युवक उनके साथ आकर टिका है, वह न जाने क्यों बहुत आशावादी है। एक हिचक के साथ उससे जब उसने उस युवती की चर्चा चलाई थी, तो वह हँस पड़ा। फिर बोला था, कि इसका चरित्र तो ऐसी कसोटी नहीं है। देखना यह होगा कि वह मजबूत लड़की है, या नहीं। फिर कै दिन यह सब बनाव-ठनाव चलता है। सलाह तो यह दी थी, कि वह अपने संगठन को मजबूत करने में अधिक समय दे। शादी आदि तो फुरसत की बातें होती हैं। वह और भी बातें बताता था, कि आज किस तरह सारी दुनिया का मजदूर संगठित होकर, अपने दुश्मनों से मोर्चा ले रहा है। वह लड़ाई छिड़ी हुई है, फिर अपने देश में भी जागृति आई है। मजदूर अपने संगठन के लिए गोलियाँ खाता है। यह वह जानता है, कि उसका यह संगठन ही उनकी सब से बड़ी शक्ति है।

तभी भोंपालू को किसी ने पुकारा। ऊपर पगडंडी से वह युवती नीचे आ रही थी। उसे देख कर वह चुप हो रहा। वह आज एकान्त में अपनी कई बातें सोच कर, उन पर अन्तिम निर्णय ले लेना चाहता था। वह युवती तो पास आकर बोली, "तुम्हारे घर पर पुलीस गई थी।"

"पुलीस?"

"किसी बाबू को पकड़ कर ले गई है, अभी-अभी वे लोग लॉरी से नीचे चले गए हैं। कुलियों ने हड़ताल कर दी है।"

वह इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था। क्या किसी ने पुलीस को पता दे दिया ? वह उनका साथी युवक पकड़ा गया। वह अब न जाने कब छूटेगा ! वह किस जुर्म में पकड़ा गया है ? वह तो बहुत बीमार लगता था। क्या उसे जेल होगी ?

वह युवती बता रही थी, कि पुलीस पूरी तैयारी करके आई थी। रिक्शे वालों तथा और कुलियों की हड़ताल पर अफसर बहुत नाखुश हैं। कुछ कुलियों को वे पकड़ कर ले गए हैं। म्युनिस्पेलटी वाले नीचे से कुली बुलवाने की धमकी देते हैं। नीचे परेड पर सामान पड़ा है, मुसाफिर खड़े हैं। जो नवाबजादियाँ रिक्शे और डाँडी के बिना एक कदम नहीं हिलती थीं, वे सब पैदल चल रही हैं और बच्चों को लाद-लाद कर ले जा रही है।

•

भोंपालू चुप रहा, तो वह सहानुभूतिपूर्वक बोली, "धूप में क्यों बैठे हैं। तबीयत खराब हो जायगी। जब तक ठीक न हो जावें, हमारे घर रहें।"

यह कैसा आमंत्रण था, वह समझ नहीं सका। लेकिन एक बात वह समझ गया कि उनकी सालों से रुकी हुई लड़ाई आज छिड़ गई है। पुलीस वालों की बातें वह जानता है। क्या वे उस युवक को भी परेशान करेंगे ? वह जेल जाना तो समझ में नहीं आया। पुलीस किस जुर्म में उसको पकड़ कर ले गई है। इस हिल-स्टेशन में कुलीगिरी करते-करते उसके बूढ़े मर गए। वे भी नहीं पनप पा रहे हैं। इस पर किसी की हालत ठीक नहीं है।

वह नीचे जाती हुई लारियों को फिर देखता रहा। किसी एक में वह युवक भी जा रहा होगा। वह यदि यहाँ न आ गया होता, तो शायद पुलीस से मुठभेड़ होती। तभी वह चौंका। एक पुलीस के सिपाही ने उसे ठोकर मारी, "ए 'फाल्टू' चल बोझा उठा। शाला बैठा-बैठा मौज उड़ा रहा है।"

लेकिन भोंपालू तो उसी तरह बैठा रहा। उसने फिर उसके एक ठोकर मारी और कहा, "चल रे हड़ताली के बच्चे। सब शालों को हवालात में बन्द करने का हुक्म मिला है।"

भोंपालू उलझन में पड़ गया। क्या यह सिपाही सच ही उसे पकड़ कर ले जायगा। वह कमजोर तो था ही, उसकी आँखें मुँद गईं और सिर एक ओर लुढ़क पड़ा। इससे पहले कि वह नीचे गिरे उस युवती ने उसे सँभाल लिया। उस सिपाही को बताया, कि वह बहुत बीमार है। सिपाही अजीब से इशारे करता हुआ नीचे सड़क की ओर मुँह से सीटी बजाता बढ़ गया।

कुछ देर के बाद भोंपालू की बेहोशी टूटी, देखा कि वह युवती आँचल से हवा कर रही थी। एक बार उसने नीचे की ओर देखा। वहाँ हरी भरी घाटी थी। वह टेढ़ा-मेढ़ा मोटर का रास्ता.......! वह कुछ देर बैठा रहा। फिर सोचा कि अब घर जाना चाहिए। उसने उठने की चेष्टा की, पर कमजोरी के कारण बैठ गया। बड़ी देर तक आँखें मूँदे हुए, बैठा रहा।

वह युवती तो कुछ देर के बाद बोली, "शायद बुखार आने वाला है। आप तो काँप रहे हैं।"

उसके सहारे वह उठा। बिना आनाकानी के उसके घर की बटिया पर बढ़ गया। वह उसका अनुरोध ठुकरा नहीं सका। बार-बार वह सोचता था, कि यह नई जंग छिड़ गई है। वे दोनों मिल कर उस संघर्ष में कूद कर, पुरानी व्यवस्था के खिलाफ लड़ेंगे। वे विजयी होंगे। भविष्य उनका है। उनका वह साथी यही कहता था, कि पुलीस, और फौज में उनके ही भाई काम करते हैं। वे एक दिन उनका साथ देंगे। फिर एक नया सा सवाल उठता था, कि क्या वह अब गृहस्थ सच ही बनेगा। भाभी भी किसी ऐसी ही गृहस्थी की कल्पना करती थी। वह युवती भी दूर नैपाल के गाँवों में एक नए गृहस्थ का निर्माण करने गई है। वह स्वयं भले ही अलग रहना चाहता हो, अब एक नए जीवन में प्रवेश कर रहा है। वह युवती रास्ते में बता चुकी थी, कि उसके पिछले-जीवन की बातें भुला दी जाँय। आगे वह सदा उसका साथ देगी। वे दोनों मिल कर जंग में कूद पड़ेंगे।

कुत्ते

रामेश्वर ने चुपचाप उस कागज के टुकड़े पर लिखे हुए अक्षरों को पढ़ा और 'चिट' फाड़ डाली। उसकी पत्नी बीमार है। लोगों का अनुरोध है, कि एक बार वह उसे देख जाय। पत्नी इधर कुछ भावुक हो गई है। कई पिछली बातें याद दिलाती है, लेकिन कहीं कमजोर नहीं। कलकत्ते में जब जेल के भीतर गोलियाँ चलीं और कई साथी मर गए, तो उसने लिखा था, "तुम जिस राक्षसी हुकूमत से लड़ कर, जनता का खुशहाल राज लाना चाहते हो, उस पर मेरी पूरी-पूरी आस्था है। आज मुझे सच ही बहुत गुस्सा आया। जेलों के भीतर इस तरह अंधाधुंध गोलियाँ चलाना कायरता है। यह जनता की सरकार का काम नहीं, तानाशाही हुकूमत का फौजी शासन है।"

कृष्णा की अस्वस्थता! वह कोई पहेली नहीं; उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी आवश्यक नहीं लगता है। वह उस उजड़े हुए मध्यवर्ग की एक इकाई है, जो आसानी से नष्ट हो जायगा। उस वर्ग पर भरोसा रख कर, एक बड़े अरसे तक अँग्रेजों ने हिन्दुस्तान को उपनिवेश बनाए हुए रखा। आज भी राष्ट्रीय सरकार उसे बहकाए रखना चाहती है, कि वे अपने को मजदूर और किसानों की पाँती में न गिनें। उनके हर-एक संघर्ष की बात की मजाक उड़ाया करते हैं। फिर उस पत्नी की अस्वस्थता तो उस सारे वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जिसकी आर्थिक-व्यवस्था टूट चुकी है। जो कि निम्न मध्यवर्ग और वर्गहीन समाज के बीच सा अनायास इस महायुद्ध के बाद आ खड़ा हुआ है।

वह एक भारी दलदल से निकल कर, अब मजदूरों और किसानों के नेतृत्व में एक भीषण संघर्ष के दौर से गुजर रहा है। कृष्णा पहले काफी उलझन में रही, साधारण मजदूरी करके पति जो पैसा पाता, उससे गुजर नहीं होती थी; फिर दो बच्चे आए। वह कमर तोड़ मेहनत करती रही, तो टायफाइड हो गया। उसमें दवा तथा खाने-पीने का ठीक प्रबन्ध न हो सकने के कारण हल्का बुखार रहने लगा और फिर जो उसने खाट पकड़ी, तो लगभग एक साल से उठी नहीं, रोग असाध्य ही है।

दूर के रिश्तेदार आए, मायके वाले; सबने एक ही बात दुहराई, "रामेश्वर होनहार लड़का है, पर यह 'कम्यूनिस्ट पार्टी' क्यों उसने अपनाई है? सुना सरकार उसे अच्छी नौकरी दे रही थी। आज राष्ट्रीय सरकार के हाथ मजबूत करने चाहिए थे।"

उनका ख्याल है कि कृष्णा यदि अपनी तथा बच्चों की परेशानी को लेकर झगड़ा मचावे, तो रामेश्वर का दिमाग ठंडा पड़ जायगा। एक बार वह नौकरी में फँस जाय, तो बस फिर अपने वर्ग की कमजोरियों के साथ उलझ कर भाग नहीं सकता है। भला, पढ़ा-लिखा व्यक्ति है। उसकी सहेलियों ने सलाह दी थी, कि वे कम्यूनिस्ट विरोधी मोरचा बनाने को तैयार हैं। वे प्रचार करेंगी कि ये लोग चरित्रहीन होते हैं। भावुकता में शादी करके, बच्चे बीबियों को सौंप कर गुलामी की बेड़ियाँ पहनाते हैं। उसके बाद उच्छृंखल जीवन होटलों, सिनेमा तथा कॉफी हाउस में लड़कियों के साथ व्यतीत करते हैं। वे शराब पीते हैं और सब के सब चरित्रहीन होते हैं। आज की नारी अपने अधिकारों के माँग के साथ ऐसे लोगों को चुनौती देती है।

कृष्णा वह सुन कर मुरझा गई थी। रामेश्वर तो आदर्श पति उसके लिए रहा है। कभी उसने यह दावा नहीं किया था, कि वह पुरुष है। प्रकृति ने उसे बलवान बनाया है। नारी तो कोमल होती है। इसके विपरीत उसने तो उसे विकसित होने का पूरा-पूरा अवसर दिया था। सन्

१९४२ में भी वह पकड़ा गया था। छै महीने के बाद छूट कर आया था। पहले कई महीने वह फरार रहा था। उन दिनों वह बताया करता था, कि जनता में एक जागृति आई है, पर नेता उसे नहीं समझ पाए; कभी उन्होंने जनता को अपने पैरों पर खड़ा होना नहीं सिखलाया। जनता तो गुस्से में तोड़-फोड़ कर रही हैं, कि उनके नेता क्यों पकड़े गए हैं। पर नेता उनके लिए कोई कार्यक्रम नहीं छोड़ गए। सरकार के भारी आतंक के बाद भी जनता आगे बढ़ी और उसने अपने को आन्दोलन में झोंक दिया। वह फिर एकाएक लापता हो गया था। अखबारों में खबरें निकलती थीं, कि बलिया, बिहार, सी० पी० और न जाने कहाँ-कहाँ जनता ने अपना राज कायम कर लिया है। दिन बीतते चले गए, मँहगाई बढ़ती गई। वह परेशान रहने लगी। उसके रिश्तेदार और सहेलियाँ उसके पास कम आती थीं। इसी बीच उसका बच्चा बीमार पड़ा और वह बिना किसी ठीक दवा-दारू और इलाज के मर गया।

उस रात वह अकेली अपने मरे हुए बच्चे को गोदी में लिए रोती रही। सुबह महरी ने आकर आसपास के लोगों को जमा करके, उससे बच्चा छीना था। उस प्रकार बच्चे के मर जाने से उसे बहुत दुःख हुआ था। न जाने क्यों तभी एकाएक एक रात बहुत व्याकुल हो उठी। रामेश्वर आया था। वह अवाक् बड़ी देर तक उसे निहारती रही। वह सन्न थी। उसके हृदय की गति तेजी से बढ़ने लगी। उसका हृदय एकाएक भर आया। वह भारी-भारी सिसकियाँ लेकर रोने लगी। रामेश्वर ने तभी बताया था, कि सरकारी कुत्ते गन्ध पा जावेंगे। वह भारी खतरा लेकर आया है। वह स्वयं इस घटना से विचलित हो उठा है। बड़ी देर तक उसकी उंगलियाँ पत्नी के बालों से खेलती रहीं। फिर उसके बहते हुए आँसुओं को सारी के छोर से पोंछ कर बोला, "सैकड़ों माँएँ अपने बच्चे गवाँ चुकी हैं। चौदह-पन्द्रह साल के एक बच्चे को सरकार ने फाँसी दे दी है। वह माँ का बेटा था, उन सैकड़ों बच्चों में एक।"

वह अधिक न बोल सका। उसका मुँह ऊपर उठा, चुपचाप चूम कर चला गया था। उसके चले जाने पर, वह फिर घबरा उठी थी कि एकाएक फौजी वहाँ खुले हुए दरवाजे से आए थे। चारों ओर तलाशी लीं; कई बातें पूछीं। सी० आई० डी० के कुत्ते बड़ी देर तक न जाने क्या-क्या बातें पूछते रहे। अँग्रेज अफसर ने उसे पकड़ने की धमकी दी। कुछ फौजी गन्दे-गन्दे मजाक करने में नहीं चूके। उसका हृदय न जाने कैसे पत्थर का बन गया। उनके चले जाने के बाद उसे बड़ा भरोसा हुआ, कि उसका पति कितनी मुसीबतें उठाता है। पुलीस, फौज; सब उसका पीछा करती है। एक वह है, कि बच्चे के मर जाने पर दुःखी है। उसका वह मातृत्व, उसे सफल लगा। वह सोचती, कि देश जीवन और मृत्यु के संघर्ष से गुजर रहा है। क्रान्ति की सफलता के बाद दुनिया बदलेगी वे आजाद हो जावेंगे।

फिर पति पकड़ा गया था। कुत्तों ने उसे परेशान किया, मारा पीटा। उसने उनसे मिलने की चेष्टा की पर असफल रही। उनकी चिट्ठियाँ भी दूसरे-तीसरे महीने आती थीं। साधारण हालचाल रहता था। बच्चे का अभाव अखरता। उसने एक स्कूल में पढ़ाने की नौकरी शुरू कर दी। वहाँ बच्चों के साथ वह अपने को भूल जाती थी। मन फिर भी खाली-खाली रहता। वह क्रान्ति अब कहीं नहीं दीख पड़ती थी। युद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं, उसी की हलचल कानों में पड़ती थी। बंगाल में अकाल पड़ गया था। हजारों आदमी जेलों में बन्द थे। राशन दूकानों पर मिलता था। कपड़े के 'परमिट' चल पड़े थे। जीवन की गति में रुकावट आ गई थी। वह न जाने क्यों अपने को अस्वस्थ पाने लगी। युद्ध काल ने एक बेचैनी फैला दी। कहीं कोई उत्साह नहीं मिलता था। वह पति से मिल कर बहुत सी बातें पूछना चाहती थी। समाचार पत्रों में ठीक समाचार नहीं छपते थे। अजीब सी अफवाहें चालू थीं, सारी दुनिया एक नए दौर से गुजर रही थी, पर

उसका पति कैद था। उसकी सहेलियाँ सहानुभूति प्रकट करती, लेकिन वह सब से अलग ही रहती थी।

पति तभी एक दिन छूट आए। बताया था, कि वह आन्दोलन असफल रहा है। वह तो नेताओं ने साम्राज्यवादियों से समझौता करने के लिए एक जाल बिछाया था। जनता को वे सदा आगे बढ़ने से रोकते रहे। आज जनता आगे बढ़ी, तो उसके पास कोई कार्यक्रम नहीं था। फौजी हुकूमत ने उनके आन्दोलन को छिन्न-भिन्न कर डाला है। जनता गुस्से में भर कर भी चुप है। फिर न जाने क्या नई राजनीति बताई थी। वे बड़ी-बड़ी रात तक मजदूरों की बस्तियों से लौटते। सहेलियाँ हँसी उड़ाती हुई कहती थीं, कि जेल से माफी माँग कर आए हैं। कम्यूनिस्ट यदि आज गद्दारी न करते तो देश जरूर आजाद हो जाता। वह तो बताती थीं, कि उनको रूस से पैसा मिलता है। उनका देश तो रूस है। वे देश के दुश्मन हैं, और आज अँग्रेजों के दोस्त बन कर उनकी मदद कर रहे हैं। वे गाँधी जी तथा और नेताओं को खरी-खोटी सुनाते हैं।

रामेश्वर से जब उसने वे बातें कहीं तो वह मुस्करा कर बोला, "कम्यूनिस्ट पार्टी पर सबकी आस्था है, कि वहाँ अच्छे काम करने वाले त्यागी युवक काम करते हैं। उनका खयाल है कि वे उनका साथ देते, तो देश आजाद हो जाता। पर सन् २२, ३०, तथा ३२ में जब जब जनता आगे बढ़ी, तो उसको रोका गया। वे आन्दोलन मानों कि आजादी के आन्दोलन न होकर, नेताओं के समझौता करने के हथियार थे। नेता इस जनता के आन्दोलन को भी अपना नहीं मानते। वे समझते थे कि डर कर साम्राज्यवादी हुकूमत में उनको कुछ हिस्सा दे देंगे; पर आज लड़ाई के जमाने में जब अँग्रेज अपनी जिन्दगी की लड़ाई लड़ रहा है, तो वह इन पर विश्वास कैसे कर सकता है।"

कृष्णा ने उन बातों को सुना। वह कुछ अधिक जैसे कि समझना चाहती थी, पर फिर एक नया जीवन उसमें आया। वह माँ बनने की आशा करने लगी। रामेश्वर से कहती थी, कि लड़की होगी, तो वह उसे नाचना-गाना सिखाएगी। रामेश्वर को उसकी खास चिन्ता नहीं थी। वह अपने काम में जुटा रहता था। कभी-कभी कृष्णा को लगता कि वह उसकी उपेक्षा करता है। वह उससे खास बातें भी नहीं करता था। एक-दो बार वह अस्वस्थ हुई तो उसने खास पूछ-ताछ नहीं की; साथ ही वक्त बेवक्त अपने साथियों को लेकर आते और पूछते कि तीन-चार के लिए खाना हो सकेगा। उसने स्कूल से आधी तनख्वाह पर छुट्टी ली थी, गहने पहले ही सब बिक चुके थे। न जाने किस तरह वह पचास रुपए में गृहस्थी चला रही थी। नर्स ने कहा था, कि वह बहुत कमजोर है। उसे दवा खानी चाहिए। इधर वह अपनी सहेलियों से काफी कर्जा ले चुकी है। वे कभी यह नहीं पूछते कि खर्च कैसे चलता है? वह घर जैसे कि उसी का हो।

बार-बार वह यह बात कहना चाहती थी। छोटा-मोटा सौदा-पत्ता ले आया करें तो उसकी जान बचे; कन्ट्रोल की दूकान पर जाना उसके बश की बात नहीं है। न वह मिट्टी का तेल मँगवा सकती है। किस-किस बच्चे की मोहल्ले में खुशामद करे। फिर उन बच्चों को उपहार कुछ कहाँ दे पाती है। पास-पड़ोस में आने वाली महरी फटा-पुराना कपड़ा पाकर छोटे-मोटे काम मुफ्त में कर देती थी। आज कपड़े का अकाल पड़ा हुआ है। उसके पास पहनने के लिए ठीक कपड़े नहीं हैं। परमिट का कपड़ा दूकान पर मिलता ही नहीं है। पति से वह साफ-साफ बातें, इसी लिए कर लेना चाहती है। दुनिया की भलाई के पीछे, घर का चूल्हा बुझा रहे, यह उसकी समझ में नहीं आता है।

रामेश्वर बड़ी रात को आता। चुपचाप रसोई में जाकर ठंडा खाना खा, अपने बिस्तर पर लेट जाता था। रात में न जाने कब लौटे इस लिए बाहर से एक दरवाजे पर ताला लगा कर जाता है। पड़ोस की एक लड़की कृष्णा के साथ सोती है। वैसे उसकी बहिन ने भी शीघ्र ही आने को लिखा है। रामेश्वर सारी स्थिति को समझ कर चुप रहता है। एक दिन सुबह को उसने यह बता दिया कि शीघ्र ही वह एक ट्यूशन पर जायगा। कृष्णा को आश्वासन दिया था, कि वह व्यर्थ घबराती है। वह सारा इन्तजाम करेगा। इधर वह बंगाल के अकाल के कारण बहुत व्यस्त रहा। लोग उनको अँग्रेजों का दोस्त कहते हैं, पर उनके सैकड़ों साथियों को सरकार ने कैद कर रखा है। लड़ाई ने काफी भ्रष्टाचार फैला दिया है। बंगाल को अँग्रेजों ने नष्ट करने का षड़यंत्र रचा। लाखों व्यक्ति भूख से मर गए हैं।

कृष्णा पति को फिर जैसे कि पहचानने लगी। पति का चुप रहना अब उसे नहीं अखरता था। पति की बातें वह सुनती रहती; वे अधिक से अधिक समय निकाल कर उसे कई बातें सुनाते। उसके खाने-पीने के लिए चिंतित रहते। जाड़ों के कपड़ों का प्रश्न उठाते। अपनी जैसे कि उनको कोई परवा नहीं थी। कृष्णा का मन कृतज्ञता से भर आता। वह सोचती, कि ऐसे पति के साथ कहीं वह झगड़ सकती है। सहेलियों के तानों का वह उत्तर देती, कि उसका पति एक सच्चा साथी है। वह उसे अपने अधिकारों से मुक्त रखता है। जब उसका लड़का हुआ, तो अज्ञात खुशी में फूल उठी थी। रामेश्वर कहीं बाहर एक कॉन्फरेन्स में गया था। लौट कर पाया कि कृष्णा निखर आई है। उसने बताया था कि बच्चा उनकी तरह का है।

(८)

रामेश्वर चुपचाप कृष्णा के बारे में सोचने लगा। डॉक्टर साथी बता चुके हैं कि कृष्णा कुछ घंटे (क मेहमान है। पर अकेली कृष्णा ही अस्वस्थ नहीं। देश की लाखों नारियाँ इसी भाँति संघर्ष कर रही हैं। वह जानता है, कि पत्नी को देखने जाना संभव नहीं है। उसके साथी भले ही कहें कि यह जरूरी है, पर वह जानता है, कि पुलीस के कुत्ते वहाँ होंगे। कौन जाने मध्यवर्ग के गाँधी टोपी वाले राष्ट्रीय प्रतिनिधि अपना यश बढ़ाने का मौका ढूँढ़ लें। उसका पकड़ा जाना स्थानीय पार्टी के काम में रुकावट डालेगा। जब कि मजदूर एक बड़ी हड़ताल करके पूँजीवादी सरकार को चुनौती देने वाला है, कि वह उनकी नहीं है। यदि सेठ मिल बन्द करेंगे, तो मजदूर छीन कर उसे चलाने की व्यवस्था करेगा। वह आज देखता है कि एक बाढ़ आई है। खेतिहर मजदूर उठा है। शहरों का मजदूर जागा है; वह जैसे कि काफी धोखा खाने पर गुस्से में भरा हो। सन् १९४२ में उसने अपना गुस्सा अँग्रेजों से लड़ने में लगाया था। उस समय मशीनगन की गोलियाँ खा कर भी वह बढ़ा था। आज वे गाँधीवादी अहिंसा की बन्दूकों की गोलियाँ खाते हैं। आज आँसू गैस, लाठियाँ, और गोलियाँ रोज का धन्धा हो गया है। वह गोलियाँ खा कर मजबूत हो रहा है। वह आज फौलादी लगता है। वह खेतों को छीन रहा है, फैक्टरियों पर अपना अधिकार करना चाहता है। वह गुस्से में है, कि राष्ट्रीय सरकार झूठ ही ज्यादा अन्न उपजाने की बातें करती है। मिलें बन्द हो रही हैं। सेठ कहते हैं, कि बेकार माल पड़ा हुआ है। खरीददार नहीं है। भुखमरी और बेकारी बढ़ रही है। एक नए दलदल में इन्सान फँस गया है।

वह अब एक फाइल पढ़ने लगा। कारबन की कॉपी में एक रिपोर्ट थी—मजदूर यूनियन के एक जलसे की। वहाँ मजदूरों ने बताया था, कि किस तरह एक फैक्टरी पर चार दिन उन लोगों ने अपनी हुकूमत

चला कर काफी पैदावार बढ़ाई थी। यदि उनका वश चले, तो सस्ते कपड़े से देश को पाट दें। नेता चिल्ला कर कहते हैं, पैदावार बढ़ाओ। गाजर, मूली, सलजम खाकर पेट भरो। तीस साल पहले गाँधी जी ने एक रोशनी देश में जलाई थी। आज उसी का फल सब पा रहे हैं। नेताओं की आलोचना न कर, उनकी तपस्या पर विचार करो। गाँधी जी के बाद राजघाट स्वतंत्रता का तीर्थ स्थान बन गया है। कुछ ना-समझ युवक बम बल्बों में बना कर फेंक रहे हैं। वे गुमराह हैं। उनकी बात न सुनो। हमारे देश की संस्कृति! कभी हमने सारी दुनिया को एक नई रोशनी दिखलाई थी। आज अपना महान् अतीत तुमको भूलना नहीं चाहिए।

"रामेश्वर!"

तभी किसी साथी ने उसे पुकारा। कहा, "कृष्णा की बहिन मुझे मिली थी। वह बहुत चिन्तित है। कहती थी, क्या 'कम्यूनिस्ट' इन्सानियत भी भूल जाते हैं। उसका अनुरोध है कि तुमको वहाँ जरूर जाना चाहिए।"

"मानवता!" रामेश्वर हँस पड़ा। इस मानवता की नई व्याख्या करनी पड़ेगी। अभिजात वर्ग और सेठों ने मानवता का नाम गाँधीवाद दिया है। उसके लिए ये आँसू बहा कर सत्य, अहिंसा की कसमें खा, मजूर और किसानों पर गोलियाँ चला कर कहते हैं, कि मानवता के दुश्मनों को क्षमा नहीं करना चाहिए। बोला वह "सुरेन्द्र आया था, उसी ने बताया कि सारा मोहल्ला शिकारी कुत्तों से भरा है। वे जनाते हैं कि कृष्णा मर रही है। वे परिवार वालों को उकसाते हैं कि यह कैसा धर्म है कि पत्नी पति का मुँह देखे बिना मर जायगी······"

"फिर भी आशा से तुम मिल सकते हो।"

"आशा से?"

"उसने खबर भेजी है, कि वह प्रबन्ध कर देगी। जीजी से इस आखिरी मुलाकात का भार वह अपने ऊपर लेने के लिए तैयार है।"

रामेश्वर ने इस बात का कोई उत्तर न देकर पूछा। "तुम तो ट्रेड यूनियन की फ़ैक्शन से आ रहे हो। ठीक समझो तो खाने के बाद कहीं बैठक रख लो। इस जगह को भी बदल लेना चाहिए। आज शाम वाहिद मुझे सामने की गली से गुजरता हुआ दीख पड़ा है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। तुम मुझे अरविन्द के यहाँ मिल सकते हो।"

यह कह कर वह जल्दी जल्दी कपड़े बदलने लगा। कहा फिर, "चीजें सब इधर-उधर पहुँचा दी हैं। आज प्रान्तीय रिपोर्ट आई है। यह लो संगठन की नई रिपोर्ट मैंने तैयार करली है।"

"और आशा को जो वादा कर आया हूँ।"

"तुम्हारी राजनीति मेरी समझ में नहीं आती है।"

"मेरी राजनीति! मेरा ख्याल है, कि तुम जरूरत से ज्यादा शकी हो गए हो। इसका कारण मुझे लगता है कि तुम्हारा 'डी सेन्टरी' वाला रोग, तुम्हारी राजनीति पर छा गया है। जरा-जरा बहस होगी, तो तुम कह दोगे कि यह तुम्हारा जन-आन्दोलन की प्रगति के प्रति विरोध व्यक्त करता है। तुम जनता के जंगजू होने की बात कहते हो। उसे कौन नहीं मानता? कुछ नहीं होगा तो कह दोगे कि सब 'पेटी बोर्जुआ' ख्यालात हैं; तुम बार-बार सुझाते हो कि जितनी जल्दी यह ढुल-मुल वाला सड़ा-गला अंग पार्टी से निकल जाय, उतनी ही पार्टी स्वस्थ हो जायगी। यह सब तो मुझे एक अजीब अंधविश्वास लगता है।"

रामेश्वर ने एक बार उस साथी की ओर देखा। पिछले जमाने में कम्यूनिस्ट पार्टी पर बाबू लोग छा गए थे। जन आन्दोलनों का संघर्ष बढ़ा, तो वे हिल उठे। बहुत से साथी अपने वर्ग के प्रति आस्था रख

कर, पीछे छूट गए। मजदूर ने अपनी लड़ाई छेड़ी; विद्यार्थी-आन्दोलन आए; मध्यवर्ग के बाबुओं ने भी अपने वर्ग की झूठी मर्यादा फेंक कर हड़ताल का नारा दे दिया। पूँजीपतियों की राष्ट्रीय सरकार संभली और दमन का आखरी अस्त्र उठा कर, उसने देश में फौज और पुलीस का राज्य ला दिया। देश एक विशाल कारागार ही नहीं बन गया, सेठों और मजदूरों की लड़ाई का नया मैदान भी बन गया। जहाँ एक वर्ग दूसरे से संघर्ष करके अधिकारों की भीख न माँगकर, अपने अधिकारों को छीनने को तैयार था। मजदूर सच्ची आजादी की एक नई तसवीर बना रहा था। जिसकी झाँकी भर काँग्रेस कभी दिखलाती थी। उस आँतक से घबरा कर साथी पीछे मुड़ कर अपने वर्ग की ओर देखने लगे। कोई जनता की तेजी पर अविश्वास करता है। कोई सुझाव देता, कि समझ-बूझ कर फूँक-फूँक कदम उठाना चाहिए; हर एक अपनी केंचुली बदलना चाहता है। यह आशा की बात भी कुछ वैसी ही थी।

आशा उसके दूर रिश्ते की साली है। एक बार उसे उसने देखा है। उसका पति एक अच्छे ओहदे पर है। आशा ने काफी अनुनय-विनय कर उनको राजी किया है, कि वे कृष्णा को अपने घर ले आवें। यह भी उनसे कहा है, कि रामेश्वर उसे देखने वहाँ आ सकता है। यह बात बहुत दिनों से चल रही है। आज कृष्णा का 'चिट' पाकर उसे बल मिला है। वह इसी लिए बोला, "कृष्णा ने आज एक 'चिट' भेजी है। आशा का पति हमारे कई साथियों को नजरबन्द करवा चुका है। वह हमारे वर्ग का शत्रु है। कृष्णा वर्ग के शत्रु के घर में नहीं जायगी। वह जानती है, कि मर जायगी; पर आज छोटे तबके की लड़कियाँ और औरतें उसे घेरे रहती हैं। वह लिखती है कि जिस नए वर्ग की बात मैं बताया करता था, उसकी स्नेह की डोरियाँ

स्वस्थ हैं। वह जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रही है। यदि मरेगी भी तो सन्तोष के साथ मरेगी।"

रामेश्वर अधिक बात न बढ़ा कर चुपचाप नीचे उतरा। उसने साइकिल उठाई और बाहर पहुँचा। वह चुपचाप गलियाँ पार करने लगा। इस शहर में उसने अपने जीवन के तीस साल से अधिक व्यतीत किए हैं। कांग्रेस का आन्दोलन देखा, सन् १९४२ का आन्दोलन देखा और फिर इस नए दौर से वह गुजर रहा है। कृष्णा ने उसके जीवन में आकर, उसे और मजबूत बनाया है। एक दिन जब वह उससे बोला था, कि अब उसे अन्डर ग्राउँड जाना है, तो वह चुप रही थी। वह सच ही एक नई परीक्षा थी। वह कुछ भावुक होकर बोला था, "मैं जानता हूँ कृष्णा, कि तुम अस्वस्थ हो, फिर *मेरा इस प्रकार जाना एक साधारण घटना नहीं है। कौन जाने भविष्य* में मिलें न मिलें। पार्टी का यह निर्णय है और मैं बड़ी सुबह चला जाऊँगा।"

कृष्णा मानों कि सब जानती हो। साधारण गिने चुने शब्दों में कहा था, "यह तो मैं बार-बार तुमसे कहती थी। इतने दिन तुम यहाँ रहे मैं बार-बार डरती थी, कि पकड़ लिए जाओगे, तो लोग क्या कहेंगे! भला जेल में बैठ कर क्या करते? मुझे हेड मिस्ट्रेस ने अब के एक सौ बीस का ग्रेड देने को कहा है। सोच रही हूँ, किसी तरह अगले साल ट्रेन हो जाऊँ।"

वह जैसे कि अधिक बात न करना चाहता हो। कृष्णा ने आगे कुछ नहीं पूछा, कि कहाँ रहेंगे? वह नहीं चाहती है, कि इधर-उधर की बातें जान ले। पति आवश्यक बातों पर उससे राय ले ही लिया करते हैं। आजकल काफी सावधानी से चलना पड़ता है। वह जब कभी इस बात पर सोचती, तो मन में एक बेकली उठती थी, कि कौन जाने क्या हो जाय? भविष्य के बारे में अधिक न सोच कर वह

चुपचाप अपना काम करती थी। उसका ममेरा भाई आया था। वह जब कालेज में पढ़ता था, तो विद्यार्थियों के एक जलूस में पकड़ा गया। एक माह जेल में रह कर, माफी माँग कर छूटा था। अब वह १९४२ की जेल का सार्टिफिकेट लेकर जूडिसियल मजिस्ट्रेट बन गया। उसने कृष्णा से कहा था, कि रामेश्वर व्यवहार कुशल नहीं है। अन्यथा पुलीस का बड़ा साहब बन गया होता। वह तो न जाने क्यों इस तरह मारा-मारा फिर रहा है। एक उम्र तक क्रान्तिकारी रहना ठीक बात है, फिर उसका फल चखना आवश्यक है। नेहरू की सरकार क्या अपनी सरकार नहीं है; क्या नेहरू पूँजीपति हैं ?

पति वह सब सुनकर चुप रहे थे। उनके साथी भी तो यह कहते हुए पहले हिचकते थे, कि नेहरू मजदूर वर्ग का शत्रु है। उनकी नीति सेठों की योजनाओं को बल देती है। उनकी फौजें तथा पुलीस जनता के आन्दोलनों को कुचलती हैं। वे मजदूरों के नेताओं को गुन्डा कहते हैं। वे अपने को सच्चा समाजवादी कहते हैं। वे मजदूरों की लड़ाइयों को गुँडागिरी कहते हैं। वे जनता के समीप न पहुँच कर अधिकारियों के फाइलों में लिखे विवरण से जनता को पहचानना चाहते हैं। वे जनता की ओर पीठ करके विदेश की सरकारों के भरोसे जीने की चेष्टा कर रहे हैं, कि मुसीबत में वे उनकी सहायता करेंगे।

लेकिन यह कृष्णा मर जायगी। यह मौत सदा से काफी अन्ध-विश्वास लाती रही है। सच ही मौत व्यक्तियों को दूर अदृश्य कर देती है। वह उस व्यक्तिगत मनोविज्ञान में उलझने के लिए आज तैयार नहीं है। भावी समाज के निर्माण में हजारों लाखों व्यक्ति नष्ट हो जावेंगे; फिर कृष्णा जिस बहादुरी से इस रोग से लड़ी है, वह एक असाधारण नारी का बल था। उसने कभी अपनी व्यक्तिगत कमजोरियों को उभार कर उसे रोकने की चेष्टा नहीं की। वह जानती है कि आज जेलों के भीतर तक उनके साथी गोलियों से मर रहे हैं। बाहर तो अँधाधुन्ध

गोलियाँ चलती हैं। सड़ी-गड़ी सामाजिक व्यवस्था को सँभालने की निरर्थक चेष्टा कर रहे हैं। उनकी फौजें आज उनकी रक्षा करने में अपने को असफल पाती हैं। अपने वर्ग को नष्ट होते देख वे बौखला उठे हैं।

डॉक्टर कहते हैं; कि यदि कोई कीमती इंजक्सन दिया जाय या रुपया काफी खर्च किया जाय, तो शायद कुछ दिन वह और जीवित रह सकेगी। कुछ दिन उसका जीवित रहना आवश्यक है। जितने दिन इस दुनिया में संघर्ष कर सके, ठीक है। अपने बच्चों की रक्षा के लिए वह जीना चाहती है। वही मोह उसका होगा। माँ की कामना, कि अपने बच्चों का सुखद भविष्य देख सके। यह मौत आसान सी बात आज तो हो गई है। मजदूर और किसानों की औरतें आज अपने अधिकारों की माँग के लिए छाती पर गोलियाँ खा कर मर जाती हैं; कृष्णा मध्य-वर्ग की माता है, इसीलिए क्या उसकी मौत नई बात है !

—वह अब गली पार करने लगा। फिर बम-पुलीस की जनवादी टट्टियाँ दीख पड़ीं, जहाँ कि मोहल्ले वाले सामूहिक रूप से जाते हैं। पानी के बम्बे पर दो औरतें आपस में झगड़ रही थीं। खपरैलों के कच्चे घरों से धुआँ ऊपर उठ रहा था। वह साइकिल पर से उतरा और चुपचाप एक कमरे में घुसा, साइकिल एक ओर खड़ी की और भीतर वाले कमरे में बिछी हुई दरी पर लेट गया।

(२)

रामेश्वर बड़ी रात तक उन रिपोर्टों को पढ़ता रहा। देश में नई जागृति आई थी। वह नया संघर्ष एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए था; जहाँ कि महायुद्ध का नारा देकर बेकारी हल करने का सुझाव हो। वे जागरूक मजदूर-किसान शान्ति की रक्षा के सच्चे सिपाही थे। पर वे ऐसी शान्ति नहीं चाहते थे, जिसमें रोजी और रोटी की व्यवस्था न हो; जहाँ पूँजीपतियों के चेहरे लगा कर नेता कहें, कि उनकी जनता की राष्ट्रीय सरकार है। तिलंगाना, ग्रीस, आसाम, बंगाल, चीन,

पूर्वी एशिया; सब देशों के कमकर शान्ति के लिए एक नई दुनिया बसाने की सोच रहे थे, जहाँ कि एक दूसरे के शोषण पर समाज की व्यवस्था नहीं बनेगी। वे व्यक्ति के हित से हर समाज का सामूहिक कल्याण चाहते हैं। वह एक भारी तूफान उठा था, जो मौनसून की भाँति देश पर छा कर एक नई हरियाली लावेगा। वह नई दुनिया, जिसकी वे कल्पना करते थे, शीघ्र ही वास्तविक रूप ले लेगी।

आशा ने मानवता की दुहाई दी है। मानो कि कृष्णा सच्चे माने में मानवता की रक्षा के लिए अपना जीवन उत्सर्ग नहीं कर रही हो। इतिहास के बनाने वालों ने जान-बूझ कर शोषितों की मानवता को सामने नहीं रखा। बुद्ध की अहिंसा को गाँधी जी ने अपनाया। गाँधी-वादी मानवता का नया रूप देश पर छाया हुआ फौजी शासन है। उस मानवता की रक्षा करने, जनता को सच्ची मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए, देश में आज नए-नए कानून बनाए जा रहे थे। शान्ति की इस नई उपासना का चित्र नेता बार-बार आगे लाना चाहते हैं; और जो स्थानीय मजदूरों ने सालों तक आशा की कि स्वराज्य के बाद, उनके अधिकारों का प्रश्न हल हो जायगा। उनको जाने के लायक तनख्वाह मिलेगी। उनके परिवारों को कुछ पनपने का अवसर मिलेगा। वे प्रतीक्षा करते-करते थक गए। उन्होंने जब 'हड़ताल' का नोटिस दिया, तो अधिकारी झुँझला उठे। सी० आई० डी० के कुत्तों ने उनके साथियों को बिना किसी 'वारंट' के पकड़ लिया है। अधिकारी सब के सब आज देश भक्त बन गए हैं। अभिजात वर्ग की रक्षा करने में, अपनी सच्चाई पाते हैं। पुलीस के अधिकारी आज नेताओं का आशीर्वाद पाकर, जनता और मध्य वर्ग के लड़ाकू साथियों के पीछे, शिकारी कुत्तों की भाँति पड़ कर, उनको अपनी हवालातों में भरते हैं। शहर-कोतवाल शाम को स्थानीय नेताओं की बैठक में शामिल होकर बताता है कि वह 'लाल पिस्सुओं' को मिटा देगा। लेकिन घर पर पत्नी से रोना

रोता है, कि ये कम्यूनिस्ट नींद हराम किए हैं। सरकार नाखुश है, कि पुलीस और सी० आई० डी० फरारों को नहीं पकड़ पा रही है। हजारों गैर कानूनी पर्चे छप रहे हैं। शहर में इस क्रान्ति का असर बढ़ता जा रहा है।

वह कृष्णा साथियों की बातें सुन कर खिल उठती है। उस रोगिणी को सन्तोष है, कि पार्टी का काम इतनी तेजी से बढ़ रहा है। साधारण दवाएँ भले ही अपना असर न करें, पर हड़ताल की तैयारी की बात सुनकर तो वह चारपाई पर बैठ गई थी। मानों, कि उस बड़ी लड़ाई की विजय का उसकी बीमारी वाले संघर्ष से सीधा सम्बन्ध हो। इधर वह आशा से बहुत नाखुश है। गलती आशा की थी। उसी ने बताया था कि आज कल नौकरों के दिमाग बहुत चढ़ गए हैं। उनकी गुस्ताखी बढ़ती जा रही है। नौकरानी ने बच्चे को ठीक तरह दूध नहीं पिलाया तो साहब आशा पर झुँझलाए और आशा ने उस नौकरानी को खरी खोटी सुनाई। नौकरानी मुँह लगी तो उसने थाने में फोन करके उसे हवालात भिजवा दिया था।

कृष्णा पहले तो चुप रही, पर जब बार-बार आशा ने यह साबित करने की चेष्टा की कि उसका वह सही कर्तव्य था, तो वह गुस्से से झुँझलाई; पर आशा शायद कुछ और सोच कर आई थी। उसने सुझाव दिया कि बच्चे यहाँ बिगड़ रहे हैं। इस बस्ती में छोटी जाति के बच्चों के साथ गन्दी-गन्दी गालियाँ सीख रहे हैं। वह उन बच्चों को अपने साथ ले जाना चाहती थी। एक बात उलझन में उसने पूछी थी, "आखिर पार्टी वाले अच्छा बँगला लेकर आप लोगों को वहाँ क्यों नहीं रखते हैं। यह तो उनका कर्तव्य है। न उनके परिवार वालों की परवा करते हैं। यह तो सरासर अन्याय है।"

कृष्णा जैसे कि वह सब नहीं सुनना चाहती थी। पर आशा ने

कहा, "शाम को वे कोर्ट से इधर होकर आवेंगे, तो बच्चों को ले जावेंगे, सुबह सलाह कर ली है।"

आशा को उम्मीद थी कि इस भार को लेकर, वह अपनी जीजी को उबार लेगी। पर उत्तर मिला, "उनका प्रबन्ध हो चुका है आशा। एक मध्यवर्गीय परिवार ने उनकी जिम्मेदारी पिछले सप्ताह से ले ली है। तेरे परिवार में रह कर शायद वे भी हवालात नौकरों को भेजने के सबक सीख जाते.........।"

अधिक वह नहीं बोली; पास बैठी मजदूर औरतों के साथ मिल की बातें पूछती रही। यह आशा के प्रति एक उपेक्षा का भाव था। आशा जब कुछ देर बाद उठ कर जाने लगी तो कहा उसने, "आशा, व्यर्थ तू मेरी चिन्ता करके अपने स्वप्नों को मिटाती है। तेरी जगह तो वहाँ है, जहाँ शाम को अफसरों की बीवियाँ अपने पतियों के साथ हरी 'लाउन्स' पर बिछी हुई कुर्सियों पर बैठती हैं। वहाँ वे साहित्य, सिनेमा आदि की चर्चा करती हैं। पुरुष समुदाय ह्विस्की की चुस्कियाँ लगाता रहता है और वे शरबत पीकर आगे बियर तथा जिन की ओर प्रगति करने के लिए लालायित रहती हैं.......।"

आशा अधिक न सुन सकी थी। वह चुपचाप बाहर चली आई। कार पर बैठ कर वह सोचने लगी, कि जीजी ने बात सच कही है। यह जो नया मजिस्ट्रेट आया है, वह बहुत उदारता पूर्वक उसे देखता है। कई बार वे उनके यहाँ "लंच" पर जा चुके हैं। वह उससे डर कर भी कोई विरोध नहीं कर सकती है। क्या उसकी जीजी ने किसी से यह बात सुनी है। वह अन्यथा ऐसा इशारा नहीं करती। वह बियर पीना चाहती है, पर वह कड़वी लगती है। लेमनेड मिला कर भी एक-दो घूँट से अधिक गले से नहीं उतरती। सुना मिसेज अखिलेश.......! वह न जाने क्यों विद्रोह नहीं कर पाती। लेकिन जीजी की वह सारी भावना झूठी है। वह आज हमारी सहानुभूति से दूर

रहना चाहती है। वह बहुत निर्बल है, फिर भी उनके वर्ग का मजाक उड़ावेगी। वह उसे अपने नजदीक नहीं पाती। उसका विश्वास है कि आज पुराने सामन्तवादी नाते-रिश्ते टूट चुके हैं, और अपने-अपने वर्ग के नए परिवार बन रहे हैं। उसकी भावुकता पर यह बड़ी चोट है। जीजी को अपने बच्चों को सौंपने तक में हिचकिचाहट है। वे बच्चे तो उसके पति को नारे सुनाते हैं—पुलीस राज्य मुरदाबाद।

आशा ने रामेश्वर तक यह बात पहुँचाई थी, कि वह इसका फैसला कर दें। जीजी उसकी सहायता स्वीकार नहीं करती है। यदि पहले भुवाली या कहीं और सेनिटोरियम में चली गई होती तो आज यह कठनाई न पड़ती। वह सब साथियों से नाखुश थी कि वे कृष्णा को न जाने क्यों बहकाया करते हैं। जब कि वे उसका ठीक प्रबन्ध नहीं कर पाते, तो कम से कम पार्टी का झूठा अनुशासन उस पर लागू तो न किया करें। कृष्णा ने उसे बताया था कि वह पार्टी की सदस्या है। उसे इसका बड़ा गर्व था। वह कहती थी, कि स्वस्थ होने पर वह महिलाओं के संगठन में भाग लेगी। आशा को यह सुनकर आश्चर्य हुआ था, कि गाँव की औरतें जो पढ़ी लिखी नहीं हैं, वे पार्टी की सदस्या हैं। अपनी बैठकें करती हैं; अपनी लड़ाइयाँ लड़ती हैं; स्वयं अपने अगले कदम का फैसला लेती हैं। अपनी लड़ाई के बारे में पूरी-पूरी जानकारी रखती हैं। और उनका बहुत कड़ा अनुशासन है। वह कृष्णा पार्टी के प्रति इतनी आस्था रख कर, अपना जीवन नष्ट कर रही है। यही आशा बार-बार कहती थी।

—रामेश्वर थोड़ा मन में हलचल पाता है। कृष्णा किसी घड़ी मर सकती है। सुना कि वह सूख कर हड्डी भर रह गई है। उसका सारा

स्वास्थ्य उनकी गरीबी ने चाट डाला; पर यह सामाजिक व्यवस्था और उसका आर्थिक आधार नष्ट हो चुका है। कृष्णा यदि सच ही मर गई, तो जीवन में एक भारी चोट उसे लगेगी। कृष्णा फिर भी उससे दूर नहीं रहेगी। अपने प्रति दिन के संघर्ष में वह उसे बल देती हुई मिलेगी। यह यादगार और भावुकता उसके हृदय में कहीं कमजोरी न लायगी। मौत भली नहीं लगती। उस पर सोचते हुए कहीं अज्ञेय पीड़ा होती है। वह जानता है कि जो इस संघर्ष में मर गए, उनका सामूहिक व्यक्तित्व भविष्य में चमकेगा। कृष्णा ने स्वयं इसीलिए गृहस्थी का जीवन का ढाँचा तोड़ कर, पार्टी 'कम्यून' के सामूहिक जीवन में रहने की आदत डाली थी। वह भविष्य को भली भाँति पहचानती है। उससे भी अधिक आशा को उसने सब से अधिक प्यार किया है। उसकी शादी की तैयारी में वह महीनों जुटी रही। आज उस आशा से वह सम्बन्ध विच्छेद करते हुए नहीं हिचकी। उसकी कोई परवा नहीं की। उस घर में जाने का आग्रह ठुकरा दिया। बच्चों का भविष्य तक वह उसके हाथ में सुरक्षित नहीं समझती है। आज के संघर्ष की तीव्रता का सही-सही ज्ञान मानों कि उसे है। अन्यथा वह क्यों यह मोरचा लेती।

ट्रेड यूनियन की बैठक में मजदूर साथियों की बातों में भी उसने एक तेजी पाई। वे इस हड़ताल की तैयारी करके आखरी जंग छेड़ देना चाहते हैं। जनता उठ रही है। वह आज अपने हकों की माँग करके, एक लड़ाई छेड़ देना चाहती है। वह बीच का समझौता नहीं चाहती। वह बन्दूक और तोपों से नहीं डरती। उनके नेताओं में एक नई ताजगी वह पाता है। उनमें मजदूरों की फौलादी शक्ति का आभास मिलता है। उनमें मध्यवर्ग के साथियों वाली ढुलमुलाहट नहीं मिलती; छोटी-छोटी बातों पर वे बहस नहीं करते और अपना मत साफ-साफ बिना किसी हिचकिचाहट के रखते हैं।

यहीं वह पाता है, कि संघर्ष के बीच तप कर ही उनकी नई नीति चमक रही है। वह अपने को भूल जाता है। एक भारी आँधी जैसे कि उठती है। उसका एक साथी आसानी से बताता है, कि राष्ट्रीय पूँजीवाद की शिकार कृष्णा हो गई। उसका संघर्ष एक बहादुर साथिन का संघर्ष था। मरते दम भी पार्टी का काम वह याद करती थी। लाल झन्डे के लिए वह मर गई।

लेकिन रामेश्वर यह बात जानता ही था। वह मौत नई फिर भी लगी। वह साथी बता रहा था, कि कुत्ते लाश को घेरे हैं, कि शायद इसी मौके पर रामेश्वर को पकड़ लें......

वे कुत्ते जो कभी अँग्रेजों के पुचकारने पर दुम हिलाते थे; आज फिर राष्ट्रीय पूँजीवादी नेताशाही की पुचकार पर उनके पाँवों में लोटते-पोटते हैं।

अवशेष

सिद्धनाथ चुपचाप अपने घर लौट आया। आज जो जीवन में रुकावट आई थी, वह नई बात नहीं। उसने बेइमानी की, और जान बूझ कर। वह जानता है, कि वह अपनी उस बेइमानी में अकेला नहीं है। उससे सहानुभूति रखने वालों का एक बड़ा परिवार है। जिनको कि वह समय-असमय पर कुछ पैसे का फायदा करवा दिया करता है। वे लोग एक ऐसा वातावरण बना लेते हैं, कि कोई उसका बाल बाँका नहीं कर सकता है। उसकी कार्य शैली तथा व्यवहार कुशलता की वे-लोग सराहना करते हैं। कुछ ऐसा आडंम्बर उसके लिए रच लेते हैं, कि लोग उसको पहचानने में उलझ जाते हैं। वह तो सदा अपने समीप के लोगों को बताता है, कि कमीना वह भले ही हो, पैसे खूब कमाता है। कई सार्वजनिक संस्थाओं से उसका लगाव है। अपनी प्रतीष्ठा बनाए रखने के लिए वह चँद बड़े आदमियों से मित्रता का ढ़ोंग रचता है। चापलूस ऐसा है कि पत्थर भी पिघल जाय। फिर सच बात यह है कि आज का मध्यवर्गीय समाज केवल फरेब पर चलता है। व्यर्थ का आदर्शवाद इसलिए वह नहीं अपनाता। वह जानता है, कि वह नीच प्रवृत्ति का है और छोटे नौकर-चाकरों को सताने में उसकी आत्मा को शान्ति मिलती है। उसे सन्तोष होता है, कि कम से कम अपनी शक्ति का उपयोग कहीं न कहीं वह कर सकता है। अपनी झुँझलाहट को उतारने के लिए कहीं उसे अवसर मिल जाता है।

पत्नी सदा की भाँति ही मुरझाई मिली, उसका छोटा लड़का जन्म का लूला है। पति कुछ ऐसा है कि कभी उससे अपनी बातें नहीं बताता; चौबीस साल शादी किए हो गए हैं, पर आपस में कभी सलाह से काम नहीं हुआ। पति अपना निर्णय उस पर लागू कर के ही सन्तोष कर लेता और वह घर में चूल्हा-चक्की से बाहर नहीं झाँकती थी। पति-पत्नी का सम्बन्ध चार बच्चों के रूप में फला-फूला; पर वह पति को कभी पहचान नहीं सकी। जब शुरू-शुरू में वह आई थी, तो पति एक दफ्तर में बाबू थे। पति-पत्नी अकेले ही एक सस्ते मकान में रहते थे। पति ऑफिस जाते, तो बाहर ताला लगा जाते। उसने इसका विरोध किया तो उसे सुझाया था, जमाना खराब है। वह अधिक क्या कहती! पड़ोसिनें खिड़की खोल कर उस पर हँसतीं, कि अच्छे आदमी के पाले पड़ी है। उसने अपना विद्रोह इस पर प्रगट किया, तो वे बोले थे कि वे चरित्रहीन औरतें हैं। वह इस बात को मन के भीतर दबाए रही; फिर अस्वस्थ पड़ गई और उसके मायके वाले उसे ले गए थे। वहीं उसने सुना कि उसके पति पर जालसाजी करने का इल्जाम लगाया गया है। दफ्तर की कई चीजें गायब थीं। फिर वे जमानत पर छूट गए और मुकदमें में पत्नी का सारा गहना बिका, तब जाकर जज ने बरी किया था। नौकरी नहीं मिली। वह अनुभव ऐसा था कि मध्यवर्ग के एक ऐसे तबके से परिचय हुआ, जो कि आगे जीवन में उनको रास्ता दिखला सकता था।

पैरवी के दौरान में उनको काफी दौड़-धूप करनी पड़ी थी। कुछ लोगों को उन्होंने बताया था कि आफिस की पार्टी-बाजी के चक्कर में से आ गए। हेडक्लार्क कायस्थ है और दूसरी जाति वालों को पनपने नहीं देता है। फिर वह कामचोर है और अपने नीचे वालों को इसी भाँति सताया करता है। दूसरों से उन्होंने अफसर की चरित्रहीनता की बात कही, कि वे खुद मौज करने के लिए पैसा चाहते हैं। सही

बात कुछ रही हो, पर अपनी जाति वालों के बीच वे शहीद बन गए। बँगले बाजी तथा चार सौ बीस वाली बातों में प्रवीण हो जाने के कारण उनको दूसरी नौकरी आसानी से मिल गई। शहर में एक सार्वजनिक पाठशाला की कार्य-समिति में उनकी जाति वालों का जोर था, अतएव कायस्थ पार्टी को नीचा दिखलाने के लिए उनकी नियुक्ति कर दी गई। वे वहाँ खजांची बना दिए गए। अनुमान-पत्र में घाटा था। अतएव एक व्यक्ति पर कई चार्ज लगाए गए और उसे मजबूर किया गया, कि त्याग-पत्र दे दे। वह नियुक्ति पहले तो एक तूफान लाई, पर सार्वजनिक संस्था के रोजाना वाले झगड़ों के बीच आगे दब गई। इसे उन्होंने अपनी सब से बड़ी विजय मानी और यह अनुमान लगाया, कि बिना पार्टी बाजी के इस दुनिया में चलना संभव नहीं है। इसके लिए काफी समझ-बूझ कर चलना होता है और बिना पग-पग पर झूठ बोले कदापि काम नहीं चलता।

लेकिन एक बात जीवन में कटुता लाती थी। कुछ लोग उनके जीवन के भीतरी भेदों को न जाने कैसे जान गए थे। वह बात मन में भारी पीड़ा फैलाती थी। इस समाज में चरित्र कहाँ है। धनी तो दुनिया भर में व्यभिचार करते हैं। नारी और पुरुष के कई अवैध सम्बन्ध समाज में चलते हैं। पर वह सन्तोष कोई सान्त्वना नहीं दे पाता था। उनका बाबा भले ही स्वयं मर गया था, फिर भी वे 'बाबाजी के बेटे' कहलाते थे। उनके बाबाजी ने पिता जी के मर जाने पर पुत्र-बधू को नारी रूप में प्राप्त कर; एक दिन समाज के बीच घोषित किया था, कि उनकी कमजोरी के कारण यह सब हुआ है। समाज ने उनको क्षमा कर दिया था। वह बात अधिक दिनों तक नहीं चली। कारण कि उनकी माता ने आगे बाबा का मोह छोड़ कर किसी कहार के छोकरे से सही नाता जोड़ा था। फिर किसी अज्ञात कारण से आत्महत्या की और वह इतिहास वहीं पूरा हो गया।

वह इतिहास भले ही उनके बाबाजी के लिए रोमांचकारी रहा हो। मोहल्ले में पुलीस आई थी, कि एक विधवा गर्भपात करने की सोच रही है। पुलीस का कोतवाल उनकी प्रतिष्ठा की रक्षा करने स्वयं आया और सुझाव दिया था, कि चार-पाँच हजार में मामला ठीक हो जाएगा। पर उसके बाबाजी तो काफी चतुर निकले। बताया था, कि यह नई बात क्या थी? मोहल्ले में जो पेनशनयाफ्ता तहसीलदार हैं, वे एक खशानी रखे हुए हैं; बीबी का मुँह कभी नहीं देखते। दूसरे साहब तीसरी शादी करने के चक्कर में हैं। पुराने जमाने के लोग हैं। वक्त पर खूब खाया-पिया है।

कोतवाल साहब अवाक् सारी बातें सुनते रहे, तो वे तपाक से बोले थे, "मियाँ, लाओ लिखकर दे दूँ। कौन अपना ही बच्चा तो है। इसमें लाज-शरम क्या है?"

लोगों के बीच वे यह चर्चा बढ़ा-चढ़ा कर करते थे, कि कौन उन्होंने पाप किया है। फिर वेद-शास्त्र से उदाहरण देते, कि यह तो ऋषि-मुनियों के जमाने से चला आया है। बहू को भी उन्होंने बहुत समझाने-बुझाने की चेष्टा की थी। पर उसकी अवस्था बीस की थी, जब कि वे अठावन पार कर चुके थे। वह भले ही पहले डराने-धमकाने पर उनके वश में आ गई, आगे अब दूर रहने लगी। उसे उनसे घृणा हो गई थी। कभी-कभी वह पछताती थी, कि उसने अपना यह और परलोक दोनों बिगाड़ डाला है। उस लड़के को बहुत प्यार करती थी। लेकिन एक अज्ञात व्यक्ति एकाएक जीवन में प्रवेश कर बैठा। वह कहार का छोकरा नया-नया परिवार में रखा गया। गाँव का पक्का देहाती था। वहाँ की बातें सुनाता था। वह कभी-कभी मजाक करता पूछता था कि वह किसका लड़का है? बताता कि गाँवों में तो विधवाएँ अपने मन के आदमी के साथ रहती हैं। यह तो अजीब तमाशा है।

कुछ हो; बात बढ़ी और बूढ़े से जब उन दोनों ने कहा, कि वे साथ रहेंगे तो अगले दिन कहार का छोकरा चोरी के जुल्म में जेल भेज दिया गया। जो बाबाजी कोतवाल के आगे कभी नहीं झुके थे, आज खान्दान की इज्जत के लिए एक हजार रुपया भेंट देकर नौकर से छुटकारा पाया। फिर भी वे उस युवती के भावी पुत्र के संरक्षक बनने के लिए तैयार नहीं हुए। उस औरत को मारा-पीटा, समझाया। रोना रोया कि उनकी पत्नी दस साल पहले न मर गई होती, तो आज यह सब देखना न बदा होता। उसे समझाया कि हकीम जी की दवा खाय। उसने स्वीकार नहीं किया। वह सोचती थी कि प्रेम का सही तोहफा तो यही था। पहला वाला ससुर का पुत्र अपवाद लगा। उसमें अनजाने आक्रमण हुआ और वह चंगुल में मजबूरी से फंस गई। ससुर के प्रति कभी वह स्नेह का भाव व्यक्त न कर सकी। सदा एक संकोच होता। एक अलगाव की सी भावना मन में उठती थी। उसकी समझ में नहीं आता था, कि ससुर बार-बार उसी पर कलंक क्यों लगाते हैं।

उस शादी की व्यवस्था में उसे कहीं कमी लगी। नारी का वह दरजा दासी का बन गया था। पति के बाद वह परिवार को लोगों की आश्रित बन जाती है, उसी की भाँति और औरतों को व्यभिचार की ओर ढकेल दिया जाता है। धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति मनमानी करते हैं। हैं। उनकी कहीं सुनवाई नहीं होती है। वे बेड़ियाँ पहने हुए परिवार में पड़ी रहती; जिस नैतिकता की चर्चा वह बार-बार सुनती थी; उसके विपरीत पुरुष जाति का व्यवहार था। लेकिन उनकी महरी बताती थी, कि यह सब अमीरों में है। गरीब तो इस कानून को नहीं मानते। उनकी नारियों का दरजा पुरुष से पीछे नहीं है। परिवार की आर्थिक व्यवस्था को संभालने में वे भी हाथ बँटाती हैं। वे स्वतंत्रता पूर्वक रहती हैं और उनके बीच ऐसे छोटे-छोटे झगड़े नहीं उठते हैं; न वहाँ

धर्म-कर्म ही चलता है। पति यदि व्यभिचारी और गलत व्यक्ति होता है तो उसे वे आसानी से छोड़ देती हैं। झूठी बेड़ियों वाली मान मर्यादा पर वे पुरुष की बातें नहीं सुनती हैं। उनको इतनी मेहनत मजदूरी करनी पड़ती है, कि व्यर्थ के झगड़े आपस में नहीं उठते; और अमीरों की भाँति बैठे-बैठे खाने-पीने को भी उनके पास कहाँ है? रोज ही पेट की समस्या घेरे रहती है। बड़ी मेहनत करने के बाद भी पूरा पेट खाना कभी नहीं मिलता है। उनके बच्चे को भगवान ही पालता है, अन्यथा उनकी हेसियत ही क्या है? बड़ी मुसीबत से दिन कटते हैं।

(२)

—सच ही सिद्धनाथ ने बार-बार अपने जीवन की छान-बीन करने का निश्चय किया। मानो कि कहीं उसका हृदय पक गया हो। वहाँ जमा हुए मवाद की सड़न जैसे कि वह महसूस कर रहा था। वह कमीना है, कमीना है; बार-बार यह पुकार अज्ञेय से उसके हृदय में उठती थी। वह चिल्ला-चिल्ला कर लोगों को बताना चाहता था, कि वह ओछा, झूठा, चापलूस, बेईमान, कमीना······; और न जाने क्या-क्या है? वह मनुष्य नहीं है। लड़ाई के जमाने में उसने चोर-बाजारी करने में एक व्यापारी की मदद की थी। उससे झूठे परमिट लिए और मँहगे दामों में बेचे। कन्ट्रोल ने उसे माला-माल बना दिया। उसने तीन-चार मकान बनाए हैं और उसका हजारों रुपया बेंक में जमा है। उसकी हेसियत बहुत बड़ी है। उसके पास बड़े-बड़े अफसर आकर कहते हैं, कि उनकी लड़की की मँगनी यदि; ······वह सच ही बाहर से देखने में भाग्यशाली है। पर उसके भाग्य को बनाने में आज की शासन व्यवस्था तथा कानून ने उसकी बड़ी मदद की; वह कई मुकदमों में फँसा, पर पुलीस और मजिस्ट्रेट ने सदा उसकी रक्षा की। वह भी काफी उदारतापूर्वक उनकी

खातिर करता था। नकद, ह्विस्की और वेश्याएँ.........अधिकारी कहते थे कि वे कभी नकद नहीं लेते हैं। यह थोड़ा आमोद-प्रमोद तो उनकी सेहत के लिए आवश्यक है।

सबसे मुख्य घटना जो कि उसके जीवन में उभरी, वह उसका नौकरी से पहला त्याग पत्र था। उस निम्नता को उसने चतुराई से सँभाला। वह अपने को सबसे बड़ा देशभक्त घोषित करता था। सार्वजनिक सँस्था में दुबारा नौकरी पाने पर, एक दिन उसे पुलीस ने बुलाया और बताया था, कि उसकी पिछली नौकरी की सारी बातें उनको मालूम हैं। नेक सलाह दी थी, कि पुलीस का भेदिया वह बन जाय। वह कॉलेजी लड़कों के बीच आसानी से आ-जा सकता है। इससे उसकी ऊपरी आमदनी भी हो जायगी। उसने यह बात बिना किसी हिचक के स्वीकार कर ली थी, और मनोवैज्ञानिक जासूसी उपन्यास पढ़ कर निश्चय किया था, कि वह एक दिन बहुत बड़ा जासूस बनेगा। अपनी पत्नी के नाम झूठे प्रेमपत्र लिख कर वह उसको तँग किया करता था, कि वे किसने लिखे हैं? अपनी जासूसी की शिक्षा को पूरा करने का जैसे कि वह भी एक सबक हो।

वह अपने मनोवैज्ञानिक प्रयोग पत्नी पर भी लागू करता था। एक दिन ऑफिस से लौट कर उसने पत्नी को बुलाया और ताव से फैसला किया कि वह उसे मायके भेज देना चाहता है। पत्नी की समझ में बात नहीं आई, तो उसने फैसला सुनाया कि उसे उसके चरित्र पर शक है? एक लड़के का नाम लिया तथा कई गवाह भी पेश किए। पत्नी पाँवों में पड़ी, गिड़गिड़ाई, उसने आँसू बहाए; पर उसने एक बात नहीं मानी और गुस्से में बताया, कि यह औरतों की जाति ऐसी ही होती है। लाल-पीले होकर कहा, कि आखिर उसकी माँ ने क्या पाप नहीं किया था? हजारों विधवाएँ देश में हैं। पत्नी कुछ नहीं बोली, तो यह कह करके कि, वह अपना सामान तैयार रखे,

रात दस बजे की गाड़ी से चपरासी के साथ जायगी। उसके भाई को सब कुछ लिख दिया है।

पत्नी कुछ और बात करे कि, वह चुपचाप बाहर चला गया था। जब कि वह घर से कुछ दूर निकल गया, तो खूब खिल-खिलाकर हँसा; मानो कि कोई बहुत बड़ी बाजी जीत गया हो। उसने सारे नाटक का अभिनय सफलतापूर्वक किया था। पत्नी की मानसिक-स्थिति की बात सोच कर, वह अपनी कार्य-कुशलता पर फूला नहीं समाता था। बड़ी रात को जब वह घर लौटा, तो पाया था कि पत्नी 'हिस्टीरिया' में सर पटक-पटक कर सो गई थी और मोहल्ले की कोई बुढ़िया बिना किसी आमंत्रण के पुरखिन की भाँति वहाँ बैठी थी। सारी बातें सुन कर उसने एक बार उस बुढ़िया की ओर देखा, मानो कि उसे पहचानना चाहता हो! पर वह काइयाँ बुढ़िया तो जैसे कि उसे पहचानती थी। उसकी माँ से उसका खासा परिचय था। वह अधिक बातें न बना कर चली गई थी। पर पत्नी का वह हिस्टीरिया वाला रूदन, हँसी और सिर पटकना महीनों तक चलता रहा। कुछ डॉक्टरों का ख्याल था कि वह पागल हो गई है। काफी रुपया खर्च करने के बाद वह आखिर में भली हुई थी।

पत्नी की बीमारी के लम्बे खर्चे चलाने के लिए उसे नई-नई आमदनी के जरिए निकालने पड़े थे और उसने पाया था कि अपने स्वार्थों के बाहर निकल जाना उसके लिए कठिन है। उसने जुआ खेल करके, भाग्य आजमाया, पर कुछ नहीं मिला। आखिर दफ्तर के रुपए गबन करके, एक चपरासी को फँसाने में वह सफल हो गया। सारा मुकदमा उसने पुलिस से मिल कर बनवाया था। सारी दुनिया जानती थी, कि रुपया उसने उड़ाया है, पर किसी के पास कोई सबूत नहीं था। हाईकोर्ट तक से जब सात साल की सजा बहाल रही, तो वह उस दिन चैन से सोया था। उसने अपने अभिन्न मित्रों को बताया था, कि जमाना

कैसा है। मजिस्ट्रेट और जज तो कानून की पोथियाँ और गवाहों का बयान देखते हैं। वह तो पुलीस के गुणगान करता था कि वे लोग दिन को रात साबित करने की क्षमता रखते हैं। यदि पुलीस उसका साथ न देती, तो आज वह जेलखाना होता। सी० आई० डी० के दरोगा ने एक सच्चे मित्र की भाँति उसकी मदद की थी।

लेकिन भले ही वह मुकदमे में छूटा पर संस्था वालों ने बाध्य किया कि वह त्याग पत्र दे दे। संस्था के मंत्री जी ने उसे अपने घर बुला कर कहा कि संस्था की बदनामी हो रही है। आश्वासन दिया था, कि तीन महीने की तनखाह वे उसे और दिलवा देंगे। उसकी चतुराई की सराहना करते हुए कहा था, कि संस्था का चुनाव होने वाला है और विरोधी दल का आरोप है, कि हम लोगों की मुलाय-मत के कारण सब गड़बड़ हुआ। यह स्पष्ट बताया था कि वे मिल के मैनेजर से कह चुके हैं और एक-दो महीने में वे उनको ज्यादा वेतन की नौकरी दे देंगे। ऐसे होशियार व्यक्ति को वे अपना दोस्त बनाने में नहीं चूके तथा विपक्षी दल की बातें कहीं कि किस तरह वे लोग संस्था को हथिया कर उड़ा लेना चाहते हैं। अब तो सार्वजनिक सेवा करने का जमाना ही उठ गया है। भले-बुरे सब एक भाव पर आ गए हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा होता है और साधारण उदारता तक लोग भूल जाते हैं। सब को तो अपने स्वार्थ की पड़ी रहती है।

जीवन में इस भाँति सहूलियत पाने पर उसे स्वयं आश्चर्य हुआ। सब से बड़ी बात तो यह थी कि समाज उसे अपनाता चला गया और उसके आगे कोई रुकावट कहीं नहीं पड़ी। मंत्री जी तो आगे उसके घर पर आए और बताया था, कि उसकी नौकरी ठीक हो गई है। मंत्री जी की शहर में काफी प्रतीष्ठा थी। उनका भीतरी जीवन भले ही चरित्रहीन हो, पर बाहर पतला खादी का कुरता और धोती पहनते थे। वे देश भक्त थे और सत्याग्रह के दौरान में जेल भी हो आए थे। उनके

जाएिए वह भी देशभक्तों के बीच चलने फिरने लगा और पुलीस के साथ उसका रोजगार और अधिक चमका था। उसकी कृपा से सी० आई० डी० के दरोगा अब बड़े अफसर हो गए थे। उसने भी देखा था कि जिस समाज में वह चल रहा है, उसकी धरती पोली है; मंत्री जी ने दुनिया की आँखों में धूल झोंकने के लिए चौकीदार की पत्नी और छोटे बच्चे को घर पर नौकरी दे दी थी। पर चरित्र की वह कसौटी तो उस वर्ग के लिए नई बात नहीं थी।

अब धीरे-धीरे वे तीन बच्चों के पिता हो गए थे। जीवन का मनोवैज्ञानिक उभार उतर चुका था। कई बातों की तह तक पहुँच कर वे पाते कि काफी पतित हो गए हैं। पर अब पीछे लौटना संभव नहीं था। शहर में उनकी प्रतीष्ठा बन रही थी। हरएक उनको जानने लगा था। वे कई पेंचीले मुकदमों में लोगों को सलाह भी दिया करते थे। मंत्री जी के असर में पड़ कर उनको भी होमियोपैथी का शौक हो गया था। वे भी अब शाम को गरीबों को को एक घंटे रोज मुफ्त दवा बाँट कर यश कमा रहे थे। उनके भक्तों की संख्या बढ़ रही थी। नौकरी में भी उनकी तरक्की होती चली गई। पण्डितों का कहना था, कि उनके केन्द्र में बृहस्पति है। उनका यश अभी और बढ़ता जायगा।

फिर भी मन की ग्लानि नहीं मिटती थी। अपने में वे एक निम्नआत्मभाव पाते। बच्चों तक में उनको लगता, कि सही व्यक्तित्व का अभाव है। मानो कि कहीं कोई भारी कमी हो। ऐसा लगता था, कि परिवार का चरित्र जैसे कि मिट गया है। कहीं सही नैतिकता न मिलती थी। जो कमाई होती, उसमें बरकत जैसे कि नहीं होती है। परिवार में बच्चे चिड़चिड़े स्वभाव के थे। पत्नी पर एक अजीब बुढ़ापा और अकर्मण्यता छाई रहती। बच्चे अभी से चोरी करना सीख रहे थे। डाँटने-फटकारने पर वे और सिर पर चढ़ जाते थे। पत्नी

से गुस्सा होने पर भी कुछ प्राप्त नहीं होता था। लगता कि उनका सारा व्यक्तित्व वहाँ अनजाने चमक रहा हो। वे चिन्तित रहते। पत्नी को बार-बार समझाने की चेष्टा करते। कभी तो लगता था, कि उनका यह सारा ताशों का घर ढह जायगा; तब बड़ा अफसोस होता। पर मंत्री जी के कहने पर उन्होंने रुपए का मोह छोड़कर बच्चों को पढ़ने के लिए बोर्डिंग-भेज दिया था। अब वे अधिकतर मंत्री जी की साहबत में रहते और जीवन उनके आगे नए-नए रूप में खुलने लगा। घर और पत्नी मानो कि अन्वेषण करने की पुरानी वस्तुएँ रह गई थीं। जहाँ कि परेशानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

जीवन को और समीप से पहचानने की चेष्टा करने पर उन्होंने पाया था, कि इस समाज पर एक वर्ग अपना शासन करता है। उसके कानून अपनी रक्षा के लिए हैं। यह पुलीस और न्यायालय शोषण करने वालों को सहूलियत देते हैं। वह अपने को उस वर्ग का एक साधारण गुमाश्ता पाता था। मंत्री जी के मिल में शेयर थे और वे मजदूरों को कोसा करते थे, कि उनके दिमाग बढ़ गए हैं। उस मिल ने काफी मुनाफा कमाया था, फिर भी वे उस कारोबार से सन्तुष्ट नहीं थे। उनका खयाल था कि फालतू मजदूर मिल की कमाई खा रहा है। मिल की दूकान आदि के बारे में वह जानता था, कि कैसे-कैसे शोषण के साधन वहाँ थे। पर वह सब का विश्वासपात्र था और उसका मुख्य काम यह था कि लड़ाकू मजदूरों के नाम पुलीस को बताता रहे। वह उनके यूनियन का उपसभापति भी बन गया था। अक्सर मालिकों और मजदूरों के बीच समझौता कराना उसका धन्धा था। कभी-कभी तो वह अजीब सी स्थिति में पड़ जाता था, और पाता कि दोनों पक्षों का विश्वासपात्र वह नहीं रह गया है। एक बार मंत्री जी ने कुछ ऐसे भाव व्यक्त किए थे, कि मानो वह उनका पूरा भरोसा सफलतापूर्वक नहीं निभा पाता हो।

मंत्री जी धीरे-धीरे उससे दूर रहने लगे। वैसे समय-असमय में वे उसकी सहायता करते रहते थे। पर वह उनकी अतरंग सभाओं में अब नहीं जाता था। वे उसकी बातों में अधिक उत्साह भी नहीं दिखलाते थे। फिर वे एक आन्दोलन के सिलसिले में जेल चले गए। वह स्वयं चाहता था कि परिवार को फिर ठीक तरह संभाल ले। बच्चे पढ़ रहे थे, वह रुपया कमाना चाहता था और लड़ाई के ज़माने में वह सहूलियत आसानी से मिल गई थी। अधिकारियों तक उसकी पहुँच थी। अतएव काफी रुपया कमाया था। मिल तेजी से अपना मुनाफा कमा रही थी और वह भी अपने नए कारोबार में फैल रहा था। काफी सोचने-विचारने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि उसे अपनी हैसियत को इस बीच संभाल कर, अपना व्यक्तित्व बना लेना चाहिए। अन्यथा अब तक तो वह सेठों के गुमाश्ते के रूप में ही काम करता रहा है।

उसे अपना गुमाश्ता वाला वह दरजा अखरता था। मंत्री जी आशा करते थे, कि वह अपने नीचे काम करने वालों के जरिये उनको लड़कियाँ पहुँचाए। इसे वे व्यभिचार न कह कर, अपना सामाजिक अधिकार मानते थे। वे कई ट्रस्टों के मंत्री थे और नगर में उनकी काफी प्रतिष्ठा थी। उसके प्रति भी कभी-कभी वे अपने भाव व्यक्त करते थे, कि वह काफी घुटा हुआ दुनियादार व्यक्ति है। उस ऐसे व्यक्ति पर कोई आसानी से भरोसा नहीं कर सकता है। वक्त पर वे हर एक की सहायता करते हैं, अतएव उसके लिए भी सब कुछ संभव किया है। लेकिन वह उनकी चालों के पेंच को जानता था। कई मुकद्दमों में वह उनकी सहायता झूठी गवाहियाँ देने में करवा चुका था। पर उनका आश्रित मानने को वह तैयार नहीं था। उसका खयाल था, कि वह उनको उनके उपकार का बदला दे चुका है।

किन्तु सिद्धनाथ आज बहुत दुःखी है। मिल के मालिक ने अपने यहाँ बुलवा कर उसे सुझाया था, कि वह त्यागपत्र दे दे। कुछ ऐसा सा आभास दिया था कि वे स्वयं विवश हैं। बोर्ड के ज्यादा डाइरेक्टर उनके विपक्ष में हैं। स्वयं उनके हितैषी मंत्री जी तक ने यह बात सही समझी है। यह सब जानते हैं, कि आज उनके पास धन की कमी नहीं है। यह राजनीति और दलबन्दी; वह स्वयं इससे परिचित है। कुछ उसका स्वभाव ही ऐसा हो गया है, कि वह स्वयं इस सबमें काफी दिलचस्पी लेता रहा है। इस बार वह जरूर असफल रहा; पर इसके लिए वह अधिक पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं था। अब आगे उसे नौकरी करने की खास आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। फिर कौन जीवन भर कमाया ही जाता है।

उनका बड़ा लड़का जल्दी ही नौकरी पर लग जायगा। लड़की की शादी हो ही चुकी है। उनका जवाँई अच्छे सरकारी ओहदे पर है, एक लड़का जो कि बचपन से ही पंगु है, उसके लिए एक छोटी दूकान वे खोल चुके हैं। फिर भी एक प्रश्न जरूर अखरता है। उनको लगता है, कि मानो जीवन सफल नहीं रहा हो। कभी सन्तोष के साथ वे जीवन व्यतीत नहीं कर सके थे। इसका कारण समाज की व्यवस्था थी। जहाँ कि उनको अपना श्रम बेचना पड़ता था। पर वह पूँजी-वादी व्यवस्था तो नारियों को भी बाजार की दूकानों पर बैठने विवश करती है। उसके भीतर सच ही वे अपना व्यक्तित्व खो बैठे थे और एक सड़ी-गली लीक पर चलने के लिए मजबूर हुए थे। एक वेश्या की भाँति ही उनको भी दाँव-पेंच सोचने पड़ते थे। और उनको याद आता कि पैसे वालों का एक दल सदा से ही सारे नागरिक-अधिकारों को अपने मन के अनुसार चलाया करता है। उसका ही शासन चलता है। मजिस्ट्रेट तथा पुलीस तो उनके दास हैं। नैतिकता, धर्म, आचार-विचार ये सब तो ढोंग हैं। अन्यथा उनका जीवन यह रूप न लेता

और आज वे एक सच्चे नागरिक की भाँति गर्व से चलते। फिर भी तो उनकी अपनी प्रतिष्ठा इस समाज में है। भले ही उन्होंने कानून की दृष्टि से चोरी-डकैती तथा कोई नैतिक अपराध नहीं किया, फिर भी वह उससे बरी नहीं था। वह कसूरवार है और यह आज मान लेता है, कि इस समाज का संचालन करने वाले जिसे जो चाहें बना दें। वे गिने चुने लोग मानवता की दुहाई दे देकर लोगों को ठगते हैं। वे करोड़ों लोगों का शोषण अपने कुछ स्वार्थों के लिए करते हैं। वे सब बातें जानते हैं, फिर भी मध्यवर्ग विद्रोह नहीं करता है।

अपना सारा जीवन उनको एक व्यक्तिगत अनुभव लगा। कभी भी वे अपने से बाहर नहीं फैले थे। उनकी महत्वाकांक्षा थी कि वे ऊपर उठ कर शासक वर्ग में मिल जायँ। इसी के लिए इतना धन कमाया था। पर बड़े स्वार्थों के बीच उनका छोटा व्यक्तित्व नहीं पनप सका था। निम्न-मध्यवर्ग के बीच वे अपनी हैसियत के लिए भले ही फूले हुए न समाएँ, पर इससे उनकी सफलता का आभास नहीं मिलता। लगता है कि वे केवल पूँजीवालों के हथियार भर रहे हैं। जब तक उनकी उपयोगिता थी, उन लोगों ने साथ रखा और अंत में उठा कर फेंक दिया है। जो मंत्री जी कि उनको अपनी बराबरी में कभी बैठाते थे, आज वे स्वयं बहुत रूखा सा व्यवहार बरतते हैं। कभी-कभी तो ठीक तरह पहचान तक नहीं पाते हैं। आज जैसे कि उसका कोई उपयोग नहीं रह गया हो। मनुष्य को मानवता से परे वे केवल हाड़ माँस का पुतला समझ कर, उसे अपने स्वार्थों के लिए उपयोग करते हैं। मानो कि वह कुछ न हो, और यदि वह विद्रोह करता है, तो उसके लिए वे उसे दंड देते हैं।

पचास साल……, मानो कि इतने लम्बे जीवन का लेखा-जोखा आसान नहीं है। ये इतनी जल्दी बीत गए। कई नौकरियाँ कीं, हजारों लोग मिले और रुपया कमाया। घर-गृहस्थ भी अपने में चलता रहा।

ज़रा भी फ़ुरसत सोचने-विचारने की नहीं मिली। यह पत्नी बीमार रही। डॉक्टर आए, दवा मिली, पर रोग नहीं कटा। किसी न किसी तरह वह परिवार में जीवित है। उसकी भी ठीक परवाह वे नहीं कर सके। एक उपेक्षा सी उसकी की; और वे बच्चे······? पैसा था, वे शिक्षा पाते रहे। इतिहास पास किया चार आदमियों से अपनी जान-पहचान है, नौकरी मिल जायगी। वे अधिक उन पर क्या सोचें। वे अपने वर्ग के साथ सचाई से चले। वह चपरासी जेल से छूट कर अब उनकी कोठी पर रहता है। वह कभी उनको दोष नहीं देता; अपने भाग्य को कोसता रहता है। उसकी पत्नी ढल गई है। उसमें आज कोई जीवन नहीं रह गया। उसका लड़का अब एक जगह दफ्तरी का काम करता है। जेल से लौट कर वह धार्मिक प्रवृत्ति का हो गया है। उनसे भी वह धर्म की कई उलझी कड़ियाँ सुलझाने में सहायता लेता है। उसे वे देखते हैं।

वह चपरासी आज चुप रहता था। उसकी अवस्था अधिक नहीं है; पर लगता है, कि उसमें कोई जीवन नहीं बचा हुआ है। पत्नी के बारे में लोगों ने कई बातें बताईं, पर उसने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। पत्नी से कभी सात साल के जीवन का इतिहास नहीं पूछा। वह जानता है, कि जब निर्दोष होने पर भी वह अपराधी माना गया; तो पत्नी, जो असहाय थी, उसके अपराध की विवेचना क्यों की जाय। यदि संभव होता तो वह उन जजों, पुलिस के अधिकारियों पर मुक़दमा चलाता······। जेल ने उसे इस लोक से अधिक परलोक की चिन्ता की ओर खींच लिया था। वहाँ की कल्पना मानो कि यहाँ की दुनिया से सुखद थी। वह ऐसा भविष्य था, जिसके लिए तुरंत संघर्ष करने का प्रश्न नहीं उठता था। जब कभी कहीं कीर्तन होता, तो वह बड़े उत्साह से उसमें भाग लेता। पर उसका लड़का हँसी उड़ाता हुआ कहता था, कि धर्म-कर्म सब बेकार है। वह नई-नई बातें सुनाता था।

कभी बताता कि देश में अपना राज हो गया है। वह तो ऐसे भविष्य का हाल बताता था, कि जहाँ मजदूर की सारी मुसीबतें हल हो जावेंगी। वह पढ़ लेता है और कई तरह के पर्चे लाकर सुनाया करता है। वह अपने पिता से अधिक माँ पर विश्वास करता है। पिता जी से एक बार उसने कहा था, कि कल उनके मालिक का लड़का अफसर बन कर, उसे भी जेल भेज सकता है। गरीब का शोषण इसी तरह होता रहेगा, यदि वह मजबूत नहीं होगा; अपना संगठन नहीं बनाएगा। पिता उन बातों पर अधिक ध्यान नहीं देता है। एक-दो बार उन्होंने वह बात अपने मालिक को सुनाई थी, तो वे अवाक् से उसे देखते ही रह गए। वह लड़का झूठ नहीं बोल रहा है। उसकी बात सच है। पर यह नया विद्रोह उठ कर तो उनके भविष्य को नष्ट कर देगा। क्या इसी के लिए उन्होंने अपने जीवन को इस भाँति नष्ट किया। यह संभव नहीं है। वे अपने वर्ग की रक्षा हर तरह से करेंगे। चपरासी का शोषण उन्होंने अपने वर्ग की रक्षा के लिए लिया था। वह उनकी अपनी इज्जत का प्रश्न था। वह चपरासी तो आज भी जीवन में अपनी कोई हैसियत नहीं रखता है। ये दो हैसियतें......?

लेकिन वह लड़का तो एक दिन कहीं किराए की कोठरी लेकर, माँ-बाप के साथ चला गया था। उस समय वे चुपचाप लड़के के दंभ पर हँस दिए थे। माना कि वह उसका लड़कपन था और जो सामाजिक-व्यवस्था चल रही है; उसमें वह भाग नहीं सकता है। उनके पाँवों में बेड़ियाँ पड़ी हैं। तब वे उस पर अधिक न सोच कर पत्नी से बोले थे, कि नौकर-चाकरों का दिमाग कितना बढ़ गया है। घोर कलयुग आ गया। वह चर्चा फिर भी एक सीमा पर रुक गई थी।

—आज सिद्धनाथ की आँखें खुल गईं। लगा कि वह कभी जीवन में बड़ा नहीं बन सका। ऊपर वालों ने उसे सदा अपना दास समझ कर उसका उपयोग किया, और वह चपरासी का छोकरा

जो कि एक नए वर्ग युद्ध की घोषणा कर, उसकी तैयारी में जुटा हुआ है, उस वर्ग के विश्वासपात्र भी वे नहीं है। नौकरी के इस बड़े अरसे में वे अपनी पूरी मानवता को खो कर पत्थर बन गए हैं। उनके हृदय को बैंक एकाउन्टों ने ढक लिया है। ये ऊँचे वर्ग के गुमास्ते रहे। स्वयं अपने वर्ग का शोषण करवाया और जब नीचे वाला वर्ग एक तमाचा मारने खड़ा है, तो वे तिलमिला उठे हैं।

वे कमीने हैं; अवसरवादी हैं; अपने स्वार्थों के लिए नीच-से-नीच कार्य कर सकते हैं। वे पतित हैं······

आशा की एक रेखा तभी नजर पड़ी······ वे अपना एक नया वर्ग क्यों न बना लें······। उनकी अपनी रिश्तेदारी······रिटायर्ड बाबू लोग······छोटे व्यापारी······। वे खुशी से फूल उठे······। उनका वर्ग गरीबों का सीधे शोषण नहीं होने देगा। वे पूँजीपतियों से लड़ेंगे······देश में अपना राज्य है। उनका वर्ग शासन में अपना प्रभुत्व जमावेगा······

पर चोर की तरह उनके हृदय में भय उठता था। वह चपरासी का लड़का जिस संघर्ष की बात कर रहा है, वह चिंगारी तो देश में फूट चुकी है······। वह एक सबल वर्ग है।

नदी का मोड़

गल्थू ने उठ कर चुपचाप फटी कमीज पहनी, मोटे कपड़े का पायजामा चढ़ाया और फटा-पुराना कोट डाल कर उसने जेब में भुने चने और गुड़ की डली भर लीं; फिर अपनी बल्सी उठाई और चारे की गोलियाँ कागज के पुड़े में रख कर जेब पर उसे खोंस लिया। इधर उसने नए तरह की गोलियाँ बनानी सीखी हैं, जिनमें कि वह थोड़ा गोश्त भी पीस लिया करता है। मरे बरसाती केंचलू भी उसके पास हैं। वह गोलियों को काफी कड़ी बनाता है; कि आसानी से पानी में बह न जायँ। बल्सी का काँटा भी वह बहुत कीमती खरीद कर लाया है। दूकानदार ने बताया था, कि वह विलायत से आया करता है, वहाँ के लोग मछली पकड़ने में प्रवीण होते हैं। उसने तो बताया था कि गोलियाँ भी अब वहीं से बनकर आने लगी हैं, पर वे यहाँ काफी मँहगी पड़ती हैं। एक बात ने उसे बहुत प्रभावित किया। दूकानदार ने काँटे वाले डिब्बे के बाहर बना हुआ फोटो दिखाया था, जिसमें कि एक अँग्रेज की बल्सी पर एक बड़ी मछली लटकी हुई थी। काँटे पर ही तो मछली मारने वाले का सारा कारोबार निर्भर रहता है। वैसे बिना ठीक हथियार के काम भी नहीं चलता है, फिर सब कुछ मौके पर निर्भर है कि क्या हाथ लगेगा?

वह चुपचाप घर से बाहर निकला। सामने कूड़े के ढेर के पास मुर्गियाँ कुछ चुन रही थीं। एक ओर बत्तखों के झुंड अड़ड़-गड़ड़ सी आवाज करते खेल रहे थे। रास्ता बहुत गंदा था और बच्चे समझदारी

के साथ उसका उपयोग बसपुलीस की भाँति कर रहे थे। उस गंदगी से उसके मन में भारी घिन उठी। वह जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा था। सामने ओखली में कुछ औरतें झँगोरा कूट रही थीं, उसकी धम-धम-धम की आवाज आसानी से गूँज उठती थी। कहीं किसी कोठरी में कुछ लड़कियाँ चक्की पीसती कोई गीत गा रही थीं। उनमें मैना की आवाज वह साफ-साफ पहचानता है। वह गीत अक्सर बेसुरा सा हो उठता था और लगता कि मैना की भाभी का बेसुरा स्वर फटे बाँस की भाँति बीच में अलग फटा-फटा सा लगता है। सामने के छोटे बाड़े में बेलों से ककड़ियाँ लटक रही थीं और भिंडी के पेड़ भी लगे हुए थे। एक छोटी झोपड़ी से धुँआ उठ रहा था और उसकी छत पर फैली हुई बेलों पर कद्दू, तुरई आदि तरकारियाँ लगी थीं। कद्दू के फूल की पकोड़ी उसे बहुत पसन्द है। वैसे रामबाँस के फूल को पीस कर, उसमें लहसुन, हरा धनिया डाल कर जो पकोड़ी बनती है, उसमें भी बहुत स्वाद आता है। उसे पकी ककड़ी का रायता और उसकी खीर भी बहुत पसन्द है।

उसने सामने वाले मकान पर एक नजर डाली। वह कई साल से खाली पड़ा हुआ है। उसका मालिक कस्बे में रहता है। वहाँ उसकी एक बहुत बड़ी बिसातखाने की दूकान है। जिसमें कि कई नौकर काम करते हैं। पहले उस परिवार के स्वामी भी साधारण मजदूर थे और आधा पेट खा, नंगे-भूखे रह कर जीवन बसर करते थे। किन्तु भाग्य ने पलटा खाया और गंगा की रेती में दबे हुए किसी मकान की दीवाल पर मोहरों से भरा हुआ एक कलश उनको मिल गया। आज उनकी हैसियत बड़ी हो गई है। वे बड़े नेता आज आर्य-समाजी हो गए हैं। अपने पुरखों की यादगार को कायम रखने के लिए ही, यह पक्का मकान यहाँ बनाया गया है। वह परिवार आज हरिजनों की पुरानी परम्परा को छोड़ कर कस्बे में अपनी नई हैसियत के साथ रहता है।

मालथू ने स्वयं कुछ दिनों वहाँ नौकरी की थी। उन दिनों वह बहुत छोटा था और वहाँ नए मकान का काम चल रहा था, जहाँ कि उसकी माँ पत्थर ढोने की मजदूरी करती थी। सुबह सात बजे वह काम पर जाती थी। दिन को दो घन्टे की छुट्टी के बाद फिर शाम को पाँच बजे तक काम करना पड़ता था। उसे छै आना रोज मजूरी मिलती थी। उनके दिन बड़ी कठिनाई से चलते थे। पर आज भी उनकी हालत भली नहीं है। वह मजदूरी करती है, परिवार में केवल दो प्राणी हैं। आज तो मँहगाई बढ़ गई है, फिर अनाज उधार भी नहीं मिलता है।

वह तो आगे बढ़ कर अब कस्बे की सड़क पर पहुँच गया था। खेत कट चुके थे। दशहरा का उत्सव भी कस्बे में समाप्त हो चुका है। दीवाली आने वाली थी। काफी सुहावना मौसम था। गुलाबी जाड़ा पड़ना शुरू हो गया था। वह चुपचाप पहाड़ी चट्टान पर बैठ गया। सामने गंगा की तरेटी के किनारे के रेतों पर धूप चमकने लगी थी। नदी कई मोड़ बनाती हुई, उस घाटी के बीच से बह रही थी। कुछ छोटा सा वह झूलेनुमा पहाड़ी पुल, दो चट्टानों के बीच लटक रहा था। वहाँ नदी चट्टानों की एक गहरी दरार के बीच से बह कर, फेनिल बनी आगे बढ़ती थी। उस पुल पर से नीचे देखने पर लगता है, कि मानो वहाँ नदी किसी भारी संघर्ष से गुजर रही हो। नदी की धार तेज और किनारे की चट्टानों पर टकरा कर भारी शोर मचाती है। उन चट्टानों के बीच ऊपर की ओर जो दरारें हैं, वहाँ चीलों ने अपने घोंसले बना रखे हैं। वे अक्सर बड़ी सुबह वहाँ चक्कर काटतीं, ऊपर-ऊपर आकाश की ओर उड़ कर नीचे अपना शिकार पैनी आँखों से ताका करती हैं। कभी-कभी तेजी से तिरछे उड़कर नीचे किसी पत्ती पर झपट कर उसे अपने पंजों से पकड़ते हैं।

वह तो मैना का गाया हुआ गीत दुहरा रहा था :—

हे मेरे बालम मैं तेरी प्रतीक्षा में बरसात भर रही, पर तू नहीं आया;

सास ने कभी मुझे पेट भर खाना नहीं दिया,
ननदें मेरा मजाक उड़ाती रहीं.........

ससुर कहता है, कि लाम पर से भाग्यवान ही लौटते हैं
मैं बावली बनी तेरी प्रतीक्षा रोज करती हूँ......

वह एक सैनिक की पत्नी का वियोग का गीत था, जो अफ्रिका की लड़ाई में मर गया था। उस युद्ध में लाखों युवक मरे थे। उस महायुद्ध ने मानवता का एक नया अध्याय शुरू किया था। पर उसके बाद तो तबाही का एक तूफान आया, जिसे कि वह गीत व्यक्त नहीं कर पाता है। वह सिपाही की पत्नी की प्रतीक्षा ! किन्तु उसकी हैसियत तो केवल एक खेतिहर मजदूर और घर की नौकरानों की थी। अपनी इस उपयोगिता के कारण उसे आसानी से दूसरी गृहस्थी जुटाने में कठिनाई नहीं पड़ी। फिर युद्ध की उस परम्परा वाले संघर्ष का सही वर्णन वह ग्रामीण गायक शायद नहीं कर सका था। युद्ध के बाद देश खुशहाल नहीं हो पाया था। रोजाना जीवन में काफी कठिनाइयाँ बढ़ गई थीं, जीवन नीरस और बेकार लगता था।

ये सब बातें तो वह जानता है। इसीलिए और युवकों की भाँति मैना के हावभाव पर अधिक नहीं रीझता है। वह मैना शहर की लड़कियों की भाँति सुन्दर रंगीन कपड़े पहनती है। वह अजीब तरह के बाल काढ़ती है। उसके साथियों ने एक रोज बताया कि वह अपनी माँ के साथ शहर की वेश्या के यहाँ गई थी। दीवाली के बाद अब वह वहीं रहेगी और गाना सीखेगी। इस बात पर उसे बहुत दुःख हुआ था। वह रामलीला में देखता था, कि जिधर से वह गुजर जाती, कस्बे के गुन्डे सीटियाँ बजाते थे। वह पान खाती थी, सुना सिगरेट

और शराब पीना भी सीख गई है। वह बारह-तेरह साल की थी। उसका गला बड़ा सुरीला है। मैना के प्रति उसका स्नेह है और सोच-विचार कर उसने मैना से एक रोज एकान्त में बात की थी, कि उसे माँ की बात पर नहीं चलना चाहिए। न जाने क्या-क्या नीति और शास्त्र की सुनी हुई बातें उसने उसके आगे उगल दी थीं।

वह मैना पहले तो चुप रही, फिर एकाएक सवाल पूछा, "तो मैं क्या करूँ ?"

वह मैना को क्या रास्ता सुझाता ? वह उसे देख कर दुःखी हुई और सुझाया था कि गाँव में शादी वह नहीं करेगी और शहर में अपने बीच पेट भर खाना तक नहीं मिल सकता है। वह मजदूरी नहीं कर सकती है। माँ के लाड़-प्यार ने उसे बचपन से बिगाड़ डाला है। इस सड़ी-गली जिन्दगी से तो वह आराम की है। उसने आश्वासन दिया था, कि उसकी बात पर सोचेगी और जरूरत पड़ने पर उसकी सलाह लेगी। वह उसे अपना हितैषी मानती। अन्यथा और लड़के तो उसे बुरी नजर से देखते हैं।

उस समय गल्थू स्वयं उलझन में पड़ गया। सच ही उनका व्यापार नष्ट हो गया है। आज केवल मछली मार कर उनका पेट नहीं भरता है। नदी आज उतनी उपजाऊ नहीं रह गई है। फिर सब खाने, पहनने और घरेलू व्यवहार की चीजों के दाम बहुत बढ़ गए हैं। वे बाजरे की रोटी खाते-खाते थक गए हैं। पहले तो कभी अनाज की इतनी तंगी नहीं थी। लड़ाई के जमाने में भी कभी इतनी मुसीबत नहीं आई। अब तो ऐसा लगता है, कि जैसे दिन कटने मुश्किल हो जाए। वह मैना बात ठीक कहती है। माना कि वह शादी करले, फिर रोज वे ही परिवार में झंझटे रहेंगी। पूरा पेट खाना नहीं मिलेगा। बेवश हो कर उसे मजदूरी करने जाना पड़ेगा। उसका सौन्दर्य वहाँ

उसकी रक्षा नहीं कर सकेगा। वह हैवान बन कर बेहयापूर्ण जीवन व्यतीत करेगी। यह तो मानो कि उसके जीवन का एक अंग बन गया है।

मैना.......वह अकेली नहीं; सच ही उसका युवक समुदाय कोई नया रास्ता नहीं निकाल पाया है, कि वह उनकी रक्षा कर सके। वह सुन्दर गीत गाती है। बहुत सुन्दर नाचती है। पिछले वर्ष जब मछली मारने का उत्सव मनाया गया, तो उसने कई नाच अपनी सहेलियों के साथ दिखलाए थे। उस दिन सब मछली मारने गए थे। बुढ़ी भी थीं। सब अपने जाल, बर्छी और परिवार के लोगों के साथ नदी के किनारे गए थे। वहाँ मछली मार कर खाना बनाया गया था। बूढ़ों तथा बुढ़ियाओं में भी नया जीवन आया लगता था। वह मैना तो तैरने में भी सबसे बाजी मार कर ले गई थी। उसे बिलकुल डर नहीं लगता है। मछली मारने में भी कुशल है। वह बड़ी बातूनी है। गलथू उसे न जाने क्यों सावधानी से भाँपा करता है। वह उससे कई बातें करना चाहता है; पर स्वयं नहीं जानता कि क्या बात करे। वह सामने पड़ती है, तो वह भौंचक्का सा उसे निहारता रहता है। वह उससे शरमाता है। उस उत्सव में एक बार मैना उसे पकड़ कर अपनी सहेलियों के साथ नाचने ले जाना चाहती थी, पर वह वहाँ नहीं गया। उसे इस बात पर आश्चर्य जरूर हुआ था, कि उसके मुँह से शराब की बदबू चल रही थी। उसे न जाने क्यों डर लगता है, कि वह किसी दिन चरित्रहीन औरत बन जायगी। यह बात उसे भली सी नहीं लगती। वह ऐसा मान सा लेता है, कि यह नहीं होगा।

उसकी माँ इधर बीमार है। वह इसीलिए बहुत परेशान है। वह पत्थर ढोते समय सीढ़ियों से गिर पड़ी और टाँग टूट गई है। वह कराहती रहती है, माँ की दवा करने के लिए उसके पास पैसे नहीं है। पास के सरकारी अस्पताल के वैद्य जी को वह बुला लाया था और

उनका इलाज चल रहा है। माँ ने कुछ पैसा उसकी शादी के लिए जमा किया था, उसे खर्च करते हुए उसका हृदय कलप उठता है। वह पड़ोसिनों से यही कहती है। इस भाँति पंगु रहने से वह मर जाने की दुहाई करती है। वह स्वयं स्थिति को नहीं सँभाल पाता है। माँ का मर जाना उसकी समझ में नहीं आता। उसे इस प्रकार अकेले रह जाने का डर न जाने क्यों सताता है। लोग बताते हैं कि वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहेगी। वह उसकी सेवा-टहल करता-करता थक जाता है। उसके लिए कच्चा-पक्का खाना बना कर स्वयं भुने चने या इधर-उधर कुछ खा लेता है।

वह बचपन से इसी माँ को पहचानता है। पिता के मर जाने पर लोगों ने उसे अपने घर डालने को कहा, पर माँ को यह बन्धन मंजूर नहीं हुआ। नेकी से जीवन बसर कर, उसने काफी चेष्टा की कि वह पढ़-लिख जाय। प्राइमरी स्कूल तीन मील दूर थी। उच्च जाति के अध्यापकों ने कुछ दिन बाद पढ़ाने से इन्कार कर दिया। अतएव पाटी लेकर कुछ दिन घर पर ही पढ़ कर, फिर एक दिन उसने अपने खानदानी पेशे का श्रीगणेश कर दिया था। मेहनत-मजूरी करना भी उसे पसन्द नहीं आया। वहाँ काफी अपमान सहना पड़ता था। ठेकेदार बात-बात पर गाली देता और मजदूरी बारह-आठ पैसा रोज की मिलती थी। माँ से उसने यह बात कही, तो वह बोली, यह तो पैदा होते ही वे लिखा कर लाए हैं।"

मैना उसकी माँ की टहल करती है। उसे अच्छा खाना देती है। एक-दो बार उसकी माँ से कहा था कि वह खाना बना दिया करेगी। बालथू को यह बात पसन्द नहीं है, वह अपनी मुसीबतों को स्वयं झेलना चाहता है। उसे किसी की दया की भूख नहीं है। पर वह बहुत अस्वस्थ है। माँ चल-फिर नहीं सकती है। उसकी सेवा-टहल कर उसे थकान लगती है। वह ठीक तरह खा-पी नहीं पाता है।

अपने सब लोगों की जिन्दगी पर उसे हँसी आती है। लेकिन कस्बे में जो लोग रहते हैं, उनको तो ऐसे कोई कष्ट नहीं है। वहाँ तो दूकानों में नाज-कपड़ा तथा और सामान भरा पड़ा हुआ है। उनका तो रोना है, कि खरीद दार नहीं है, व्यापार मंदा पड़ गया है। वह जैसे कि बात नहीं समझ पाता! उसे खाना-कपड़ा नहीं मिलता, उधर वह व्यापारी कहता है, कि उसका माल नहीं बिकता। खरीदने के लिए पैसा चाहिए मछली बेच कर पैसा मिलता है, पर आजकल मछली नदी में नहीं मिलती है।

(२)

तभी मंगतू ने पुकारा, "ओ बेटा गल्थू, क्या हाल है?"

मंगतू उम्र में उससे कुछ बड़ा है, और काफी शरारती लड़का है। उसकी माँ बचपन में मर गई थी और सौतेली माँ से उसकी नहीं पटती। वह आवारा है, और तिकड़म से पैसा कमाता है। कभी किसी बाग के ठेकेदार की नौकरी करेंगे, तो कभी पुल पर चुँगी के बाबू का चपरासी बन जाता है। अपने दलबल सहित वह ककड़ी तथा तरकारियों की चोरी करके बाजार में बेच देता है। वह चोरी करने में भी प्रवीण है। पिछले साल छै महीने एक यात्री को ठगने के मामले में जेल काट आया है। वह आवारा है, शराब पीता है और लड़कियों के साथ अश्लील मजाक करता है। उसका एक छोटा सा दल है, जिसके बल पर वह वहाँ शासन भी करता है। लोग बेकार उससे झगड़ा मोल नहीं लेते हैं।

गल्थू ने देखा कि वह उधर ही चला आ रहा है। बचाव का कोई उपाय नहीं था, अतएव वह चुपचाप बैठा रहा। उसे मँगतू से स्वाभाविक घृणा है। एक बार उससे झगड़ा हुआ था और उसने उसकी बिना किसी अपराध के पिटाई कर दी थी। वह उससे बदला लेने की

बात सोचकर भी चुप रहा था। आज वह अब यदि कोई शरारत करेगा तो उसने तय कर लिया है, कि वह उसका सिर पत्थर से फोड़ देगा। वह मँगतू मैना से बार-बार प्रस्ताव करता है कि वह उससे शादी कर ले। उसे चेतावनी दी है कि यदि वह वहाँ से भाग जाने की चेष्टा करेगी तो वह उसका खून कर डालेगा। मैना ने एक बार मजाक में कहा था, कि वह चोर-डाकू से शादी नहीं करेगी। तो उसने अपने एक साथी द्वारा कहलाया था, कि वह उसका खून कर डालेगा।

मैना शायद इस बात के लिए तैयार थी। बस एक दिन उसने बहुत से लोगों के सामने मँगतू की धमकियों की चर्चा की। उस समय मगतू हमले के बचाव के लिए तैयार नहीं था। उसने तकरार नहीं बढ़ाई। आगे भी वह चुप रहा। मैना का सम्मान तब से मँगतू के हृदय में बढ़ गया है। वह उसे गुंडों का सरदार कह कर घोषित करती है। वह उसके सामने नहीं फटकता। फिर इधर तो वह ज्यादातर कस्बे में ही रहता है। किसी ने बताया था कि उसने एक दूकान पर नौकरी कर ली है। लेकिन आज तो वह नेकर और कमीज डाट कर आया था। उसकी शान देख कर गत्थू दंग रह गया।

"कहो बेटा, सुना भाभी की टाँग टूट गई है। खबर तो देता। कल रात सुना तो कम्पाउंडर को अस्पताल से पकड़ कर ले आया हूँ। पैसे-वैसे की फिक्र न कर अस्पताल में भरती हो जायगी। कम्पाउंडर अपना ही आदमी तो है। अबे, मेरा दादा और हमारा बाप सगे भाई थे।"

गत्थू ने उधर सहम कर देखा। लेकिन मंगतू ने तो बसी उसके हाथ से ले ली। एक बार सावधानी से उसे देख कर कहा, "काँटा तो अच्छा है, पर पेशा अच्छा नहीं। कोई आमदनी नहीं है। इससे तो कहीं बँधी-बँधाई नौकरी ठीक है। महीने पर ठन-ठन करके तनखा मिल

जाती है। न शीत में ठिठुरना पड़ता है, न बरसात में भीगना। जान हथेली पर रख कर बरसाती नदी में भी जा कर गुजर कहाँ होती है ?"

गल्थू मँगतू की बात अनसुनी करके उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी बंसी ली और नदी की ओर वाली बटिया पर जाने के लिए तैयार हुआ, वह आज अच्छी मछलियाँ पकड़ना चाहता है। सामने गाँव में एक धनी किसान परिवार उसका ग्राहक है, वे अनाज देकर मछलियाँ खरीदते हैं। उनकी औरतें बचा-खुचा खाना भी उसे खिला देती हैं। उस परिवार की बूढ़ी औरतें उसके पिता को जानती हैं। उस परिवार के लोग कुछ काम नहीं करते। उनकी चार भैंसे हैं, सात-आठ गाय हैं और कई गाँवों में खेत हैं। उनके यहाँ अनाज बड़ी-बड़ी खत्तियों में जमा रहता है। कस्बे में उनकी दो-तीन दूकानें भी हैं, जहाँ कि परिवार के लड़के देखभाल करते हैं। उसने तय कर लिया है कि उनसे कहेगा कि कस्बे में दूकान पर कोई नौकरी दे दें। उस परिवार के मर्द तो दिन भर शराब पी कर पड़े रहते हैं। हरएक की दो-दो, तीन-तीन शादियाँ हैं। हरएक के तीन-तीन, चार-चार बच्चे भी हैं। उसे बड़े परिवार की कल्पना काफी अजीब सी लगती है। फिर मँहगाई के जमाने में भी वे मौज से रहते हैं। कोई अन्तर उसने वहाँ नहीं पाया। बल्कि इधर तो उन्होंने कई कमरे नए जोड़े हैं और राशन तथा कपड़े की तंगी किसी को नहीं है।

वह उस परिवार के बारे में सोचता है। मर्द बिल्कुल निकम्मे हैं और दिन भर पी कर पड़े रहते हैं। दो लड़के तो सुना कि कस्बे में बुरी सोहबत में फँस गए हैं। वे वेश्याओं के यहाँ पड़े रहते हैं और खूब जुआ खेलते हैं। उनकी माँ ने बताया था कि वे भाग्यवान लोग हैं। अभागे वे ही हैं। वह माँ का इलाज तक ठीक नहीं करा पाया है।

"बेटा गल्थू, तेरी उस मैना का क्या हाल है ? सुना कि टाउन कमिटी' का चेयरमैन आजकल उस पर डोरे डाल रहा है। उसके भाई

को नदी पार करने की चुंगी के ठेके सस्ते में मिल गए हैं। सुना वह तो आजकल भाभी की सेवा कर रही है। तू तो बुद्धू है। उस चिड़िया को फाँस ले। अबे, गजब का माल है। लाखों में एक ऐसा मिलता है। सारे कस्बे के छोकरे उस पर फिदा हैं।"

लेकिन गल्थू नदी की ओर तेजी से बढ़ गया। उसे मँगतू पर काफी गुस्सा चढ़ रहा था। वह कितना बेहया हो गया है। वह उसका सिर फोड़ देता तो ठीक होता। वह नीचे वाली पगडंडी पर बढ़ गया। लेकिन ऊपर से मँगतू जोर से बोल रहा था, "बेटा, जल्दी लौट आना कम्पाउंडर ठीक दस बजे आ जायगा। दो-तीन बजे तक भाभी को ले जाने का इन्तजाम करना है। कुछ अच्छी मछलियाँ हाथ लग जाँय तो अच्छा है। कम्पाउंडर काफी शौकीन तबियत का आदमी है।"

वह तो नीचे की ओर तेजी से बढ़ रहा था। कभी-कभी मँगतू की सीटी की आवाज कान में पड़ती थी। घाट पर से औरतें पानी भर कर लौट रही थीं। रेत से भरे हुए खेतों में कई मन्दिर खड़े थे। वे उजाड़ हैं और बाढ़ के कारण आधे के करीब रेत में दब गए हैं। सामने वाले मन्दिर के पास बेरों का एक बड़ा बाग है। जाड़ों में वहाँ बेरे फलेंगी। पिछले साल मैना अपनी सहेलियों के साथ वहाँ बेर खाने गई थीं। उसके अनुरोध पर गल्थू भी साथ गया था। वह तो उन कँटीले पेड़ों पर चढ़ कर टहनियाँ को खूब हिलाती थी। उस फक्कड़ लड़की को वह समझ कर भी नहीं समझ पाता है। एक सेठ उसे अपनी रखेल बनाना चाहते थे, पर उसने अस्वीकार कर दिया। मैना का वह व्यक्तित्व उसकी समझ में नहीं आता है। फिर क्या सच ही उसके भाई को ठेका मिल गया है। नदी वाला यह टैक्स एक अच्छी आमदनी है। इस ठेके को पाने के लिए काफी लोग लालायित रहते हैं। तो क्या मैना के कारण यह हुआ है? वह मैना से कहेगा कि उसे भी कहीं नौकरी वह दिला दे। उसके भाई को तो आदमियों की जरूरत पड़ेगी ही। इसमें

श्रम की कोई बात नहीं है। इस तरह भूखे मरने से कोई लाभ नहीं है। कभी भले ही अपने खान्दानी पेशे से लोगों को मोह रहा हो, आज अब स्थिति बदल गई है।

नदी दूर तक फैली हुई थी। रेत का मैदान ओस से भीगा हुआ था। कहीं-कहीं आक के पौधे निर्जीव से खड़े लगते थे। नदी के किनारे वाले बूढ़े बरगद के पेड़ पर कव्वे काँव-काँव-काँव का शोर मचा रहे थे। बरसात में बढ़ी हुई नदी अब सिकुड़ गई थी और उसका जल आसमान का सा गहरा नीलापन लिए हुए था। दूर से नदी के किनारे खड़ी नीले पत्थर की चट्टानों पर सुबह की धूप चमक रही थी। वहाँ किसी राजा का महल कभी था, जो कि नदी की बाढ़ में टूट गया। वे खंडहर आज सूने-सूने लगते हैं। ऊपर के मैदान में जहाँ कि गेहूँ की फसल बोने की तैयारी होने वाली है, वहाँ भी एक बड़ा कस्बा दबा पड़ा है। यह नदी काफी शक्तिशाली है। इन्सान उससे अक्सर हार जाता है। लेकिन उनकी जाति वाले नदी पर विजय पा लेते हैं। बरसाती नदी को पार करने में भी इनको डर नहीं लगता है। इस नदी के भीतर की जानकारी उनको काफी है। उसका पूरा हृदय वे छान चुके हैं। यह सारी नदी, उनके लिए किसी भेद की बात नहीं है।

लेकिन भले ही आँधी-पानी शीत आदि की मौसमों में वे नदी से पेट के लिए संघर्ष करें, रोजाना जीवन में वे आगे नहीं बढ़ रहे हैं। उनके परिवार उजड़ रहे हैं। नए लड़कों की आस्था पेशे पर से हट गई है। वे अब मजदूरी करते हैं। वह मजदूरी भी उनको ठीक रोटी नहीं दे पाती है, मँगतू ने एक बार योजना बनाई थी, कि सेठों के यहाँ डाका डाला जाय। एक-दो गांवों में सुना कि वह अनाज की चोरी करने में सफल भी हुआ है। किन्तु पुलीस ने एकबार सबको हवालात में बन्द करके खूब मरम्मत की थी। ये पुलीस वाले भी सेठों से इनाम किताब पाते हैं। कस्बे के दरोगा ने तो एक बार उसे भी पकड़ कर बुलवाया था। उसमे

कहा था, कि वह नदी में कारतूस डाल कर मछली मारता है। उसके मना करने पर धमकी दी थी, कि दो महीने जेल भिजवा देंगे। वह उस स्थिति को नहीं समझ पाया था।

दीवान जी ने चुपके समझाया था, कि दरोगा जी को आए हुए तीन महीने हो गए और वह एक दिन भी सलाम करने नहीं आया। वे बहुत नाखुश हैं। एक रुपया दीवान जी की भेंट उसने चढ़ाई थी। तो दीवान जी ने उसे दरोगा साहब के सामने पेश कर कहा था, 'सरकार अभी लड़का है। उम्र ही क्या है जेल जायगा तो सारी ज़िन्दगी बिगड़ जायगी। अबे गलथू इधर अच्छी मछली हाथ लगे तो सरकार को पहुँचा देना। तुम लोगों का दिमाग चढ़ गया है। महीने में एक-दो बार सलामी के लिए आना चाहिए।''

बस वह छूट गया था। पर वह न्याय उसकी समझ में नहीं आया। दरोगा जी ने तो हँसते हुए सा पूछा था कि क्या मैना की माँ घर में नाजायज तौर पर शराब बनाती है। उसने कहा था कि इसका पता लगावे। बात यहीं पर नहीं निपटी थी। एक दिन बड़ी सुबह दरोगा साहब तीन-चार कान्सटेबुलों को लेकर वहाँ आए और मैना के घर की तलाशी ली थी। लोगों की जिज्ञासा की पूर्ति के लिए बताया था, कि एक चोर पकड़ा गया है। उसने बयान दिया है कि माल उसने इसी घर में रखा है। तीन-चार घंटे तक इधर-उधर खुदाई वे करते रहे और फिर चले गए।

मँगतू ने गलथू से कहा था, कि वह दरोगा की पिटाई करने की सोच रहा है। साला झूठे मुकदमें चलवा कर गरीबों को फँसता है। बहुत जालिम है। जिसको मन में आता है झूठी रिपोर्ट भेज कर दस नम्बरी बनवा देता है। स्वयं मंगतू का नाम उस सूची में था। उसे हफ्ते में एक बार थाने पर जाना पड़ता था। कहीं चोरी-आदि होती थी तो दीवान जी एक बार टोह लगा कर ले जाते हैं, कि वह उस दिन

कहाँ था। उनकी बस्ती में जब दीवान जी आते हैं, तो सिपाही साथ लाते हैं। एक अच्छा मुर्ग, कुछ ताजे अंडे, मछलियाँ आदि फोकट में मेहनताना ले जाते हैं। किसी के आनाकानी करने की हिम्मत नहीं पड़ती है। इसीलिए मैना सदा एक से अधिक मुर्गा नहीं रखती, उनको पहले ही बेच डालती है।

यह सच है कि कुछ परिवार कच्ची शराब बनाते हैं। पर यह तो पुलीस की जानकारी में होता है। सुना कि उनका हिस्सा बँधा हुआ है। जुए के भी वहाँ अड्डे हैं और कस्बे के बिगड़े लड़के वहाँ जुआ खेलने आते हैं। कुछ चरित्रहीन लड़कियाँ भी वहाँ रहती हैं......। वह बस्ती फिर भी श्रीहीन सी लगती है। वहाँ कहीं किसी परिवार में चमक नहीं है। लगता है, कि सब थक गए हों। वे सच ही अपने पेशे से भाग कर किसी अनजाने भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ कि कोई रोशनी नजर नहीं पड़ती है।

मंगतू आवारा लड़का है, पर उसमें एक जोश है। वह लड़कों का संगठन करने में प्रवीण है। वह अपनी माँ से लड़ता है। लोग कहते हैं, कि वह भी भली नहीं है। परिवार में उसकी सदा उपेक्षा होती रही है। वह जिद्दी हो गया है। वह बहुत क्रूर सा है। मुर्गियों के कच्चे अंडे खा जाता है। बतख के अंडों से भी उसे परहेज नहीं। छोटी-छोटी मछलियाँ भून कर उड़ा जायगा। अपने घरवालों की आज वह कोई खास परवाह नहीं करता है। फिर भी वह दयालु है। किसी का दुःख उससे नहीं देखा जा सकता है। कोई भी बस्ती में बीमार हो जाय, वह दवा-दारू की व्यवस्था करता है। हैजा, चेचक, क्षय आदि किसी भी रोग के रोगी की परिचर्या करने में वह नहीं चूकता है। उस पर लोगों को एक भरोसा सा रहता है। वह मैना को बुरी निगाह से देखता है? यह बात वह नहीं सह सकता?

यदि मँगतू की माँ बची होती, तो क्या वह कुछ और होता ? अपनी माँ की बात वह सोचता है। माँ का कितना विशाल हृदय होता है। वह माँ किस तरह आज भी उसकी रक्षा करती है। यदि वह मर जाय तो क्या होगा। गल्थू का हृदय भर गया, उसकी आँखों की पलकें भीज गईं।

(२)

अब वह चुपचाप एक चट्टान पर बैठ गया। नीचे नदी अथाह गहरी थी। उसने बल्सी पर गोली लगाई और एक बार काँटे की परीक्षा की। फिर कई देवताओं का नाम जप कर उसे पानी में डाला। नीचे पानी का रंग गहराई के कारण काला-काला सा लग रहा था। वह मन में कई बातें सोच रहा था। यह तो जरूरी लगा कि अच्छी मछली मिल जाने पर वह सामने गाँव के साहूकार के पास जायगा। अनाज न लेकर वह नकद पैसे माँगेगा। यदि और ज्यादा मछलियाँ मिलीं तो वह मैना से कहेगा कि भात और मछली का शोरवा उसके लिए बना दे। काली खटाई भी उसमें डलवा देगा। इधर सात-आठ रोज से ठीक खाना नहीं मिला। अधजली कच्ची सी बाजरे की रोटियाँ नमक में या गुड़ में खा कर पेट नहीं भरता है। उसका भुने चने चबाते-चबाते मन भर गया है। आज पैसा मिल जायगा, तो वह कस्बे जाकर ककड़ी का रायता जरूर खायगा और मैना के लिए भी पेड़ा लावेगा। उसे मावा की मिठाई अच्छी लगती है। वैसे एक टुकड़ा गोला भी लायगा।

तभी एकाएक बल्सी पर झटका लगा। उसने तेजी से झटका देकर, उठाया और उसे घुमाया। बहती घास उस पर फँस गई थी। उसे इस पर बड़ा दुःख हुआ। वह अपने भाग्य को कोसने लगा, और फिर बल्सी पर गोली लगा कर उसे पानी में डाला। सामने दो मछुए डोंगी में जाल से मछलियाँ फँसा कर ले जा रहे थे। उनका जाल लगाने का

ठेका है, रात को वे जाल पर चारा लगा कर उस लड़ी में बाँध कर छोड़ जाते हैं, और सुबह आकर खोलते हैं। नीचे घाट पर डोंगी में मुसाफिर नदी पार कर रहे थे। पहले उतराई दो पैसा पड़ती थी, अब छै पैसा हो गई है। छोटी-छोटी चीजों पर भी बहुत चुँगी पड़ती है। डोंगी पर नदी पार के किसान तरकारी, दूध, दही, मावा, ककड़ी तथा और चीजें कस्बे में बेचने के लिए ला रहे थे। सामने के गाँवों में सिचाई का अच्छा प्रबन्ध है, अतएव वहाँ का किसान बहुत धनी है। पर बाजार के बनिया काफी कौड़ियाँ हैं। वे पक्का माल, कपड़ा, नमक और लोहा उसे इतने मँहगे बेचते हैं कि वे स्वयं परेशान हैं। वह उनकी उपजाऊ धरती भी बाजार के भाव के आगे कोई काम नहीं देती है। वे बनिये सैकड़ों दाँव-पेंच करके उनको फँसाए रहते हैं।

आज यदि ठीक मछली नहीं मिली तो कल वह छोटी मछलियों की तलाश में जायगा। नीचे दो मील पर जो गधेरा नदी में मिलता है, सुना कि वहाँ वहीं पहाड़ के सोतों में घड़ियाल छोटी-छोटी मछलियाँ निकलती हैं। पर वह भी भाग्य से मिलती हैं। सामने वाली डोंगियों में तो लकड़ी, बकरी और न जाने क्या-क्या सामान आ जा रहा है। मछली मारने से तो डोंगी चलाने का पेशा भला है। पर एक डोंगी भी तीन-चार सौ रुपये में बनेगी। हरएक काम के लिए पैसा चाहिए। अच्छा जाल ही उसके पास होता, शायद कुछ मुसीबत हल हो जाती। पर वह तो भाग्य की बात है। उसे भी सामने रेत में खड़े मकानों के खँडहरों में अशरफियों का कलशा मिल जाय, तो वह अमीर हो जायगा। मैना उससे शादी कर लेगी और वह दरोगा भी उसके यहाँ हाजरी किया करेगा। वह महाशय जी कहलावेगा और फिर मौज से रहा करेगा।

तभी फिर बल्सी पर तनाव पड़ा और उसने तेजी से काँटा ऊपर निकाल कर घुमाया और पाया कि वह खाली था। उसने काँटे को

सूँघा तो उसमें मछली की महक आ रही थी। वे मछलियाँ काफी चतुर लगीं कि चारा खा कर भाग जाती हैं। वह अब सावधानी से चट्टान पर लेट गया और भुने चने गुड़ के साथ खाने लगा। सोचा कि जिस ताव से वह आया है, उससे अधिक निराशा अब हो रही थी। लोग तो साधारण काँटे वाली बल्सी से बड़ी-बड़ी मछलियाँ मार लेते हैं। वह सब मौके की बात है। यदि आज कुछ न मिला, तो फिर मँगनू उसकी हँसी उड़ावेगा। पर वह तो शाम तक यहीं रहेगा। तब तक मँगनू कस्बे जरूर चला जायगा। और यदि कम्पाउंडर आया, तो मँगनू सब ठीक-ठाक कर लेगा। कुछ हो बिना मछली लिए वह नदी से लौट कर नहीं जायगा। यह उसने प्रण कर लिया है। अब उसने थोड़ा पानी पिया। नदी में पत्थरों से लगी उथले पानी में लम्बी-लम्बी हरी सेवार उतरा रही थी।

वह अब लेट गया, रात भर ठीक नींद नहीं आई थी और वह बड़ी सुबह उठ कर यहाँ आ गया। पेट भी कुछ गड़-गड़-गड़ कर रहा था। उसे लगा कि वह बहुत अस्वस्थ हो गया है। उसे कुछ अपनी परवाह करनी चाहिए। पैसा कमाना जरूरी है। बरसात में वह भी और लोगों की तरह नदी में तैर कर वहाँ बहती हुई लकड़ी जमा कर सकता है, पर उसकी माँ ने कसमें दे रखी हैं, कि वह बरसाती नदी से लकड़ी न निकाला करे। उसका पिता लकड़ी निकालने के बीच में ही थक कर डूब गया था। वक्त की बात थी। अन्यथा उस जैसा तैराक दस-पन्द्रह मील तक दूसरा नहीं था। वह भी अन्त तक कोशिश करता रहा, पर एक बड़े बहते हुए पेड़ की टक्कर के कारण असमर्थ हो गया था। उसकी लाश का पता तक नहीं चला था। इसीलिए उसकी माँ कहती है कि यह पेशा उनको नहीं फला है। बरसाती लकड़ी का व्यापार काफी अच्छा है और फिर घाट पर हाथ के हाथ वह बिक जाती है। अगले साल वह माँ की जानकारी के बिना ही यह सब करेगा।

उसकी धारणा है कि तैरने की परम्परा में वह अपने पिता का सच्चा बेटा है।

कुछ देर लेट कर वह आकाश की ओर देखता रहा। उधर पहाड़ की ओर चीलें मँडरा रही थीं, लगता है कि बघेरा ने किसी जानवर को वहाँ मार डाला है। कुछ काली-काली-सफेद चिड़ियाँ नदी के ऊपर उड़ रही थीं। कभी-कभी वे पानी में गोता मार कर चोंच में छोटी मछलियाँ पकड़ लेती हैं। वे एक कतार में सी उड़ रही थीं। धूप अब चट्टानों पर आ गई थी। वह उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़कर एक गहरे से तालाब की ओर बढ़ गया। वहाँ नदी का बरसाती पानी जमा था, जो कि काफ़ी गँदला है। उसके पास की नमी वाली धरती पर किसी जानवर के पाँव के निशान उभरे हुए थे। तालाब में छोटी-छोटी मछलियाँ उभरी हुई थीं। उसने अब के एक मरे केंचुए की गोली बनाई और काँटे पर रख दी। फिर उसे ठीक तरह से देखा कि ठीक लगा है या नहीं। काँटे की नोक पर उँगली रखी, वह बहुत पैना था। बेंत को होशियारी से उठा कर, उसने काँटा तालाब की गहरी जगह पर डाल दिया। सड़े पानी की बदबू चल रही थी और किसी जानवर के सड़ने की गंध हवा के साथ बह रही थी। वह फिर भी वहाँ बड़ी देर तक बन्सी लटकाए रहा। डोरी में कुछ भारीपन सा लगा और उसने काँटा उठाने की चेष्टा की तो वह असफल रहा।

उसने अनुमान लगाया कि जरूर ही कोई बड़ी मछली फँस गई है। एक बार फिर झटका लगा और नीचे से बुलबुले उठ कर ऊपर गोल-गोल घेरे बना कर, ताल में चारों ओर फैलने लगे। उसने सावधानी से अपना कोट, कुरता और पायजामा उतार डाला। लँगोट पहने ही वह पानी में घुस गया। तालाब में काफी कीचड़ था, उसके पाँव धँसने लगे। जब घुटने-घुटने तक पाँव फँसते हुए मालूम पड़े तो वह चुपचाप पीछे हट गया और तैर कर उसने बन्सी बाहर निकालने की चेष्टा की पर

वह नहीं निकली, तो उसने एक गोता मारा, दूसरा गोता मारा और कई गोते मारने के बाद पता चला, कि काँटा नीचे कीचड़ में फँस गया था। बड़ी कठिनाई के साथ वह काँटा निकालने में सफल हुआ। वह बहुत थक गया था। कुछ देर बाहर हाँफता रहा ठंडे पानी से देह जग रही थी। वह चुपचाप गरम रेत पर लेट गया।

उसे याद आया कि वहाँ नक्कू भूत रहता है, जो कि आदमियों के पाँव नीचे की ओर खींचता है। हर साल एक-दो व्यक्ति वहाँ के कीचड़ में फँस कर, वहीं धँस जाते हैं। वह आज बच गया है। पर उस तालाब में वैसे काफी मछलियाँ हैं। जब वह गोते लगा रहा था, तो कई उसके शरीर से फिसल कर निकली थीं, उतनी बड़ी मछलियाँ होने पर भी वह असफल रहता है। यह काँटा तो बहुत मजबूत है। यहाँ अभी तक कोई उसे व्यवहार में नहीं लाता है। वह दूकानदार तो कहता था, कि उसको एक बार मछली छू ले तो, फिर फँस कर ही रहेगी। पर वे तो चुपके चारा खा कर भाग जाती हैं। वह डिब्बे की बाहर वाली मछली कितनी बड़ी थी, वैसी मछलियाँ केवल साहब लोगों के देश में ही होती हैं। वह भूत क्या सचमुच आदमी को खा जाता है। वह भी फँस गया होता, यदि कीचड़ में आगे बढ़ता वह तो काफी लसलसा और चिपकदार था। वहाँ पाँव पाताल की ओर डूबते ही चले जाते थे। उसकी तालाब में डुबकी लगाते हुए किसी जानवर की हड्डियों से भी उसके पाँव छुए थे। वहाँ की सड़न और बदबू तो सारे शरीर पर फैल गई थी।

उसका सारा शरीर घिन से सिहर उठा। वह कुछ देर रेत पर लुढ़कता रहा और फिर उठ कर नदी की ओर बढ़ गया। वहाँ साफ बहते हुए पानी में उसने कई गोते लगाए और फिर किनारे धूप में खड़ा हो गया। उसके शरीर से पानी की बूँदें टपक रही थी। अंगोछे से उसने अपना बदन पोंछा और कपड़े बदल लिए। एक बड़े पत्थर पर पीठ टिका करके वह सामने की ओर देखने लगा। नदी के ऊपर धूप फैल गई थी।

काफी वक्त गुजर चुका था। वह आँखें मूँदता और फिर सामने की ओर देखने लगता। वहाँ के घाट पर चरवाहे गाय-बैल और बकरियों को पानी पिलाने लाए थे। कुछ लड़कियाँ दो-तीन भैंसों को नहला रही थी। वे सब कितने प्रसन्न थे। वे लड़के तो अब नदी में कूद कर तैर रहे थे। वे लड़कियां भी अपनी अँजुलियों से पानी उठा कर आपस में एक-दूसरे पर फेंक रही थी। वे तो जीवन-मुक्त लगते थे। उनको किसी रोजगार की चिन्ता नहीं है। उनको खाना पाने के लिए कोई खास परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। उनकी मस्ती पर उसका दिल हरा हो आया। वे किसानों के बच्चे उन लोगों से भले हैं। लेकिन वे छोटी-छोटी लड़कियां और लड़के अपना जीवन चरवाहे के रूप में क्यों काट देते हैं? उनको भी सब मौसमों में इसी प्रकार का काम तो करना होता होगा। कौन जाने क्या-क्या मुसीबत उनको भी झेलनी पड़ती हों। वहाँ के गाँवों में ही सब लोगों के पास काफी खेत कहां हैं। इसीलिए मर्दों को फौज में, पुलिस में भरती होना पड़ता है। छोटी छोटी नौकरियों के लिए मैदान जाना पड़ता है। वे जीवन भर नौकरी करके भी अपने परिवार का पेट नहीं भर पाते हैं।

अब कम्पाउंडर आने वाला होगा। वह किस मुँह से वहाँ जाय मँगतू उसकी मजाक उड़ायगा और मैना तथा गांव के और लोग भी वहां होंगे। कम्पाउंडर का आना साधारण घटना नहीं है, उसकी फीस भी तीन रुपए से कम नहीं होती है और कम से कम एक रुपया टट्टू वाला ले लेगा। यदि एक ही मछली मिल जाती तो वह उसे कम्पाउंडर साहब को दे देता वह तो बिलकुल कड़ा आदमी है, कहता है, पैसा दो और मरीज को बचाओ अस्पताल का खर्च वह नहीं दे सकता है। वह मंगतू तो बावला हो गया है। शायद उसकी मजाक उड़ा रहा होगा। क्यों आखिर वह फोकट में तीस-चलीस रुपया उन पर खर्च करेगा। वह जरूर मैना को छेड़ने आया होगा। वह तो बार-बार कहता

था, कि मैना माने चाहे न माने, वह उसे अपने घर में जरूर डालेगा, नहीं तो उसका खून कर डालेगा। वह फाल्गुन में जबरदस्ती बरात ला कर, उसे अपने साथ ले जायगा मैना ने वह जब सुना तो केवल हँस दी थी।

लेकिन उसे तो नींद आ गई। उसने स्वप्न में देखा कि वह नदी के किनारे खड़ा है। उसकी बल्सी में बड़ी-बड़ी मछलियां फँस रही है। वह बहुत खुश है। उसने योजना बनाली है, कि सब को ऊँचे दामों पर बेच कर एक जाल ले लेगा। फिर रोज मछलियां मार कर कस्बे बेचने के लिए ले जायगा। वहां से वह सौदा-पत्ता लायगा। वह गांव नहीं जायगा। वहाँ वे लोग सस्ते दाम देकर उसे लूटते हैं, बाजार में तो काफी खरीददार मिलते हैं। वे मछलियाँ किनारे के पत्थरों के बीच फड़-फड़ा रही थीं। सच ही भगवान् ने उसकी सुन ली थी। वह मैना के लिए लाल मूँगे की एक माला लायगा। वह उसे अस्वीकार नहीं करेगी। वह मँगतू से दोस्ती करेगा। बेकार झगड़ा मोल लेने से कोई लाभ नहीं होता है। उसका उससे झगड़ा ही क्या है। लगा कि आज सारी मछलियां उसी के जाल में फँस रही थीं। वे तो सच ही उस अँग्रेज की मछली की तरह ही बड़ी लगी। यह नदी काफी उपजाऊ है। चारा अच्छा होना चाहिए, कांटा तेज हो तो बस सब कुछ पकड़ने वाले की कुशलता पर निर्भर है।

तभी एकाएक उस नक्कू भूत की नाक मछलियों की ओर बढ़ने लगी। उसकी तो सारस की तरह चोंच भी थी। वह एक-एक मछली पकड़ कर निगल रहा था। वह अवाक सब कुछ देखता का देखता रह गया। एक भी मछली उससे नहीं बचा सका। जब वह सब मछलियां खा चुका तो उसने अपनी चोंच से उसकी टांग पकड़ली और नदी की ओर घसीटी। वह तो फिर उस ताल में गोते लगाने लगा। उससे छुटकारा पाना सभव सा नहीं लगा। वह बहुत बलवान था।

डर के मारे वह चिल्लाया, उसकी नींद टूट गई। उसने देखा संध्या हो आई है, वह तो न जाने कितनी देर तक सोता रहा। उस नक्कू भूत की याद से अभी तक शरीर में कँपकँपी उठ रही थी, घाट पर औरतें पानी भर रही थीं। वह उठ बैठा, उसने अपना मुँह धोया, आँखों पर पानी के छपाके दिए, मुँह का जायका कड़ुवा सा हो गया था। फिर उसने एक बार मछली मारने की चेष्टा की।

(३)

गलथू आखिर हार गया। घाट पर सन्नाटा छा गया था। रात पड़ने लगी। आसमान पर तारे एकले-दुकले चमक रहे थे। अब तक मँगतू जरूर कस्बे लौट गया होगा, उस दूकानदार ने उसे ठग लिया था। आज की दुनिया में किसी का एतबार नहीं किया जा सकता है, सब ठग और चोर हैं। उस काँटे और बलसी पर उसे काफी गुस्सा चढ़ा, उसकी बारह-तेरह घन्टे की मेहनत बेकार हो गई है। सच ही उसे अब कस्बे में नौकरी कर लेनी चाहिए। कहाँ तक यह भुख मरी सही जाय। अठारह-उन्नीस साल की उसकी उम्र हो गई है। नदी के किनारे कुछ पक्षी उड़ रहे थे। वह अपनी बस्ती वाली बटिया पर मुड़ गया। नदी का स्वर उस सन्नाटे में काफी मधुर लगा। यह नदी हजारों वर्षों से इसी प्रकार बहती है। गरमियों में ऊँचे पहाड़ों पर का बर्फ गलता है, तो इसका पानी बढ़ने लगता है। फिर बरसात में उसका रूप काफी डरावना हो जाता है। इसी तरह मौसमें आती है और चली जाती है। सैकड़ों वर्षों से उनके परिवार के साथ इस नदी का नाता रहा है। अब यह उस सनातन बन्धन को तोड़ कर, कस्बे में मजदूरी करेगा, कल से यह नदी उसके लिए कौतूहल की बात नहीं रह जायगी।

उसकी दादी ने बचपन में उसे इस नदी की कई कहानियाँ सुनाई थीं। जहाँ से वह निकलती है, वहाँ परियों की कोई रानी रहती है। उसके तालाब से यह पानी बह कर आता है। वहाँ कमल के फूल

खिलते हैं और राजहँस तैरा करते हैं। ये मछुए भी पहले वहीं रहते थे, पर किसी ने रानी का प्यारा हँस मार डाला और तब रानी ने उनको श्राप देकर वहाँ भेज दिया। इस नदी से दादी के जमाने में बड़ी-बड़ी मछलियाँ निकलती थीं, वह जो राजा का महल है, दादी ने उसे देखा था। वहाँ रानियाँ रहती थीं। उनकी यह बस्ती राजा ने ही बसाई थी। तब ये सरकारी नौकर थे। रोज चुन कर अच्छी मछलियाँ दरबार को भेज दी जाती थीं। उन दिनों तीन चार सेर का घी मिलता था और अनाज तो चालीस-पचास सेर का। तब खाने-पीने की कठिनाइयाँ नहीं होती थी, सामने नदी के पार रानियों ने एक सुन्दर बाग लगवाया था। दादी ने फिर वह बाढ़ देखी थी। चारों ओर पानी ही पानी। महल बह गया और राजा शहर छोड़ कर चला गया था।

वह तो अब रेत के भरे मैदान को पार कर रहा था। वहाँ कई मकानों के खण्डहर थे। खेतों को चारों ओर से कँटेदार झाड़ियों ने घेर रखा था। वहीं वह बड़ा शहर चुपचाप दबा पड़ा हुआ है। आज वह कल्पना भी नहीं कर सकता है, कि कभी वहाँ बड़ी ऊँची इमारतें, सड़कें व बाजार रहे होंगे। समय कितने बड़े परिवर्तन नहीं करता है। सच ही दस साल पहले भी जीवन में इतनी कठिनाइयाँ नहीं थीं। आज अब निभना असंभव लगता है। उसकी माँ बताती है कि ऐसे बुरे जमाने की कल्पना वह स्वयं कभी नहीं करती थी, किसी चीज में बरकत नहीं है। वक्त पर अड़ोस-पड़ोस में पैसा कर्जा तक नहीं मिलता भाई-भाई का एतबार नहीं करता है। पहले के लोग तो आपस में एक-दूसरे के सुख-दुःख में हाथ बटाया करते थे, आज आपसी डाह और छोटे-मोटे झगड़े बहुत बढ़ गए हैं। कोई किसी की नहीं सुनता। जो जरा खाते-पीते हैं, वे अपने ही घमंड में फूले रहते हैं।

सेमल के पेड़ से कोई चिड़िया फड़फड़ा उठी, वह ऊँचा पेड़ लगता था कि आकाश को छू लेगा, उसका तना देख कर उसने सोचा

कि मैना के भाई से कहेगा कि उसे खरीद लें। अब उसे अपनी एक डोंगी जरूर बना लेनी चाहिए। वह कोई मामूली आदमी नहीं है, ठेकेदार का रुतबा बहुत बड़ा होता है। और जो मँगतू ने बात कही थी कि अब हरएक मछुए को बारह रुपया सालाना टैक्स देकर मछली मारने का लाइसेन्स लेना पड़ेगा। वह कानून उसकी समझ में नहीं आया। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड वालों को यह क्या नई बात सूझी है। उतना टैक्स देना तो हर एक के बश की बात नहीं है। यह कारतूस चला कर मछली मारना सारी गड़बड़ी की जड़ है। इसी के कारण मछलियाँ कम हो हैं। लेकिन हरएक कानून को तोड़ता है पुलीस जान कर भी कुछ नहीं करती है। यदि मैना का भाई डोंगी बनावेगा, तो वह उस पर काम करेगा। उससे छोटा ठेका ले लेगा। उसमें भी बँधी हुई आमदनी हो जायगी।

अब वह पगडंडी पर ऊपर की ओर चढ़ने लगा। नदी नीचे-नीचे चुपचाप बह रही थी। खिली हुई चाँदनी में रेत का मैदान चमक रहा था। उसे घर लौटने में बड़ी शर्म लग रही थी। उसका दिल टूट सा गया था। वह अभी वहाँ न लौटता पर उसकी माँ प्रतीक्षा कर रही होगी। वह अपनी माँ के पास जा रहा है। उससे, उसे कोई डर नहीं लगता है। वह सरलता से अपना हृदय उसके आगे खोल देता है। वह भी उसे लाकली रहती है। कड़ी मेहनत करने के कारण वह अशक्त हो गई है। अब गल्थू को उसका ठीक प्रबन्ध कर लेना चाहिए, वह अब पंगु हो गई है। उसकी देख भाल करने वाला कोई जरूर चाहिए। यदि आज उसकी बहिन जीवित होती तो वह उसे जरूर बुला लेता।

बस्ती में कुत्ते भूँक रहे थे। वह उन सबको पहचानता है। वे तो उसका स्वागत करने के लिए नीचे पगडंडी तक आए थे। उसके पुचकारने पर दो-तीन पूँछ हिलाते रहे। वह आगे बढ़ रहा था पीछे

कुत्तों की टोली थी। बटिया के दोनों ओर काफी गन्दगी थी, वह आगे बढ़ा, सामने बस्ती से काफी हट कर एक छोटी सी दूकान है। मँगतू वहाँ बैठा हुआ गपशप लड़ा रहा था। उसे देख कर गल्थू चौंका। उसने चेष्टा की कि वह चुपचाप उन लोगों की दृष्टि से बच जाय। मँगतू की तेज आँखों ने उसे पकड़ लिया। पुकारा, "अरे बेटा गल्थू, कहाँ भाग रहा है बे।" मालूम होता है खाली हाथ लौट कर आया है। वक्त का तो खयाल करता।"

वह उसकी और बातें नहीं सुनना चाहता था। इसी लिए तेजी से आगे बढ़ा लेकिन मँगतू ने पुकार कर उसे अपने पास बैठा कर कहा, "अबे भूखा होगा, यहीं मैंने तेरे लिए भी खाना बनाया है, क्यों बेकार इस तरह परेशान होता है, दो-चार रोज में नौकरी ठीक हो जायगी। पहले खाना खा।"

डालडा के पराठें और मछली उसने उसके आगे रखकर कहा, "शरीर रहेगा तो दुनिया भी रहेगी। परेशान होकर कोई लाभ नहीं होता है।"

गल्थू को बड़ी भूख लग रही थी। मँगतू तो एक छोटी सी शीशी से शराब निकाल कर पी रहा था। पीता हुआ बोला, "जिन्दगी चार दिन की है। सब रस चख लेने चाहिएँ। न जाने कब मौत आ जाय।"

गल्थू तो जल्दी-जल्दी से पराठें उड़ा रहा था। जब खा चुका तो चुपचाप हाथ धो लिए। वह जानना चाहता था, कि क्या सच ही कम्पाउडर आया था। मँगतू उसकी बात समझ कर बोला, "कम्पाउडर आया था। कहता था कि हड्डी तो शायद ही जुड़ेगी, पट्टी बाँध गया है। भाभी बहुत कमजोर है। वैसे साले ने कहा तो यही है, कि थोड़ा-बहुत चलने-फिरने लायक दो महीने में होगी। ये डॉक्टर के बच्चे कुछ नहीं जानते। सुना कि विलायत में तो डॉक्टर फेफड़े और कलेजा तक बदल देते हैं; हड्डियों की बात कौन कहे?"

वह अब उठ गया। इस मँगतू पर सोचा, वह मस्त जीव है। उसे किसी बात की चिन्ता नहीं घेरती है। वह खा-पीकर पड़ा रहता है। नौकरी की उसे कमी नहीं। उसके दोस्त भी कस्बे में बहुत से हैं। वह किसी की परवाह इसीलिए नहीं करता है। वह चुपचाप आगे बढ़ गया। मँगतू के गाने का स्वर तभी कानों में पड़ा :—

"अँखियाँ मिला के, जिया भरमा के, चले मत जाना······

चले मत जाना······

वहाँ बैठी चौकड़ी के हँसने की आवाज भी वह सुन रहा था। पर इस सब से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। उसके काँटे ने उसे आज धोखा दिया है। वह घर पहुँच गया। उसकी माँ ने बताया कि मैना कई बार आकर पूछताछ कर गई है। मँगतू खाना बनाने को मना कर गया है। उसने तो बताया कि मँगतू डाक्टर लाया था और उसे भी दस रुपया दे गया है कि दूध कहीं लगा लो। उसके पाँवों में अपना माथा टिका कर कह गया कि उसकी माँ नहीं है। भाभी वह उसकी है। माँ के बराबर है।

उसकी माँ ने उसकी सौतेली माँ की बुराई कर कहा कि वह पूरी डायन है। अन्यथा ऐसे हीरे बेटे से लड़ती। वह चुपचाप माँ की बात सुन रहा था। मैना माँ से कह गई थी, कि अब उसे बेकार न मैना करें। उसके भाई को नदी का ठेका मिल गया है। वहाँ उनको अपने खास आदमियों की जरूरत पड़ेगी। वहाँ आमदनी खासी होती है। माँ ने यह भी आखिर में जोड़ा था, कि मैना सी बेटी भगवान सब को दे। वह कितनी नसीहत की बातें करती है।

उसे अनायास न जाने क्यों वह नदी के किनारे का सपना याद हो आया। उसे कुछ ऐसा सा लगा कि यह मैना कभी न कभी किसी ऐसे ही नर पिशाच के हाथ में पड़ेगी जो उसका जीवन नष्ट कर

डालेगा। वह इस बात की कल्पना से ही सिहर उठा। वह उस मैना की बात बार-बार न जाने क्यों याद कर रहा था।

मैना दूध लाई। उसने चुपचाप उसकी माँ को दूध पिलाया। वह बाहर जा रही थी, कि गलथू बाहर आया। उसने पूछा, "मैना, क्या यह ठेका तूने लिया है......मँगतू कह रहा था कि......।"

"वह तो पागल है। जो सुनता है, वही कह देता है।"

"और वह दीवाली पर शहर जाने की बात।"

"उस पर मैंने सोच लिया है।"

"क्या ?"

"मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।"

"नहीं जाओगी।"

"तुमने मना किया है न।"

वह अचरज में पड़ गया। यह मैना कितनी सरल है। वह व्यर्थ कई बातें अपने मन में गढ़ता था। वह उस खिली चाँदनी में उसे निहारता रहा। वह अब बोली, "मैंने भाई से कहा है, कि अब हमारे पास बहुत काम आ गया है। तुमको हमारी मदद करनी चाहिए, बेकार इधर-उधर भटकने से कोई लाभ नहीं है।"

मैना चली गई। वह उस जाती हुई मैना को देखता रहा। वह शहर नहीं जायगी यह उसकी बहुत बड़ी विजय है। वह बेकार कई बातें गढ़ता था। उस चाँदनी रात में वह बस्ती साफ-साफ दीख पड़ती थी। उसका वह भद्दा स्वरूप मन में पैठता नहीं था। एकबार चारों ओर देख कर, वह लौट रहा था, कि उसने सीटी की आवाज सुनी। मँगतू एकाएक सामने आता दीख पड़ा। वह तो पास आकर बोला, "बेटा सुन तू भाग्यवान जनमा है। मैना की अपनी माँ से आज शहर जाने पर काफी लड़ाई हुई। उसने साफ-साफ इन्कार कर दिया, कि

वह वहाँ तालीम लेने नहीं जायगी और इस सारी झंझट से बचने के लिए उसने तुमसे शादी करने का एलान कर दिया है।

गल्थू उलझन में पड़ गया। लेकिन मँगतू कह रहा था, "अभी-अभी इसके भाई ने बताया तो सोचा मैंने कि तुझे बधाई दे आऊँ।"

मँगतू लौट गया। गल्थू भविष्य पर सोचता रहा······वह मैना क्या पागल हो गई है······

वह अपने मकान पर पहुँचा, सामने कुछ लुँडेरू कुत्ते भूस रहे थे। उसके दिमाग में कई बातें उथल-पुथल मचा रही थीं।

जिया

जिया सुबह नहा कर लौटी थी कि देखा, पास मोहल्ले की महरी उसकी प्रतीक्षा में खड़ी है। उसने टीन के फाटक पर बन्द ताला खोला। पानी का लोटा एक ओर रख दिया और भीगी धोती सिमेंट की बनी छोटी दीवार के सहारे फाटक कर सुखाने डाल दी। अब खड़ी होकर जैसे कि महरी की बात सुनने के लिए तैयार हो गई।

"कल सुबह गया था, अभी तक नहीं आया। सुबह और रात का खाना वैसे ही पड़ा हुआ है।" वह आसानी से बोली, आज अब यह नई बात नहीं है। जरूर पुलीस ने उसे पकड़ लिया होगा। कल सुबह जब वह गया था, कि सी० आई० डी० वाला सामने सड़क की पुलिया पर बैठा हुआ था। कई बार वे उसे पकड़ कर ले गए और फिर वह पाँच-सात रोज के बाद जमानत पर छूट कर आ गया। यह पुलीस तो हवालात में मारपीट भी करती है, पिछली बार उसके कपड़े फटे हुए थे और हाथ-पाँव पर कई जगह रगड़ थी। उसने बताया था कि पुलीस वाले उसे घसीट कर ले गए और फिर उसकी खूब पिटाई की थी। सुना कि वे नाखूनों पर पिनें चुभा कर भेद की बातें पूछते हैं। पुलीस की उस हृदयहीनता की बात सुन कर वह दंग रह जाती है।

महरी के बच्चे को कल रात से बहुत तेज बुखार है। वह इसीलिए उससे सलाह लेने आई थी, कि कहीं खसरा तो नहीं निकलने वाला है। रात भर वह बच्चा तड़पता ही रहा। एक मिनट भी नहीं सोया था।

अब नींद आई है, तो वह उसे छोड़ कर आ सकी। जिया उस गरीब मोहल्ले में सब तरह की सलाह दिया करती है। साधारण दवा-दारू भी बच्चों की जानती है। पुराने बड़े परिवार, जहाँ सम्मिलित तीस-चालीस व्यक्ति रहते थे; वहाँ बच्चों की पैदायश तथा उनका बीमार हो जाना, एक साधारण घटना थी। घरेलू आयुर्वेदिक दवा जड़ी-बूटियों आदि का प्रयोग थोड़ा-बहुत सब जानती थीं। जिया उस परम्परा में पली, और पनपी थी। मलेरिया बुखार में चिरायते का पानी और मांड़ उसका पेटेन्ट ही नुस्खा था। बच्चों को अजवायन, मुलेठी, बंशलोचन, जीरा आदि न जाने क्या-क्या चीज़ें वह दिया करती थी। एक खास तरह की घुट्टी भी वह बनाती थी। जो कि बहुत सस्ती और स्वास्थ्यकर होती।

जिया उठी और महरी के साथ हो ली। उस मोहल्ले में महरी, चपरासी, प्रेस के कम्पोजिटर, तथा और निचले तबके के लोग रहते हैं। नाई, चाट वाले आदि गरीब वर्ग के छोटे खोंचे वाले वहाँ छोटी-छोटी कोठरियाँ, किराए पर लेकर रहते हैं। कहीं कोई धुनिया भी धुन-धुन करता रुई धुनता मिलता है। वहाँ के सब लोगों से वह परिचित है। वह किराए के मकानों का पिछवाड़ा है, जहाँ कि अच्छा मध्यवर्ग रहता है। यहाँ रात-दिन झगड़े हुआ करते हैं और अक्सर नाके पर के हवलदार वहाँ आया करते हैं। कुछ दस नम्बरी भी सुना वहाँ रहा करते हैं। और कुछ भी हो, चाहे न हो; पर संध्या और सुबह को औरतें वहाँ गालियाँ देकर अपनी वाकशक्ति का परिचय देती हैं। वहाँ की काली-कलूटी युवतियाँ भी अजीब सा शहराती शृङ्गार कर, चटक-मटक के साथ अपनी झाँवरियाँ बजाकर चलती हैं। महीने में एक-दो बार किसी सेठ जी का गुमाश्ता किराया वसूल करने आता है। सुना कि वह चार आना हफ्ता सूद पर एक रुपया जरूरतमन्दों को उधार दिया करता है। छोटी कोठरियाँ तीन रुपया और बड़ी पाँच रुपया

माहवारी किराए तक की हैं। दो-तीन प्रायमरी स्कूल के मास्टर भी जिया के नीचे वाली कोठरियों में रहते हैं। किसी ने बताया था कि उनमें एक पुलीस में सूचना देने का काम करता है। बुआ ने उस ओर खास ध्यान नहीं दिया। वह बेकार बातों में नहीं पड़ती है।

अब तो वह उस कोठरी से बाहर पहुँची। बच्चे की देह तपी और लाल सी थी। जरूर उसे खसरा निकलने वाला है। उसकी ठीक तरह जाँच कर बताया कि बीच में कोई कपड़ा डाल कर अँधेरा कर दिया जाय, तथा उसे हवा न लगने दी जाय। पीने को अजवायन का पानी बताया। पर और बच्चों का क्या हो? समझाया कि घबराने की कोई बात नहीं। आजकल का मौसम ही ऐसा है। उस महरी का पति कहीं नौकरी पर चला गया था। दिन को दो घन्टे के लिए घर पर आवेगा। उसे अभी आठ-दस घरों में चौका-बरतन करना है। आज तो बड़ी देर हो गई है। उनकी नौकरी ऐसी है, कि एक दिन छुट्टी नहीं; और यदि जरा देर हो जाय तो मलकिनें मुँह फुलाए कहती हैं, कि नौकरी न करनी हो, तो साफ-साफ बतादें। उसके नखरे पसन्द नहीं हैं। रोज एक न एक बहाना लेकर चली आती है। पहली तारीख से वह अपना दूसरा प्रबन्ध करले। महीनों से यही बातें होती हैं। पहली आ-आ कर चली जाती है। फिर उसे हँसी तो इस बात पर आती है, कि वे मलकिनें जिस धौंस में बात करती हैं, उतनी ही आलसी हैं। उसकी प्रतीक्षा करती रहेंगी, पर कभी एक बरतन खुद नहीं धोतीं उनकी उस हालत पर उसे बड़ी हँसी आती है। कभी-कभी वे अपना फटा हाल सुना कर कह ही देती हैं कि उनकी स्थिति ठीक नहीं है। वेतन का रुपया सात-आठ तारीख को समाप्त हो जाता है। किसी तरह वे गुजर-बसर कर रही हैं। पर अपना एक बड़प्पन वे नहीं भूलेंगी कि उनका मायका अच्छा है। वहाँ आमदनी ज्यादा है।

जिया तो चुपचाप लौट गई। सामने बुद्ध की बहू अपने लड़कों को पीट रही थी। उसने चवन्नी की चोरी कल की और खा-पी डाली थी। वह उसे खूब पीट रही थी, वह लड़का ऊँचे स्वर में रो रहा था। अड़ोस-पड़ोस के बच्चे सहमें खड़े-खड़े उससे सहानुभूति प्रकट कर रहे थे। लड़के ने तो चवन्नी की आइसक्रीम अपने साथियों को खिलाई थी। क्योंकि वह गुल्ली-डंडा खेलने में हार गया था। अभी न जाने कै दिन उसे अपना दाँव चुकाना पड़ता, पर वह तो एक चवन्नी में कट गया। उसकी दाँव चुकाने की मेहनत इस तरह से बच गई थी। वह लड़का कुछ जान-बूझ कर प्रदर्शन भी कर रहा था, कि माँ जल्दी छोड़ दे। वह माँ तो बीच-बीच में आशीर्वाद दे रही थी, कि मर जाता तो मुसीबत टल जाती।

अब वह उस रोते लड़के को बाहर छोड़कर, भीतर जा कपड़ों पर इस्तरी लगाने लगी। बड़ी मुश्किल से कल शाम को कोयला मिला है। अनाज भी चोर बाजार में और कोयला भी। ऐसा बुरा जमाना तो पहले कभी नहीं आया था। सोडा-साबुन, सब्जी मिट्टी सब चौगुने दामों पर मिलता है। ग्राहकों से कहने पर कि धुलाई दो-दो आना होगी, सब भौंचक्के रह जाते हैं। वह कोयला तो कच्चा लगता था, चिंगारी उससे निकल रही थीं। ठीक पैसा चुकाने पर माल भी अच्छा कहाँ मिलता है? वह फिर चुपचाप इस्तरी करती रही। उसका पति तो बहुत सीधा-साधा है। पाँच से अधिक गिनती तक नहीं जानता है। अक्सर बाबू लोग कम हिसाब करके देते हैं। किसी का भरोसा नहीं। वह अगर स्वयं हिसाब लगाकर न रखे, तो काम चलना मुश्किल हो जाय। और यह बच्चा अलग जान मुसीबत में किए रहता है। मालूम होता है, कि जरूर चोर-डाकू आगे चल कर बनेगा। स्कूल में भरती किया था, तो वहाँ से भाग करके लौट आता

है। मास्टर लोगों को बच्चों की पढ़ाई से क्या चिन्ता ? फिर गरीबों के बच्चों की ओर कोई ध्यान नहीं देता है।

इस मोहल्ले में वह धोबन सोलह-सत्रह साल से रहती है। इसी शहर में उसका मायका है। माता-पिता अपाहिज हैं। पाँच लड़कियां थीं, सबकी शादी हो गई। उनको भी माहवारी कुछ न कुछ देना पड़ता है। पति समझदार होते, तो वह बहुत कुछ कारोबार बढ़ा लेती। आज तो भले घरों से त्योहारी तक नहीं मिलती हैं। वहाँ की बहुएँ, तो अपना ही रोना रोती हैं, कि उनकी अपनी गुजर बड़ी कठिनाई से हो रही है। सच ही उनका बुरा हाल है। कई तो तीन-चार साल से खाँसती रहती हैं। जब ग्राहकों का हाल यह है, तो फिर वे ही क्या करें। सब कुछ मौके की बात है। अब कपड़ा भी हरएक समझ-बूझ कर धोने के लिए देता है। ज्यादा तर कपड़े घर पर ही वे धोती हैं। फटा-पुराना कपड़ा तक नहीं देती हैं। कपड़े का यह कैसा मोह है ?

वह अक्सर जिया के यहाँ बैठती है। जानती है, कि उनकी मौसी के दो लड़के वहाँ विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं। वे उनका कपड़ा पाँच-छै साल से धो रहे हैं। बड़ा लड़का अक्सर उसके पति को न जाने क्या-क्या बताया करता था। अब तो वह साल भर से लापता है। सुना है कि पुलीस उसको पकड़ने के चक्कर में थी। वह मजदूरों में अब छुप कर काम करता है। उसने एक बार उसके बारे में पूछा, तो जवाब मिला था कि वह कुछ नहीं जानती है। यह दूसरा लड़का भी वैसा ही कुछ काम करता है और पुलीस बार-बार उसे पकड़ कर ले जाती है; पुलीस का उसे इस तरह पकड़ लेना समझ में नहीं आता है। सुना कि वे पढ़े लिखे हुए लड़के हैं, कहीं अच्छी नौकरी उनको मिल सकती थी पर नौकरी न करके वे तो यह काम कर रहे हैं।

बड़ा लड़का उसके पति को बताता था, कि यह सरकार गरीबों की नहीं है। इसीलिए मेहनतकश मर रहा है। सेठ मुनाफा कमा-कमा कर अपनी तिजोरी भर रहे हैं, मध्यवर्ग भी परेशानी में झुँझलाया करता है। लेकिन मेहनतकश के गुस्सा के आगे सेठों की एक नहीं चलेगी। वे अपना राज लेकर रहेंगे। जब उनकी हुकूमत आवेगी, तो कोई किसी का शोषण नहीं कर सकेगा। सबको आराम से जिन्दगी बसर करने का मौका मिलेगा। हरएक बच्चे की पढ़ाई का ठीक प्रबन्ध होगा। वह देखती है, कि अमीरों के बच्चे स्कूल पढ़ने जाते हैं। जब कि उनका बच्चा गधा हाँक कर, घाट पर ले जाता है। वह पढ़-लिख जाता, तो कहीं नौकरी मिलती। उसके माँ-बाप बूढ़े हो गए हैं; आज मेहनत नहीं कर सकते, इसलिए खाने के लाले पड़े रहते हैं। उनका बुढ़ापा कटना कठिन लगता है। पिता दमे का बीमार है। माँ को मलेरिया घेरे हुए रहता है। वे उससे नाखुश हैं, कि उनको पैसा नहीं देती है। पर वह ज्यादा पैसा कहाँ से दे! यहाँ तो अपनी गुजर ही मुश्किल से हो पा रही है। बच्चे को स्कूल भेजना चाहती है, पर वहाँ का खर्च बहुत है।

जिया ने उसे बताया था, कि वे उसकी बहिन के लड़के हैं। उसकी शादी उसी परिवार में हुई थी, पर वह विधवा कम उम्र में हो गई। बहिन के मर जाने के कारण, उन बच्चों को पालने का भार उसके ऊपर पड़ा जिसे उसने बड़ी खूबी से निभाया। उसकी बहिन उसे जिस रूप में पुकारती थी, वही 'जिया' कहना इन लड़कों ने भी सीख लिया है। बचपन से इनको पाला-पोषा, और जब ये परदेश पढ़ने आए, तो वह भी उनके साथ चली आई। उसका अपना और क्या था! वे बच्चे भी सदा उसे स्नेह से देखते थे, कभी उसकी बातों की अवज्ञा नहीं की थी।

जिया अब तक अपने मकान पर पहुँच गई थी। सिढ़ियों से लगी दीवाल पर ऊपर पड़ोस के बंगले के पानी की टंकी है। उसमें जाता हुआ नल इधर टपकता है, और सीढ़ियों में फिसलन रहती है। यह डर बार-बार रहता है, कि कोई फिसल न जाय। यहाँ भी टीन से छाई एक कोठरी और रसोई आदि है, जो कि दिन में बहुत तपती है। गरमियों के दिनों में तो दिन भर वे भुन जाते हैं। यह बड़ा शहर उसे पसन्द नहीं है, पर ये बच्चे, जिनको पालकर बड़ा किया उनका मोह कितना नहीं है। बड़ा लड़का कह गया था, कि वह तीन चार दिन में लौट कर आ जायगा, एक डेढ़ साल हो गया नहीं लौटा। कभी-कभी किसी के हाथ चिट्ठी भेज दिया करता है, कि कुशल से है। यदि आज उसकी माँ बची होती, तो वह क्या उसे रोक लेती ?

पहले उसकी समझ में नहीं आता था कि वे लड़के क्या कर रहे हैं ? उसने गाँधी जी का एक बड़ा जलसा देखा था। बड़े-बड़े जलूस निकलते थे। कांग्रेस की बात तो सभी जानते थे। उसकी साठ साल की उम्र है। कितना बड़ा जमाना नहीं देखा था। देश में तो अब अपना राज्य आ गया था। ये लड़के अपने साथियों के साथ आते और बड़ी-बड़ी रात तक नेताओं की मजाक उड़ाया करते थे। सबसे मुसीबत तो यह होती कि रात-बिरात इनके दोस्त टपक पड़ते और उनके लिए भी खाना बनाना पड़ता है। भला क्या आज उसकी यह उम्र है कि ऐसी मेहनत करे। पर इन लड़कों से क्या कह सकती है। वे बावले शायद नहीं जानते कि बुढ़ापा क्या है ? वह उनसे रूठ जाती है; झगड़ा करती है; उनको डाँटती है; पर उन सबसे क्या ? वे उसी के बच्चे तो हैं। माँ ने पैदा किया; और मर गई। उस विधवा ताई का जीवन किसी तरह उनके सहारे कट गया। पर यह बुढ़ापा अजीब सा

है। वह रात को आँख नहीं देखती। एक आँख का मोतियाबिन्द निकालना जरूरी हो गया है।

वह सोचती थी, कि बड़े ने एम० ए० पास कर लिया है। अब वह जरूर कहीं नौकरी पा जायगा। फिर वह बहू के साथ रहेगी; पर वह बात ठीक नहीं निकली। वह न जाने क्या-क्या करता रहता था। कभी कागज पर मोटे-मोटे कलम से लिख कर सुनाता, "देख जिया क्या लिखा है—मजदूरों को अस्सी रुपया बुनियादी तनखा व हफ्ते में चालीस घंटे काम! हम दुनिया में शान्ति चाहते हैं? हम जंगखोरों की नहीं चलने देंगे! मजदूर-किसान राज जिन्दाबाद!!"

वह चुपचाप सब कुछ सुनती रहती थी। उन लड़कों को कभी घर गृहस्थी की फिक्र थोड़े ही रहती है। वह सुबह से शाम तक जुटी रहती है। तरकारी, सौदा-पत्ता, राशन लाना, लकड़ी तथा छोटी मोटी चीजें जुटानी पड़ती हैं। कभी किसी से कहती है, कि यह काम कर दो तो वह जवाब देगा कि जिया बहुत जरूरी काम कर रहा हूँ। बिनती करेगा कि बाजार जाय, तो लेई बनाने का सामान भी जरूर ले आये! कल वह बनाना भूल गई, तो पोस्टर नहीं चिपके, आज अब भूल नहीं होनी चाहिए।

यह लेई बनाना भी अजीब हिसाब है, जो कि उसने आजीवन नहीं किया। ये लड़के पहले तो उसे पागल लगते थे। कुछ काम धाम नहीं, बाप रुपया भेज देता है, तो मौज से पड़े रहते हैं। किस तरह वह गृहस्थी चल रही है, वही जानती है। सौदा-पत्ता लाना आसान काम नहीं; कभी-कभी उसे बुखार सा आ जाता है। यह शरीर भी थक गया है। भला यह उसका नौकरी करने का समय है। अब तक बहू आ गई होती, तो काम चल जाता। कुछ तो सहारा होता। पर जब ये आवारा रहेंगे, तो भला इनको लड़की कौन देगा।

वह जिन उम्मीदों पर आज तक गृहस्थी चला रही थी, वे टूट जाती थीं; पहले तो उसे बहुत दुःख हुआ था, पर फिर वह इस सबकी आदी हो गई थी।

(२)

वह चुपचाप बैठी सोच रही थी, कि आज खाना क्या बनावे। दिन में भूख लगेगी, तो दो रोटी डाल लेगी। अकेले खाते हुए अच्छा नहीं लगता। तभी किसी ने पुकारा और नीचे से कहा, "जिया जमानत हो गई हैं। शाम तक छूट आवेंगे।"

उसने उस व्यक्ति को सावधानी से देखा। वह उसे पहचानती है। अन्यथा वहाँ तो दिन को नए-नए लड़के आकर बहुत सी बातें किया करते थे, जब उसे मालूम हुआ कि वे सी० आई० डी० वाले हैं, तो वह उनको ऊपर से ही धुधकार देती है। वे सी० आई० डी० वाले अब उस मकान के पास तक नहीं फटकते हैं। कोई नया आदमी वहाँ आता है, तो वह बहुत सावधानी से उसे भाँपती है, झूठी बातें बता कर उसे टकरा देती है। उस सरल बुढ़िया की बातों से हरएक बहकाने में आ जाता है। वे उससे अधिक बातें नहीं करते, कारण कि वह ज्यादा तर बातें न समझने का बहाना बना देती है।

उस मोहल्ले से वह जरूर परेशान है। कभी कोई महरी पिटकर शिकायत लावेगी कि वह अपने पति को छोड़ने की बात सोच रहा है। या फिर धोबी चला आयगा कि उनका झगड़ा हो गया है। वह कमा-कर मायके रुपए भेजती है। कुम्हार की बीबी सालों से बीमार है। उसने दूसरी औरत को घर में डालने की बात चलाई, तो बीबी ने रो-रो कर सारा मोहल्ला गुँजा दिया। उस बिमारी से उठ कर भी न जाने किस तरह वहां पहुँच गई। नाई की ओर अधिक तर मर्द शंका से देखते हैं। घर-गृहस्थों के बीच वह निठल्ला न जाने कहाँ से

आ पहुँचा है। यदि कोई औरत उससे हँसती हुई दो बातें कर लेती है, तो बस सारे मोहल्ले में वहम फैल जाता है। कहीं लड़कों की आपसी लड़ाई। जरा-जरा बात पर मार पीट और नाके पर जाकर पुलीस में रिपोर्ट लिखाना। बच्चों का आपसी झगड़ा बढ़ कर औरतों का गाली-गलौज का रूप ले लेता है। उनकी गालियाँ शुद्ध बेमेल होती हैं। रोज ही संध्या को उनकी गूँज से मोहल्ला गूँज उठता है। आपसी झगड़ों के बाद भी उनका एक आपसी समझौता भी होता है कि देर तक लाग-डाँट को अपने मन में गाँठ बना कर नहीं रखते हैं। औरतें पतियों को छोड़ चली जाती हैं, पंचायतें उनका फैसला करती है। कहीं कोई रुकावट वहाँ नहीं मिलती है।

लेकिन एक बात वह पाती है, कि वहाँ एक स्थाई कुरूपता है। जो कि सब परिवारों के ऊपर छाई हुई रहती है। वे लोग अस्वस्थ रहते हैं। वे बच्चे ठीक तरह नहीं पनप पाते हैं। वह पिछवाड़े वाला मोहल्ला जैसे कि आगे भी कोई करवट नहीं बदल पावेगा। अपने शहर में उसने कभी जीवन का इतना भद्दा प्रदर्शन नहीं देखा था। वे लोग तो पशुओं की भाँति जीवन व्यतीत करते थे। कहीं भी वहाँ जीवन में शांति नहीं मिलती थी। वह पहले अपने को उन लोगों से अलग मानती थी। लड़कों को उसने कोसा था, कि बुढ़ापे में वे उसे चुमार-चमारों के मोहल्ले में ले आए हैं। सच ही उसका मन वहाँ नहीं लगता था। कहाँ उनका शहर का अपना मकान और यह टीन का टूटा सा घर, लड़कों की नालायकी पर उनको डाँटा था तो उन्होंने बताया, कि अच्छे मकान तो बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, उनके लिए चार-पाँच सौ पगड़ी देनी पड़ती है। इस मकान का किराया भी बारह है, पहले से सिर्फ तिगुना, वह भी एक दलाल की काफी खुशामद करने पर मिला है। वह तो पचास रुपया पगड़ी के माँगता था। जान पहचान वालों के जोर पर मिला है।

कहाँ वह पहले पूजा-पाठ थोड़ा-बहुत करती थी, पर यहाँ तो सब तरह के लोग आते हैं। एक दिन छोटे लड़के ने बताया था, कि दो-तीन मेरे साथी आज आवेंगे। उनकी हड़ताल की बात चल रही है, म्युनिसिपेल्टी वाले उनकी तनखाह नहीं बढ़ा रहे हैं, न उनके रहने के लिए पक्के मकान ही बनाते हैं। बेचारे किस तरह का काम करते हैं, और इस पर पेट भर कर खाना नहीं मिलता है। जिया को उनसे सहानुभूति थी, पर यह उनको इस घर पर बुलाना समझ में नहीं आया। वे तो नीच कौम के लोग होते हैं। उनके अधिक मुँह नहीं लगाना चाहिए। लेकिन उसके कहने से क्या होता है? वहाँ तो रोज ही बैठकें होती रहीं, लड़के के आगे वह हार मान गई। जिन संस्कारों को लेकर वह पैदा हुई, इतना बड़ा जीवन व्यतीत किया; वे इतनी आसानी से टूट गए। वह छोटा लड़का रात-दिन काम करता है। बहुत कमजोर पड़ गया है। कभी-कभी वह बीमार पड़ जाता है, तो भी लोग उसे घेरे रहते हैं। वह तो कहता है—जिया, तुमको भी अब पढ़ना चाहिए, "बूढ़ा तोता राम-राम" की बात सुनकर उसे बड़ी हँसी आई थी।

अक्सर वह अपने पुराने परिवार की बात सोचती है। पिता छोटी नौकरी करते थे। वे दो भाई और तीन बहनें थीं। वहाँ तब जीवन में कठिनाइयाँ नहीं थीं। परिवार सहूलियत के साथ बिना किसी अड़चन के चलता था। उसके पिता नामी ज्योतिषी भी थे। जिस रजवाड़े में वे काम करते थे, वहाँ उनका बहुत बड़ा मान था। पिता की तीन पत्नी थीं। तनखा भले ही छोटी हो, पर वहाँ आडम्बर-पूरा-पूरा था। उनके परिवार के खाने-पीने तथा रहन-सहन की दूर-दूर तक चर्चा थी। उसका विवाह काफी ठाठ-बाट से हुआ था। पति तो उन दिनों कहीं पढ़ते थे। एकाएक उनको कॉलेज में ही हैजा हुआ और वे मर गए। फिर जीवन में वह घर-गृहस्थी से बाहर नहीं

निकली थीं। चौदह साल की उम्र से आज तक वहां, परिवार की सीमाओं के भीतर ही, उसका अपना जीवन व्यतीत हुआ था। शायद वह कुछ जान न पाती, यदि इन लड़कों के साथ यहां न आती। पिछला जीवन न सुखमय था, न दुःखमय। उसकी छोटी बहिन की शादी उसके देवर से हो गई, वह रोगिणी रहती थी। ये बच्चे उसी ने पाले-पोषे। वह जन्मदात्री थी, तो इसने उनको अपना स्नेह देकर; आगे बढ़ाया। वह मर गई और बच्चे इसके आश्रय में गए।

वे मेहतर सुना अपनी हड़ताल करने का नोटिस दे चुके थे। वे बताते थे कि उनका क्या हाल है! आज सच ही उसका हृदय उनकी बातों को सुनकर पसीज उठता है। मानवता के नाम पर ही सही, उनको जीवित रहने का पूरा-पूरा अधिकार है। इन लोगों ने म्यूनिसिपैल्टी में भूख-हड़ताल शुरू कर दी था। वे अपनी मांगों का मसला बनाया करते थे। वह लड़का तो उनको बताता था, कि हड़ताल की लड़ाई केवल तनखा और क्वार्टर बना देने की मांग को पूरा करने का हथियार ही नहीं है। वह तो पूरे संघर्ष का रास्ता है, कि जिससे आगे बढ़कर मजदूर अपना राज कायम करेगा। वह बताता था कि लोग गरम-गरम बातें करते हैं, पर संघर्ष से भाग जाते हैं। मेहतर तबके के ज्यादातर लोग जेल से डर रहे हैं। वे सोचते हैं कि पुलीस के दमन से बच जाएं। पर वह संभव नहीं है बिना सही लड़ाई लड़े हुए, मजदूर अपनी मांगे पूरा करवा सकता है। अमीरों के बच्चे और नेताओं के रिश्तेदार आसानी से आपकी मांगों को स्वीकार नहीं करेंगे। वे हर तरह कोशिश करेंगे, कि आपस में झगड़ा करवा करके उनकी एकता को तोड़ डालें।

वह उसकी बातें सुनती है और देखती है, कि वे मजदूर आपस में कई बातें तय कर लेते हैं। तीन हजार मेहतरों की हड़ताल की बात! वह लड़ाई साधारण बात नहीं है। वह अब जान गई है, कि किस तरह हड़ताल तुड़वाई जाती है। हड़ताल कमेटी में अधिकारी अपने गुरगे भर देते हैं जो कि वक्त पर धोका देकर, समझौता करवाते हैं। कई बार यही बात हो चुकी है। आज भी समझौता वाले जोर-जोर से कहते हैं, कि यह उनके पेट की लड़ाई है। वे भूखे मर रहे हैं। उनका किसी से झगड़ा नहीं है। वे किसी राजनैतिक पार्टी की मदद नहीं चाहते हैं। वे गांधीजी वाली अहिंसा की चर्चा करते हैं। वे कहते हैं, कि भूखे अपनी जान दे देंगे।

जिया सुनकर आश्चर्यचकित रह जाती है, कि आठ-दस हजार मेहतर इस मजबूती से अपने हकों की लड़ाई लड़ रहे हैं। औरतें अपनी गोदी के बच्चों को लेकर बड़ी-बड़ी रात तक वहाँ की बैठकों में शामिल होती थीं। पर उसका बेटा उनके नेताओं को बताता था, कि कमेटी वाले ठीक लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं। केवल भीख माँग कर अधिकारों को नहीं पाया जा सकता है। यह तो एक बहुत बड़ी लड़ाई है, जिसे कि सारे हिन्दुस्तान के मजदूर मिल कर लड़ रहे हैं। यह लड़ाई, उस बड़ी लड़ाई की शुरुआत है, जिससे कि वह शासन-सत्ता छीन कर एक समाजवादी राज्य का निर्माण करेगा। वे डर जाते हैं, कि पुलीस जुल्म करेगी। वे जेल जाने से घबराते हैं। वे केवल धमकी के बल पर कुछ माँगें पूरी करवा लेना चाहते हैं। कलक्टर ने धमकी दी है, कि वे दूसरे शहरों से भंगी बुलवा लेंगे, मानो कि वहाँ उनकी हालत अच्छी है। कोई आधे वक्त नौकर है, मेहतरानियों को कम वेतन मिलता है, भैंसागाड़ी चलाने वालों को गरम वरदी मिलनी चाहिए। ये सब माँगें बड़ी

नहीं हैं। आज बरसों से वे आश्वासन पा रहे हैं; पर कभी सुनवाई नहीं होती। पहले तो बाहर के लोग वहाँ थे, अब तो कांग्रेसी नेता यहाँ भी हुकूमत कर रहे हैं।

मेहतरों की हड़ताल सफल नहीं हुई थी। दूसरे दिन जब उनका भंगी काम पर आया, तो जिया ने उसको बताया था कि वे गलत लोगों के बहकाने में आ गए। अधिकारी इसीलिए हड़ताल तुड़वाने में सफल हुए थे। यदि वे अपनी लड़ाई को ठीक तरीके से लड़ते तो शहर के मध्यवर्ग की पूरी सहानुभूति उनके साथ थी। वे सब इस सुराजी-सरकार से झुँझलाए हुए और परेशान हैं। यदि मेहतर अपनी लड़ाई जारी रखते, तो उनसे सहानुभूति रखने के लिए प्रेस के मजदूर, बिजली घर वाले, विद्यार्थी तथा और लोग भी अपनी हड़ताल छेड़ देते। आज हरएक वर्ग लड़ने के लिए तैयार है। फिर मजदूर तो यह साफ-साफ जानता है, कि एक आखरी जंग छेड़े बिना समाजवादी शासन नहीं आ सकेगा। इस सड़ी, दीमक लगी सरकार से, जो कि आई० सी० एस० के कागजी हुकूमत पर चलती है, वे अन्तिम निपटारा चाहते हैं।

वह भंगी अवाक् सारी बातें सुनता रहा था। पर जिया तो देखती है कि वहाँ जो प्रेस यूनियन, रेलवे-यूनियन या और मजदूर यूनियनों में काम करने वाले लड़के इकट्ठा होते हैं, सब में एक नया जोश है। सब नौजवान हैं। हरएक यही कहता है, कि मजदूर जागरूक हो उठा है, और अब एक आखिरी हमला करने की सोच रहा है। ऐसी जागृति तो पहले उसने कभी नहीं पाई थी। वह तो आज हरएक को अपने बेटों की तरह पाती है। वे हिन्दू, मुसलमान, पासी, चमार और न जाने किन-किन जातियों के लोग हैं। सब नवयुवक हैं और उनकी बातों में सचाई है। वह तो ऐसा

अनुभव करती है, कि वह स्वयं एक नया जीवन पा रही है। उसका वह बुढ़ापा जैसे कि अब भाग रहा है।

पार्टी के गुप्त परचों को वह आसानी से छुपा लेती है। वह यूनियन वालों की डाक बाँट देती है। हरएक यूनियन वाले खास व्यक्ति से उसका परिचय है, वह हरएक की बहुत सी बातें जानती है। कई बातें व सन्देश तो वह मुखजबानी याद रखती है। सी० आई० डी० वाले पहुँचते हैं, तो वह ऐसी गूँगी बन जाती है कि शक की गुंजाइश नहीं रह जाती। वे उस बुढ़िया के पीछे अपना बेकार वक्त न गवाँ कर, इधर-उधर गपशप कर झूठी कारगुजारी भर लेते हैं। वह आज कभी-कभी चिन्तित फिर भी हो उठती है। जेलों के भीतर भी गोलियाँ चलती हैं। वहाँ नजरबन्द मर जाते हैं। एक लड़का उसे सदा के लिए छोड़ कर चला गया है, फिर दूसरे का ही खास भरोसा नहीं। पुलीस उसके पीछे पड़ी है। कभी अखबार बेचते पकड़ लेती है; कभी जलूस निकलते हुए; कभी कोई पोस्टर चिपकाते! वह जुर्म है या नहीं, सी० आई० डी० वाले तो यही कहते हैं कि वह कम्यूनिस्ट है। इसीलिए उसे पकड़ते हैं। उनके बड़े साहब का हुक्म है। उनका काम तो मुकदमा चलाना है। मुकदमें का फैसला तो अदालत करेगी। पुलीस अपना काम करती है। सही-गलत का न्याय मजिस्ट्रेट करेगा। यदि उनके प्रति पकड़ने में गलती ही हुई, तो पुलीस का कसूर नहीं है। उसे शक पर ही तो अपना काम करना पड़ता है।

यदि उसे लम्बी जेल की सजा हो गई, तो क्या होगा? वह इस बात को सोचती है। तब उसे अपने पुराने परिवार में लौट जाना पड़ेगा। वही पुराने संस्कार, वे ही परम्परा वाली सामाजिक नजीरें! वह वहाँ लौट कर कुछ दिन और जीवेगी। उसकी गैर जिम्मेवारी की बात पर सब उसका उपहास उड़ावेंगे, कि दोनों लड़के नौ-दो-ग्यारह

हो गए हैं। पर वह क्या कर सकती थी ? वे लड़के छोटी-मोटी नौकरी मानो कर ही लेते तो क्या हो जाता। वे उन मजदूरों का काम कर रहे हैं, जहाँ उनकी सही जगह थी। वह स्वयं सोचती है, कि दो बेटे लेकर वह यहाँ आई थी; पर यहाँ तो सैकड़ों बेटे हैं। वह यहीं रहेगी। यहीं इन मजदूरों के बेटों के साथ काम करेगी; इस मोहल्ले से उसका पूरा-पूरा परिचय है। यहाँ हरएक परिवार को वह जानती है। जब मजदूर का राज होगा, यह मोहल्ला ऐसा नहीं रहेगा। यह गंदगी उठ जायगी। ये बच्चे स्कूलों में पढ़ेंगे। औरतें इतनी बेहया नहीं होंगी। समाज का सारा ढाँचा ही बदलेगा।

जैसे कि वह अपने को बलवान पाती है। सच ही वह शक्ति यूनियनों के वे नेता देते हैं, जो उसे 'जिया' कह कर एक महान् मजदूरवर्ग के नए आने वाले इतिहास के पन्ने लिखवा कर, उसे पूरा करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

किसी ने फाटक का टिन हलके थपथपाते हुए, पुकारा, 'जिया' ! वह सँभल गई और चुपके उसने फाटक खोल दिया। वह युवक भीतर एक बंडल कागज के पैकट में बँधा उसे सौंप कर, बता गया कि वह कहाँ जायगा। वह समझ गई और वह चला गया। यह काम उसे कठिन नहीं लगता है, आसानी से वह किसी भी पहचान वाले को बुलवा कर, इसे ठिकाने भिजवा देगी। उसने उस बंडल को सँभाल कर भीतर आलमारी पर रख दिया।

फिर बाहर आई। पाँव पर इधर दर्द होने लगता है। वह उसे काफी परेशान करता है। बुखार हो लेटे रहो। पर इसका दर्द तो बहुत पीड़ा पहुँचाता है। वह होमियोपैथी की दवा खा रही है। फिर भी दर्द नहीं हटता। क्या करे, कुछ समझ में नहीं आता, कभी-कभी तो मन करता है, कि वह खूब चीखे-चिल्लाए। एक हमदर्द डाक्टर

ने कुछ इन्जेक्सन दिए थे, पर उससे कुछ दिन ही लाभ हुआ। वह इसकी अधिक चर्चा नहीं करती है। दवा के लिए पैसे कहाँ से लाए जाँय।

वह चुपचाप सीढ़ियों से नीचे उतरी और नीचे खेलते हुए एक बच्चे को बुलवा कर मैकू की बहू को बुलवाया। जब वह आई, तो न जाने उसे क्या समझाया। वह लिखना-पढ़ना तो जानती नहीं है। इसी तरह काम चलाती है। वह कई छोटी-मोटी डाक इधर-उधर पहुँचाती है। जरा भी ढील नहीं करती। पड़ोस में जो कॉलेजी लड़के रहते हैं, वह उनका उपयोग करती है। उसके अपने काम करने वाले अधिकतर मजदूरों के बेटे ही हैं। इन परचों को जल्दी से जल्दी बँटवा देना ठीक होगा। कौन जाने कहीं पुलीस वालों के हाथ पड़ गए तो बेकार इतनी मेहनत और रुपया चला जायगा।

अब सोचा उसने कि रात की रोटी खाकर ही गुजर कर लेगी, कौन खाना बनावे। भूख भी खास नहीं है। अकेले के लिए फिर खाना बनाने का मन भी नहीं करता है। दिन काफी चढ़ चुका था। वह रसोई में गई और चौका ठीक किया। रोटी खाई और एकाएक याद आया कि प्रेस वाले आने वाले होंगे, लेई चाहिए। चुपचाप लेई चढ़ा दी। वह अब बहुत अच्छी लेई बनाती है। वे लोग तो कहा करते हैं, कि उसमें काफी चिपक रहती है और सी० आई० डी० वालों को पोस्टर छुड़ाना मुश्किल हो जाता है।

भीतर कई तरह के पोस्टर रखे थे, रेलवे वाले, प्रेस वाले, वे विश्वविद्यालय के चपरासियों की माँगों के हैं। वह सब को सुन चुकी है। जानती है कि उन सब में सही बातें लिखी हैं। लोग झूठ बोलते हैं, कि मजदूर मौज कर रहे हैं। उनकी हालत बहुत खराब है, यही कारण है, कि वे बार-बार हड़ताल करते हैं। उसकी समझ में नहीं

आता, कि जवाहरलाल नेहरू के यह सीधी बात समझ में क्यों नहीं आती है। वे क्यों मजदूरों का हक छीनना चाहते हैं। मजदूर तो कहते हैं, कि नेताओं को राजगद्दी मिल गई, बस अब वे अफसरों की बातें ही सुनते हैं। गरीबों से उनका कोई सम्पर्क नहीं रह गया है।

तभी प्रेस के दो कम्पोजिटर आ गए। वे तो बताने लगे कि मालिकों को हड़ताल का नोटिस देने की सोच रहे हैं। साले मुफ्त का माल खाकर मोटे हो गए हैं। ठेके पर काम कराते हैं, कि मजदूरी कम देनी पड़े और मुनाफा ज्यादा हो; ठीक-ठीक हिसाब 'ओवरटाइम' का नहीं रखते हैं। कहते थे, कि यूनियन की बात वे नहीं मानेंगे। लेबर कमिश्नर को तार दे दिया है, कि आकर फैसला करे। सबके सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। सरकार की कमेटी तीन साल से अभी तक कुछ कर नहीं सकी है। हड़ताल दबाने की बात हो, तो कलक्टर लाट साहब बन कर जिस-तिस को पकड़वा देता है। सेठ जी ने लाखों किताबें छापने का सरकारी ठेका लिया है। अब कमाएँ मियाँ !

शहर में कई प्रेस हैं। उनके कर्मचारियों का एक फेडरेशन है। अब मालिक दूसरे प्रेसों से आसानी से कम्पोजिटर नहीं तोड़ सकते हैं। वह उनकी बात सुन कर हँसती है। वे अब किसी से नहीं डरते हैं। उन मालिकों और सेठों के खिलाफ जिहाद बोलने में नहीं चूकते। पिछले महीने बाईंडिंग डिपार्टमेंट में छटनी करने की बात मालिकों ने सोची थी, पर मजदूरों ने धमकी दी। मालिकों ने भी पैंतरा बदल कर कहा, कि वे प्रेस बन्द कर देंगे। तो मजदूरों ने कहा, कि वे ताला तोड़ कर उसे चलावेंगे। जनता के काम का नुकसान नहीं होने देंगे।

उन लोगों ने उससे कहा था, जिस दिन हड़ताल का ऐलान होगा, वे उसे अपनी मीटिंग में ले चलेंगे; पर उनको देरी हो रही थी। उनको कुछ पोस्टर और पर्चे देकर उसने विदा किया तथा यह भी बताया, कि

शाम को उनकी मीटिंग किस जगह पर होगी। उनके चले जाने पर सोचा, कि ये लोग इतनी सारी किताबें छापते हैं। बच्चों के पढ़ने की किताबें! मालिक नहीं चाहते, कि लोग पढ़े-लिखें। वे कितने स्वार्थी लोग हैं। अपने लिए मुनाफा कमाना ही उनका धन्धा है। सरकार अपनी है, वह मजदूर का कसूर बताती है। कहती है कि मजदूर शरारती और काम-चोर हो गए हैं। पर इन महँगे दामों में किताब बेचने वालों को कैद नहीं करती है।

वे प्रेस के मजदूर तो कह रहे थे कि जिया को वहाँ बोलना भी पड़ेगा। वह क्या बोलेगी। वह पढ़ी-लिखी तो है ही नहीं; पर बहुत सी बातें सुन चुकी है। उसने उनको याद किया और खड़े होकर कुछ धीरे-धीरे बोलने की चेष्टा की। वह जानती है, कि ये लोग मानेंगे नहीं। कहीं सच ही पकड़ कर मीटिंग में ले जावेंगे, तो लाचारी बोलना पड़ेगा। वह उनकी बातें टाल नहीं सकती है। उनके उत्साह में रुकावट नहीं बनेगी। उसे बोलना सीखना चाहिए। वह क्या इस मोहल्ले की बातें नहीं जानती है। वह पल्लेदार, स्टील ट्रंक, बिजुली, प्रेस तथा और यूनियनों में काम करने वालों की बातें भी लगातार सुनती रहती है। यह भली भाँति जानती है, कि महँगाई चार-पाँच गुनी बढ़ गई है, पर तनख्वाह तो दुगनी भी नहीं हुई है; फिर छटनी हो रही है।

वह बड़ी देर तक न जाने क्या-क्या कहती रही। वह अब संभली, कि वह कान्फरेन्स तो प्रेस में काम करने वालों की होगी, उसने एक-एक कर वे नारे दुहराने शुरू किए, जो कि उनके 'पोस्टरों' में लिखे गए हैं। वह तो उनके परिवारों का सही-सही हाल जानती है। भुखमरी, बीमारी……। उसे अपने पर पूरा विश्वास हो गया, कि वह वहाँ बोल सकेगी। सब अपने ही बच्चे तो होंगे। वह बहुतों को जानती है। उनके बीच अपनी बातें कहते हुए कोई लाज-शरम नहीं होनी चाहिए।

नीचे एकाएक बाजे से बजने लगे। वह बाहर आई। मोहल्ले का बूढ़ा चमार मर गया था। उसे लोग गाजे-बाजे के साथ फूलों की अरथी सजा कर श्मशान ले जा रहे थे। वह भाग्यवान है, क्योंकि उसके नाती-पोते हैं। वह दंग सी उस ओर देखती रही। यह कैसा विश्वास था? क्या सच ही वह भाग्यवान रहा है। पर वह जानती है, कि वह परिवार केवल एक जून खाना खाता है। कड़ी मेहनत करते भी कुछ नहीं पाता। आज हर एक ही कमर तोड़ कर मेहनत करता है, पर फल क्या मिलता है? वह अरथी आगे बढ़ गई थी। वह वहाँ से खड़ी की खड़ी मोहल्ले की धूल वाली सड़क पर खेलते हुए बच्चों को देखती रही। हरएक परिवार के मर्द बाहर चले गए थे। कई परिवारों की औरतें भी मजदूरी करती हैं। उसके बाद भी पूरा पेट खाना कोई नहीं पाता है। यह समस्या न जाने कब तक सुलझेगी। हरएक परिवार को पेट भर खाना तो मिलना ही चाहिए। और फिर सोचने लगी, कि क्या सच ही मजदूर के राज्य में ये सारे झगड़े मिट जावेंगे। वह फिर बातों की अधिक मीमांसा नहीं करना चाहती है। उनकी बातों पर उसका पूरा-पूरा विश्वास है। मजदूरों के बलवान लड़के सब कुछ करने की क्षमता रखते हैं।

विश्वविद्यालय के तीन चपरासी ऊपर आकर पूछने लगे, कि भैय्या कब तक छूट कर आवेंगे। उनकी यूनियन का बुरा हाल है। वे सब जानते हैं कि बिना उसकी सलाह के काम नहीं चलेगा। वे जिया को समझाते रहे, कि उनके यहाँ का हाल अजीब सा है। प्रोफेसर और बाबू लोगों ने अपनी तनख़्वाह बढ़वा ली है, पर वे उनकी बातें नहीं सुनते हैं। हरएक को अतिरिक्त समय में किसी न किसी अधिकारी के घर पर जाकर नौकरी करनी पड़ती है। बोर्डिङ्ग में कहार नौकरी करते हैं, पर वार्डन उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। उनकी यूनियन को आज तक मान्यता नहीं मिली है।

यह एक और संघर्ष की बात ! जो आता है, बस लड़ने का सवाल ही आगे रखता है। वह आज साधारण समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। वह अपनी पूरी बातें मनवाने तुला जाता है। सब में वह एक नया जोश और शक्ति पाती है। हरएक यही कहता है, कि वे अब पुलीस और फौज की गोलियों से भी नहीं डरते हैं। आखिर कब तब सब्र करें। नेताओं के यश के गीत कब तक गावें। वे गाँधीजी के नाम पर फाकामस्ती करवाने का अच्छा राग अलाप रहे हैं।

जिया तो बोली, "तुम लोगों को अब खुद ही लड़ाई करनी सीख लेनी चाहिए। कब तक दूसरों का सहारा ताकोगे। आज तो न जाने कब किसे पुलीस पकड़ ले। हरएक को पूरे दाँव पेच जानने चाहिएँ।

एक ने तभी कहा, "जीजी, हरएक तो यह नहीं जानता है।'

"मैं तो पढ़ी-लिखी नहीं, पर सब कुछ संभाल सकती हूँ। तुम लोग आपस में सलाह करके काम चलाओ।"

जब वे चले गए, तो वह चुपचाप भीतर जाकर चारपाई पर लेट गई। वह आज बहुत थक गई थी। ये लड़के काम करते रहते हैं। पुलीस वाले अब तक बीस-इक्कीस लड़कों को पकड़ चुके हैं। ये लड़के फिर भी अपना काम करने में नहीं चूकते हैं। उनको पुलीस और जेल का कोई डर नहीं रहता है। आज अगर वह छूट कर आ गया तो ठीक है। अन्यथा फिर न जाने कब छूटे और यह भी हो सकता है, कि सरकार छै महीने के लिए नजरबन्द कर दे। ऐसी बात तो पहले सुनने में कम आती थी।

कमरे में दो-तीन रोज से झाड़ू नहीं लगी थी। वह उसे साफ करने लगी। उसने कागज के टुकड़े बटोर लिए, किताबें आलमारी पर संभाल कर रख दीं। परचे एक ओर बंडल बना कर धरे। चटाई

बाहर निकाल करके झाड़ी। अब वह कमरे को ठीक तरह से सजाने लगी। मैले कपड़े धोबी के लिए चादर पर बाँध दिए। वह और दिनों घर की ओर इतना ध्यान नहीं देती थी।

वह अपने जीवन की व्याख्या करने में असफल सी अपने को पाने लगी। कारण कि पिछला जीवन तो ऐसा कोई महत्व का नहीं था। साठ साल तो उसने एक मध्यवर्गीय परिवार के भीतर कैद में काट दिए थे। वहाँ का रोजाना जीवन वही पिटा-पिटाया था। घर-गृहस्थी के भीतर से बाहर झाँकने का मौका ही नहीं मिलता था, जब कि आज वह एक नए जीवन में प्रवेश कर रही है। ये मजदूरों के बलवान बेटे उस रास्ते की अगुवाई कर रहे थे। वह पुरानी समाज-व्यवस्था जैसे कि खोखली थी। उसके वे दो बेटे जिनको कि उसकी बहिन ने उसे सौंपा था, वे भी आज बहुत आगे बढ़ गए थे।

"जिया!"

दो-तीन लड़कों के साथ उसका वह बेटा जेल से छूट कर आ गया था। उसका चेहरा सुस्त था। वह दो दिन में ही मुरझा गया था। उसने बताया कि आज अब पुलीस नए-नए हथियार काम में लाती है। वे जेल के अधिकारी भी कोशिश करते हैं कि उनका मनोबल तोड़ दें। उनके नारे लगाने पर जेलर ने उनको पागलों की बैरिक में बन्द करवा दिया था। वे उनके बीच उन्नीस घंटे रहे। वहाँ वे रात भर गाते और झगड़ते रहते थे। डर लगता था, कि न जाने कब हमला कर दें। वह जेलर बताता था, कि वह कैदियों की धमकियों से नहीं डरता है। वे भूख-हड़ताल करके मर भी जाँय तो उसे इसकी कोई परवा नहीं है। वह जेलर फिर भी अपनी हेकड़ी भूल गया। उसे तीसरे रोज उनकी बातें माननी पड़ीं।

वह सुकुमार सा बच्चा, जिसे कि जिया ने न जाने कितनी हवसों के साथ पाला-पोषा था। कौन जानता था कि एक दिन वह बहुत

सबल बन जायगा। वह उसका चेहरा पढ़ने लगी। लेकिन वे लड़के तो अपनी ही बातें कर रहे थे। वह उनकी बातें सुनती रही, रेलवे मजदूरों की कोई कान्फरेन्स होने वाली थी! अधिकारी इजाजत नहीं दे रहे थे।

उसने हिचकिचाते हुए पूछा, "क्या खाना बनाऊँ ?"

यह जान कर भी कि जो मिल जाय, वह खा लेता है। वह उसके मन का खाना बनाना चाहती थी। कई रोज का भूखा-प्यासा है, जेल का खाना वह जानती है। लेकिन उसने तो कहा कि कल की रोटियाँ बची ही होंगी, वह उनको खा लेगा। अभी-अभी उसे जरूरी काम से बाहर जाना है।

वे दोस्त जेल की बातें सुन रहे थे। जेलर कोई मुसलमान सज्जन थे। कभी मुस्लिम लीग के भक्त थे। पर आज तो अब पक्के गाँधीवादी बन गए थे। नेहरू-पटेल सरकार की जय-जयकार मनाते थे। राष्ट्रीय सेवक संघ के कैदियों के साथ मुलायमियत का व्यवहार रखते थे। उनका ख्याल था, कि अगले चुनाव में संघ का काफी जोर रहेगा। अब कि हिन्दुओं की सल्तनत में नौकरी करली, तो फिर उनकी सब बातें मान लेनी चाहिएँ। अपनी तनख्वाह और ओहदे की उनको चिन्ता है, बस और क्या चाहिए ? वे तो आज कल देश का अपने को सब से बड़ा हितैषी कहते थे। बताते थे कि जेल में वे सब कैदियों को अनुशासन के साथ रखना जानते हैं।

जिया की थकान हट गई थी। ये लड़के आकर बहुत सी बातें करते हैं, जिन पर कि वह सोचती रहती है। वे अब विश्वविद्यालय के चपरासियों की बातें करने लगे। फिर प्रेस मजदूरों का जिला संगठन का सवाल आया, मेहतरों की हड़ताल की कमजोरियाँ बतलाईं। पर्चे के लिए मसोदा क्या लिखा जायगा, उस पर बात-चीत हुई।

उसका बेटा बता रहा था, कि सी० आई० डी० वाले आजकल काफी चौकन्ने हो गए हैं। हवालात का दरोगा तो हथकड़ियाँ डलवाने की धमकी देता था। पुलीस का जुल्म देख कर जनता गुस्सा होती है। सब लोग बहुत परेशान लगते हैं। यह सरकार अपनी नई योजनाएँ निर्माण की न बना कर, पुलीस और फौज पर अंग्रेजों की तरह भरोसा किए हुए है।

फिर जेलों में होने वाली भूख-हड़ताल की बात चली। एक लड़का बता रहा था, कि मजिस्ट्रेट ने साफ-साफ कह दिया है कि वह उनको किसी तरह की मीटिंगें करने की इजाजत नहीं देगा। वह उनकी बातें सुनने को तैयार नहीं है। फिर वे जिया की बातें करने लगे। वह बूढ़ी माँ की तरह उनको लगी, जो कि उनके एक बड़े परिवार का संचालन कर रही थी।

एक तभी बोला, "वह बीमार रहती है। उसे किसी हमदर्द डाक्टर को दिखलाना चाहिए।"

"इलाज के लिए पैसे !"

"सब को इसका प्रबन्ध करना ही होगा।"

जिया के पास बाहर मोहल्ले की औरतें आ गई थीं। वे उससे जेल की बातें पूछती रहीं। वे जानना चाहती थीं, कि क्यों उसे पुलीस पकड़ कर ले गई। जिया एक ही बात उनसे कहती है कि ये लड़के मजदूरों का राज चाहते हैं। जहाँ कि 'चोर-बाजारी' नहीं होगी, अमीर-गरीब का भेद मिट जायगा। हर एक को पनपने का मौका मिलेगा। रोजी और रोटी की परेशानी किसी को नहीं घेरेगी।

वे जिया की बात सुनती-सुनती सोचती हैं, कि क्या वह सच बात है ?

—पर जिया झूठ कभी नहीं बोलती।

देवताओं की छाया में

बैरिक के भीतर डॉक्टरों ने वार्डरों तथा जमादारों की सहायता से उन राजबन्दियों को अभी-अभी जबरदस्ती दूध पिलाया था। एक के नाक की हड्डी कुछ बढ़ी हुई थी। जब नली बलपूर्वक डाली गई, तो वहाँ से खून की धारा बहने लगी। यह प्रश्न उसे जीवित रखने का था। पशुता के साथ फिर वह नली डाली गई और उसको बीस व्यक्तियों ने पकड़ कर रखा। वह अस्वस्थ, थका सा बन्दी उस बर्बरता के खिलाफ अकेला न लड़ सका। वे राजबन्दी हैं, जो कि आजाद कांग्रेसी-सरकार के कैदखाने में बिना मुकदमा चलाए बन्द कर दिए गए हैं, किन्तु जेल के भीतर भी उनका संघर्ष जारी है। वे अपने अधिकारों के लिए राजनैतिक लड़ाई लड़ रहे थे, यह उनकी भूख हड़ताल का बयालीसवाँ दिन था।

अभिजात वर्ग का प्रतिनिधि, वह जेल का बड़ा अफसर; जो कि सिफ़ारिशों और अपने परिवार की प्रतिष्ठा के बल पर यह ओहदा पा गया था, जानता है कि वे राजबन्दी एक समाजवादी दुनिया के निर्माण के लिए संघर्ष कर रहे हैं; उस नई दुनिया में उसकी सिफारिशों की गठड़ी और वर्ग के बड़प्पन का दिवाला निकल जायगा। मेहनतकश जनता ऐसे निकम्मों को सही सबक पढ़ाएगी। इसीलिए तो वह अपने वर्ग के दुश्मनों पर फासिस्ट-हमले कर रहा था। उनके सब साधारण अधिकार छीन लिए गए थे। वह गिटर-पिटर अँग्रेजी बोलकर छोटे अधिकारियों पर रौब झाड़ रहा था। अपनी अँग्रेजियत से वह साबित कर रहा था कि वह ब्रिटानिया के उपनिवेश का सच्चा काला प्रतिनिधि है। यानि छठे जार्ज की प्रजा है, जिसके फोटो सेठों के अखबार बड़े गौरव के साथ छापते हैं।

जेल का डॉक्टर एक-एक कर बता रहा था, कि १५, १६, २२, १६, २४……पाउण्ड वजन उनका घटा है। सबसे अधिक कठनाई तो यह है कि कमजोर होने पर भी वे उन वार्डरों की पकड़ में आसानी से नहीं आते हैं। वह अफसर नया-नया वहाँ आया है। पिछली जेल में उसने राजबन्दियों पर लाठियाँ चलवा कर गाँधी बाबा का सत्य और अहिंसा का पक्का श्राद्ध किया था। कई राजबन्दी बुरी तरह घायल हुए थे, फिर पुलिस कप्तान से मिल कर उसने उन पर झूठा मुकदमा चलवाया था। सेठों के अखबारों में बयान छपवाया था, कि कैदी बगावत करने को तैयार हो गए थे; किन्तु जनता उस धोखेबाजी में न आई। वह तो अवाक् सोच रही थी, कि जेलों के भीतर का वह नया जुल्म भी गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम का कोई अंश मालूम पड़ता है। वह गाँधीवाद जो सदा सेठों की तिजोरियों की रक्षा करता रहा, आज चोर-बाजारी और भ्रष्टाचार में फूट कर बह रहा है। बेकारी बढ़ रही थी। परिवारों का आर्थिक ढाँचा टूट गया था, चीजें सस्ती नहीं हो रही थीं।

सब सरकार की आलोचना कर रहे थे, सरकार के आश्वासनों पर से सबका विश्वास उठ चुका था, नेताओं को अपनी चाय पार्टियों से फुरसत नहीं थी। वे अपनी गुटबन्दी और अपने भविष्य की प्रतीष्ठा की रक्षा की चिन्ता में थे। गाँधीवाद का दिवाला तो गाँधी जी के जीवन काल में निकल चुका था। गाँधी जी जनता से बड़ी दूर पूंजीपतियों और ऊँचे तबके के नेताओं से ही घिरे रहते थे। उनको मेहनतकश जनता के क्रांतिकारी नेतृत्व पर कभी विश्वास नहीं रहा। वे साम्राज्यवादी ढाँचे का विरोध करते थे, कि पूँजीपतियों तथा अभिजात वर्ग के प्रतिनिधियों के लिए समझौता करके कुछ अधिकार प्राप्त करलें। वे मजदूर-किसान को वालिंटियरों की एक बड़ी सेना मानते थे, जिनकी शक्ति का उपयोग अपने समझौते में वे किया करते थे।

वह लम्बी बारिक; जिसमें कि दो कतारों में सिमेंट के पचास-पचास थूहे सोने के लिए बने हुए थे। कुछ पर उन राजबन्दियों के बिस्तर बिछे हुए थे। अस्पताल का डॉक्टर और सिविल-सर्जन चुपचाप फाटक पर खड़े थे। सरकार का हुक्म है, कि कोई कैदी मरने न पावे। वह भूख-हड़ताल सरकार-विरोधी एक बलवान मोरचा था। सरकार का तानाशाही वाला कड़ा रुख था। वह सुपरिन्टेंडेंट जिसके साँवले चेहरे पर चेचक के दाग थे, अब सन्तोष की साँस लेकर बाहर चला गया था। इन कैदियों ने उसकी नींद सच ही हराम कर रखी है। उसका रौब खाक में मिला दिया है। साधारण कैदी भी अनुशासन भंग करते हैं। वे इस भूख-हड़ताल की बात से बेचैन हैं; किसानों के बच्चे बेटे, कुछ हमदर्द वार्डर सुनाते हैं कि वे क्यों अपने प्राणों की बाजी लगाए हैं। उस कम्यूनिस्ट-समाज की बात सुन कर और कैदी खुश होते हैं। उस मजूर-किसान के राज की बात हरएक रोज सोचता है। पहले बड़े घरानों के बेटे कॉंग्रेस के आन्दोलनों में पकड़ कर आते थे; वे यहाँ मौज उड़ाते थे। जब कि मजूर-किसानों के बेटों को 'सी' क्लास में चक्की; चलाना, मूँज की

रस्सी बटना तथा और काम करने पड़ते थे। जेल में अमीर-गरीब अलग-अलग रहते थे। पुराने कैदियों को अमीरों के बच्चों की सेवा यहाँ भी करनी पड़ती थी।

वे नए कैदी यहाँ भी मजूर-किसानों और बड़ों में भेद-भाव नहीं रखते हैं। वे तो कहते हैं; कि नंगे और भूखों को सेठों के हाथ से राज छीनना होगा। कहते हैं कि आज दुनिया के नब्बे करोड़ से ज्यादा मजूर-किसान आजाद होकर अपना राज चला रहे हैं। वहाँ रोजी-रोटी की तकलीफ़ किसी को नहीं है। वहाँ की जेलें यहाँ की सी नहीं है, कि मनुष्य की कोई कीमत नहीं है; जो कैदी वहाँ किसी काम से जाते हैं; वह स्वयं उनकी बातें दुहराते हैं। हरएक उनको हृदय से प्यार करता है।

वे राजबन्दी चुपचाप लेटे हुए थे। अधिकारी चले गए थे। उनमें शक्ति होती तथा साधन होता; तो वे बाहर के साथियों को पत्र लिखते :—

...हम लोगों के अखबार बन्द कर दिए गए हैं। ८ तारीख से जबरदस्ती दूध पिलाया जा रहा है।......साथी के साथ कठनाई पड़ रही है; उनके नाक में ट्यूब नहीं जाती; कोई हड्डी बढ़ी हुई है। ज्यादा जोर से ट्यूब डालने पर खून निकल आता है। सब डॉक्टर कोशिश करके हार चुके हैं।...पहले हम लोगों को अलग-अलग रख कर हमारे मनोबल को तोड़ने की कोशिश की गई; पर हमारे कड़े रुख अख्तियार करने पर उनकी हिम्मत नहीं पड़ी।...हमें बाहर की खबरें नहीं मिल पाती हैं;...हम सब साथी आपको इस बात का पूरा विश्वास दिलाते हैं; कि हम इस जङ्ग में आखिर तक डटे रहेंगे और किसी भी तरह की कमजोरी का चिन्ह हमारे संघर्ष में नहीं आवेगा। जहाँ तक भूख-हड़ताल को समाप्त करने का प्रश्न है; हम बिना आपके आदेश के प्रान्तव्यापी भूख-हड़ताल वापिस नहीं लेंगे।

हमें विश्वास है कि आप अपने मोरचे पर डट कर काम करेंगे। यह भूख-हड़ताल पूँजीवादी सरकार की फासिस्ट नीति का पूरा भंडा-फोड़ करती है।

—जेल का वह भीतरी संघर्ष मानो कि चमक उठा। एक साथी ने चुपचाप अपने सिरहाने से एक अखबार निकाला।... वह एक नई घटना सबको लगी। उसके साथ कई और परचे भी थे; वह साथी तो पढ़ने लगा। मिस्टर जी० फिलिप्स पत्रकार जनरल सिक्रेटरी कोचिन श्रमजीवी पत्रकार संघ ने निम्नांकित समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजा था :—

'मैंने मि० मोहम्मा अय्यापन का शरीर जिनकी मृत्यु २६ अक्टूबर १९४९ को ट्रिविन्द्रम केन्द्रीय जेल में राजबन्दियों पर पुलीस के लाठी चार्ज के अवसर पर हुई, देखा। मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि जो सच्ची बातें हैं; वे सरकारी बयान से भिन्न हैं। सरकारी बयान में कहा गया है कि वे पागल तथा पुलीस राजबन्दियों की मुठभेड़ को देखते ही उस धक्के से घबरा कर मर गए।

'मैं 'केरलाय' के सहायक सम्पादक की हैसियत से आल इन्डिया ट्रेड यूनियन के सभापति श्री चक्कारी चेटियर के आगमन के समाचार का वर्णन लेने वहाँ गया था। अतएव इस घटना के बारे में जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा उठी। २७ ता० सुबह को एक मित्र ने मुझे सूचना दी कि मि० अय्यापन का मृत शरीर जनरल हॉस्पिटल में पड़ा हुआ है। जो कि 'पोस्ट मार्टम' के पश्चात् वहाँ पर है। एक पत्रकार की स्वाभाविक उत्सुकता के साथ मैं वहाँ पहुँचा।

'जब मैं वहाँ पर पहुँचा तो मृत शरीर भूमि पर धरा था। पोस्ट मार्टम हो चुका था, अस्पताल के कर्मचारियों ने एक मोटा कपड़ा, पुलीस इन्सपेक्टर की उपस्थिति में मेरे सामने डाला। कुछ विद्यार्थी व बाहर के लोग भी वहाँ पर खड़े थे।

'मैंने उक्त शरीर को भली भाँति देखा, हरएक देखकर जान सकता था, कि चार पसलियाँ टूटी हुई हैं। दाहिने कंधे से हृदय तथा छाती तक किसी भारी चोट का निशान था। चोट पर आध इँच घेरे के आस-पास खून छाया था। कंधे का माँस लटका हुआ था। लगता था कि किसी भारी चीज की चोट से यह हुआ है, दाहिने पाँव का टखना भी चूर-चूर था। जो कर्मचारी 'पोस्ट मार्टम' के वक्त खड़े थे, उन्होंने बताया कि दिल पर भी घाव था।

'मरा व्यक्ति असाधारण स्वास्थ का लगा, उसका विशाल हृदय तथा मजबूत टाँगे इसकी सबूत थीं। मेरे सामने ही १०-१२ कान्स्टेबुल उसे एक मोटे बाँस पर बाँध कर बाहर ले गए।

'यदि किसी अदालत में जाँच होगी तो मैं अपना बयान देने के लिए तैयार हूँ।'[१]

———इस समाचार को सुन कर सब साथी खड़े हो गए और मुक्के तान कर मरे हुए साथी का अभिनन्दन करते हुए कसमें खाईं कि वे उसके दिखलाए हुए रास्ते पर चलेंगे। एक नई शक्ति का सृजन उन्होंने किया। लगा कि वर्ग-संघर्ष में तेजी आ गई है। कुछ देर तक गुस्से में वे चुपचाप खड़े के खड़े ही रह गए। नए जोश से फिर प्रतिज्ञा की, कि उस साथी की मौत जन-आन्दोलन की क्रान्तिकारी भावनाओं को बल देगी और वे उस मेहनतकश जनता के नेतृत्व पर विश्वास करते हैं।

उनका यह आन्दोलन समस्त देश को एक नए संघर्ष की चेतावनी दे रहा था। ये भूख हड़तालें प्रान्त के सभी जेलों में राजबन्दियों के द्वारा चालू थीं। उन सब के पीछे जेलों में होने वाले अत्याचारों की करुण कहानी थी। यह राष्ट्रीय सरकार अपने विरोधियों को बिना मुकदमा चलाए जेलों में नजरबन्द कर, उनकी सारी सुविधाएँ छीन

[१] 'क्रास-रोड' साप्ताहिक, बम्बई, अंक १४, दिसम्बर ९, १९४९

लेना चाहती थी। अपने स्वाभिमान पर धक्का लगने के कारण ही राजबन्दियों ने वह कदम उठाया।

एक साथी ने दूसरा अखबार उठाया। उसका शीर्षक था, बीस हजार मेहनतकशों का अपूर्व समारोह—मेहनतकश जनता ने राजबन्दी संघर्ष आन्दोलन को बढ़ाने का प्रण करके, जेल के साथियों की लड़ाई को बाहर चलाने की प्रतिज्ञा की है। वे जनता के नेताओं के संघर्ष का समर्थन करते हैं। प्रान्त के अलग-अलग ट्रेड यूनियन, खेतिहर मजदूर समिति, विद्यार्थी फेडरेशन, महिला समिति, लेखकों तथा मध्य वर्ग के और कई यूनियनों के प्रतिनिधियों का वह सम्मेलन था।

जेल के भीतर बहुत दिनों से बाहर से कोई समाचार नहीं पहुँचे थे। सब साथी उत्सुकता से उन परचों को पढ़ने लगे। जेल के कड़े अनुशासन के बाद भी वे बाहर से सम्पर्क स्थापित करने में सफल हो गए थे। उनकी माँगों के लिए बाहर आन्दोलन हो रहे थे। वे माँगें बहुत साधारण सी थीं :—

नजरबन्दों पर मुकदमा चलाया जाय या उनको रिहा किया जाय; उनके परिवार वालों को भत्ता दिया जाय; नजरबन्दी की अवधि छै महीने के बाद न बढ़ाई जाय। सभी राजबन्दी एक ऊँची श्रेणी में रखे जाँय; मुलाकात तथा पत्र-व्यवहार में किसी तरह की रोक-टोक न हो; आदि-आदि......

बाहर हड़ताल-बन्दी दिवस मनाए गए थे; जलूस निकाले गए; प्रदर्शन हुए। सेठों के अखबार इन समाचारों को नहीं छापते थे। उनको डर है कि झुँझलाई जनता इनको पढ़ कर उठ खड़ी होगी। वे जनता और मध्यवर्ग के बीच एक कागजी दीवाल खड़ी करना चाहते थे कि आन्दोलन में गति नहीं है।

वे साथी फिर चुपचाप न जाने क्या सोचते रहे। वे जानते हैं कि अब जब कि जनता जेल के फाटक तोड़ेगी, तभी वे छूटेंगे। यह हरएक

समझता है कि राष्ट्रीय सरकार गहरे संकट में फँस गई है। उस दलदल से निकलना आसान काम नहीं है। खेतिहर-मजूर और मजदूरों ने बड़ी-बड़ी हड़तालें करके एक नया जंग छेड़ दिया है। रोज अखबारों में छपता था—टाटा कम्पनी में काम करने वालों की हड़ताल का ४१वाँ दिन; कृषि विभाग में छटनी ५०० सुपरवाइजर निकाले गए हैं; गुजरात के मजदूरों पर छँटनी का हमला; शोलापुर के मजदूर मिल पर कब्जा करना चाहते हैं : ३१,००० बेकारी के चंगुल में; आर्डिनेन्स के १०,००० कर्मचारी छटनी की सूची में......

दूसरी ओर पुलीस और फौजों के हमले की खबरें समाचार पत्रों में छपी रहती थीं। दोनों के बीच के तेज संघर्ष से जनता तप कर मजबूत हो रही थे। वे साथी स्वयं उस दौर में थे।

वह लम्बी बैरिक थी। सीकचों से बाहर छोटा सा मैदान दीख पड़ता था और फिर दूसरी बैरिक। गरमियों में इन बैरिक के भीतर तेज लू की लपटें आती हैं। इस जेल की स्थापना अंग्रेजों ने १८७० ई० में की थी। उस समय देश में एक नई जागृति उठी थी। उस आन्दोलन को दबना जरूरी था। किसी मिस्टर फोक्स या डॉग ने, जो कि कलक्टर और मजिस्ट्रेट रहा होगा, इसकी नींव डाली होगी। इस बड़ी जेल का हाता लगभग तीन-चार मील का है। ऊँची-ऊँची दीवालें हैं। आज अँग्रेज कालों को हुकूमत सौंप कर चला गया। वह आज अब सेठों के जरिये अपना आर्थिक-शासन स्थापित किए है। वह उदारतापूर्वक एक दिन यूनियन जैक समेट कर, उसकी जगह तिरंगा फहराकर चला आया था। उसकी उदारता की नेताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

काली-हुकूमत ने शासन संभाल लिया था; पर जेलें भरी थीं, नेता अपने विरोधियों को बन्द करके आराम से अपनी योजनाएँ चलाना चाहते थे। पर ये मजदूर-किसान, जो कि गाँधी युग में केवल वालिंटियर बनते थे, आज बहकाने में आकर अपनी आजादी माँगते हैं। गाँधीजी

जल्दी मर गए, अन्यथा शायद कोई नया-करिश्मा निकालते। बापू के नाम पर भी जनता नहीं मानती है। नेताओं को जनता नहीं, पुलीस और सी० आई० डी० वाले घेरे रहते हैं। नेता परेशान हैं कि अपढ़ जनता उनका आदर नहीं करती। बुढ़ापे में नेताओं के सिर पर से खद्दर की सुफेद टोपी उतारने तुले हुए हैं। वे नेता भी सठिया गए हैं। उनका बुढ़ापा मानों कि उनकी आजादी को कब्र में दफना रहा हो।

वे साथी गंभीरता से उस संघर्ष पर सोच रहे थे, जो कल एक नया युग लावेगा।

(२)

नसीर उस भूख हड़ताल की बात पहले नहीं समझ पाया था। मजदूरों की लड़ाई में वह सदा आगे रहा है। उनके बीच काम करते हुए, उसे मध्यवर्ग के साथियों के साथ फैसला लेते हुए बड़ी कठिनाई पड़ती थी। वे साथी समझते थे कि हड़ताल की लड़ाई की राजनीति से मजदूरों को कोई वास्ता नहीं रखना चाहिए। वह बार-बार कहता था, कि यह उनकी मजदूरों के नेतृत्व के प्रतिवाली घृणा को व्यक्त करता है। वे साथी तो उस राष्ट्रीय परम्परा की भाँति मजदूरों को केवल वालिंटियर समझते थे, भले ही नारे काफी ऊँचे लगाते हों। नसीर का अपने यूनियन से बहुत पुराना सम्बन्ध था और जब एक दिन वह हड़-ताल करने में निकाल दिया गया, तो फिर वह यूनियन का पूरा-पूरा काम करने लगा था। कई बार पुलीस ने उसे पकड़ कर कैद रखा। उसे परेशान किया। उसके मनोबल को तोड़ने की पूरी-पूरी कोशिश की। वह उन सख्तियों से मजबूत होता चला गया और जब पहले-पहल बताया गया कि सच ही मजदूर के नेतृत्व में आगे क्रान्ति होगी, तो वह उस सन्देश को हरएक मजदूर के पास ले गया। वह छोटी-छोटी बैठकों में बताता था, कि कम्यूनिस्ट पार्टी ही मजदूरों की सच्ची रहनुमाई कर सकती है। वह उनको समझाता था कि हड़तालें केवल मँहगाई, भत्ता तथा और

माँगों को पूरी कराने के लिए ही हथियार नहीं हैं। वह तो उस लड़ाई की ओर बढ़ने का रास्ता है, जिससे कि मजदूर एक दिन राज का पूरा शासन अपने हाथ में ले लेगा। तब मिल की चिमनी को देखकर उसकी जान नहीं सूखेगी। वे मजदूरों के गुमाश्ते मिस्त्री बिना घूस लिए बीड़ी पीने तथा पाखाना तक नहीं जाने देते हैं। गर्भवती मजदूरनियों को बरखास्त कर दिया जाता है। उनके सब नागरिक अधिकार समाप्त कर दिए गए हैं। उनकी सभाओं में सी० आई० डी० वाले पहुँचते हैं। वे कोई कानूनी परचा नहीं छाप सकते हैं। वह सूती मिल में काम करता था, जहाँ कि सेठों ने लड़ाई के जमाने में लाखों रुपया कमाया था।

उन लोगों ने जब कभी हड़ताल की तो सेठों ने पुलीस और फौज को बुलवाया। गोलियाँ चलवा कर कई के प्राण ले लिए। नेता लोग जब आते हैं तो सेठों के यहाँ दावतें होती हैं। काँग्रेस के दफ्तर वालों को वे माहवारी चन्दे के रूप में बड़ी रकमें देते हैं। नेताओं के नाते-रिश्तेदार वहाँ बड़े-बड़े ओहदों पर हैं। नेता इसलिए चिल्लाते हैं कि मजदूर मजे कर रहा है। उसकी तनखा लड़ाई के जमाने में बढ़ गई है। वह मोटा नाज न खाकर गेहूँ-चावल खाता है। उनकी पत्नियाँ साड़ियाँ पहनती हैं। शहर के मध्यवर्ग वाले धोखे में आकर उन पर विश्वास कर लेते हैं। वे अपने को उस वर्ग से दूर का समझते हैं। जेल में उसके कुछ साथियों की धारणा है कि सच ही मजदूरवर्ग खुशहाल है। उसने बार-बार निम्नमध्यवर्ग वालों को न्योता दिया है कि वह उनकी लड़ाई में साथ दें। अकेले उनकी समस्या नहीं सुलझेगी। पर वे उस वर्गहीन समाज की कल्पना नहीं करते हैं। उनकी धारणा वही पुरानी है कि दुनिया में सदा ही क्रान्तियाँ मध्यवर्ग के नौजवानों ने की हैं। वे मजदूरों के नेतृत्व पर विश्वास नहीं करते हैं। आज भी वे सोशलिस्टों के राज पर विश्वास करते हुए कहते हैं, कि वे आकर उनकी डूबती हुई नाव को बचा लेंगे। सेठों के अखबारों में छपता है कि सोशलिस्ट पार्टी काफी मजबूत हो रही

है। लेकिन वे सोशिलिस्ट नेता भी मजदूरों की रहनुमाई पर विश्वास नहीं करते हैं। उनको राजनीति से दूर रखना चाहते हैं। उनकी धारणा है कि नेतृत्व सदा मध्यवर्ग के हाथ में रहेगा।

वह दो महीने हुए यहाँ आया है। वह अंडर ग्राउंड काम करता था। एक दिन एकाएक पकड़ लिया गया। आधी रात को पुलीस ने उनकी बस्ती घेर ली थी। महिलाओं पर अत्याचार किए गए और जब उसे पकड़ा तो मारते-मारते बेदम कर दिया। फिर वह एक हफ्ते हवालात में रहा। रोज हथकड़ी डाल कर पुलीस वाले सी० आई० डी० के दफ्तर में ले जाया करते थे, वहाँ घंटों उसे तंग किया जाता था। वे अफ़सर बेरहमी से मारपीट करते थे। उससे कहते थे कि वह यदि उनको भेदभरी बातें बता दे तो उसे अच्छी नौकरी मिल जायगी। उसे समझाया था कि पिछले महीने मलेरिया के बिगड़ जाने से उसके बच्चे की मौत बिना दवादारू के हो गई। उसकी पत्नी की हालत भी ठीक नहीं है। वह पार्टी का काम कर सकता है और उनके साथ भी रह सकता है। उसे दो-सौ रुपए महीने मिलेगा। फिर इस बात को कोई नहीं जानता है। जब यह सफल नहीं हुआ, तो उसे साधारण कैदियों के साथ बन्द कर दिया गया। अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए जब उसने भूख हड़ताल की तो उसे तनहाई में डाला गया। इस पर भी वह मजदूर का बेटा नहीं झुका तो हार कर उसे अपने साथियों के साथ भेजा गया। उसे बताया गया कि 'गुन्डा एक्ट' के मुताबिक उसे छः महीने के लिए नजर बन्द किया गया है। पर उसके साथियों ने तो बताया था कि जब जेल के फाटक टूटेंगे, तभी वह भी छूटेगा। हुकूमत उनको जेलों से बाहर आसानी से नहीं करेगी।

एक बार उसकी पत्नी मिलने आई, वह तो स्वस्थ थी। वह अपने मन की कई बातें करना चाहती थी, पर सी० आई० डी० के आगे क्या कहती। उस पत्नी को आश्चर्य हुआ था कि दो मिनट अपने

पति के साथ आजादी से वह बातचीत नहीं कर सकती है। हुकूमत के प्रति उसे भारी नफरत हो उठी थी और गुस्से में वह लौट आई थी। पति को उसने इतना आश्वासन अवश्य दिया था कि वे जिस बहादुरी से जेल के भीतर लड़ रहे हैं, उसी लड़ाई को वह बाहर चला रही है। पत्नी के चले जाने पर उसने वह बात अपने साथियों को सुनाई थी। वे उसकी बहादुरी पर दंग रह गए थे। वह सुन चुका है कि वह साधारण मजदूरी करती है। उसकी उस शक्ति की बातों से मध्यवर्ग के साथी अपने परिवारों की बातें सोचते रह गए। वे पत्नियाँ जब आती हैं, तो दो-चार आँसू बहाना नहीं भूलती हैं।

बच्चे की मौत की बाद वह पहली मुलाकात थी। उस बच्चे का बिना किसी ठीक दवा-दारू के मर जाना उसे नई बात नहीं लगा। यह तो रोज ही होता है, अकेला वह उसका शिकार नहीं, करोड़ों उसके साथी हैं। वह पत्नी को सान्त्वना नहीं दे सका, यह उसके साथियों की शिकायत थी, पर उसकी पत्नी हृदय बोझिल कर वहाँ आँसू बहाने नहीं आई थी। वह तो मेहनत और कठिनाइयों में सालों से पिसती रही है। आज फौलाद की भाँति मजबूत है। पिछले दिनों एक जलूस में पुलीस के अश्रु गैस और लाठियों का प्रसाद पा चुकी है। उसके सिर पर लाठी की चोट साफ-साफ चमकती थी। वह साधारण मुसीबतों में घबराती नहीं है। उस बच्चे के किसी भविष्य की चिन्ता उन लोगों ने कभी नहीं की। वह तो मजाक सा करता बतलाता था कि हिटलरी गुंडों ने इस लड़ाई में हजारों बच्चों को संगीनों, तथा जमीन पर पटक कर मार डाला था। पर उनकी माताओं से वे कुछ भेद की बातें नहीं जान सके। ये फासिस्ट जुल्म तो पूँजीपतियों के हाथ के साधारण हथकंडे हैं। वह यह भी जानता था, कि यदि यह समाज नहीं बदलता तो वह बच्चा भी किसी मिल के फाटक पर किसी दिन खड़ा होता और आजीवन पूरा पेट खाना

नहीं पाता। मौजूदा सरकार और कुछ नहीं कर सकती है, इसीलिए बच्चे की मौत का सदमा नहीं लगा। इस लड़ाई में अभी न जाने क्या-क्या होगा।

उसे याद आया कि वह पुलीस की आँखों में धूल झोंक कर बम्बई अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के जलसे में शामिल होने गया था। वह एक प्रतिनिधि की हैसियत से गया था। वहीं उसे मालूम हुआ था कि सारे देश के मजदूर महान और वीरतापूर्ण संघर्षों के दौर से गुजर रहे हैं। उन दिनों लाल झंडे के नेतृत्व में कोयम्बतूर के चालीस हजार कपड़ा मजदूरों की हड़ताल ११४ दिन चली थी; नागपुर के तीस हजार मजदूरों ने दो महीने; यू० पी० और बिहार में शिक्षकों का संघर्ष हुआ था; डॉक मजदूरों; पोस्ट और टेलीग्राफ़ के कर्मचारियों, केन्द्रीय पी० डब्लु० डी०, म्युनिसिपिल, बैंक···। सारे देश के मजदूर भयानक कठिनाइयों के होने पर भी अपने संघर्ष का डटकर मुकाबला कर रहे थे। हजारों हड़तालें देश में हुईं जिसमें सब मिला कर लाखों मजदूरों ने हिस्सा लिया था। ज्यादातर हड़तालें तनखा व छटनी के सवालों को लेकर हुई थीं। मजदूरों की हड़तालों की तूफानी लहर के साथ ही किसानों, मध्यवर्गी-कर्मचारियों तथा उनकी स्त्रियों, विद्यार्थियों आदि ने भी हड़तालें की थीं।

अधिवेशन में उसने पाया कि युद्ध के मैदान से चार सौ प्रतिनिधि आये थे। उनमें ज्यादातर मजदूर और मध्यवर्गी कर्मचारी थे, जो कि अपने-अपने मोरचों से सीधे आए थे। उनके भाषणों तथा प्रस्तावों में एक जंगी ललकार थी कि, मजदूरो, देश-व्यापी संघर्ष ही तुम्हारी माँगों को पूरा कर सकता है। संघर्ष छेड़ने के लिए अपना एका मजबूत करो। वहीं मजदूर के प्रतिनिधियों ने बताया था कि वे किस मजबूती से हमले का जवाब देते हैं। अधिवेशन की कार्यवाही से लगता था कि, वे एक अखिलभारतीय युद्ध की घोषणा करना चाहते थे कि मजदूर हुकूमत

में हिस्सा पा कर देश की डूबती हुई आर्थिक-व्यवस्था को संभाल लें।

उसे यह जान कर आश्चर्य हुआ था कि देश के सात करोड़ खेत-मजदूरों की दशा सबसे अधिक दर्दनाक है! गुलामी की हालत में रहते हैं। कहीं-कहीं उनको मजदूरी छै पैसे रोज मिलती है। जमींदार की गुलामी के अलावा उनके पास जिन्दगी बसर करने का कोई दूसरा जरिया नहीं है। उनका जीवन असीम निर्धनता, अमानुषिक शोषण और असहाय भुखमरी की हालत में कटता है। आज तक वह सोचता था कि किसान शायद खुशहाल होगा; पर इन मजदूरों का हाल सुनकर वह दंग रह गया था। उसे विश्वास हो गया कि ये सात करोड़ मजदूर भी उनकी लड़ाई में शामिल होंगे। उस वर्ग का आधार भी मजदूरों की भाँति ही था।

रेलवे मजदूरों से सस्ते राशन की दूकानें छीन ली गई थीं। कपड़े के उद्योग में बड़े पैमाने पर छंटनी का हमला बढ़ रहा था। सभी मजदूरों के आगे कंगाली, भुखमरी और मौत की तसवीर थी। इसीलिए आम शोषित जनता, गाँव के मेहनतकश, शहर के मध्य-वर्गी कर्मचारी, विद्यार्थी सभी मजदूरों के साथ मिलकर उनकी लड़ाई को आगे बढ़ाना चाहते थे। वे लड़कर बेहतर जिन्दगी हासिल करना चाहते थे। वे ललकारते थे कि वे एक देशव्यापी संघर्ष छेड़ने वाले हैं। सब मिलकर उसका समर्थन करो, यही इस भारी दलदल से छुटकारा पाने का सही रास्ता है। बेहतर जिन्दगी के लिए, सुरक्षित भविष्य के लिए; शोषकों को कुचल कर आर्थिक संकट हल करना चाहिए। आर्थिक संकट से घिरे पूँजीवादी हमले के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व करने का वह मजदूरों का एलान था।

उसने देखा कि प्रतिनिधियों में अधिकतर नौजवान ही थे। भले ही वे कम उम्र के थे, परन्तु दो साल के गंभीर अनुभव ने उन्हें कुशल लड़ाकू बना दिया था। उनके शरीर पर लड़ाई के मैदान के घावों के चिन्ह झलक

रहे थे। पर दृढ़ता और गौरव से लड़ी गयी लड़ाइयों ने जहाँ लाठी चार्ज और आँसू गैस की जगह पुलीस की बन्दूकों से बरसती गरम सीसे की गोलियों ने ले ली थी, इन्हें इस्पात बना दिया था। उनकी बातों से पता चलता था कि भारत का मजदूरवर्ग, उन हड़तालों के उठान पर खड़ा है, जो एकदम से फूट पड़ने वाली और सारे देश पर छा जाने वाली हैं। अपने अनुभवों के बल पर आज वे नए जंग का ऐलान कर रहे थे।

————नसीर को वह नारा, कि लड़ाई की तैयारी करो, ने एक नया जोश पैदा कर दिया था। कपड़ा, कोयलाखानों, रेलवे, ट्राम-बस, खदान-लोहे-ताँबे के उद्योगों, चायबगान,—सब मजदूरों ने फौरी संघर्ष के लिए एक विशाल एकता बनाई थी। उनके संघर्षों का पिछले दो साल का इतिहास बताता है कि मजदूर आन्दोलन में फूट डालने और उसे कुचलने की कोशिशो में पूँजीपतियों की हार हुई है। पर एक घायल हिंसक पशु की तरह, वे और भी खूँखार हमले करेंगे, यह निश्चित था। लेकिन आज वे भी अपने लड़ाकू यूनियन बनाने में सफल हो गए हैं। नौ मार्च को पूँजीपतियों की सरकार ने मार्शल लॉ जारी करके फौज को पूरे अधिकार दे दिए थे, मध्यवर्ग के समझौता वादी नेताओं ने गद्दारी की और मजदूरों के नेता गिरफ्तार करवा दिए थे। उस अनुभव के बाद अब वे जंगजू कमीटियाँ बना चुके थे। वह बड़ी कॉन्फरेन्स मजदूरों की ताकत का एक बहुत बड़ा इजहार था। वहीं उसे ज्ञात हुआ था कि हर जगह आर्थिक ढाँचा टूट चुका है; देश संकट में फंस चुका है; नेता लोग सेठों के बनाए जाल में उलझ गए हैं, उनकी समझ में नहीं आता कि क्या करें। उनको चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखलाई देता है।

मजदूरों की इस बड़ी सभा ने उनको रोशनी दी, कि जनता के बताए हुए रास्ते पर चलो। फैक्टरियाँ उनको सौंप दो, खेत खेतिहर मजदूरों को दो, शोषण के सब रास्ते बन्द करके हरएक को सच्ची आजादी

दे दो। अपनी फौजी ताकत पर अधिक विश्वास न करो। उन प्रतिक्रिया वादी शक्तियों पर भरोसा करना छोड़ दो, जो कि देश को सदियों से गुलामी की जंजीर पहनाए हुए हैं। वह नेताओं की चुनौती थी, कि मजदूर ने अपना रास्ता तय कर लिया है, अब उसे अधिक दिनों तक कोई धोखा नहीं दे सकता है। सेठों के मुनाफे से भरी तिजोरियों को वे अपनी शक्ति से खुलवा देंगे, देश को बाहर से कर्जे की आवश्यकता नहीं है। देश की सबसे बड़ी वसीयत तो मजदूरों का श्रम है, जिसका सही उपयोग केवल समाजवादी देश में हो हो सकता है।

उस भूख हड़ताल की लम्बी कहानी पर वह सोचने लगा। आगरा जेल में सत्तर दिनों से साथी अपनी माँगों के लिए अनशन किए हुए हैं, अखबार वाले झूठी-झूठी खबरें छापते हैं कि कई जेलों में साथियों ने हार कर उसे वापिस ले लिया है। कई नगरों में मजदूरों ने गुस्से में प्रदर्शन किए हैं, ये हड़तालें एक नया युग आगे लायेंगी, पर वह जो जेल में गोलियाँ चलती हैं—साथी मर जाते हैं। यह कैसा व्यवहार इस सरकार का है जो कि इस भाँति नजरबन्दों को तिल-तिल करके मर जाने देने पर तुल गई है। यह सरकार जो कि बार-बार चुनैती देती है कि उसे जनता के 'वोटों' ने चुना है। वह आज जनता से बड़ी दूर रहती है। उसकी सीमा अपनी फाइलों तथा आदेशों तक सीमित है। सेठ उनको बताते हैं, कि चुपचाप वे उनके आदेश मान लें, अन्यथा नए चुनाव में वे उनका साथ नहीं देंगे। फिर उन काले सेठों के पीछे अमरीका और ब्रिटेन के गोरे सेठों का हाथ भी है।

—तभी किसी साथी ने नसीर को पुकारा। वह चौंक उठा। उसके सब साथी अखबारों के पन्ने चाट रहे थे। मानों कि वह सब पढ़ कर उनको गहरा सन्तोष हो रहा हो। वह मजदूरों की पार्टी का अखबार था, जिसमें कि उनके आन्दोलनों के समाचार छपते हैं, कि किस तरह कलकत्ते के नागरिक एक नई क्रांतिकारी आँधी वहाँ बहा रहे हैं।

कुछ बहु लिया के खेत मजदूर के संघर्ष की तसवीर थी, जहाँ कि जमीन्दार से खेत छीन कर उन लोगों ने विजय पायी थी। वह तेलंगाना के किसानों की बहादुरी का हाल था। उनका वह आन्दोलन अब पाँच जिलों में था और अस्सी हजार फौज भी उसे दबाने में असफल रही।

वे आन्दोलन एक नया बल उनको प्रदान करते हैं, अन्यथा वे जानते हैं कि जेल से अब उनको आसानी से छुटकारा नहीं मिलेगा। जब तक कि जनता क्रान्ति की आखरी मंजिल पर पहुँच, जेल के फाटकों को तोड़ कर, उनको मुक्त नहीं करती है। अब उनका उन पुराने नेताओं पर, जो कि कभी क्रान्ति का ढोंग करते थे, विश्वास हट चुका है।

वे अब उनको अपने से बड़ी दूर पाते हैं। उन तक उनकी कोई पहुँच नहीं है। गाँधीजी भी सन् १९३० के आन्दोलन के बाद जनता से दूर रहने लगे थे। उनके अनुयाई गांधीजी के बतलाए मार्ग कि मजदूर किसानों के नेताओं पर हिंसा भी बरती जा सकती है, सच्चे अनुयाई की भाँति चल रहे हैं। गाँधीजी की कसमें खा-खाकर वे अपने महान् नेता को श्रद्धांजली भेंट करते हैं, कि वे बिड़ला भवन में मरे। ये बिड़ला की थाती की रक्षा करने के लिए मेहनतकश जनता के आन्दोलनों के उभार को अपनी फौजी-शक्ति से दबावेंगे।

कुछ हो नसीर जानता है कि ये मजदूर का अपना नेतृत्व है। वह सैकड़ों सालों की गुलामी का चोला उतार फेंकेगा। अब वह अपनी हुकूमत को पाने के लिए बड़ी-बड़ी हड़तालें करेगा। मजूर-किसानों के बेटे साधारण सिपाही और फौजी भी स्वयं दुःखी हैं, वे उनका साथ देंगे। सब मिल कर सच्चे समाजवाद का निर्माण करेंगे। पूँजीपतियों के गुमाश्ते नेताओं से सत्ता छीन लेंगे।

(३)

जेल कमेटी का मंत्री साथी अब अपनी बैठक की शुरुआत कर चुका

था। वे उस भूख-हड़ताल को गांधीवादी तरीके नमक और नींबू के रस को पीकर, नहीं चला रहे थे। वह किसी समझौते के लिए व्यक्तिवादी लड़ाई न थी। वह तो एक राजनैतिक लड़ाई थी। उस संघर्ष का एक अंग था, जिसे कि मेहनतकश जनता बाहर चला रही थी। वे आगे के कार्यक्रम पर विचार करने लगे। सरकार ने आगरा के मजिस्ट्रेट को आदेश दिया था कि यदि किसी साथी के जीवन-मरण का प्रश्न हो, तो उसे बिना किसी शर्त छोड़ दिया जाय। ताकि जनता के किसी नेता की मौत जेल में न हो। जनता को वे इस तरह धोखा देने में मानो कि सफल हो जावेंगे। उसने यह भी कहा कि जेल के अधिकारी फिर उनको अलग-अलग रखने को सोच रहे हैं। उनकी अपनी गलत धारणा है कि इस भाँति वे कुछ का मनोबल तोड़ लेंगे। वे यहाँ पर भी उनकी संगठित-शक्ति को देख कर घबरा उठे हैं। सब ने मिल कर फैसला किया, कि वे किसी हालत में अलग नहीं होंगे। अधिकारियों के उस जुल्म से संघर्ष करेंगे। वहाँ भी शोषित वर्ग के वार्डर उनसे हमदर्दी रखते हैं। बाहर के और चक्करों के कैदी भी हमदर्दी के पैगाम उनको भेजते हैं। कुछ हमदर्द कैदी उनकी भूख-हड़ताल के समर्थन में खुद भी कई रोज से भूखे थे। जेल के अधिकारियों के अत्याचार के बाद भी वे डिगे नहीं।

वह साथी बता रहा था कि किस भाँति वह कालापानी वाला कैदी आज उनके साथ है। वह उनकी राजनीति को सिर्फ मानता ही नहीं। उसने जेल-कमेटी के पास अपनी सदस्यता के लिए माँग का सन्देश भेजा है। ये लोग अधिकारियों को बता चुके हैं कि यदि उसके साथ राजनीतिक-बन्दी वाला सलूक न किया जायगा तो वे, उसके लिए लड़ेंगे। वह कैदी जो कि इस भारी जुल्म में कि उसने जमीन्दार पर खूनी हमला किया, इस लम्बी सजा को भुगत रहा है। गाँव के गरीब किसान का बेटा, जो कि दूसरों की खेती ठेके पर करता था, कुछ अक्खड़ स्वभाव का था। वह एलानिया कहता था कि किसी का दबैल नहीं है। जमीन्दार के

गुन्डों ने एक रोज उस पर हमला किया। पास के थाने के दरोगा के साथ षड्यंत्र रच कर जमीन्दार उसे कालेपानी की सजा करा कर, गाँव पर अपना रुतवा जमाने में फिर भी सफल नहीं हुए थे। रोज ब रोज किसान उठकर हमला कर रहा था। चार जाली मुकदमे के बाद जनता के उभार के आगे वे हार गए कि कलयुग आ गया है।

वह नौजवान पिछले साथियों के सम्पर्क में आया। वह उनकी वार्ड में काम करने आया करता था। वह प्रतिभाशाली किसान का बेटा एक दिन जान गया, कि कम्युनिस्टपार्टी ही बेकारी और गरीबी हटा सकती है। उसने ऐलानिया कैदियों को भड़काना शुरू कर दिया और जेल अधिकारियों के बड़े अनुशासन को अपनी ताकत से तोड़ने में सफल हो गया था। सब साथी सहमत थे कि उसे सदस्यता दे दी जानी चाहिए। किसान और मजदूरों के बेटे ही अधिकतर उनको जेलों में मिलते थे। मानो की वह न्याय की मखोल उड़ाते हों कि सेठ और पूँजीपतियों का न्याय भी गरीबों का शोषण कर उनकी तिजोरियों की रक्षा करता है। वे मजदूर किसानों के बेटे तैयार हो रहे थे और उस दिन की बाट जोह रहे थे, जबकि बाहर की जनता आगे बढ़ेगी और वे उनके साथ मिल कर साम्राज्यवाद की स्थापित की हुई इन ऊँची जेल की दिवारों के बड़े-बड़े फाटकों को तोड़ कर मुक्त हो जावेंगे। आगे फिर ये जेलें शोषण की प्रतीक नहीं रह जावेंगी।

यह सब जानते हैं कि उस कैदी की हालत उन सबसे खराब है। वह बहादुरी के साथ अपने वर्ग के शत्रुओं से लड़ाई लड़ रहा है। वहाँ के कैदियों के बीच एक नई क्रान्ति का सन्देश पहुँच चुका है। वे भी आज उन नारों को दुहराते हैं : जेल के फाटक टूटेंगे, राजबन्दी छूटेंगे। जेल के फाटकों के टूट जाने व इन राजबन्दियों के छूट जाने के बाद उनको भरोसा है, कि वे भी अधिक दिनों तक इस नरक में नहीं पड़े रहेंगे।

अब हरएक साथी अपनी-अपनी बात कहने लगा। हरएक में एक जोश था। वह महान् कम्यूनिस्ट परम्परा का पालन करने वाला सिपाई था। यह वही लड़ाई थी, जहाँ कि वर्ग संघर्ष की तेजी बढ़ जाने पर जनता के नेताओं पर खूंखार हमले होते हैं। आज वह लड़ाई तेजी से आगे बढ़ रही थी। नसीर कई बार सब साथियों को भरोसा दिलाता है, कि मजदूर अब पीछे नहीं हटेगा। मध्यवर्ग के साथी, जिनको मजदूरों की लड़ाई का खास सा अनुभव नहीं है, वे उसकी बातों को चाव से सुनते हैं। वह बताता है कि आज अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन ने नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया है। पार्टी का ढाँचा बदल रहा है। आज राजनीति केवल मध्यवर्ग के साथियों के दिमाग के बहस की बात नहीं रह गई है। मजदूर आज एक ही राजनीति को समझता है। वह एक भारी देश व्यापी हड़ताल है, जिसके जरिये कि वह शासन पर अपना अधिकार करेगा—यह सड़ा-गला सामन्तवादी-पूँजीवादी ढाँचा लड़-खड़ा कर गिर पड़ेगा। फौजी और पुलीस जनता के बढ़ते उफान में उनका साथ देंगे। वह समाजवादी राज्य अब कल्पना नहीं रह जायगा।

साथी मन्त्री बता रहा था कि तेलंगाना आज फासिस्ट जुल्मों के बाद भी उठा है। वहाँ के किसान ने अपना समाजवादी राज कायम कर लिया। फौजो आज रात को उन पर हमला नहीं करते हैं। वह उफान सारे देश में है, सब सरकार के निकम्मे पन से झुँझलाए हुए हैं। हैदराबाद के कॉंग्रेसी फौजी-ट्रिब्यूनल के फैसले के मुताबिक तीस किसान और जनवादी नेताओं को फाँसी और बहुतों को ताजिन्दगी जेल की सजा देदी गई है, उनमें एक बारह साल का बालक भी शामिल है, जिसे ४६ साल के कैद की सजा दी गई है। उन नेताओं का जुल्म यही है, कि उन्होंने निजामशाही के सामन्ती शोषण और भुखमरी के खिलाफ तैलंगाना के किसान, मजदूर और आम जनता को सङ्गठित कर उनका नेतृत्व किया।

सब सावधानी से इस बात को सुन रहे थे। यह जेल की डॉक, जो कि सारे जेल के कायदे-कानूनों को तोड़ कर पहुँचती है, सबके लिए काफी कौतूहल की बात है। अन्यथा वे सारी दुनिया से अलग रहते हैं। वह डाक एक मात्र जीवित सम्पर्क बाहर के साथियों से रखती है। वह जेल की दीवारों से घिरी बस्ती भले ही शहर से दूर नहीं, झूठे कायदे-कानून उसकी दूरी को बढ़ाते हैं। कायदे-कानून जिनको कि साम्राज्यवादियों ने उपनिवेशों की जनता का शोषण करने के लिए बनाया था; राष्ट्रीय सरकार उनको अपने शासन का सबल अंग पाती है। भारतीय जनता की आजादी की बात तो झूठी मृगतृष्णा है।

उन लोगों ने उन चिट्ठियों को पढ़ कर सावधानी से जला डाला तथा अखबारों को एक जगह संभाल कर रख दिया। जेल के अधिकारी अक्सर उनकी तलाशी लिया करते हैं। उनको बात-बात में पहले अपमानित किया करते थे। आज तो उनका वह पिछला रवैया बदल गया है। वह भूख-हड़ताल उनको परेशान किए हुए है।

नसीर उन सबसे स्वस्थ है। वह बताता है कि मजदूर अपना राज किस तरह चलावेगा। वह सुपरेनटेंडेंट को किसी बस का कन्डक्टर और डिपुटी को रेलवे का ड्रायवर बनावेगा। इन सालों ने काफी हराम का माल आज तक खाया है। यदि सेठ लोग बाज नहीं आए और समाजवादी राष्ट्र के खिलाफ षड्यंत्र करेंगे, तो वह उनको बीच बाजार कोड़े लगवा देगा। वे हरामजादे चोर-बाजारी करके काफी मोटे हो गए हैं। सदियों से उनका खान्दान गरीबों का खून चूसता रहा है। उनको माफी नहीं मिलेगी। वह तो राष्ट्रीय नेताओं का पार्ट बड़ी मखौल के साथ अदा करता है। अभी-अभी उसने एक गाना नेहरू के अमेरिका से लौटने पर बनाया है :

हुक्म तो ट्रूमैन का, एटली का ताम-झाम
चोगा है गाँधी जी का, नेहरू हमारा नाम

उसका ख्याल है कि मजदूर अपने राज्य का प्रबन्ध खुद कर लेगा। उसे हुकूमत करना सीखने के लिए विश्वविद्यालयों की पढ़ाई की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह जो आई० सी० एस० की साम्राज्यवादी खच्चर-बहादुरी है; सबको वह किसी कैदखाने के वार्डरों में जगह देगा। वहीं सिक्रेटेरियट की पुरानी फाइलें भेजकर गवर्नरों से कहेगा कि अपनी 'ग्रो मोर फूड' की स्कीमें बनावें।

उसकी हर बात में उस वर्ग के प्रति एक भारी घृणा का भाव व्यक्त होता है। वह उनको किसी रूप में क्षमा करने की बात नहीं सोचता है। उसकी पक्की धारणा है कि ये सब बड़े खान्दान वाले चोर और लुटेरे हैं। पहले वे अँग्रेज सरकार के हिमायती थे, जब कि आज गाँधी जी की जय करते हैं। वह उनको चालबाज गुंडे कहता है। उनके लिए उसने चुन-चुन कर कई शब्द याद कर रखे हैं। वह जेल के सुपरेनटेंडेंट को भी 'बमपुलिस का दरोगा' मजाक में कहा करता है।

जेल के छोटे डॉक्टर से जरूर उसने दोस्ती करली है। वह किसी निम्नमध्यवर्ग का बेटा है। पहले विद्यार्थियों के फेडरेशन का सदस्य मेडीकल कॉलेज में था। वह सोवियत रूस का भक्त है। वह उनसे जान-बूझ कर अधिक बहस नहीं करता है। वह चुपके कहता है, कि उनकी भूख-हड़ताल के कारण आजकल उसका भी खाने के लिए मन नहीं करता है। वह कई बार इस्तीफा देने की सोच रहा है। नसीर उसकी भावुकता पर हँसता हुआ कहता है, कि अभी जेल के फाटक टूटने का ऐलान वह नहीं कर रहा है।

जेल के कई वार्डर भी इस भूख-हड़ताल के दौरान में उनके समीप आए हैं। वे उनकी बातों को मानों कि समझ गए हैं। हरएक परेशान है। यह नौकरी उसके परिवार वालों को पूरा पेट खाना नहीं दे पाती है। फिर बड़ी कड़ी ड्यूटी है। अफसर तो मौज करते हैं। नसीर सबसे आसानी से दोस्ती कर लेता है। सच्चे और बेईमान आदमी को

पहचानते उसे देर नहीं लगती है। अधिकारियों ने एक बार एक सी० आई० डी० वाले को उनकी वार्ड में काम करने को भेजा, वह नसीर की आँखों से बच नहीं सका और तीसरे दिन से नहीं आया।

काफी अरसा गुजर गया। अब फिर अधिकारी आ रहे थे। संध्या हो आई थी। वे एक बार फिर देखने आए थे कि राजबन्दियों का क्या हाल है। वह सुपरेनटेंडेंट काफी मुलामियत से उनसे बातें किया करता है। आजकल भीगी बिल्ली बन कर मिमयाता है। लेकिन नसीर तो पूछता है—सर, रायसाहबी खुला बन्द हो गई—नहीं तो सर....!

—अब धुँधली शाम हो आई थी। वे राजबन्दी चुपचाप लेट गए थे। उनका वह संघर्ष...देवताओं की छाया में : बंगाल, मद्रास, हैदराबाद की कम्यूनिस्ट पार्टियाँ गैरकानूनी घोषित की जा चुकी थीं। साबरमती, त्रिविनद्राम, कलकत्ते तथा अन्य जेलों के नजरबन्दों पर गोलियाँ बरसाई गईं। मजूर और किसानों, विद्यार्थियों और मध्यवर्ग की जनता पर रोज पुलीस हमला कर रही थी.......

देश आजाद था। नेता गाँधी के रामराज्य की भाँति शासन कर रहे थे; अनाज का भाव बढ़ रहा था। मध्य व निम्नमध्यवर्ग का आर्थिक ढाँचा टूट कर चकनाचूर हो गया था। मजूर और खेतिहर भुखमरी और मौत से अन्तिम संघर्ष कर रहा था।

वे जनता के नेता भूख-हड़ताल करके अपने अधिकारों की माँग कर रहे थे। उनका वह संघर्ष देशव्यापी लड़ाई का एक हिस्सा था। वह वर्ग-संघर्ष की भयानक लड़ाई थी, जिससे कि नए समाजवादी राष्ट्र का निर्माण होगा..........

पोस्टर

कचेहरी और सिविल-लाइन्स को जाने वाली सड़कों के चौराहे पर म्युनिसिपेल्टी ने सिमेंट का एक त्रिकोण बनाता हुआ थोड़ा खड़ा करके उस पर सड़कों के नाम खोद दिए हैं। पहले उपनिवेशों के स्वामी गोरों के नाम उस पर खुदे हुए थे। अब उनके सच्चे उत्तराधिकारी नेताओं के नाम उस पर नजर पड़ते हैं। वहाँ अमर ज्योति, निशान, बालम, व कई फिल्मों के रंगीन पोस्टर चिपके हुए रहते हैं। सिनेमा सुन्दरियों का दिलफेंक आकर्षण भी वहाँ मिलता है। किसी नीलाम की घोषणा भी लाल टाइप में छपी हुई मिलती है। रामबाण धातुपुष्ट गोलियाँ तथा और दवाओं के विज्ञापन, साथ ही साथ छोटे व्यापारी भी अपने विज्ञापन चिपकवाने का लोभ नहीं संवार पाते हैं। कई विज्ञापन साफ-साफ नजर नहीं पड़ते हैं। बालक, नौजवान, अधेड़ व बूढ़े; जो कोई

उधर से गुजरते हैं, कौतूहलवश वहाँ पर खड़े हो जाते हैं। शहर में जो सरकश-कम्पनी आने वाली है, उसके इश्तिहार में शेर, हाथी आदि कई जानवरों की तसवीरें बनी हुई हैं। कई खेलों का हवाला भी दिया गया है।

वह चौराहा केन्द्रीय स्थान पर है; दफ्तरों को जाने वाले बाबू, फैक्टरियों में काम करने वाले मजदूर, ठेले वाले, फेरी वाले, विद्यार्थी यानि सभी तरह के लोग उधर से गुजरते हैं। दस बजे से पहले न्याय की नागफाँस में फँसे हुए देहाती भी भुंडों में उधर से कचेहरी जाते हैं। चौराहे के पास यूनाइटेड-कारपोरेशन के मैनेजिंग डाइरेक्टर, मोटी तोंदवाले सेठ आत्माराम का बंगला है। सुबह-शाम तन्दुरुस्ती ठीक करने के लिए सेठ जी पैदल ही उस सड़क पर घूमते हैं। यदा-कदा एक नजर वे उधर चिपके हुए इश्तहारों पर डालते हैं। चौराहे पर खड़ा पुलीस का सिपाही चार-चार घंटे के बाद ड्यूटी बदलता रहता है। कार के भोंपू की आवाज से उसे चेतना आती है, अन्यथा वह अधिकतर मटरगश्ती ही करता रहता है। मोटरों पर चढ़ने वालों को वह इज्जत की निगाह से नहीं देखता है, वे अधिकतर बड़े लोग होते हैं और वह डरता है कि कहीं उसकी शिकायत न करदें। कौन जाने कि कोई अफ-सर ही जा रहा हो। साइकिल वालों में वह स्कूल के विद्यार्थी तथा बाबू लोगों को डबल चढ़ी लेने पर भी नहीं टोकता। उनकी ओर आँखें न करके पीठ कर लेगा। पर दूधवालों या छोटे लोगों को कानून की बात समझाता है। एक्के वालों की रपट लिखने तो वह सदा तैयार मिलेगा।

इधर तीन-चार महीने से शहर में नई तरह के पोस्टर चिपकने लगे हैं। पहले पहल कचेहरी में देहाती लोग एक नारा दुहराते हुए पहुँचे थे: रोटी, रोजी कपड़ा दो; वरना गद्दी छोड़ दो? उन्होंने वहाँ के लोगों को बताया था कि ऐसे कई नारे एक पोस्टर पर लिखे हुए थे। शहर की कम्यूनिस्ट- पार्टी ने वह चिपकवाया था। एक छपा हुआ परचा भी था कि

यह सरकार बड़े पूँजीपतियों की गुलाम हो गई है। उनका कहना कि स्वतंत्र होते ही देश खुशहाल हो जायगा, झूठा निकला है। वे बात को तोल कर पाते कि सब कुछ सच है। कचेहरी में ही कोई तब्दीली नहीं हुई है। हाकिम वैसे ही हैं। पुलीस और कानून सबके सब पुराने हैं; आज अब पहले से ज्यादा घूस देनी पड़ती है। फैसला जमीन्दार और साहूकार के पक्ष में ही होता है। उन पोस्टरों ने शहर में एक नई जिन्दगी लादी है। लोग एक नई आशा से कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर देखने लगे हैं। ९ मार्च को रेलवे की हड़ताल के बाद, सरकार ने काफी लोगों को पकड़ लिया था। शहर १४४ दफा की कड़ी जंजीरों में फंसा हुआ है। हर दूसरे महीने पुलीस का कोई अफसर अपने आका कलक्टर का हुक्म माइक्रोफोन पर चौराहे पर लॉरी खड़ा करके सुनाता है.........श्री ....कलक्टर और मजिस्ट्रेट बहादुर का हुक्म है, कि शहर में साम्प्रदायिक झगड़े का अन्देशा है और कुछ खतरनाक लोग.........

वह एलान सारी नागरिक स्वतंत्रता को समाप्त कर देता था। देश स्वतंत्र हो गया। तिरंगे पर अशोक का दण्ड चिपक गया था। नया-विधान बन रहा था। नेता लोग अब देवताओं की भाँति रहते हैं। भक्तों की पहुँच उन तक कम थी। लोगों में भारी बेचैनी के बाद एक नया विद्रोह सुलग रहा था। बिजुली कम्पनी के मजदूरों ने हड़ताल करने की बात उठाई थी, तो कलक्टर ने फौज बुलवा कर मार्शल ला जारी करने का फैसला ले लिया। सन् १९४२ वाले आतंक के बल पर हुकूमत चल रही थी। कॉंग्रेसी पुलीस आज जनता से बड़ी दूर थी, वह नेताओं के पास पहुँच कर उनका आशीर्वाद पाने के लिये कहती थी, कि अँग्रेज हमें हुकूमत करना सिखला गए हैं। गोरों की विदेशी हुकूमत की नौकरी तो रोटी के खातिर करते थे। अब तो हम आपके बन्दे हैं। हम देश के भक्त हैं। गेहूँ, चीनी, चाँवल चोरबाजार में फिर बिकने लगा था। लड़ाई के जमाने का कन्ट्रोल दफ़्तर अब बिलकुल

स्वदेशी ढंग से चलता था। अफसरों की जगह अब नेताओं की सिफारिशों पर इन्सपेक्टर जी रहे थे। जनता के दुश्मनों ने कपड़े के दाम पाँच गुने कर दिये थे। शासन की आलोचना करना अपराध था। वह काला कलक्टर अपनी छोटी-छोटी आँखें से नए-नए आर्डर निकाला करता था। यह बात-बात में काँग्रेसियों की हँसी उड़ाता था। उसे अपने आई० सी० एस० वर्ग पर पूरा भरोसा था कि हुकूमत तो वे कर रहे हैं। नेताओं को गद्दी पर बैठाना और निकाल देना उनका काम है। मिनिस्टर तो उनके गुलाम हैं। वे उनकी सही की फाइलों पर दस्तखत करते हैं, बोलते हैं तो उनका सिखाया पाठ होता है। नेताओं को वे कठपुतली की तरह नचाया करते हैं। अपनी पिछली कॉन्फरेन्स में उन्होंने अपने जाल को और मजबूत करने की ठहराई थी। उनको पूरा-पूरा ज्ञान था कि काँग्रेस आपसी झगड़ों के दल-दल में बुरी तरह फँस गई है। हरएक अपने त्याग और तपस्या तथा जेलयात्रा की सनदों को पैसा कमाने के जरिए में बदल रहा है। वे लोग काँग्रेस का पिछला इतिहास बात-बात में सुनाते तथा बताते हैं कि मिनिस्टर तो उनकी पार्टी की ताकत से ही अब तक टिके हुए हैं। वे मिनिस्टरों के नाम इस तरह लेते हैं जैसे कि रेस के घुड़सवार अपने घोड़ों से जो चाहें करालें।

वह कलक्टर तो आज भी पी० सी० एस० वालों की मजाक उड़ाता है कि कूड़ा-करकट उसमें भरा हुआ है। अपने मातहत डिपुटी कलक्टरों को वह समझदार नहीं पाता। उनको हरएक बात के लिए आदेश दिया करता है। वे लोग उसे अपना भाग्यविधाता समझ कर चुप रहते हैं। वह उनको एक बैठक में बता चुका है। कि १४४ तोड़ने वाले कम्यूनिस्टों को सख्त सजा दी जानी चाहिए। एक डिपुटी साहब ने हिचकिचाहट में कहा कि पुलिस के गवाह तो वे ही पुराने तमोली, फेरी वाले दस नम्बरी आदि होते हैं। जो कि आसानी से कचेहरी में टूट जाते हैं। तो उसने समझाया था कि उनके बयान ऐसे लिखे जाने चाहिए, कि फैसला लिखने

में ठीक हों। वह हरएक को अपना फैसला उसे दिखाने के लिए कहता है कि कम्यूनिस्टों पर रहम नहीं करना जाना चाहिए। सेशनजज भले ही उनको छोड़ दे, कोई बात नहीं है। उनकी जमानतें जल्दी स्वीकार नहीं की जानी चाहिएँ। वे डिपुटी साहब जानते हैं कि कलक्टर उनका जीवन बना और बिगाड़ सकता है। वे इसीलिए कम्यूनिस्टों के मुकदमों में खास दिलचस्पी लिया करते हैं। वे नौजवान अदालत में उनकी मजाक उड़ाते हैं, तो चुपचाप सुन लेते हैं। वे पी० सी० एस० वर्ग वाले उस कलक्टर पर झुँझलाते हैं। जानते हैं कि वह उनकी इज्जत अपने चपरासी के बराबर भी नहीं करता है। पर अँग्रेज शासन करने के लिए कुछ विधान बना गया है। वह कलक्टर उस शासन की एक मजबूत रीढ़ की हड्डी था। अँग्रेज के चले जाने के बाद भी वह उन गोरों की थाती पर आसन जमाए हुए हैं। वैसे देश में काँग्रेसी राज करने की डींग हाँकते हैं।

वे सी० आई० डी० वाले परेशान हैं। कलक्टर उनको काफी फटकार बताता है कि कम्यूनिस्ट गैरकानूनी परचे छाप रहे हैं। वे पोस्टर चिपका कर जनता को भड़काते हैं। वे बार-बार १४४ तोड़ कर उसके आदेश का उलंघन करके उसकी इज्जत को धूल में मिला रहे हैं। सी० आई० डी० वाले आठ महीने से अभी तक एक भी फरार व्यक्ति को नहीं पकड़ पाए हैं। जबकि आठ-आठ व्यक्तियों पर वारंट हैं। सादे कपड़ों वाले वे सी० आई० डी० के गुरगे अपने अफसरों पर झुँझलाते हैं कि वे खुद तो मौज उड़ाते हैं और सारा काम उनको सौंप दिया है। रात दिन मेहनत करने पर भी साठ-सत्तर से ज्यादा तनख्वाह नहीं है। थाने में फिर भी आमदनी थी, यहाँ तो कभी-कभी लेने के देने पड़ जाते हैं। फिर आज भी वे पाते हैं कि वही पुराना ढर्रा चल रहा है। रुड़की में नेहरू गए तो सारे सूबे के सी० आई० डी० वाले उनकी हिफाजत के लिए वहाँ पहुँचे; राजेन्द्र बाबू बनारस आए तो वहाँ भी उनकी रक्षा

का भार प्रान्त की सारी सी० आई० डी० ने लिया था। हरएक नेता के साथ सी० आई० डी० का तामझाम चलता है। जनता का लाखों रुपया खर्च होता है। वे समझ नहीं पाते कि गोरों ने सात समुद्र पार आकर राज किया था, तो उनका उपनिवेश की जनता से डरना एक सही बात थी; पर ये नेता आज जनता के उभार से सच ही घबरा उठे हैं। फिर कम्यूनिष्ट बात सच कहते हैं कि गरीब की हालत आज और बदत्तर हो गई है। भत्ते का भारी भरकम हिस्सा तो उनके डिपुटी साहब हजम कर जाते हैं, जब कि वे पूरा पेट खाना तक नहीं पाते। उस पर अफसर उन पर कामचोर होने का कलंक लगाते हैं। फिर ये कम्यूनिष्ट कब क्या न कर दें, उनका कोई भरोसा नहीं है। वे कब न जाने जनता को उभार दें। काँग्रेसी और सोसिलिस्टों में यह बात नहीं थी। उनका पता लगाना मामूली बात था। एक बात उनकी समझ में नहीं आती कि आज भी कई काँग्रेसियों की निगरानी हो रही है। क्या वे भी खतरनाक हैं? यह सरकार न जाने क्यों विरोधियों से इतनी घबराती है। पहले यह बात नहीं थी। अँग्रेज अफसर मौज करते थे और उनकी हुकूमत में उनको कोई परेशानी नहीं थी। इधर ड्यूटी भी चौदह-पन्द्रह घंटे की देनी पड़ती है। वे काफी परेशान हैं।

उन पोस्टरों को लेकर सी० आई० डी० के दफ़्तर में काफी बहस होती है। कोई यह पहचानना चाहता है कि वे किसके लिखे हुए हैं। बड़ी सुबह उनका खास दस्ता निकलता है और जहाँ पोस्टर चिपके होते हैं, पहुँच कर उनको नोच कर फाड़ डालते हैं। लेकिन सारे शहर के पोस्टरों को फाड़ना आसान काम नहीं है। एक दिन बड़ी मुश्किल से वे दो कम्यूनिस्टों को पकड़ने में सफल हुए थे। उनका १४४ चालान करवाया था। उन दोनों ने तो काफी हंगामा मचाया था। आसानी से वे उनके हाथ नहीं पड़े थे। कई बार जनता ने उनको छुड़ाने की चेष्टा की। जनता का कहना था कि वह कोई अपराध नहीं है। उन पोस्टरों में सच्ची बातें लिखी

रहती है। यह एक सौ चवालीस दफा किसी की समझ में नहीं आई थी। नाके से पुलीस का खास दस्ता आया और लाठी चार्ज के बाद उनको पकड़ कर ले गया था। जनता फिर भी उन नारों को भूल नहीं सकी थी और उन दो नौजवानों के साथ-साथ उनको दुहराती रही थी। वे पोस्टर उनको एक नई रोशनी देते थे। वह माँग सही लगती थी। वे लड़के भले ही पुलीस द्वारा पकड़ लिए गए, पर अदालत में गवाह न मिलने के कारण छूट गए थे। मजिस्ट्रेट ने कहा था कि सरकार के खिलाफ नारा लगाना गैरकानूनी बात है, परचा भी चिपकाना गलत था। पुलीस ने उनको ठीक तरह से पकड़ा था, पर बड़ी लापरवाही से गवाह लाई। कलक्टर ने गुप्त आदेश निकाला था कि केवल १८८ धारा में ही कम्यूनिस्टों को न पकड़ा जाय। उन पर बलवा करने और मारपीट करने का इलजाम लगाना चाहिए। गवाहों के मामले में पुलीस को दिलचस्पी लेनी चाहिए।

लेकिन वे पोस्टर तेजी से नागरिकों के बीच नए-नए नारों का प्रचार करते रहे। वे जनता के हृदय की बातें व्यक्त करते थे। जनता अब सरकार के झूठे आश्वासनों की बात मानने के लिए तैयार नहीं थी। वे बार-बार चुनाव का सवाल उठाते थे? नए चुनाव में वे आखरी कफन तक अब काँग्रेस को उढ़ाने के लिए तैयार नहीं थे। अफसर जनता की बातों को छुपा कर, ऊपर खबर भेजते थे कि सब अमन-चैन है। कलक्टर और पुलीस का बड़ा कप्तान रोज शाम को ह्स्की के गिलासों के साथ जिले की हलचलों पर बातचीत करते थे। दोनों खुश थे कि अब वे अपने लोगों पर हुकूमत कर रहे हैं। अँग्रेज उनको शक की निगाह से देखता था। खद्दरपोश नेता तो उनको अपना पैगम्बर समझते हैं। कलक्टर, पुलीस कप्तान को बताता था कि इधर अफसरों का चुनाव अच्छा नहीं हो रहा है, काँग्रेस से कई दस नम्बरी घुस आए हैं। जेल का सार्टिफिकेट लेकर कई चोर दरवाजों से डिपुटी साहब बन बैठे हैं। सारी की सारी शासन

व्यवस्था बिगड़ गई है। पुलिस कप्तान तो हँस कर बताता था कि काँग्रेसियों ने अपनी पार्टी के आदमियों क दरोगा, तथा पुलिस का डिपुटी बना दिया है, वे उसकी शिकायतें तक मिनिस्टरों के कानों में पहुँचाते हैं। वह सोच रहा है, दो-चार छुटभैय्या नेताओं को चार सौ बीस में जेल भिजवादे, तो इनकी सारा हेकड़ी ठीक हो जायगी।

कलक्टर ने एक रोज पुलिस कप्तान के हाथ में एक पोस्टर देते कहा, कि आपको तो अपनी नई चिड़िया से फुरसत नहीं है और इधर आपकी पुलिस आँखें मूंदे हुए सोती रहती है। नई चिड़िया यानि नगर के एक प्रतिष्ठित परिवार की पढ़ी-लिखी महिला जो कि सामाजिक कार्यकर्ता और नेता थीं, वह पुलिस कप्तान साहब के साथ ज्यादातर देखी जाती थीं।

पुलिस कप्तान ने एक बार पोस्टर का नारा पढ़ कर दुहराया : तालाबन्दी तुम करोगे; मिल पर कब्जा हम करेंगे।

मिल पर कब्जा! वह गुनगुनाया "इन कम्यूनिस्टों को आपने सिर चढ़ा रखा है। दस-पन्द्रह को छै-छै महीने बन्द करवा दीजिए। आपने सी० आई० डी० का कहना माना ही नहीं।"

तेल की, काँच की तथा और एक-दो मिलें बन्द होने वाली थीं। चार हजार के करीब मजदूरों के गले पर छटनी की तलवार चलाने का निश्चय मालिक कर चुके थे। उन मिलों के मालिकों ने वार फंड कस्तूरबा फंड, कमला नेहरू फंड, बापू फंड, और न जाने किन-किन मदों के भार से नेताओं को उबार रखा था। लड़ाई के जमाने में कमाए हुए मुनाफों को वे दूसरी जगहों में लगाना चाहते थे। यह ताला बन्दी और मिल पर कब्जा करने वाला नारा शहर के निवासियों में एक नया जोश ला रहा था

[२]

महेश बाबू घर पहुँचे तो पत्नी को बताया कि काँग्रेसी सब लुच्चे

हैं, अगला चुनाव सोसलिस्ट जीतेंगे। बात तो कम्यूनिस्ट पते की कहते हैं, पर अभी उनकी बातें ज्यादातर लोग नहीं समझ पा रहे हैं। उनका जमाना आठ-दस साल से पहिले नहीं आवेगा। अब कम से कम एक भी बाबू कॉंग्रेसियों को 'वोट' नहीं देगा। गद्दी पर बैठते ही सालों ने अपने रिश्तेदारों को अच्छे-अच्छे ओहदों पर बैठा दिया है। अपनी तनख्वाहें बड़ी-बड़ी कर दी हैं। वह है न सूरजमल कल तक कौन उसे पूछता था; पक्का दस नम्बरी है। कभी उसने खद्दर नहीं पहनी, जेल नहीं गया; पर सन् बयालिस में एकाएक नेता बन गया था। गाँधी जी कहते थे कि तोड़-फोड़ करना कॉंग्रेस का प्रोग्राम नहीं है और वह लोगों को तार काटने के लिए उकसाता था; सदर का पोस्ट-आफिस जलाने में बारह साल की सजा हुई थी। अब देखो तो तीन साल में ही एक कोठी खड़ी कर दी है। पढ़ा-लिखा कम है, पर अव्वल नम्बर का तिकड़मबाज है। एम० एल० ए० बन गया। बस आज रुपया खूब कमा रहा है। उधर सुना कि दिल्ली के सिक्रेटेरियट के सैकड़ों बाबू नौकरी से बरखास्त किए जा रहे हैं। एम० ई० एस० आर्डिनेन्स आदि दफ्तरों से निकाले गए नौजवान मारे-मारे फिर रहे हैं। ऐसा लगता है कि स्कूल के मास्टरों की भाँति अब बाबू लोगों को भी हड़ताल करनी पड़ेगी। इस बुढ़ापे में जेल की रोटी खानी ही नसीब होगी। कोई दूसरा चारा नजर नहीं पड़ता है।

पत्नी परेशान है। दामाद अच्छी नौकरी पर था। सोच कर कि वह पक्की हो जायगी आँख मूँद कर लड़की दे दी थी। दो महीने हुए एकाएक नौकरी छूट गई। वह इधर-उधर भटक रहे हैं और लड़की मय तीन बच्चों के यहाँ आ गई है। लड़की को जो गहना बनवाए थे, उनमें से तीन चौथाई सुना बीमारी में खर्चा हो गया। बड़ा लड़का कचेहरी में वकालत करता है और अपने गुजारे लायक भी नहीं कमाता। उससे शादी की बात छेड़ो तो ऊँची नजर है, कि जब आमदनी ठीक होगी, तब किसी पढ़ी-लिखी लड़की से शादी करेंगे। साधारण घरों की लड़कियों

की बात सुनकर वह बात हँसी में टाल देता है। दूसरा लड़का इंटर प्रथम श्रेणी में पास हुआ; पर विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिये पैसा पास में नहीं है। वह घर पर बैठ कर इधर-उधर नौकरी के लिए अर्जी दिया करता है। लड़का होशियार है, साइन्स से दिलचस्पी है। वैसे पहले विचार था कि डॉक्टरी या इंजीनियरी उसे पढ़ावेंगे, पर तब यह कौन जानता था कि लड़ाई के बाद भी मंहगाई नहीं घटेगी। वह फिर भी दो-तीन ट्यूशन करके अम्मा को महीने में पचास-साठ रुपया दे दिया करता है। उसने अपनी माँ को आश्वासन दिया है कि वह सिक्रेटेरियट के कम्पिटिशन में जरूर निकल जायगा। या कहीं न कहीं नौकरी उसे मिल जायगी।

महेश बाबू की वह तीसरी-पत्नी है। पहली दो पत्नियाँ केवल नाम मात्र को साथ रहीं। पहली तो ससुराल केवल एक हफ्ते रही थी और मायके जो लौट कर गई तो वहीं बीमार पड़ कर मर गई थीं। उसकी सास को वे लोग पसन्द नहीं आए थे। उसका कहना था कि धोखे से शादी करवाई है। अन्यथा ऐसे कंगाल लोगों से रिश्ता वह कदापि नहीं करती। दूसरी पत्नी एक साल साथ रही और प्रसव के वक्त लापरवाही से मर गई थी। सास की कंजूसी के कारण अच्छी दाई न रखी जा सकी थी। फिर चार-पाँच साल तक उन्होंने शादी की बात नहीं उठाई और अम्मा जब एक दिन मर गईं तो घर गृहस्ती के चक्कर को संभालने के लिए चुपचाप जो रिश्ता पहले आया स्वीकार कर लिया। अम्मा का स्वभाव बुढ़ापे में कुछ चिड़चिड़ा भले ही हो गया था, पर दो जून खाना मिल जाता था। उसकी मौत के बाद खाने-पीने की व्यवस्था गड़बड़ हो गई थी। शादी के बाद पत्नी ने उसे आकर संभाल लिया। उसने गृहस्थी जमा दी। एक नए जीवन का संचार किया और बच्चों की फसल तैयार की। धीरे-धीरे उन्होंने कुछ पैसा जोड़ लिया। चार हजार का एक बीमा करवा लिया था। तब दिन अच्छे थे,

वे ऑफिस से लौटकर शाम को मोहल्ले में जाकर, ताश, चौपड़ खेल लिया करते थे। एक गाय भी पाल ली थी, एक छोटा कहार का छोकरा घर का काम-काज करता था। उम्मेद थी कि पेन्शन पाते-पाते अपना एक छोटा मकान भी बनवा लेंगे। भविष्य के लिए एकदम निश्चित थे। दो लड़के और एक लड़की के साथ परिवार ठीक तरह चल रहा था। सरकारी नौकरी थी, पर आमदनी का कोई ज़रिया नहीं था। पत्नी सुघड़ा थी। उसका मायका खुशहाल था, इसलिए घर की हालत भली थी, चीजें सस्ती थीं। भविष्य के प्रति इसीलिए उदासीन थे, कि वर्तमान की एक श्रृंखला जो कि मजबूत थी, आगे बढ़ेगी। वह विश्वास सही नहीं निकला।

जब जरमनी के हमले की बात उन्होंने अखबारों में पढ़ी थी, तो सच ही वे घटनायें अचरज पैदा करती थीं। लगता था कि हिटलर की विशाल सैनिक शक्ति के आगे छोटे-छोटे देश अपना घुटना टेक देंगे। उनको अंग्रेजों की भगदड़ पर खुशी होती थी; न जाने क्यों उनके प्रति एक भारी घृणा का उभार उठा था। अँग्रेजों ने हिन्दुस्तान को गुलाम बनाया था, अब जैसे कि हिटलर सबकी रक्षा करेगा। सच ही अँग्रेजों ने अपने आर्थिक शोषण की एक सीमा बनाकर उसके बाद देश की प्रगति रोक ली थी। वह युद्ध क्यों हुआ, इसका अधिक लोगों को ज्ञान नहीं था पर हिन्दुस्तान भी उस युद्ध का एक भाग बन गया। बर्लिन रेडियो को सुनकर वे सब लोग उसकी आलोचना-प्रत्यालोचना किया करते थे। उनका अपना मध्यवर्ग अच्छी हालत में था। भविष्य निश्चित था। युद्धकाल ने नौकरी की नई-नई उम्मीदें लादी थीं। अड़ोस-पड़ोस के लड़के वायसराय कमीशन और बादशाही-कमीशन पाकर फौजों में भरती हो रहे थे। परिवारों की आमदनी बढ़ती जा रही थी। वे अखबार की घटनाएँ केवल दिलचस्प किस्से से लगते थे। युद्ध ने एकाएक कई नए आविष्कारों को आगे ला दिया था। घंटों शाम को वे उस पर तर्क-

करते थे। सुबह का दैनिक अखबार कई दिलचस्प किस्से उनसे आगे रख कर भेदभरी वातें बताता था। रात को बर्लिन रेडियो का एनाउन्सर बार-बार घोषणा करता था कि लार्ड लिनलिथगो आखरी वायसराय हैं। उपनिवेशों से अँग्रेज अपना बोरिया-बिस्तर बाँध कर भाग रहे हैं। यह बात भली लगती थी। उन साम्राज्यवादियों के शोषण के प्रति लोगों का विद्रोह उभार पर था। सब चाहते थे कि हिटलर जीत जाय, ताकि अंग्रेज उसकी गुलामी कर सकें ?

फिर एक नया तूफान देश में आया। नेताओं ने जनता के गुस्से से अँग्रेजों को झुकाने की कोशिश की, लेकिन हिटलर ने तो जनता के अपने राज सोवियत रूस पर ही हमला कर दिया था। रूस की धरती पर मजदूर, किसानों, मध्यवर्ग के बेटे उन फासिस्टों से अपने देश की रक्षा करते हुए हजारों की संख्या में, प्रति दिवस अपने प्राण गंवा रहे थे। हिटलर की बढ़ती हुई ताकत का नेताओं को भी भरोसा हो आया था। उधर जापान ने युद्ध की घोषणा कर दी थी। नेताओं ने एक आखरी समझौता करने की ठहराई, पर चूक गए। वे जेलों में बन्द थे। अंग्रेज की हुकूमत ने अपनी स्पेशल आर्मड कानस्टबेलरी, पुलीस तथा फौज के जरिए उस उठते हुए तूफान को कुचल डालने की कोशिश की थी। नेतृत्व हीन जनता अपने अरमानों को लेकर रह गई थी। कहीं-कहीं नेतृत्व उसने अपने हाथ में ले लिया था ; पर अकेले उसे न सँम्भाल सकी। साम्राज्यवादियों की फौजी ताकत के आगे हार खा कर चुप हो गई। उस आन्दोलन की असफलता एक बेवशी लाई थी। जनता परेशान हो उठी, वे उलझन में पड़ गए थे कि यह आन्दोलन असफल क्यों रहा। गाँधी जी को अंग्रेजों ने नहीं छोड़ा। आमरण अनशन करने कि बात पर भी जनता में नई जागृति नहीं आई, कि आन्दोलन कर सके। उस युद्ध ने गाँधी जी और जनता के बीच एक खाई डाल दी थी। युद्ध, मंहगाई, भुखमरी, कन्ट्रोल, चोर बाजारी, घूसखोरी और न जाने क्या-

क्या नए रोग देश में नहीं लाया था। लोगों की रोजाना जिन्दगी मिट रही थी। कहीं कोई नई उम्मेद नहीं थी। रूस-जर्मनी से मोर्चा ले रहा था। चीन, जापानियों से जिन्दगी-मौत की लड़ाई लड़ रहा था। रूसी और चीनी जनता की बहादुरी की कहानियाँ रोज अखबारों में छप रही थीं। हिलटर की जिस महानता पर लोगों का विश्वास था। वह मृगतृष्णा मिट गई थी। लोगों के हृदय में उनके प्रति एक घृणा खौल रही थी। वे सब चाहते थे कि मजदूर-किसानों का लाल रूस विजयी हो। जनता की विशाल लाल सैना के बहादुरी के किस्से रोज सुनाई पड़ते थे।

लाल सैना जीत रही थी। वह सब एक नई उम्मीद लाता था। अन्यथा महेश बाबू का ताश-चौपड़ कब टूट चुका था। उनकी इन्सोरेन्स की पॉलिसी 'पेड अप' हो चुकी थी। कन्ट्रोल के दुकानों में खड़े-खड़े उनकी कमर झुक जाती थी। चोर बाजार को ढूँढने काफी शक्ति नष्ट हो जाती थी। लकड़ी-कपड़ा, नमक, अनाज सब लोप हो रहा था। आलू चार पैसे सेर से बारह आना पहुँच गया। घी की जगह शुद्ध 'डालदा' ने ले लिया था। आज से दस साल पहले कोई उनको भविष्य की यह तसवीर बताता तो वे कदापि विश्वास नहीं कर सकते। गेहूँ बारह सेर से चोर बाजार में सवा सेर तक पहुँच चुका था। और दफ्तरों में आमदनी के जरिए बढ़ गए थे, पर वे जहाँ थे, वहाँ तो वही पुराना ढर्रा था। उनका जनता के काम काज से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। लोगों ने उनको सलाह दी कि पुराने कर्मचारी हैं, किसी कन्ट्रोल के दफ्तर में फिलहाल अपना तबादला क्यों नहीं करवा लेते हैं। बहती गंगा में हाथ बटाना ठीक है। बड़े लड़के की पढ़ाई छुड़वाकर फिलहाल कहीं नौकरी लगाना ठीक होगा। लेकिन उन्होंने किसी की बात नहीं सुनी, अपनी ही ईमानदारी पर भरोसा था।

लड़ाई किसी तरह बन्द हुई, पर खुशहाली नहीं आई। युद्ध काल में जिन उम्मीदों पर जी रहे थे, वे कहीं भी पूरी नहीं हुईं। काँग्रेस ने

चुनाव लड़ना स्वीकार किया तो देश में खुशी की एक लहर आई। उनके हाथ में शासन की बागडोर आ गई थी। एक तरह स्वतंत्रता मिल गई, तो लोगों ने चैन की बाँसुरी बजाई थी। एकाएक देश का बँटवारा हुआ, शरणार्थियों की समस्या आगे आई। रोज एक न एक झंझट जीवन में आने लगी थी। कठिनाइयाँ बढ़ती जा रही थीं। वही चोर-बाजारी, वे ही मँहगे दामों का सौदा कन्ट्रोल, मँहगाई ......। अंग्रेज एक तरह चले गए थे; पर हुकूमत तो वैसी ही पुरानी लगती थी। अफसर अब ज्यादा घूस लेकर कहते थे, कि नेता लोगों को हिस्सा देना पड़ता है। वह सब मन में न जाने क्यों एक बेचैनी लाता था। अंग्रेज जिन कोढ़ों को देश को सौंप गए थे, वे तो वैसी ही लगती थीं। उनका कोई उपचार नेता नहीं कर पाए थे। अंग्रेज आज भी उनको सलाह देता था। नेता हवाई-जहाजों में अमरीका और इंगलैण्ड उड़-उड़कर जाते और उन साम्राज्यवादियों के इशारे पर चलते थे। दुनिया की राजनीतिक हलचलें कुछ अजीब सी लगतीं। उस महायुद्ध जिसमें कि विश्व के लाखों नौजवान मरे थे, जिसने कि लाखों परिवारों को तबाह किया था। जिसके स्वार्थों की आहुति न जाने कितने लोग हुए थे; उस सबसे भी मानो कि किसी ने सबक नहीं सीखा था। अमेरिका बार-बार एक नए युद्ध की घोषणा कर रहा था। उसका दावा था कि अणुबम से वह सारी दुनिया पर हुकूमत करेगा।

महेश बाबू पचास पार कर चुके हैं। नए सरकारी आदेश के अनुसार पाँच साल बाद उनकी पेन्शन हो जायगी। अपने जीवन के पिछले सालों का इतिहास कभी-कभी वे खोल कर उस पर गंभीरता से विचार करके पाते हैं, कि आज की तरह अलगाव पहले कभी जीवन में नहीं था। काँग्रेस के पिछले आन्दोलनों के साथ-साथ जिस नए समाज की कल्पना वे करते थे, वह सब झूठ निकला है। अँग्रेजों के वे गुरगे जो उनके प्रति अपनी खैरख्वाही के कारण खिताब पा चुके थे; वे ही आज

काँग्रेस के सलाहकार थे। उन सब बातों के कारण उनका काँग्रेस पर से विश्वास उठ चुका था। कभी-कभी वे दुखी होकर कहते थे कि आगे न जाने तकदीर में क्या-क्या देखना बदा है। काँग्रेसी सरकार पर उनके वर्ग की बड़ी आस्था थी। इनकी ही तरह के लोग वहाँ के कार्यकर्ता थे; पर न जाने वे किस जंजाल में फँस गए कि आज कोई रास्ता नहीं दिखला पा रहे हैं। सन् १६२२ से '४२ तक की काँग्रेस के वायदों पर वे सोचते हैं। उनके जीवन के साथ-साथ वह भी पनपी थी। उनके कई साथी उसके कार्यकर्ता हैं। वे पहले देशभक्ति की बातें ऊँचे-ऊँचे स्वर में बघारते थे, पर आज तो अब वे ठीक तरह बातें भी नहीं करते हैं। दो-चार जो ईमान्दार लोग हैं, वे बताते हैं कि काँग्रेस मर चुकी है। आज उसे जनता के हित से अधिक पूँजीपतियों के स्वार्थ की चिन्ता है। नेता सारी बातें जानते हैं, पर हुकूमत का खून काफी हिंसक होता है। एकबार जिसने उसे चाट लिया, फिर वह उसे छोड़ नहीं सकता है।

पहले-पहले उनको एक पोस्टर ने काफी प्रभावित किया था। उसमें नारा था—शक्करचोरों की सरकार नहीं चलेगी—नहीं चलेगी! वे सच ही गुड़ खाते-खाते नेताओं को रोज कोसते थे। सुना कि चीनी है, पर चोर बाजार में चली गई। पत्नी से वे हँसी-हँसी में कहते थे कि गाँधी जी का राज आ गया। पत्नी को आज भी विश्वास था कि गाँधी जी जिन्दा होते तो शायद यह सब न होता। पति समझाते कि शक्कर को लापता करवाने का पहला जाल तो सेठों ने गाँधी जी पर चलाया था। बिड़ला प्रार्थना सभा में जाते थे, बापू को सलाह देते थे कि कन्ट्रोल हटा लिया जाय। वे उनकी बातों को सही मानते थे और जनता की परेशानियों को झूठ; उन्होंने तो यह भी बताया था कि सेठों से सुनी हुई बातें ही वे तो उपदेशों में सुनाया करते थे। पत्नी चुप रह जाती थी। इधर उसके पैर सूज रहे थे। कड़ुवा तेल में मिलावट व्यापारियों ने करदी थी, कि डालडा लोग मँहगे दामों में खरीदें। 'बेरी बेरी' का प्रकोप हो

रहा था। सरकार के कानों में जूँ नहीं रेंगती थी। सच, अब तो जिन्दा रहना मुश्किल हो गया था।

पति की बातें वह सुनती थी। कभी परिवार में अच्छा खाना बनता था। आज तो अब जैसे भूख मर गई है। लड़की का उस तरह मायके में रहना एक भार सा लगता था। जिन स्नेह-बंधनों को मानव ने लाखों सालों में जोड़ा था, वे अब बिल्कुल टूट गए थे। आज तो लगता था कि सब स्वार्थी हो गए हैं। उसको आश्चर्य होता था कि पति की ईमान्दारी की जिन्दगी आखिर क्यों आज एक श्राप सी उनको डस रही है। बड़ा लड़का बार-बार ताव देकर कहता है कि पिता जी चाहते तो कन्ट्रोल के दफ्तर में नौकरी करके हजारों जोड़ सकते थे। वह उस बात पर सोचती और छू पाती कि अब सच्चे और भले लोगों का जमाना चला गया है, अन्यथा ये सब कठिनाइयाँ न आतीं। लोग बदल गए हैं। आपस में भी परिवारों के भीतर रहने वालों में तक वह एक स्नेह की सही डोरी नहीं पाती है। वह लड़की अक्सर माँ को बताती है, कि कच्ची नौकरी वालों को शादी नहीं करनी चाहिए। इस झंझट में पड़ कर आगे काम कैसे चलेगा। अभी तो और बेकारी बढ़ने वाली है।

उसका छोटा लड़का परिवार के लिए एक सन्तोष की बात थी। माँ को वह समझाता कि वह पुराना समाज टूट गया है। उसको जोड़ना आसान नहीं होगा। आगे एक नए समाज का निर्माण रूस और चीन में हुआ है। वहाँ मुसीबतें नहीं हैं। मानव के नए स्नेह-बन्धन वहाँ जुड़े हैं। वह बहिन को बहुत प्यार करता और उसके बच्चों के लिए तथा स्वयं उसके लिए भी आवश्यकता की चीजें लाता है। बहिन अक्सर कहती थी, कि पढ़ने की उम्र में ट्यूशन करना कहाँ तक ठीक है। किसी तरह कालेज में पढ़ना ही चाहिए। उस बात पर वह चुप रह जाता था। वह उसे कई बातें बताता था। वह सुनाता था कि देश का मजदूर-किसान उठ कर अब एक लड़ाई अपनी रोजी और रोटी के

लिए लड़ रहा है। वह दुनिया में शान्ति चाहता है। वह उस शान्ति के लिए पूँजीपतियों तथा उनके गुमाश्तों के साथ लड़ाई लड़कर उनको हरा देगा। उनकी शक्ति अजेय है। उसने एक छपा पोस्टर उसे दिखलाया, जिसमें लिखा था कि शान्ति की लड़ाई ही रोजी और रोटी की लड़ाई है। बहिन जानती है कि वह कम्यूनिस्ट पार्टी में काम करता है, अक्सर डरती भी है। एक दिन उसने पूछा था कि क्या कम्यूनिस्टों का प्रोग्राम रेलें उलटना, तार काटना है?

वह हँस कर बोला था, कि यह कॉंग्रेस का सन् १९४२ का प्रोग्राम था कि तोड़फोड़ करो; शायद कुछ हाथ आ जाय। मजदूर और किसान की ताकत तो एक दिन 'राजसिंहासन' को उलट देगी। तार काटकर और पटरियाँ उखाड़ कर तो सी० आई० डी० वाले कम्यूनिस्ट पार्टी को जनता की निगाह में गिराना चाहते हैं। पर जनता आज अपने दुश्मनों को पहचानती है। वह उसके चंगुल में आसानी से नहीं आ सकती है। वे गल्ला-चोर, चीनी-चोर, चोर बाजार वाले तो खुले फिरते हैं। इन समाज के दुश्मनों के साथ तो नेता, कलक्टर, पुलिस कप्तान रोज दावतें उड़ाते हैं। फिर उन सब बेहया लोगों को मजदूर और किसानों के बेटों को पकड़ने के लिए नए-नए कानून बनाने पड़ते हैं, कि वे सच्ची बातें न कह सकें। लेकिन शहर के मध्यमवर्ग को वे मजदूर-किसानों के प्रति घृणा करने का पाठ नहीं पढ़ा सकते। आज सरकार का पोलखाता खुद उनकी आपसी लड़ाइयों से खुल रहा है। कॉंग्रेसी आपस में ऐसे लड़ते हैं कि मानो दो कुत्ते गोश्तवाली हड्डी के लिए लड़ रहे हों। हर एक हुकूमत के गोश्त को अपने दाँतों से नोचना चाहता है। पूँजीपतियों के गिरोह में लूट के बँटवारे के लिए झगड़ा पड़ता है, तो कभी एक मंत्री इस्तीफा देकर अपनी तिकड़म चलाता है, तो फिर दूसरा अपना कठपुतली का खेल दिखलाता है। जनता इस तमाशे पर हँसती है कि उनका कितना पतन हो गया है!

बहिन कभी-कभी चिन्तित हो उठती थी। वह अपने भाई का कहना मान कर सुन्दर-सुन्दर पोस्टर लिखती है। एक बार शाम को वह स्वयं एक पोस्टर पड़ोस के स्कूल की इमारत के फाटक पर चिपका आई थी। यह भेद वह किसी को नहीं बताती है। एक डर लगा रहता है, कि पुलीस न जाने किस दिन उसके भैया को नजरबन्द कर दे। भैया तो कहते हैं कि एक बार जेल गए तो फिर तीन-चार साल तक छूटना संभव नहीं है। वह जान कर भी चुप रहती है। भैया को रोकती नहीं है।

शहर के जीवन में उन पोस्टरों ने सच ही नई जान ला दी थी। मुसीबत का मारा मध्यवर्ग बार-बार सोसलिस्ट नेताओं की ऊँची-ऊँची डींग भरी बातें अखबारों में पढ़कर आपस में सवाल उठाते थे, कि ये तो कॉंग्रेसियों वाली बातें ही करते हैं। एक भ्रम सा उनके प्रति उठता था। शहर के मजदूर तो अब मिल कर रोजी, रोटी और अच्छी जिन्दगी के लिए एक बड़ी लड़ाई लड़ने का निश्चय कर चुके थे। स्थानीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने बयान निकाला था कि सब जमात के मजदूरों को मिलकर नई लड़ाई की तैयारी करनी है। छेवकी डीपो से अब तक हजारों मजदूर निकाले जा चुके थे। रुई की कमी का बहाना बनाकर कपड़े के कारखाने बन्द किए जा रहे थे। शहर की एक बड़ी आबादी भुखमरी की ओर बढ़ रही थी। और कुछ नेता तो पाकिस्तान से लड़ाई की बातें चला रहे थे। उधर एक बार फिर साम्प्रदायिक दंगों की आँधी से नेताओं ने मजदूर किसान के आन्दोलनों के बढ़ते हुए तूफान को दबाने की निरर्थक चेष्टा की थी। वे जानते हैं, कि अमेरिका की मदद भी चीन के कम्यूनिस्टों की आँधी के आगे तिनके की भाँति उड़ गई थी।

महेश बाबू की बैठक में इधर फिर शाम को लोग जमते हैं। उनके पड़ोसी ब्रांच पोस्ट ऑफिस के इंचार्ज हैं। उनका रोना है कि पत्नी और

बच्चों की बीमारी पर तीन-चौथाई तनखा चली जाती है। राशन की दूकान से कार्ड पर गल्ला लेने तक के लिए उनके पास पैसे नहीं बचते हैं। वे तो आज बनिए की दूकान से ऊँचे दामों पर मँहगा गल्ला उधार खाकर किसी तरह गुजर करते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि वह बनिया उन लोगों के राशन कार्ड से सस्ता गल्ला और शक्कर खरीद कर, उनके हाथ ही ऊँचे दामों पर बेचता है। वे परिवार के झंझटों की दु:खभरी कहानी सुनाते हैं। चार लड़कियों के बाद एक लड़का हुआ तो वह जन्म का रोगी है। माँ को दूध नहीं होता है। वे माँ को कोसा करते हैं। बारह आना सेर दूध कितना खरीदा जाय। वह बच्चा भूख से रात भर रोया करता है। अक्सर वे कोई परचा लेकर आते हैं या किसी पोस्टर का हवाला देकर नारा दुहराते हुए पूछते हैं, कि क्या सच ही देश में 'कम्यूनिस्ट पार्टी' शासन करेगी। उनकी बातों में तो विश्वास सा होता है। चँद सालों में ही दुनिया भर में कम्यूनिस्टों का जाल तेजी से फैल गया है। उनकी समझ में नहीं आता था कि क्यों अमेरिका वालों को 'कम्यूनिज्म' से इतनी चिढ़ है? मलाया में अंग्रेज अपने टीन के कारखानों और रबड़ के व्यापार के लिए क्यों परेशान हैं? यह सच बात है कि रूस का प्रभाव बढ़ रहा था। देश की कम्यूनिस्ट पार्टी सही रास्ता दिखला रही थी कि बिना ब्रिटेन और अमेरिका के खूनी पंजों से मुक्त हुए हम देश को खुशहाल नहीं बना सकते हैं।

महेश बाबू इनकी बातों का खास जवाब सा नहीं देते। न जाने क्या बात थी कि कम्यूनिस्ट पार्टी के नौजवान इतना त्याग करते हैं गोली खाकर लाल झंडे के लिए जान दे देते हैं। उनका कोई स्वार्थ नहीं है, फिर भी मध्यवर्ग में उनका खास सा प्रभाव नहीं था। मजदूरों में भी एका नहीं है। कई यूनियन हैं। चीन में कम्यूनिस्टों की जीत ने एक नया प्रभाव फैलाया था। देश की आर्थिक हालत इतनी खराब होने पर, लोगों में गुस्सा होने पर भी वह आन्दोलन कुछ जगहों तक सीमित हो

गया था। वे इसलिए उनके प्रति सहानुभूति रखकर भी एक बुजुर्ग की भाँति कहते थे कि अभी आठ-दस साल की देरी है। पहले सोसिलिस्ट ताकत में आवेंगे। भले ही वे जानते थे कि उनके नेता तो काँग्रेस के चोर-चोर मौसेरे भाई हैं।

हिटलर ने जब लड़ाई छेड़ी थी, तो उनकी बैठकों में एक खास परिवर्तन आ गया था। काफी बहस होती थी। आज वे अमेरिका की बातों पर विचार करते हुए सोचते हैं कि क्या फिर कोई नई लड़ाई होने वाली है। लेकिन अमेरिका जो चीन में मात खा चुका है। उनको आज तो हरएक अपनी परेशानियों की बातें सुनाता है। पुलीस दफ्तर से हाल में रिटायर हुए बड़े बाबू परेशान हैं कि गुजर कैसे हो। दो जवान लड़कियाँ हैं। उनकी शादी के लिए कम से कम सात-आठ हजार रुपया चाहिए। वे पुलिस के महकमे को कोसते हुए बताते हैं, कि जो दरोगा चार रोज पहले खुशामद करते थे, आज रास्ते में कतराकर निकल जाते हैं। उनका कहना था कि पच्चीस साल की जलालत के बाद पेन्शन में अब पेट भर खाना भी नसीब नहीं होता। जिन्दगी भर तो आराम किया, अब क्या खर्चे घटाए जाँय। वे भेद की बात कहते थे कि पुलीस में आज वह पुराना मनोबल नहीं है। अफसरों को जरूर तरक्की मिली। अँग्रेज ज्यादातर बड़े ओहदे घेरे हुए थे। नीचे वालों की मुसीबत बढ़ गई है। फिर पहले से ज्यादा रिश्वतखोरी होने लगी है। उनका तो कहना था कि सरकार से कम्यूनिस्ट पार्टी दबाई नहीं जा सकती है। हमारी आपकी हमदर्दी तो सरकार से है नहीं! कौन सा सुख आजादी पाकर मिला है। उलटे परेशानियों का पहाड़ ढोते-ढोते तंग आ गए हैं। वे पिछली जिन्दगी बताते थे, कि खूब खाया-पिया। पैसा खुल कर खर्च किया; तब नहीं जानते थे कि डालडा के पराठे खाने भी नसीब में लिखे हुए हैं। सौ रुपया पेन्शन मिलती है, क्या किया जाय! उन पोस्टरों का जिक्र सुनकर वे

हँसकर कहते थे कि ये कम्यूनिस्ट पार्टी वाले सच ही सरकार के नाकों दम किए हुए हैं। वरना नेता चैन से मौज उड़ा रहे थे।

वह बैठक निचली मंजिल का एक कमरा था। उसकी दीवालों पर कई सूचना-विभाग के रंग-बिरंगे पोस्टर चिपके हुए थे। तिरंगे वन्दनवार भी लटके थे। गाँधी जी की एक बड़ी तसवीर भी लगी थी। वह प्रचार-साहित्य दफ्तरों में बँटता है। उसका एक उपयोग यह है कि एक खादी का बहुत बड़ा तिरंगा झंडा दरवाजे पर परदे के बदले लटक रहा था। कमरे में एक तख्त था, व पाँच सफरी कुरसियाँ, तीन पुराने मोढ़े भी थे। बीच में एक बड़ी मेज थी, जिस पर कि आजकल अब फिर ब्रिज खेलना शुरू हो गया है। हाल ही में मोहल्ले में ब्रिज के एक पक्के आ टपके हैं। उनके रोज कहने-सुनने पर फिर एक बार, वह खेल चालू हो रहा है। पर लोग तो खेल के बीच में ही गपशप शुरू कर देते हैं। खेल से किसी को खास उत्साह नहीं है। पहले वहाँ गाने-बजाने की पार्टियाँ भी जुटती थीं। महेश बाबू स्वयं तबला बजाने के बहुत शौकीन थे। सात-आठ साल से फिर सब बन्द थीं। इधर एक साहब ने फिर से उसे शुरू करना चाहा, पर कोई उत्साह न पाकर चुप हो गए। आज तो जो लोग जुटते हैं, सब अपने को दलदल में उलझे हुए पाते हैं। किसी को भविष्य पर विश्वास नहीं रह गया है। देश में कभी खुशहाली आवेगी, किसी को विश्वास सा नहीं होता है।

मिडिल स्कूल के हेडमास्टर साहब जरूरत से ज्यादा बातें करते हैं। वे अभी अधेड़ हैं। कुछ अखबारों को पढ़ने के शौकीन हैं। 'राष्ट्रीय सेवक संघ' पर उनको पूरी आस्था है। पर उनकी समझ में नहीं आता कि 'संघ' का प्रोग्राम क्या है! सब मुसलमानों को पाकिस्तान भेज देना चाहिए, इससे तो वे सहमत हैं; पर उससे समस्या कैसे सुधरेगी इस बात का कोई जवाब उनके पास नहीं है। जो शरणार्थी यहाँ पाकिस्तान से आए, उनमें केवल अमीर ही बस पाए हैं। नब्बे फी

सदी से ज्यादा लोग तो बेरोजगारी से परेशान हैं। उनकी समस्या चार साल में भी नहीं सुधरी है। सरकार तो कुछ भी नहीं कर पाई है। वैसे नेता रोज नए-नए आश्वासन देते हैं। उनकी समझ में हिन्दू-संस्कृति की बात नहीं आती है। वे आजकल काफी परेशान हैं। महेशबाबू के लड़के हरीश से कई बार उन्होंने बातचीत की, कि वे कम्यूनिस्टों की मुसलमानों से दोस्ती की नीति और रूस के आदेश पर चलने वाले मसले से सहमत नहीं हैं। स्वयं वे भी यही चाहते हैं, जो कि कम्यूनिस्ट ! हिन्दुस्तान तो अब हिन्दू राष्ट्र है। लेकिन उनको संघ का कोई आर्थिक-कार्यक्रम नहीं मिलता है। यह भी सच बात है कि हिन्दुस्तान के पूँजीपति उनको बढ़वा देते हैं। सेठों के अखबार संघ की खबरें बढ़ा-चढ़ा कर छापते हैं। उनका रामराज्य तो किसी की भी समझ में नहीं आता है। स्वयं मास्टर साहब तीन साल से उसे नहीं समझ पाए हैं। जब से वे कम्यूनिस्टों के सम्पर्क में आए हैं, उनका विश्वास संघ पर से हट रहा है। पर वे हिन्दू हैं, यह भावना अभी वे नहीं हटा सके हैं। सी० आई० डी० वालों ने एक बार उनसे कहा था कि वे उनकी मदद कर हरीश के बारे में बताया करें। उनके और साथी तो सरकार की मदद कर रहे हैं। वह धक्का उनका भावुक हृदय न सह सका था और हरीश से सब बातें कह कर उन्होंने निवेदन किया था, कि उनको वह समय-समय पर उपयोग में ला सकता है। उनकी दृष्टि में हरीश उस दिन से एक आदर्श लड़का हो गया था।

हरीश ने उनको बताया था कि नेता देश अमेरिका को बन्धक में रखकर कर्जा ले रहे हैं। नेता मलाया में सिख और गोरखा फौजें भेज कर वहाँ के आजादी के नेताओं और विद्रोही जनता को दबाना चाहते हैं कि ब्रिटेन के पूँजीपतियों के मुनाफे की रक्षा हो सके। ये ब्रह्मा को एक करोड़ की फौजी सहायता देना चाहते हैं, कि वहाँ कि टुटपूँजिया सरकार कम्यूनिस्टों के खिलाफ लड़ाई लड़े। हिन्दुस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी तो

चाहती है कि सब ईमानदार पार्टियाँ व लोग मिलकर अंग्रेजी-अमरीकी साम्राज्यवादियों की चालों को इस देश में सफल न होने दें। दुनिया को एक नई लड़ाई में झोंकने वालों के खिलाफ जंग करना होगा। अन्यथा तबाही आ जायगी।

हरीश उस बैठक का सदस्य नहीं है। वह लोगों का अभाव देखता है। उनसे खास बातचीत नहीं करता। जानता है कि वह मध्यवर्ग टूट कर आज मजदूरों की श्रेणी में पहुँच रहा है। जो झूठी प्रतिष्ठा बाकी है, वह भी जनता के संघर्षों से मिट जायगी। ये अभी नहीं समझ पा रहे हैं कि मजदूर-किसान अकेले अपने स्वार्थों के लिए लड़ाई नहीं लड़ रहा है। वह तो एक खुशहाल समाज का निर्माण करेगा, जिससे कि इन लोगों की मुसीबतें भी हल होंगी। वह इनको अपना साथी मानता है और चाहता है कि ये भी उनके साथ मिलकर लड़ाई लड़ें।

बड़े बाबू तो परेशान हैं कि मजदूर से भी उनकी हालत गई-बीती हुई है। मास्टर साहब उस बात को स्वीकार नहीं करते। लेकिन इसका सबको दुःख है कि उनका वर्ग मिट रहा है। उनकी हालत तो मजदूरों से भी गई बीती है। वैसी बेरोजगारी उनके परिवारों पर भी छाई हुई है। वे भी भुखमरी के शिकार हैं। उनको इस सरकार पर काफी गुस्सा आता है कि उनको अनाथ की भाँति छोड़ दिया है। वे उनके अपने लोग आज शासन के मद में चूर हैं। उनको आज नीचे वालों की फिक्र नहीं है। झुँझलाहट में वे उनको गालियाँ देते हैं, चुपके ऐलान करते हैं कि वे भी कम्यूनिस्ट हैं।

कम्यूनिस्ट पार्टी वाले अब रोज जलूस निकालते थे। जनता एक नई आशा से उनको देखने लगी थी। सबको विश्वास हो रहा था कि उनके 'पोस्टर' सच्चाई प्रकट करते हैं। सेठों के अखबार झूठ बोलते हैं कि कम्यूनिस्ट तोड़फोड़ करते हैं। शहर के नागरिकों की बेचैनी बढ़ रही है।

एकाएक एक दिन सुबह के अखबारों में छपा कि कम्यूनिस्ट बिजुली घर को तोड़ना चाहते थे। सरकार ने वक्त पर उनके कई नेताओं को गिरफ्तार कर लिया है। लेकिन लोग तो असलियत को जानते थे कि बोनस पर झगड़ा चल रहा था और मालिकों ने उसे देने से इन्कार कर दिया था। शहर में पुलीस पैट्रोल कर रही थी।

महेश बाबू के यहाँ शाम की बैठक कुछ फीकी सी थी। महेश बाबू बता रहे थे कि रात को पुलीस हरीश की तलाश में आई थी, पर सुना कि वह तो घर लौटा ही नहीं है। बड़ी देर तक तलाशी लेकर वह चली गई। हरीश फरार है। उनको यह नहीं मालूम था कि वह पार्टी का काम करता है। उसकी माँ काफी परेशान है। सुना कि वे पोस्टर भी वही चिपकवाता था। सरकार इसे छै महीने के लिए नजरबन्द करने की सोच रही है।

बड़े बाबू यह सब सुनकर अचरज में पड़ गए। वह सी० आई० डी० का दरोगा उनके पास अक्सर बैठने आता था। हरीश के बारे में साधारण पूछ ताछ कर जाता था। पर कभी उसने भेद की बात नहीं बताई थी। लेकिन मास्टर साहब तो सबको समझा रहे थे कि खुद उन्होंने पोस्टर लिखे हैं। हरीश ने उसको नया जीवन दिया था। सच ही संघ वाले 'पूँजीपतियों' के इशारे पर चलते हैं। उनके और काँग्रेस के नेताओं में कोई अन्तर नहीं है।

हरीश की गिरफ्तारी की बात अभी पूरी भी नहीं हो पाई थी, कि मोहल्ले का एक लड़का एक 'पोस्टर' लेकर आया। लिखा था—बिजुली कम्पनी के मालिकों और सरकार की साजिश! सेठों की गुमाश्ता सरकार अपने आकाओं का हुक्म बजाने के लिए मजदूर-किसानों की पार्टी पर हमला कर रही है। मजदूर तहरीर को बदनाम करने लिए उन्होंने फैलाया है कि वे तोड़फोड़ कर रहे हैं!

भविष्य की ओट

डाकगाड़ी तेज गति से चल रही थी। बाहर घना अँधियारा था और मेह की झड़ी। कुछ देर पहले चाँदनी से खेलते हुए काले-काले बादल अब घटाटोप छा गए थे। लगता था कि आकाश ने एक काली चादर ओढ़ ली है; और बीच-बीच में जो बिजुली की लहरें सी चमकती थीं उससे आँखें चकाचौंध हो जाती थीं। पहियों की खटर-खटर छोटे स्टेशनों के झुके हुए सिगनलों का अभिवादन, जलती मशाल लिए हुए जमादार का ड्राइवर को 'लाइन-क्लियर' देना। उस घने अँधियारे में पटरियाँ फैलतीं, लाल-हरे सिगनलों के हाथ चमकते और एक भारी आवाज के साथ स्टेशन पीछे छूट जाते थे। डिब्बे के भीतर पाँच और मुसाफिर सो रहे थे। ऊपर बिजुली के बल्बों के साथ पतिंगे 'शमा-

परवाना' का मूक नाटक खेल रहे थे। सारा वातावरण अजीब नीरस सा था। कभी तो लगता कि वह सफर एक पीड़ा सी उभार रहा है।

किसी भी सफर के शुरू में एक अज्ञेय कौतूहल की जिज्ञासा उठती है। सजीव किसी पिछली घटना की याद व फिर भविष्य में किसी नवीन प्राणी से परिचय की आकांक्षा। प्रकृति का नया रूप और आगे की ओर तेजी से बढ़ने की कल्पना! कभी किसी व्यक्ति की समीपता हृदय को छू लेने की अनायास सी चेष्टा करती है। या किसी कोमल स्नेह-बन्धन को सुलझाने का प्रयास यात्री करता है। कभी लगता है कि वह तो केवल एक दर्शक है। यह रेल की यात्रा सिनेमा की किसी फिल्म की भाँति कभी झूठी प्रतिष्ठा और आदर का पाठ भी पढ़ाती है। वहाँ की घटनाओं और भावनाओं के जाल में मानव यदा-कदा उलझ जाता है। वह अपने को स्वयं ठगता हुआ सा लगता है। वह कई अधूरी पहेलियाँ फिर बटोर लेता है कि आगे उन गुत्थियों को सुलझा-वेगा। लेकिन उस गठड़ी को खोल कर किसी अज्ञात हृदय को चीर-फाड़ कर परखने की न उसमें क्षमता है और न समय। वह जीवन के आज के संघर्ष में सब कुछ भूल जाया करता है।

बंशीधर सफर की पहली मंजिल को तय कर रहा था। वह घर से दूर किसी रोजगार की ढूँढ़ में जा रहा है। वह अपने गाँव से दूर किसी अनजाने नगर में जाने वाला है। पिछली बार जब उसने गाँव छोड़ा था तो उसे आसानी से हवलदार-क्लार्क की जगह मिल गई थी। फिर तो वह ईरान, ईराक, मिश्र व सुदूर पूर्व न जाने कहाँ-कहाँ नहीं गया था। उस महायुद्ध ने रोजी और रोटी भले ही दी; पर वह देश में तबाही लाया था। चोर बाजार पनपा था। मनुष्य का नैतिक-स्तर बदल गया था। मानव के आपसी कोमल बन्धन टूट गए थे। सारी सामाजिक व्यवस्था, नैतिकता, रीति-रिवाज और शासन पर बड़े पूँजीपतियों का अधिकार हो गया था। मानव तो मशीन बन गया। युद्ध भी एक बरबादी लाया था। युद्ध की

विजय ने देश को आजादी दी थी, पर वह भी अधूरी; कई परिवार बेरोजगार हो गए थे। अन्न का अकाल था। चोर बाजार फल फूल रहा था। एक ओर सैनिकों के अनाथ परिवार थे, विधवाएँ थीं और दूसरी ओर बेरोजगारी बढ़ रही थी। बेकारी और भूख!

वह अपने परिवार की बात सोच रहा था। जब वह युद्ध से लौटा तो उसे कोई खास उत्साह नहीं था। उसे ज्ञात था कि दो साल पहिले उसकी पत्नी प्रसवकाल में मर गई। उसकी दो साल की बालिका को कोई गाँव की विधवा पाल-पोष रही थी। पत्नी को वह समझ सा न पाया था कि लाम पर चला आया। वह पत्नी अभी तक अपनी लज्जा को बिसार कर, उससे हृदय खोलकर बातें कब कर पाई थी। छुट्टियों में वह एक बार घर गया था। बीस रोज मानो किसी गहरे नशे में कट गए थे। वह जब चलने की तैयारी कर रहा था तो पत्नी उसके गले में बाहें डालकर फूट-फूट रोई थी। वह उसे ताकता सा रह गया था। वह उन दिनों ईरान से आया था। उसने पाया था कि उसकी पत्नी की बड़ी-बड़ी आँखें ईरानी औरतों की ही तरह थीं। वह लम्बी थी और यदि वह उसे वैसी पोशाक पहनाता तो वह ज़रूरी ही एक अपूर्व सुन्दरी लगती। यदि वह जानता कि पत्नी से अन्तिम भेंट है तो संभवतः कुछ क्षण उसे भली भाँति देखकर उसे मन में भर लेता। उसने उसे आश्वासन दिया था कि वह फिर सात-आठ महीने बाद एक महीने की छुट्टी पर आवेगा। पत्नी ने भय सा पैदा किया था कि भगवान उसके 'सुहाग' की जरूर हिफाजत करेगा। सैनिक की पत्नी का सारा भविष्य मानों कि पति के युद्ध से लौटकर आने तक ही एक सीमा बनाता है। वह यही बार-बार मनौती करती कि वह कुशलपूर्वक लौटकर चला आवे।

जब वह लाम पर से लौटा तो अपने मकान पर संध्या को पहुँचा था। राह भर वह चुपचाप लोगों से आँख बचाता रहा। वह सीधी सड़क से न आकर एक निर्जन मार्ग से अपने गाँव पहुँचा था। राह

में परिचित-स्थानों, रमणीक दृश्यों, बागों, पक्षियों के कोलाहल किसी ने भी उसे नहीं रोका। उसका हृदय ऐसा भर गया था कि मानों उसमें किसी नई भावना के लिए जगह नहीं बची थी। वहाँ के खेतों में जाड़े की धूप फैली हुई थी। गेहूँ की हरियाली के बीच अलसी के नीले फूल, सरसों के पीले फूल चमक रहे थे, गाँव के पास वाले ताल का नीला जल, वहाँ तैरते हुए बतख, वहाँ किनारे छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ खेल रहे थे। लेकिन वह खोया-खोया सा अपने मकान पर पहुँचा था। कुली से सामान उतरवा कर उसने एक बड़े पत्थर से दरवाजे का ताला तोड़ा; कुली से सामान अन्दर रखवा कर, उसे विदा किया और चुपचाप भीतर से कुंडी बंद करके वह नंगी चारपाई पर लेट गया था। उसे लगा कि वह बहुत थक गया है। उसका सारा शरीर दुःख रहा था। वह चुपचाप बड़ी देर तक खोया ही रहा।

रात को जब उसकी नींद टूटी तो उसने घबराहट में दरवाजा खोला, बाहर चाँदनी खिली थी। वह चुपके बाहर निकला। गाँव निर्जीव था। कहीं कुछ कुत्ते भौंक रहे थे। कुछ सोच कर वह भीतर लौटा और अपना ओवरकोट पहना। अब वह गाँव की पगडंडी से दूर खेतों की ओर बढ़ रहा था। जब उसने गाँव पार किया तो एकाएक ख्याल आया था कि वह उस विधवा के घर का दरवाजा खटखटा कर एक बार अपनी लड़की को देख आये। किसी ने उसे बताया था कि वह अपनी माँ की प्रतिछवि है। उसकी आँखें अपनी माँ की भाँति ही बड़ी और कजरारी हैं। उसके लाल होंठ और दाँत अपनी माँ की भाँति ही सुन्दर हैं। किन्तु वह पत्नी उसका जीवन हर कर ले गई थी। फौज में भी उसने अपने को एकाकी बना लिया था। वह वहाँ अपनी ही दुनिया में रहता था। उसे शराब पीने की आदत पड़ गई थी। आज भी वह किसी से कोई नाता नहीं जोड़ना चाहता है। वह गाँव न आना चाहता था,

पर उस बच्चे का मोह उसे यहाँ खींच लाया। वह निश्चय कर चुका था कि उस अज्ञात विधवा को धन्यवाद देकर, सदा के लिए उस बच्चे को उसे सौंप, गाँव छोड़ देगा। वह बेकार पुरानी स्मृतियों को मृगतृष्णा में नहीं फँसना चाहता था। वह जानता था कि यहाँ के वातावरण में उसके लिए आज कोई स्थान नहीं है, कोई अपना नहीं, जिसे वह पुकार कर समीप बुला ले।

उस विधवा को वह नहीं पहचानता है। वह उसकी पत्नी की सहेली है। अंत समय वह अपना बच्चा उसके आश्रय में सौंप गई थी। उसका पति शादी के कुछ दिन बाद मिश्र चला गया था और एक रेगिस्तान-टैंक-युद्ध में उसकी मृत्यु हो गई। यह मृत्यु एक अचरज भरा व्यापार उसे लगा, जो कि एक व्यक्ति को सदा के लिए दृष्टि से दूर कर देता है। वह सोचने लगा कि एक सप्ताह वहाँ रहेगा। गाँव के चारों ओर फक्कड़ की भाँति घूमेगा। यहाँ वह अपना बचपन व्यतीत कर चुका है। यहाँ की छोटी-छोटी बातें जानता है। यहाँ का भूगोल वह अक्सर अपने साथियों को बताया करता है। मक्का की फसल में उसने सदा ही भालुओं से फसल की रक्षा की है। अखरोट के पेड़ों पर चढ़कर वह उनको तोड़ा करता था। खुबानी, नाशपाती, सेब......। महाजन के बाग से वे अच्छे फल बचपन में चुराया करते थे। पटवारी जब गाँव आता तो उनके घर पर टिका करता था। वह उसके घोड़े पर उन दिनों सवारी करता। मालगुजार का लड़का होने के कारण गाँव से पहले-पहल वही बड़े स्कूल में पढ़ने गया था और उसने नवीं कक्षा तक पढ़ा था। उतना पढ़ा-लिखा उनके गाँव में कोई नहीं था। वह आगे पढ़ना चाहता था कि पिता की मृत्यु हो गई। लाचारी उसे नौकरी करनी पड़ी। माँ बहुत पहले मर गई थी। इसलिए घर की देखभाल करने के लिए वह शादी के लिए विवश हो गया था।

परिवार में आकर उस लड़की ने एक नए जीवन का संचार किया

था। युद्ध में जाते समय उसने सोचा था, कि लौट कर वह अपने खेतों की नई व्यवस्था करेगा। गौशाला अलग बनावेगा। एक छोटा बाग लगाएगा। उसे बाहर के देशों में नए-नए अनुभव हुए थे, उनके आधार पर वह अपनी भावी दुनिया की तसवीरें खींचा करता था। पत्नी को आकर्षक बनाए रखने के लिए वहाँ के देशों की नारियों की वेशभूषा देखकर, उसे सावधानी से समझ लिया करता था। युद्ध में जिस तेजी से वह आगे बढ़ा, वह उसके लिए एक नया अनुभव था। कभी-कभी तो वह सोचता था कि यह युद्ध किसलिए हो रहा है? पहले सुना कि मानव कबीलों के रूप में लड़ा करता था। आज तो उसे लगा कि कुछ जातियाँ अपने स्वार्थ और अपनी प्रभुता को बनाए रखने के लिए लड़ रही हैं। उसे युद्ध से स्वाभाविक घृणा थी। उसके कई साथी दुश्मनों के टैंक, बम, हैंड-ग्रेनेड और न जाने किन-किन अस्त्रों के शिकार हो चुके थे। यह युद्ध तो मानव के अपने नाते-रिश्तों और बन्धनों को तोड़ कर, उनको हैवान बना डालता है। इतनी शक्ति यदि नवनिर्माण की योजनाओं में लगाई जाती तो क्या मानव सुखी नहीं होता?

जब वह छुट्टी पर आया तो पत्नी ने पूछा था कि लड़ाई कब तक बन्द हो जायगी। वह इसका उत्तर कुछ न देकर चुपचाप उसकी आँसू भरी आँखों को देखता रहा। लाखों परिवार के लोग इसी भाँति अपने सम्बन्धियों के लिए चिन्तित रहा करते होंगे। फौजी-दफ्तर हर सप्ताह एक सूची निकाला करता है—'मोरचे से लौट कर नहीं आए। संभव है कि शत्रु द्वारा कैद कर लिए गए हों या उनकी मृत्यु हो गई है।'

यह इतनी सूचना परिवार वालों को भी दे दी जाती है कि वे स्थिति को समझ लें। अधिक जानकारी का उत्तर वे रोजानावाले छपे हुए कार्डों द्वारा दे देते हैं। वह दफ्तर कब क्या सूचना दे दे कोई नहीं

जानता है। कभी तो वह एकाएक खबर देता, कि खोया हुआ व्यक्ति मिल गया है। मौत और जीवन का परवाना एक साधारण सूचना भर रहता है। उसने वह सब अपनी पत्नी को समझा दिया था। यह भी कहा था कि 'वीर भोग्या वसुंधरा', यानि बलवान व्यक्ति ही जमीन का सुख बरतता है। यह युक्ति आज बहुत पुरानी पड़ गई है। आज धरती पाकर खेती करने व परिवार का पेट पालने के लिए युद्ध नहीं हो रहे हैं। वह तो एक जाति दूसरों को गुलाम बनाने के लिए लड़ती है। बड़ी जातियाँ, छोटी निर्बल जातियों का शोषण करके उनको गुलाम बनाना चाहती हैं। जातियों के भेदभाव बढ़ते जा रहे हैं। मानव हिंसक जानवर की भाँति दूसरे के खून का प्यासा हो गया है। सभ्य और सांस्कृतिक-परम्परा की रक्षा का ढोल पीटनेवाली जातियाँ, दूसरों को अपने चंगुल में फँसाये रखने के लिए नए-नए हथियारों का निर्माण कर रही हैं, कि किस प्रकार साधारण बमों से शहर के शहर नष्ट किए जा सकें।

एक दिन उसने एकाएक सुना कि जापान ने हथियार डाल दिए हैं। युद्ध समाप्त हो गया था। उसे बड़ी खुशी हुई; पर क्षण भर के बाद उसका हृदय मुरझा गया। घर पर कोई उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा होगा? वह बहुत दुःखी हो उठा। फिर उसने होरोशिमा में 'एटम बम' द्वारा लाखों व्यक्तियों के नष्ट होने का समाचार पढ़ा। उसे अमरीका वालों के उस व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ था। लाखों मनुष्यों का एक बम के नीचे प्राण गवाँ देना; लाखों व्यक्तियों का बंगाल में भूख से तड़प-तड़प कर मर जाना। इस युद्ध ने सबक पढ़ाया था, कि आगे वह किसी युद्ध में साथ नहीं देगा। ये महायुद्ध तो हमारी संस्कृति, हमारा जीवन, हमारा सर्वस्व नष्ट करके हमें पशु बना देते हैं।

ठंडी हवा चल रही थी। वह संभल गया। सामने चाँदनी खिली थी। वह एक ऊँचे टीले पर बैठा हुआ था। सामने एक चौड़ा मैदान था, जहाँ हरियाली फैली थी। फसल जमीन से उठ कर एक नई आशा

का संचार करने लगी। उसने देखा कि नीला ताल चुपचाप सो सा रहा था। पास किसी बाग में रात का पक्षी बेसुरे स्वर में चूँ—चूँ—चूँ कर रहा था। दूर-दूर तक वह देखता रहा। उसकी आँखें उस सौन्दर्य को संवार कर रखना चाहती थीं। यह गाँव तो छूट जायगा। आगे वह शायद लौटकर नहीं आवेगा। किसी शहर में पड़ा रहेगा।

हवा के एक झोंके के साथ उसका बदन सिहर उठा। उसे लगा, कि उसकी हड्डियों के भीतर तक ठंड पैठ चुकी है। कँपकँपी लग रही थी। उसने ओवरकोट की जेब से अलम्यूनियम की चौड़ी बोतल निकाली। घुमा कर उसका डाट खोला और उसमें भरी हुई रम को गटगट करके पी गया। कई बार बीच में उसने मुँह बिचकाया। फिर उठा और चुपचाप गाँव की ओर लौट आया। चारों ओर सुनसान था। कभी-कभी बीच में गायों के रांभने का स्वर कानों में पड़ता था। वह जल्दी से अपने घर पहुँच जाना चाहता था।

[२]

डाँकगाड़ी की चाल धीमी हो गई थी। एक झटके के साथ वह एक बड़े जंकशन पर खड़ी हो गई। स्टेशन पर सन्नाटा सा था। दो-चार मुसाफिर उतरे। कुछ ऊँघते हुए कुली डिब्बों के भीतर झाँक रहे थे। बंशीधर ने दरवाजा खोला और बाहर स्टेशन की ओर देखने लगा। बिजुली की दिव्य रोशनी भी वहाँ का फीकापन न हटा सकी थी। उस फैले हुए प्लेटफार्म पर वे ही दफ्तरों के कमरे, होटल, वेटिंग रूम, डाक-घर, रेलवे-पुलीस का दफ्तर, किताब की दूकान, काली वर्दी वाले, रेलवे कर्मचारी, छोटा स्टेशन-मास्टर, टोप ओढ़े गार्ड...; सब कुछ वही पुराना था। वह मेंह की झड़ी अभी लगी ही थी। लगता था कि प्रलय हो जायगा। नदियों में बाढ़ आवेगी। हजारों गाँव डूब जायेंगे, लाखों मनुष्य बे घर-बार होकर पेड़ों के नीचे जाकर बसेरा लेंगे। यह विज्ञान अणु-अणु बम बनाकर मनुष्य का संहार करना तो जानता है, पर

आज मानव प्रकृति से संघर्ष करना शायद भूलता आ रहा है। अपनी पिछली मंजिलों का इतिहास मानो कि भूल गया है। यदि वह आज भी प्रकृति से संघर्ष करता रहे, तो वह नर-संहार का घाव आसानी से मिटा सकता है। अपने स्वार्थों के लिए वह क्यों इस भाँति अँधा बनता जा रहा है।

तभी उसने देखा, कि उस कमरे में एक बूढ़ा और युवती आई। कुली ठीक तरह सामान लगा रहे थे। बूढ़ा बड़बड़ा रहा था, कि सेकिंड के सब डिब्बे बन्द मिले और मजबूरन उनको यह इंटर का सफर करना पड़ रहा है। रेल की बदइंतजामी के लिए वह अधिकारियों को कोसता रहा। वह युवती तो थकी सी कोने की ओर चुपचाप बैठ गई। उसने घूंघट निकाल रखा था। बूढ़े ने सामान एक बार देखा, कुली को एक रुपए का नोट दिया और चुपचाप बैठ कर खाँसता रहा। फिर उसने अटैची खोली और कोई दवा निकाल कर खाई। वह किसी अच्छे परिवार का लगता था। उसके चेहरे पर बुढ़ापे की एक मस्तानी चमक थी। अब उसने नौकर से बिस्तर खुलवाया और ठीक तरह बिछवा कर उस पर बैठ गया। वह युवती तो कोने के ओर उसी भाँति बैठी रही। उसने फिर खिड़की से बाहर सिर निकाल कर स्टेशन की ओर फेर लिया। कुछ देर बाद न जाने क्या सोचकर उसने फिर कोने की ओर मुँह फेर लिया। अब तो वह आँचल से अपनी आँखें पोंछ सी रही थी। उसके वे आँसू कौन जाने मायके की मधुर यादगार हों, जो कि कल ससुराल के सुनहले स्वप्नों के बीच छुप जावेंगे।

गाड़ी ने सीटी दी और चल दी। वह बूढ़ा चुपचाप लेट गया। पर वह युवती तो उसी भाँति बैठी रही। वंशीधर आज घर छोड़ कर प्रदेश जा रहा है। वह रोजी की तलाश में जा रहा है। घर बैठे बेकारी उसे खलने लगी थी। घर को छोड़ते हुए आज उसे बहुत खुशी नहीं है। वह अपने परिवार वालों के साथ कुछ दिन रहना चाहता था। वहाँ

की धरती अब उनकी रक्षा नहीं कर पाती थी। वह युद्ध समाप्त होने के पाँच साल बाद फिर एक बार रोजगार की तलाश में निकला है।

पहले कभी वंशीधर गाँव लौटा था, तब उसने सोचा था कि वह वहाँ दो-चार दिन रहकर लौट आवेगा। वह गाँव गया था अपनी पत्नी की सजीव यादगार, दो साल की अपनी बच्ची को देखने के लिए, वह उसे किसी को सौंप कर निश्चिंत हो जाना चाहता था। अन्यथा वहाँ उसका अपना और कौन था?

पाँच साल पहले वह गाँव गया था। आधी रात को पीकर वह घर लौटा था। बिना दरवाजा बन्द किए ही नंगी चारपाई पर लेट गया था। सुबह किसी ने उसे जगाया था। आँखें मलकर उसने देखा कि एक युवती उसकी लड़की को गोदी में लिए खड़ी है। वह अवाक् सा उनको देखता ही रह गया था। वह युवती कुछ न कह कर भी उसके कल रात के व्यवहार से दंग थी। वह कई बातें पूछना चाह कर भी चुप थी कि शायद वह कुछ पूछेगा। वह उसे पहचानती नहीं थी। उसकी सहेली ने जो परिचय दिया, उसे वही उतना ज्ञात था। पिछले दो साल में वह पुरुष की छाया से बचती आई थी। वह एक युवती और विधवा थी। युवक-समुदाय उसके प्रति उदार था। कई उससे शादी का प्रस्ताव कर चुके हैं। कई भूखे भेड़िये की भाँति उसे ताकते थे। पर वह निश्चय कर चुकी थी, कि अब इस लड़की को पालेगी। दो वर्ष उसने उसी के साथ काटे थे। लगा कि उस दुःख में वह एक बड़ा सहारा रही है। एक आशंका हृदय में कभी-कभी उठती थी कि उसका पिता उसे साथ ले जायगा। कौन जाने कि वह दूसरी शादी ही कर ले। तब लड़की से उसका विछोह हो जायगा। वह छोटी बच्ची जो अबोध थी और उसने अपना मातृत्व उसे सौंप कर उसे उबारा था। पिता ले जाना चाहेगा तो वह उससे निवेदन करना चाहती थी, कि उस लड़की के बिना उसका जीवन व्यर्थ और नीरस है। वह विनती

कर उसे माँग लेगी। आज इस दरवाजे को खुला देख कर वह एक चोट का अनुभव सा करने लगी। मानो कि आज ही उसके पति की मृत्यु हुई हो। वह एक आश्रयहीन विधवा हो गई है, जिसे कि अपने भविष्य के बारे में सावधानी से सोचना होगा।

वह उलझन में खड़ी रही और फिर कुछ सोच कर उसने उस बच्ची को उनके सिरहाने रख दिया। जल्दी-जल्दी वह दरवाजे से बाहर चली गई थी। बंशीधर असमंजस में पड़ गया। उसने दरवाजे की ओर देखा। वह तेजी से निकल गई थी। वह युवती आगे बढ़ गई। वह लाँबी, छरहरे बदन की थी। उसके चेहरे पर वैधव्य की मैली चादर उसे नहीं मिली। उसमें उसने एक कुमारी की शक्ति पाई थी। उस में एक ताजगी और जीवन था। उसके ओंठ पीलापन लिए, व आँखों में एक स्वाभाविक चमक थी। उनकी पलकें काली थीं। लगता था कि उन आँखों में कोई अज्ञेय-आमंत्रण छुपा हुआ है। उसका इस प्रकार चला जाना उसे अखर रहा था, कि बच्ची रोने लगी। वह उठ बैठा और उसे गोदी में लेकर खिलाने लगा। लेकिन रोना बन्द नहीं हुआ। उसने थपकी दी और कुछ नहीं सूझा तो सन्दूक खोलकर, उसे बिस्कुट खाने को दे दिया। बच्ची ने रोना बन्द कर दिया और छोटे-छोटे दाँतों से बिस्कुट कुतर-कुतर कर खाने लगी। उसने देखा कि अभी उसके कुल उन्नीस दाँत आए थे। वह तो बिस्कुट से खेलने लगी और जब उसने खिलौना बजाया तो उसे टुकर-टुकर कर देखती रही।

भूत और वर्तमान पत्नी की स्मृति और...... । वह जैसे कि उलझन में पड़ गया। वह सब कुछ भूल जाना चाहता था। युद्ध का हाल, बमबारी में घायल होकर उसका एक शहर के अस्पताल में पड़ा रहना। जब वह अच्छा हुआ तो वह आसपास के मोहल्लों में घूमने जाया करता था। वहीं एक परिवार वालों से उसका अच्छा परिचय हो गया था। वहाँ एक युवती उस पर डोरे डाला करती थी। कहती थी कि युद्ध-काल

ने सारा जीवन छीन लिया है। वह उससे कई सवाल पूछती थी। वह उसे अपनी पत्नी की बातें सुनाता था। वह अच्छा होने पर फिर चला आया था। वह युवती जाने वाले दिन बड़ी बेचैन थी और उसने प्रस्ताव किया था कि कुछ दिन वहाँ रहे। वह सैनिकों के साथ रहना पसन्द करती है। वह फिर भी चला आया था। साथियों से बताया था तो सब ने हँसी उड़ाई थी कि वह बुद्धू है। सैनिकों को नैतिकता और भावुकता के भार से नहीं दबना चाहिए। उस युवती के व्यवहार की तुलना एक बार उसने युवती विधवा से की थी। इसमें वह बेचैनी, फक्कड़पन, अल्हड़ता और गति नहीं मिली। उसका शृंगार मन मोह लेता था। उसके घर से लौट आने पर वह बड़ी देर तक उसके हावभाव और बातों पर सोचा करता था। यह जानकर भी कि वह उससे क्या चाहती है; उस आग्रह को ठुकराना ही उसे उचित लगा था। वह अपने को सैनिकों की प्रेयसी गर्व से घोषित करती थी। बार-बार सुझाती थी कि वह बन्धन की कायल नहीं है। उसका पति दूर किसी मोरचे पर था। चार साल से उसकी कोई खबर नहीं मिली थी। वह अज्ञेय से ज्ञेय की भूखी थी। वह उसे एक बच्चे की भाँति फुसलाया करती थी। उससे सवाल पूछती हुई, उनका उत्तर आसानी से सुझाती थी। वह कहती थी कि उसकी आत्मा में एक अनजानी हूक उठती है। वह किसी घटना की प्रतीक्षा कर रही है। एक अनहोने की भावना की आशा में है। वह उसी की प्रतीक्षा कर रही है। वह अपने हरएक प्रेमी के साथ एक उड़ान लेकर नया भविष्य बनाने में सच ही प्रवीण थी। उसकी लुभावनी बातें फिर भी उसे बहका नहीं सकी थीं। वह उस प्रेयसी का प्रेमी नहीं बनना चाहता था। उसका एक परिवार था और वहाँ एक पत्नी उसकी बाट जोह रही थी।

पत्नी के मर जाने पर वह जब कि बहुत परेशान हो गया तो एक बार लालसा उठी थी, कि उस युवती के पास जाकर कुछ दिन विश्राम

करे। कुछ दिन वहाँ रह कर अपनी थकान मिटा ले। मन बहुत भारी था। काफी भीतरी संघर्ष के बाद वह वहाँ गया था। उसने राह भर कई बातें सोची थीं। उसे विश्वास हो गया था कि एक सही दुनियादार की भाँति वह वहाँ रहेगा। जब तक ऊब नहीं जावेगा, पड़ा रहेगा। उसे पूर्ण विश्वास था कि वह उसका स्वागत करेगी। वह उसके लिए कुछ उपहार भी खरीद कर ले गया था। वह अपने मन का ताला तोड़। उससे सब बातें कह कर अपना हृदय हलका कर लेना चाहता था। वह प्रेम की नई परिभाषा समझ लेना चाहता था। अब वह सब सवालों का उत्तर आसानी से दे सकता है। आज उसे अब कोई खास उलझन नहीं थी। वह वहाँ की हरएक बात से परिचित था। वह युवती स्वयं उसके इस प्रकार चले जाने पर खुश होगी। वह अपनी भावुकता में कई नई धारणाओं वाली बटिया पर बढ़ने लगा। उस नई दुनिया की कल्पना से उसका चोट खाया हुआ हृदय कुछ स्वस्थ सा हो गया था। सच ही एक धुँधली संध्या को वह उस युवती के घर पहुँचा था। बाहर बाग में एक युवक बगल के नीचे लकड़ी के सहारे अपनी टूटी टाँग उठा कर चल रहा था। एक टाँग की खाकी पतलून ऐसे हिल रही थी, कि मानो टाँग कट गई हो। क्या वह उस युवती का पति था ? वह एक सैनिक सा लगता था। उसने अपनी खाकी जरसी पहन रखी थी। वह असमंजस में पड़ गया। तभी देखा था, कि वह युवती उसके समीप आई और मुस्कराते हुए उसका पति से परिचय कराया। उसने उसमें कोई अन्तर नहीं पाया था। वह उसी भाँति उच्छृंखल लगी। एकान्त में उसे बताया था कि जब उसका पति लौट कर आया तो वह उसे देखकर भयभीत हो उठी थी। एक पंगु के साथ आजीवन रहना, रहस्यमय सा लगा। पति ने उसे बताया था कि किस भाँति वे दुश्मन के मोरचे को तोड़ने में सफल हुए थे। अपने देश की आजादी के लिए कई युवकों ने युद्ध में प्राण दे दिए थे। यदि जर्मन

वाले विजयी होते तो नाजी-संस्कृति के अतिरिक्त दुनिया और क्या पाती ? उसे सुझाया था कि वह स्वतंत्र है। किसी नैतिक-बन्धन से वह उसे जकड़े रहने का पक्षपाती नहीं है। वह उसे तलाक देकर किसी युवक से शादी कर सकती है। वह ऐसी चोट थी कि जिससे वह मर्माहित हो उठी थी। पति का विशाल हृदय पाकर वह अपना जीवन तौलने लगी। जब कि पति मौत से खेल रहा था, तो वह रंग-रंगेलियों में मस्त थी। वह पति से सब कुछ कहकर माफी माँगना चाहती थी। पति ने उसे अवसर नहीं दिया। वे एक दिन अनायास बोले थे कि युद्धकाल की बातों को बिसार देना ठीक होगा।

एक सप्ताह वह वहाँ रहा। वहाँ पत्नी के एक नया रूप का अनुभव हुआ था। वह युवती भविष्य में इतनी बदल जायगी, कभी पहले उसने अनुमान तक नहीं लगाया था। उस परिवार की स्वस्थता में वह स्वयं भी अपना दुःख भूलने लगा था, कि एकाएक एक पत्र उसे मिला कि एक बार वह गाँव आकर अपनी लड़की को देख जाँय। किसी ने अनुरोध किया था, कि एक सप्ताह की ही छुट्टी ले लें। उस युवती ने पत्र पढ़ा था और हँसकर बोली थी कि वे उस विधवा से शादी करके अपने जीवन का नवनिर्माण करें। उसके उपहार को स्वीकार कर धन्यवाद दिया था। समझाया था कि नारी पहेली नहीं है। वह कलंकनी नहीं है। जीवन में कभी-कभी ऐसी स्थिति आती है, कि अपने मन पर भरोसा नहीं रह जाता है। उस काल की भूलें जीवन के लिए नजीर नहीं बन सकती हैं। यदि वह पिछले दिनों उसके जीवन में टिक गया होता तो आज वह उसे भूल गई होती। तब वह एक मानसिक रोग की शिकार थी। जब कि आज स्वस्थ है। आज वह जिन उम्मीदों को लेकर आया था, उनको पूरा करने में भले ही सफल न हुई हो, पर उसे एक नई जीवन राह दिखलाने में जरूर सफल हुई है। युद्ध के बाद हमें

एक नई सामाजिक दुनिया का निर्माण करना है। उसका पति आज नए उत्साह के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है।

उसने उससे विदा ली थी। उसने बच्ची के लिए खिलौने और कपड़े दिये थे। उस विधवा के लिए बड़े-बड़े गोल सुफेद काँचों की माला भेंट-स्वरूप भेजी थी। वह अधिक कुछ न बोली थी।

एक सप्ताह उस परिवार में रहकर सच ही वह सब कुछ भूल गया था। जब वहाँ से लौटा तो मन में नया जोश था। पर वह उसका अपना देश नहीं था। वह वहाँ से एक दिन चला आया। तब लगा कि उसका हृदय खाली हो गया है। वह सब तो एक झूठा आश्वासन लगा। पीछे जीवन में मुड़ कर देखने का साहस नहीं होता था। वर्तमान उलझा हुआ था और भविष्य को वह ठीक तरह पर देखने में अपने को असमर्थ पाने लगा। उसे लगा था कि वह युवती कृतघ्न निकली। पहले बिल्ली की भाँति उसकी खुशामद करके, एक कोमल लता की भाँति उससे सहारा चाहती थी। तब वह निर्बल था अब सबल होकर वह वहाँ गया तो एक पुरखिन की भाँति उसे नसीहत दी कि वह अपने भविष्य का निर्माण करे।

फिर भी उसे गाँव आना ही था। उसकी पत्नी की यादगार वह छोटी लड़की उसकी छाँह चाहती थी। वह पिता था और उसका कर्तव्य है कि अपनी बच्ची का भविष्य बनावे। वह इसीलिए गाँव आया था। गाँव के समीप आते ही उसे वहाँ के वातावरण में पुराने दिनों की महक मिली। वह चुपचाप पशु चराने वालों की टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी पर चला। वहाँ एक अपनपा मिला। वह झील जिस पर कई गीत बनाए जा चुके हैं। पानी का ऊँचा झरना, चीड़ के पेड़ों का घना जंगल, बाँज के घने पेड़ों का क्षितिज को छूना। वह सारा दृश्य उसे मोहने लगा था। पत्नी की यादगार फिर एक मायूसी छाने लगी। वह अधिक इसीलिए रुका नहीं। गोधूली में चुपके अनजाने अपने घर पहुँचा था।

पर वह उसकी पत्नी की स्मृति छोटी बच्ची ! उसकी आँखें अपनी माँ की तरह थीं। नाक, माथा, मुँह की बनावट बिल्कुल वैसी ही थी। शायद वह जानती होगी कि वह मर जायगी और यह बच्ची उसे गढ़ कर छोड़ जाती है। वह छोटा खिलौना चुपचाप सो रहा था। वह उसे बड़ी देर तक देखता रहा। एक बार ऐसा सा लगा कि शायद वह विधवा उसे यह बच्चा सौंप कर चली गई है। वह उसे ठीक तरह से पहचानता नहीं है। हो सकता है कि वह आगे इस परिवार में न आवे। उसकी पत्नी बसन्त के अंतिम दिनों में मरी थी। तब शायद नाशपातियों में फूल खिल रहे होंगे। वह भी प्रकृति से अटूट स्नेह करती थी। सारा घर उसकी स्मृतियों से भरा था। घर के कोने-कोने से उसकी आहट की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ रही थी। क्या अभी तक वह इसी घर के वातावरण में है, कि एक बार पति और बच्चे को अन्तिम बार देखले।

बच्ची तभी जग गई थी और रोने लगी।

(३)

डाकगाड़ी उसी तेजी से आगे बढ़ रही थी। मेह की झड़ी अब बन्द हो गई है। बाहर बादल छँट से रहे थे और कहीं-कहीं नीले आकाश में तारे झिलमिलाने लगे। यह बरसाती मेह जिस भयंकर रूप में बरसता है; उसी तरह आसानी से शान्त भी हो जाता है। उसकी दो अवस्थाएँ जैसे कि ध्वंस और निर्माण की दो सीमाएँ हों। वंशीधर ने खिड़की खोली और बाहर झाँकने लगा। काले बादल लोप हो रहे थे और कुहरे की भाँति सुफेद बादल हवा के झोंकों के साथ इधर-उधर उड़ने लगे। पूर्णिमा का चाँद धरती पर फैल जाता और वह दूर-दूर तक देखने लगता। पानी से भरे गड्ढे; धान के खेत, जिन पर की हरे-हरे डंठल उठे थे। लगता था कि दिन भर किसान उस खेत को ठीक करते रहे। यह बरसात एक नया सन्देश लाती है। गाँव के गाँव चाँदनी की रोशनी में आँखों के आगे आकर पीछे छूट जाते थे। चारों ओर अभी

तक मेह का पानी नदी-नालों में बह रहा था। उस मटमैले पानी में किसान के लिए कई नई उम्मीदें छिपी हुई थीं। वह लालची की भाँति बाहर की छटा को निहार रहा था। मानो कि सब कुछ अपने हृदय में संवार कर रख लेगा। वह बड़ी देर तक बाहर देखता रहा। क्षण भर भीतर कभी देखता तो पाता कि वह युवती भी कोने में दुबकी बाहर की ओर देख रही है। बीच-बीच में लगता था कि वह भारी-भारी सिसकियाँ लेती है। अपने आँचल से वह बहुधा आँखें पोंछती थी। वह कभी तो खिड़की पर अपनी ठोड़ी टिका देती थी। लगता था कि हृदय में एक तूफान उठा है, जो कि अभी स्थिर नहीं हुआ है। वहाँ भी कुछ देर के बाद पूर्णिमा के चाँद की रोशनी फैलेगी और नवजीवन का संचार होगा। उस भावी की बात और भविष्य की उमंगों पर वह सोचने लगा।

लोग कहते हैं कि नारी एक बरसाती नदी के समान होती है। कोई उसके हृदय की तुलना गहरे समुद्र से करते हैं, जिसे मथ कर कि माणिक के अतिरिक्त विष भी मिलता है। वह एक युवती को अपने परिवार में छोड़ आया है। वह बलवान नारी इस परिवार का भार स्वयं ही लेने तुली थी। अपने आप ही उसने उस गृहस्थी को संजोकर कहा था, कि वह उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उस अनाथ बालिका के मातृत्व के भार के बाद वह निखर आई थी और एक दिन उस बालिका की ओट में आँख-मिचौनी खेलती हुई पकड़ी गई थी। आज घर छोड़ते हुए उसे रह-रह कर कई बातों की याद आती है। हरएक सफर उसके लिए भूत, वर्तमान और भविष्य के ताने-बाने को बुनने का साधन रहा है।

उस दिन बालिका को छोड़कर वह विधवा चली गई थी। जब लौटकर आई तो उसके लिए गरम दूध लाई थी और सावधानी से उसे लेकर पुचकारते बोली थी, 'बाप से डरती है। वे उतनी दूर से आए हैं'; एक

चतुर धाई की भाँति सफाई दी थी कि वह ज्यादा नहीं रोती, परेशान भी नहीं करती, अपने आप खेलती रहती है और वक्त पर दूध पीती है। आपको दो-चार दिन में पहचान लेगी तो फिर भूलेगी नहीं।

वह चुपचाप दोनों को देख रहा था। एक उसकी बच्ची है और दूसरी एक अपरचित विधवा! वह उसे पहचानता नहीं है। उसने उसके बच्चे की रक्षा दो साल की है। उसका अहसान वह भूल नहीं सकता है। वह उसे बार-बार समझ लेने कि चेष्टा करने लगा। उसका विवाह तीन साल हुए हुआ था। उसका पति उनके साथ था। वह इसकी चर्चा कभी नहीं करता था। अपनी पत्नी के साथ वह अधिक शायद नहीं रहा होगा।

"मुझे कान्ती कहते हैं। आपकी पत्नी की मौसी की लड़की हूँ।" उसने मानो कि एक कुहरा जल्दी से हटा दिया और फिर चुप हो गई। छोटे गिलास से दूध पिलाती-पिलाती रही। कुछ सोच कर बोली। "यह लड़की पहले तो बहुत कमजोर थी; बार-बार बीमार पड़ती थी। कई बार तो हम निराश हो चुके थे।"

वह सुनता ही रहा। इसके अतिरिक्त कि उसने सुहाग नहीं भरा था, उसे उसमें कोई अन्तर नहीं मिला। उसकी आँखें फीकी और खाली थीं; फिर भी कोई आमंत्रण वहाँ नहीं मिला। उसने उसके हृदय में कोई झंकार भी पैदा नहीं की। पत्नी की बहिन ने अपना कर्तव्य निभा कर उसके बच्चे को पाला था। यह सही उत्तरदायित्व लगा। यह मानो कि उसकी सगी अपनी कोई थी।

कान्ति ने उसकी गृहस्थी को संभालने की कोशिश की। एक सप्ताह से ज्यादा बीत गया। वह उससे कहना चाहता था, कि अब सदा के लिए वह उस लड़की की अभिभावक बन जाय तो वह निश्चित होकर देश चला जायगा। उसका सौन्दर्य देखकर कभी-कभी वह भयभीत हो उठता था। वह अठारह साल की युवती उस परिवार की सारी बातें

जानती थी। एक परिचायिका की भाँति काम करती। उससे कुछ हटकर रहती और प्रति दिवस संध्या को काम निपटा कर बच्ची के साथ अपने घर लौट आती थी। वह घर की सारी चीजों की जानकारी रखती थी। उसे बताया था, कि यदि प्रसव के बाद ज्वर न हो जाता तो बहिन की मृत्यु न होती। चार महीने तक वह बीमार रही थी। मौत के आगे कान्ति हार गई। अन्यथा उसने कोई कसर उठा कर नहीं रखी थी। वह बहिन स्वयं जीवित रहना चाहती थी। उसे यह दुनिया बहुत पसन्द थी। वह भविष्य की बातें करती थी। रोज इन्तजार करती थी कि लड़ाई समाप्त हो जाय, वे घर लौट आवें। अन्त में उसे ज्ञात हो गया कि वह अधिक दिन जीवित न रहेगी तो उसे सब कुछ समझा कर माया-ममता की गठड़ी यहीं छोड़ कर चली गई थी।

वंशीधर पाता था, कि कांति कई बातें छुपाया करती है। बातों के बीच में वह अटक सी जाती है। पत्नी ने मर कर भी उसका भविष्य निश्चित कर दिया था। क्या वह कान्ति से पूछे। पर गाँव के कई नवयुवक जो कि धनी भी थे, उससे शादी करने के लिए तैयार थे। वह कई युवकों के हृदय पर विजय पा चुकी थी। वह तो परियों की रानी सी लगती थी। सारे घर को उसने इस प्रकार सजा कर रखा था, कि लगता वह उसके आने की सच ही प्रतीक्षा कर रही थी। लेकिन उस बच्ची का बहाना पाकर ही वह उससे दो बातें कर पाता था। अन्यथा अब वह बहुत कम बोलती थी। उससे दूर रहा करती थी। जब वह घर पर होती तो लगता था कि वहाँ एक नया जीवन बह रहा है। उसके चले जाने पर रात भर वह कई बातें सोचा करता था। अधिकतर वह रात को घूमने निकल जाता और निरुद्देश्य सा इधर-उधर मारा-मारा फिरता था। अपने बचपन की प्यारी स्मृतियाँ वह एक-एक करके संवार कर हृदय से लगा लेना चाहता था। वह कभी तो अनायास सा चौंक उठता था। पाता कि वह उसके दरवाजे पर अनजाने पहुँच गया

है। उसका मन करता कि दरवाजा खटखटा दे। फिर साहस न होता था। कौन जाने वह क्या समझे। अभी काफी समय था। वह किसी दिन मौका पाकर उससे अनुरोध करेगा।

इस बीच वह अपने मायके एक शादी में चली गई। लड़की को साथ लेकर गई थी। वह उन दिनों बेचैन हो उठा। वह बड़ी-बड़ी रात तक ग्रामोफोन निकाल कर बजाता था। टूटे रिकार्ड अजीब तीखे से स्वर में बोलते थे। उन गानों में वियोग का भास उसे होता था। कभी अपने को कोसता था कि वह सच ही बुद्धू है। अन्यथा अब तक उसे प्रस्ताव रख कर सारी बातें तय कर लेनी चाहिए थीं। कौन जाने वह किसी और से शादी करले। यह बात मन में बैठती नहीं थी। दो-तीन महीने बीत गए, वह लौट कर नहीं आई। उसे विश्वास हो गया कि वह अब नहीं आवेगी।

फरवरी के अन्तिम सप्ताह में बरफ पड़ी थी। चारों ओर एक विचित्र दुनिया बस गई थी। वह उन दिनों दूर-दूर तक चला जाया करता था। कुछ शिकारियों से उसकी दोस्ती हो गई थी। वह अब कभी घर हफ्तों में आया करता था। घर और उस युवती की बातें वह भूल सा गया था। बरफ से भरी घाटी का सौन्दर्य उसे मतवाला बना दिया करता था। लेकिन बरफ अधिक नहीं टिका। एक दिन उसने पाया कि वह पिघलने लगा है। पालतू जानवर भी कान फड़फड़ाते हुए अपने बालों को हिलाते थे। उसने सच ही पाया कि बसन्त आने वाला है। बरफ से बन्द हुए झरने अब तेजी से कल-कल शब्द करते हुए बहने लगे हैं। कई नई चिड़ियाएँ भी मैदान से उड़कर आने लगी थी।

आकाश में अब कुहरा उतना ऊँचा सा नहीं उठता था। बरफ बह गई थी, सूरज कभी-कभी तिरछा धरती पर अपनी किरणें फेंकता था। पेड़ों से महक आने लगी थी। बसन्त के उस आगमन पर उसे बड़ी खुशी हुई। वह घर लौट आया था।

एक संध्या को उसने पाया था कि कान्ति भी लौट आई है। वह बहुत सुस्त और थकी लगती थी। उसने बताया था कि उसे पाँती वाला बुखार शुरू हो गया था। अब जाकर वह ठीक हुई। बंशीधर को कुछ गुस्सा सा चढ़ा था। वह चाहती तो क्या उसे सूचना नहीं दे सकती थी। वह कुछ कहे कि वह बोली थी, "माँ ने पूछा है कि आपने आगे के लिए क्या तय किया है?"

"तय......!" वह कुछ नहीं जानता था।

"माँ ने कहा कि अब कुछ सोच लेना ठीक होगा।"

वह इसका उत्तर समझ गया। एक बात मन में तभी उठी और वह पूछ बैठा, "बहिन ने क्या कोई सन्देश तेरे लिए नहीं छोड़ा।"

"सन्देश..........।"

"वह क्या कुछ मेरे लिए बता गई?"

कान्ति जैसे कि पकड़ में आ गई थी! वह गुलाबी पड़ कर भाग गई। तो क्या बंशीधर की कल्पना ठीक निकली। जाड़े की लाँबी-लाँबी अँधेरी रातों में उसने क्या-क्या नहीं सोचा था। अब अपनी सफलता पर वह इतना प्रसन्न हुआ कि एक-एक कर कई रिकार्ड बजा डाले। जब लड़की की नींद उचट गई और वह चीखने-चिल्लाने लगी तो उसे होश आया।

उसने लड़की को उठाया और पुचकार कर सुला दिया। बड़ी देर तक उसे थपथपाता रहा। वह तो आज कान्ति से बहुत सारी बातें करना चाहता था। उसकी आँखों के आगे से अब एक धुँधलका हट गया था। वह उसे सावधानी से भाँपता रहा। उसकी आँखें भरती ही नहीं थीं।

कान्ति ने खाना खिला, चौका बरतन किया और बच्ची को उठा कर जाने को थी, कि वह दरवाजे पर खड़ा हो गया। कान्ति लौट आई। वह चुपचाप फिर एक रिकार्ड बजाने लगा। बड़ी रात बीत गई, जब उसे

होश आया तो पाया कि कान्ति चुपचाप न जाने कब से खड़ी थी। उसका जूड़ा बँधा हुआ था। उसमें उसने एक बड़ा फूल खोंस रखा था। उसने माथे पर सुहाग की लाली भर ली थी। वह पागल की भाँति उठा और उसने उसका माथा चूम लिया था, कान्ति कुछ बोली नहीं। वह उसकी छाती पर सिर रख कर बड़ी देर तक आँसू बहाती रही थी। वे सुख के आँसू थे जो कि पिछली पीड़ा को बहाने में सफल रहे।

बंशीधर ने कान्ति के ऊपर उस भाँति विजय पाई थी। वह जान गया था कि कान्ति उससे होशियार है। उसने अपना निश्चय बहुत पहले कर लिया था। बीमारी के बाद वह अकेला न रहना चाहती थी। उसे डर था कि कहीं इस बीच वह चला गया तो क्या होगा। दिन फिर तेजी से कटे। महीने बीत गए। कान्ति गर्भवती हुई, उसका मातृत्व फिर जागा। एक पुत्र उसके हुआ। बंशीधर पलटन का हवलदार न रह कर किसान बन गया था। वे खेत फिर भी उनका पेट नहीं भर पाते थे।

कुछ साल बाद सच ही एक दिन उसे गाँव छोड़ कर नौकरी की तलाश में आना पड़ा। उस युद्ध के बाद देश की हालत नहीं सुधरी थी। उसका परिवार अलबत्ता बढ़ गया था और कान्ति की सेहत ज्यादा काम करने के कारण बिगड़ गई थी। वह नौकरी करके कान्ति का हाथ बटाना चाहता था। साथ ही साहूकार का कर्जा भी बढ़ रहा था। वह उसे भी चुकाना चाहता था। वह पुरुष था और मेहनत-मजदूरी करके पैसा कमाना उसके लिए जरूरी था। लेकिन आजादी के बाद उसकी हालत बिगड़ती चली गई। इसके लिए वह दुखी था कि नेताओं ने धोखा देकर चुनाव में मत लिए थे।

(४)

जब बंशीधर की नींद टूटी तो उसने पाया कि सुबह हो आई है। डाकगाड़ी रात के अँधेरे को चीर कर सैकड़ों मील का रास्ता तय कर

चुकी है। वह भी जल्दी ही अपनी मंजिल पर पहुँच जायगा। रोजगार के लिए भरती वाले दफ्तर में वह घर से तीन-चार दरख्वास्तें भेज चुका है; पर आज तक उसे एक का भी जवाब नहीं मिला। सूरज का लाल गोला क्षितिज से ऊपर उठ रहा था। बरसात की वह धूप अब उस पर पड़ी और गरमी लाई। कमरे के भीतर अभी तक मुसाफिर सोए ही हुए थे। वह युवती भी मुँह ढाँके कोने में सिर टिकाए सो रही थी। वह रात भर उसी भाँति शायद रही है।

उसने एक मुसाफिर के पास पड़ा हुआ अखबार उठाया। वह उसे पढ़ने लगा। उत्तरी कोरिया वालों ने दक्षिणी कोरिया पर हमला किया था। अमेरिका वाले हार रहे थे। कई राजनीतिज्ञ 'एटमबम' चलाने की सलाह देते थे। कोरिया की आपसी लड़ाई? क्या फिर तीसरा जंग शुरू होगा। वही नरसंहार भुखमरी...! वह भयभीत हो उठा। इस विज्ञान का उपयोग एक जाति क्यों दूसरी पर शासन करने के लिए व्यवहार में ला रही थी। अमेरिका वाले सब देशों को सैनिक सहायता देने के लिए तैयार थे। आज उनकी सैनिक शक्ति को कोरिया की जनता द्वारा पराजित होना पड़ रहा है। वह युद्ध क्या बेकारी की समस्या को सुलझाने की क्षमता रखता है? कदापि नहीं। वह स्वयं एक धोखा है?

अखबार में उस युद्ध का हाल पढ़ कर वह मुरझा गया। वह तीसरा महायुद्ध नहीं चाहता है। वह अपने परिवार को खुशहाल बनाने के सपने देखता है। उसका परिवार, दो लड़कियाँ, एक लड़का, चार गाँय, पाँच बछिया, दो बैल और अठारह बकरियाँ हैं। साहूकार यदि ज्यादा सूद पर रुपया कर्जा न देता, तो उसे कदापि अपना घर छोड़ने के लिए विवश न होना पड़ता। देश में स्वतंत्रता आई, उसे आशा थी कि उसे अब खास कठिनाई नहीं पड़ेगी। लेकिन सारी व्यवस्था तो वही पुरानी है। आज पहले से हालत और खराब हो गई है। वह सच ही आजकल बहुत परेशान हो उठता था। गाँव में भी कुछ नहीं रह गया है।

हलवाहा बिना नकद पैसे लिए हल नहीं लगाता है। गाँव का बनिया सड़ा-गला सौदा मंहगे दाम पर देता है। उसकी पत्नी अब काफी बदल गई है। जो कान्ति कि एक नया जीवन उसे सौंपने में एक दिन नहीं चूकी थी, वह आज बात-बात पर झगड़ती है। उसका चेहरा मुरझाया रहता है। कभी-कभी वह सिर दर्द होने पर पड़ी रहती है। घर-गृहस्थी के झमेलों से वह स्वयं ऊब उठा था। इससे पहले कि वह कुछ सोचे, कान्ति ने कहा था कि इस तरह काम नहीं चलेगा। कहीं रोजगार पर जाना पड़ेगा।

पहले यही कान्ति कहती थी, कि अब तुमको कहीं दूर नहीं जाने दूँगी। भगवान ने काफी दिया है। मेहनत करेंगे और गुजर हो जायगी। हमें और क्या चाहिए। अब तो वही चाहती थी कि वह बाहर से रुपया कमा कर भेजे और वह परिवार की रक्षा करेगी। उसकी पहले कभी ख्वाहिश थी कि वह कम से कम मैट्रिक पास कर लेगा। एक साल की बात है। वह प्राइवेट इम्तहान देगा। पास हो जाने पर ठीक सा रोजगार आसानी से मिल जायगा। लेकिन वह यह बात बिलकुल भूल गया था। नौकरी के लिए घर से बाहर जाना उसे अधिक नहीं जँचा था। परदेश में पचास-साठ की नौकरी मिल भी जायगी तो कोठरी का किराया, होटल का खाना तथा और खर्चों के बाद क्या बचेगा? फिर उसे नौकरी ही क्या मिल सकती है, जबकि लाखों पढ़े-लिखे बेकार हैं। वह फौजी है तो क्या हुआ। फौज में रोज छँटनी हो रही है। वह जब फौज में था तो आराम की नौकरी थी। उसे मुसीबतें सहने की आदत नहीं है। फिर भी घर पर पड़ा-पड़ा वह क्या करता?

कान्ति उसे दूर तक छोड़ने आई थी। जब वह विदा हुआ तो वह फूट-फूट कर रोई और बोली थी कि समय खराब आ गया है; क्या करें? हमारी जिन्दगी में सुख नहीं लिखा हुआ है। अन्यथा इस भाँति बिछुड़ना नहीं पड़ता। फिर मर्द तो परदेश जाते ही हैं। पहुँचते ही चिट्ठी

भेजना, फिर महीने-महीने कुशल देना। प्राण चिट्ठी पर ही लगे रहते हैं। तन्दुरुस्ती की फिक्र रखना।

अब तो वह सब पीछे छूट गया था। वह 'नौकरी वाले दफ्तर' जायगा। छोटी-मोटी जैसी नौकरी मिलेगी करेगा। बिना नौकरी के राहत नहीं मिल सकती है। बिना पैसे के इनसान की कोई इज्जत नहीं। फिर यह कोरिया की लड़ाई उसकी समझ में नहीं आती। क्यों अमेरिका के किसान-मजदूरों के बेटे वहाँ जाकर अपने प्राण गँवा रहे हैं। जबकि 'वाल स्ट्रीट' के धन्नासेठ दूर से तमाशा देख रहे हैं। अमेरिका भूखे देशों को खाने के लिए अन्न न भेज कर गोला-बारूद से भरे जहाज भेज रहा है। उनके हवाई जहाज कोरिया के शहरों पर गोलाबारी करके निहत्थे नागरिकों को मौत की घाट उतार रहे हैं। यह न्याय सच ही उसकी समझ में नहीं आता, कि क्यों ये शासन करने वाली जातियाँ आज भी प्रभुत्व के मद में चूर-चूर हैं ?

गाड़ी एक झटके से रुक गई। वह बूढ़ा खड़ा हो गया। कुली को बुलवाकर बिस्तर ठीक करवाया। वह युवती भी उठी। बंशीधर ने उधर देखा। उसका आँचल खुला था। पर वह एक चोट खाकर तिलमिला उठा। वह तो एक नवविधवा थी। उसके माथे पर बिन्दी की छाप ताजी थी और सुहाग की रेखा बालों के बीच लाल रेखा सी चमक रही थी। अभिजातवर्ग की विधवा ! जिसका कोई भविष्य नहीं है। जिसका कि समाज में कोई स्थान नहीं है। कान्ति की भाँति आजाद वह नहीं कि अपना रास्ता चुनकर भविष्य बना ले। वह तो उस समाज की गुलाम थी, जो कि हजारों-लाखों के शोषण की व्यवस्था करके, नारी को भी सनातन बेड़ियाँ पहनाते हुए नहीं चूकता।

वह युवती तो फफक-फफक कर फिर रो उठी। कान्ति भी ऐसे ही एक दिन रोई थी, फिर धीरज धर कर भविष्य के निर्माण पर उसने सोचा था। कान्ति साथ होती, तो इस युवती को समझाती कि आज

दुनिया बदल गई है। अब पुरानी जंजीरें टूट रही हैं। वह व्यर्थ परेशान हो रही है। जीवन एक शक्ति है, जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता है।

वे लोग उतर गए थे। बंशीधर चुपचाप भविष्य के बारे में सोच रहा था कि इन्सान की बड़ी ताकत मिल कर पुरानी सड़ी-गली व्यवस्था को बदलेगी। विज्ञान तब संहार न कर निर्माण की ओर बढ़ेगा और इन्सान-इन्सान का शोषण न करेगा। आज सच ही दुनिया एक खिंच में पड़ गई है। भविष्य आशाप्रद होगा, इसका उसे पूर्ण विश्वास है। कान्ति भी यही कहती थी।

एक झटके से गाड़ी चल दी। बंशीधर का मन खुश था। उसे ज्ञात था कि संघर्ष से ही जीवन चमकता है। वह भी अपने अधिकारों के लिए लड़ेगा—उसे रोजगार चाहिए। वह लेकर रहेगा।

बेड़ियाँ

अपराधी वार्डर सुखलाल चुपचाप बैरिक के भीतर टहल रहा था। नए विधान की खुशी के दिखलावे में गिरहकट, चोर और डाकू तो छोड़े गए थे; पर वे कैदी नहीं, जो कि साधारण मजदूर और किसान के बेटे थे। जिन पर कि पुलीस ने झूठे मुकद्मे चलाए थे; सुपरेन्टेंडेन्ट ने बताया था कि सरकार का इरादा जेलों को खाली करने का नहीं है। लोगों में प्रचार करने के लिए कुछ बदनाम कैदियों को छोड़ा जा रहा है। जेल का फाटक तिरंगी झँडियाँ तथा बन्दनवारों से सजाया गया था। लाउड-स्पीकर पर 'रघुपति राघव राजा राम' से लेकर 'मेरा लाल दुपट्टा' गाने बजे थे। बाबू लोगों के परिवार कैदियों के हिस्से की मिठाई भी खा गये थे। कैदियों में उसने कोई खास खुशी नहीं पाई। इस बड़े उत्सव में किसी ने उत्साह से भाग नहीं लिया था। शहर के कोई नेता झंडा फहराने आए थे। वे जेल के भीतर नहीं पहुँचे। वहाँ अधिकारियों और

कुछ सियासी कैदियों के बीच झगड़ा हुआ था। वे कैदी इसे झूठी आजादी कहते थे; उन्होंने एक पेड़ पर काला झंडा लहराया था। फिर जेल की पगली बजी थी; पागल कुत्तों की भाँति वार्डरों ने उन पर हमला किया था। छै घंटे तक संघर्ष चला। आखिर बेहोश कैदियों को उठा कर वार्डरों ने तनहाई में डाल दिया था। सुखलाल उस वहशी हमले से व्याकुल हो उठा था। उसकी समझ में नहीं आया कि अपने राज में यह सब क्या हो रहा है। वह बहुत बातें सोचता है, उसे विश्वास था कि वह आजाद होगा और बाहर अपने गाँव में जाकर एक नए जीवन में प्रवेश करेगा। कई बातें उसने गाँवों के बारे में सुनी हैं। गल्ला तहसीलदार जबरदस्ती वसूल करते हैं। पूरा पैसा तक नहीं चुकाते। दस साला लगान देकर लोग अपना पट्टा पक्का करवा रहे हैं। गाँवों में पंचायती राज है। उधर अखबार में छपा था कि पुलीस ने बलिया में किसानों के एक जलूस पर गोलियाँ चलाईं, जिससे सैकड़ों घायल हुए और एक मर गया है।

पुलिस ने उसका भी झूठा चालान आवारागर्दी में किया था। वह नाके के मुन्शी जी की फरमायशें पूरी नहीं कर पाता था। वे चाहते थे कि वह माहवारी कुछ रुपए उनको दिया करे। कुछ बदचलन लोगों के साथ वह वहाँ एक जुए का अड्डा भी खुलवाना चाहता था। उसका कहना था कि दरोगा साहब की ओर से वह बातें किया करता है। एक बार उसने एक अच्छे मुर्गे की माँग भी उससे की थी। उसे सुझाया था कि वह नाजायज शराब बना कर बेच सकता है। वह दबंग था और उसकी परवाह नहीं करता था। एक दिन वह चौकी के पास से जा रहा था, कि दो सिपाहियों ने उसे पकड़ा और हवालात में बन्द कर दिया। फिर उसकी सबने मिल कर खूब पिटाई की। गाँव के जमीदार के गुमाश्ते व चौकीदार ने गवाही दी कि आवारा है। मजिस्ट्रेट ने खानाबदोशी के जुरम में एक हजार रुपए का मुचलका व एक हजार की

जमानत माँगी थी। गाँव का साहूकार जमानत दिलवाने को तैयार था बशर्तें कि वह झूठा रुक्का तीन सौ का लिखकर सालाना बीस रुपया सैकड़ा सूद देना मंजूर कर ले। उसने बताया था कि उसे भी उसका हिस्सा पटवारी, दरोगा आदि को देना पड़ता है। उसे तो आश्चर्य हुआ था कि पुलीस वाले छुरी, रस्सी, दियासलाई आदि कई चीजें खुद ही ला कर गवा ही दिलाते हैं कि मुलजिम के पास मिलीं। वे गवाह तो ऐसे किस्से गढ़ते हैं कि मानो यही उनका पेशा हो। उसने वकील नहीं किया था। उसके लिए काफी खर्चा चाहिए। फिर वे वकील भी बड़े आदमियों के नाते-रिश्तेदार होते हैं। जमीन्दार के गुमाश्ते और कई पेशेवर गवाह पुलीस को मिल जाते हैं। उसकी गवाही कौन देता। मजिस्ट्रेट जान कर कि सारी बातें झूठी हैं, उसे दो साल की सजा सुना गया था। यानि दो साल की जमानत, नहीं तो जेल। सब जानते थे कि वह निर्दोष है; पर उससे कुछ नहीं हुआ। कानून तो बड़े आदमियों ने बनाया है। वह दरोगा, गाँव का चौकीदार, पटवारी और मजिस्ट्रेट सब अमीरों के गुलाम थे। उसके परिवार वालों की शक्ति जमानत देने की नहीं थी।

वह अपने गाँव से बड़ी दूर, दूसरे जिले की जेल में भेज दिया गया था। उसके घर वाले यहाँ तक आने के लिए राह खर्च नहीं जुटा पाते होंगे। अतएव साल भर से वह अपनी बीबी और बच्चे को नहीं देख पाया है। उसकी मुलाकात, गरीबी के कारण एक बार भी नहीं हो पाई। वहाँ भी उसने पाया कि चोर-बदमाशों की इज्जत अधिकारी करते हैं और मजूर-किसान के बेटों को पग-पग पर अपमानित होना पड़ता है। कुछ लोग उसकी मजाक उड़ाते हैं कि नीच कौम के चमार की बीबी क्या उसकी प्रतीक्षा दो साल करेगी। वह इस बीच किसी दूसरे का घर गुलजार कर चुकी होगी। वह उस अपमान की कड़वी घूँट पी जाता है। लेकिन कुछ लड़कों ने उसे बताया था कि खेतिहर-मजदूर

जल्दी ही जमीन पा जायगा। शोषित-समाज की बात भी कुछ कैदी सुनाते हैं। यह जानकर उसे बड़ी खुशी हुई थी, कि मन्दिरों में अब अछूत भी जा सकते हैं। कुछ लोग तो कहते हैं कि अब नीच कौम वाले नहीं रहेंगे। सब बराबर हो जावेंगे। गाँधीजी की बात कोई बताता है कि वे हरिजनों को बहुत प्यार करते थे। पर गाँधी जी की पुलीस ने तो उसे आजादी के बाद पकड़ा था। गाँधीजी मर गए, पर वह चमार का चमार ही रह गया। अब उसे पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि गाँधीजी बड़े आदमियों के दोस्त थे। नहीं तो मजिस्ट्रेट उसे कभी सजा न सुनाता। गाँधी का राज आया तो जो पहले बड़े आदमी थे, वे ही फलने-फूलने लगे। छोटों को कोई फायदा नहीं हुआ।

जेल में और कैदियों के मुलाकाती आते हैं और चोरी से उनको रुपया दे जाते हैं। वे कैदी उससे वार्डरों के मार्फत सौदा-सुलफा मँगवाते हैं। वे वार्डर भले ही महँगा सौदा ला दें; फिर भी उस कैदी पर रहम-दिल हो जाते हैं, जिससे कि ज्यादा आमदनी होती है। लेकिन उसे वह सुख प्राप्त नहीं है। वह हर बात में इसीलिए दबता है। कड़ी मेहनत करता है। अपने श्रम के कारण ही उसे आज 'कैदी-वार्डर' का पद मिला है। एक डाकू ने भागने की चेष्टा की थी, तो उसने जान की बाजी लगाकर उसे पकड़ा था। अधिकारी बहुत खुश हुए थे। उसे आश्वासन दिया था, कि उसे जल्दी छोड़ देने की सिफारिश करेंगे। पर अफसर झूठे वायदे करते हैं, यह बात उसको बाद में ज्ञात हुई थी। वे उस बात को जल्दी ही भूल गए। उस कैदी के पकड़े जाने पर उसने बहुत सोचा और इस निर्णय पर पहुँचा था कि उसका भाग जाना समाज के लिए अनुचित होता। अब तक वह सात बार जेल काट चुका था। लेकिन नए विधान की खुशी में उसे तो रिहा कर दिया गया और वह जो कि बेकसूर था, उसे किसी ने नहीं छोड़ा। इस बात का उसे बहुत दुःख है।

वह अफसरों के घर का कामकाज करता है। इसके अतिरिक्त वह दफ्तर की सफाई आदि व कैदियों की निगरानी करता है। उसे पूरा विश्वास था कि वह छूट जायगा। इसी आशय का एक खत उसने गाँव अपनी पत्नी के पास भिजवाया था। पर अब उसे मालूम हुआ कि सरकार हरएक को न छोड़ कर, कुछ खास जुल्म के अपराधियों को ही कुछ महीने की छूट दे रही है। वह उस श्रेणी में नहीं आता है। एकबार उसने जेलर से विनती की तो उसने ऊपरी हमदर्दी दिखलाते हुए अपनी असमर्थता जताई थी। बाबू लोगों की खुशामद की तो वे बोले कि ऊपर से हुक्म आया है। उनके हाथ की बात नहीं है। उसकी सारी आशाएँ धूल में मिल गई थीं। अभी तो उसे कई महीने इस जेल में काटने होंगे। उसे अपना भविष्य अंधकारमय दीखने लगा। उसकी पत्नी क्या सोचेगी? फिर जो एक बार जेल हो आया, आगे भी जब पुलीस चाहे उसे पकड़ सकती है। जेल का यह दाग आसानी से नहीं मिटता है। यहाँ उसने देखा है कि कैदी आपस में अच्छी बातें नहीं करते हैं। अपराधी सुधरते नहीं हैं! यहाँ के वातावरण से तो वे पक्के चोर, खूनी और बदमाश बन कर निकलते हैं।

नए विधान की खुशी में पाँच गिरहकट भी छोड़े गए थे। दो उसी शाम को पकड़कर अगले दिन यहाँ पहुँच गए हैं। उन्होंने बताया था, कि चोरों के माल के बँटवारे में झगड़ा हुआ। पुलीस का दीवान दो-तिहाई हिस्सा माँग रहा था, जबकि वे आधा देने के लिए तैयार थे। उस दिन बाजार में काफी भीड़ थी। आमदनी खासी हुई थी। रात को बची-खुची जूठन मिठाई के रूप में उनको मिली। ये गिरहकट छूटते हैं और पकड़े जाते हैं। जेल में वे अपने फन का अध्ययन साथ के कैदियों पर भी करते हैं। वे अधिकतर छोटे बच्चे ही होते हैं। उस छोटी अवस्था में गिरहकट से आगे वे बड़े-बड़े जुल्म करने की क्षमता रखते हैं।

इस जेल में उसने पाया था कि जमींदार, पटवारी, दरोगा, चौकी-

दार, बनिश्रा आदि जोंकों द्वारा कई नौजवान झूठे मुकदमों में फंसवाए गए हैं। कोई भी नवयुवक स्वतंत्रतापूर्वक नहीं पनप पाता है। ये जोंकें उसे पग-पग पर बेड़ियाँ पहनाने के लिए तुल जाती हैं। गाँव का वह जीवन जहाँ कि भरपेट खाना नहीं मिलता है। कड़ी मेहनत करने के बाद भी जीवन सुखी नहीं है। और वे न्याय करने वाले अफसर अमीर घराने के होते हैं। वे न्याय का ढोंग रच कर गरीबों से अमीरों की रक्षा करते हैं। इस जेल के भीतर उसने पाया कि बहुत से कैदी उसी की भाँति निर्दोष हैं। गाँव की धरती पर पैदा होकर, वे वहीं पनपे; पर उन्होंने किसी के आगे सिर नहीं झुकाया था। यहाँ वह कैदियों से बातें करता है। गाँव में वह पहलवान गिना जाता था। यहाँ भी नियमित रूप से कसरत करता है। यहाँ भी उसकी धाक है। उसके सुडौल शरीर को देखकर सब उसकी तारीफ करते हैं। वह बड़ी सुबह उठता है। हफ्ते में दो बार सारे शरीर की हजामत बनाता है। नित्य चार घंटे कसरत करता है। भंडार का महाराज उसके खाने की खास चिन्ता रखता है। कुछ ऊँची श्रेणी के कैदी उसको मक्खन-घी आदि भी दे देते हैं।

उसे अपने गाँव के ब्राह्मणों पर सब से अधिक गुस्सा आता है। वे नीच कौम वालों को मुकदमों में फंसाने के लिए सदा झूठी गवाही देते हैं। वे गाँव के बनिए के कहने पर चलते हैं। अन्यथा वह मारवाड़ी इतनी दूर धरती की गोद में कोढ़ की तरह न चिपक जाता। वह एक के चार पैसे ही नहीं लेता, काफी सूद पर रुपया उधार भी दिया करता है। उसने स्वयं उस मारवाड़ी से कुछ रुपया शादी के मौके पर उधार लिया था और आज तक सूद देते-देते उसकी कमर झुक गई है। उस मारवाड़ी से कई बार तकरार हुई और सुखलाल को लगा था, कि इस समाज में गरीब को जिन्दा रहने का अधिकार नहीं है। उस शोषण वाली व्यवस्था पर से उसकी आस्था हट गई थी। गाँधीजी का राम राज्य आया

और पुलीस का ज़ुल्म बढ़ गया। जमींदार का बेटा बड़ा अफसर बन गया था। पटवारी अंग्रेज सरकार की खैरख्वाही की बात न करके गाँधीजी के त्याग के नाम पर अत्याचार करता था। इस अपने राज्य की बात ने उसे जीवन से निराश कर दिया था। जब वह जेल आया तो उसे अपने जीवन का खास मोह नहीं रह गया। उसने निश्चय किया था कि लौट कर वह उन झूठे गवाहों की हत्या करके बदला चुकायेगा। प्रतिहिंसा की भावना बलवती हो उठी थी। महीनों तक वह इसकी गाँठ मन में बनाए हुए रहा कि एकाएक एक घटना हुई।

एक किसान कैदी वहाँ नजरबन्द होकर आया। कैदियों ने बताया था कि वह बागी है। सरकार के खिलाफ बगावत करने के कारण पकड़ा गया है। वह किसानों को भड़काता था कि इस साला मत दो, वह पटवारी और दरोगा की बातें न सुन कर किसानों का संगठन बना रहा था। वह कहता था कि कम्यूनिस्ट पार्टी ही ऐसी संस्था है, जो कि मजदूर-किसानों की अगुवाई पर विश्वास करती है। उसका दावा था कि समाज की नई व्यवस्था मजदूर-किसान मिल कर बनायेंगे। वह अमीरों को गालियाँ देता था, कि साले हजारों वर्षों से गरीबों का खून चूसते आए हैं। अब गरीब, नंगा और भूखा उठ खड़ा हुआ है। उसी ने बताया था कि हैदराबाद में कई जिले किसानों ने आजाद कर लिए हैं। वहाँ अब जागीरदारों की हुकूमत नहीं है। किसानों ने जमीन आपस में बाँट ली है। अब गरीब ने मिल कर एक नया भाईचारा बनाया है। वे मिल कर शोषण के खिलाफ लड़ रहे हैं। ये बातें उसके मन को भाने लगीं। यही तो वह भी सोचता है। सबको मिल कर नई दुनिया बसानी होगी। वह उसका भक्त बन गया था। तिकड़म करके वह उसके पास पहुँचता था। वहाँ वह कई बातें सुनता कि दुनिया के एक तिहाई हिस्से में मजदूर-किसान का अपना राज्य है। कम्यूनिस्ट पार्टी आज

हिन्दुस्तान में भी वैसा ही राज लाना चाहती है। वहाँ मजदूर-किसानों के बच्चों का शोषण नहीं होगा।

उस कम्यूनिस्ट पार्टी की बात वह सोचता। उसने प्रण किया था कि छूट कर वह उसी पार्टी में काम करेगा। उसे अब अपने पर आत्म-विश्वास हो आया कि उसका जीवन बेकार का नहीं है। अपनी पत्नी की शक्ति पर भी उसे विश्वास हो आया। अब उसके मन से जमीन्दार, दरोगा, भगवान आदि सब का आतंक हट गया था। उसे अपने बच्चे का भविष्य आशाप्रद लगा। विश्वास हो गया कि सब मिल कर शोषण करने वालों के खिलाफ लड़कर अवश्य विजयी होंगे। गाँधीजी का यह रामराज्य जहाँ कि सेठों को शोषण करने की आजादी है, वह उस तूफान में बह जायगा। किसानों के बच्चे शहर के मजदूर के साथ मिल कर सेठोंऔर पूँजीपतियों की बेड़ियों को तोड़ कर स्वतंत्र हो जावेंगे।

किन्तु जेल के भीतर कम्यूनिस्ट कैदियों पर अधिकारियों ने हमला किया था। ये सरकारी वार्डर पुलीस के साथ, अफसरों के कहने पर चलते हैं। हरएक बात-बात में वैसे कहता है कि उसके परिवार का आर्थिक ढाँचा टूट चुका है। आज इस छोटी तनख्वाह पर गुजर नहीं होती है। लेकिन वे इस जुल्म के खिलाफ विद्रोह करने को तैयार नहीं हैं। कुछ कैदियों ने जो कि किसानों के ईमानदार बेटे हैं, कम्यूनिस्ट कैदियों से अपनी हमदर्दी दिखलाने के लिए भूख हड़ताल कर दी है। इससे अधिकारी बहुत परेशान हैं। उनका कहना है कि ये कम्यूनिस्ट जहाँ जाते हैं, 'लाल बिमारी' को फैलाने में नहीं चूकते। जेलों का अनुशासन भंग हो गया है। लाठी और गोलियाँ इनका मनोबल नहीं तोड़ पातीं। ये फौलादी चट्टान की भाँति मजबूत हैं। यही हाल रहा तो सच ही एक दिन जेल के फाटक टूट जावेंगे।

सुखलाल ने देखा था कि कलक्टर, पुलीस कप्तान, जेल का सुपरें-टेन्डेंट सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। उनके साथ शहर काँग्रेस

कमेटी के प्रधान भी शुद्ध खादी के कपड़े पहन कर आए थे। वे लाल कैदी पीछे नहीं हटे। बैरिक के भीतर बन्द नहीं हुए। जब बिलकुल बेहोश हो गए, तभी अधिकारियों ने उनको तनहाई की कोठरी में बन्द किया था। लेकिन वे भूख-हड़ताल पर हैं। अधिकारियों ने उनकी दवा-दारू नहीं करवाई। सिविल-सर्जन तो कलक्टर से हँस-हँस कर बातें करता हुआ कह रहा था, कि कुछ मर ही जायँगे तो ठीक है। उनकी रोज-बरोज की मुसीबत हल हो जायगी। इन लोगों ने तो जेल को मजाक समझ लिया है। बात-बात पर अफसरों का अपमान करते हैं। साधारण कैदियों पर इसका असर अच्छा नहीं पड़ता है। हुकूमत चलाने के लिए गोलियाँ तथा फाँसियाँ लगा देनी चाहिएँ। इन सब पर बगावत का मुकदमा चलाना चाहिए, कि कम से कम दस साल की कैद तो हो जाय।

सच ही उनकी किसी ने परवा नहीं की। मानवता के वे स्नेह-बन्धन जो कि आदिम इनसान ने एक दिन अपनाए थे, वे बिलकुल टूट चुके थे। आज तो इनसान ईर्षा, द्वेष और शोषण के नए रिश्ते कायम कर चुका था। समाज में दो वर्ग साफ-साफ उठ रहे थे। एक शोषण करने वालों का और दूसरा शोषितों का; जब कि शोषितों ने करवट बदली और उठ कर मुकाबला शुरू किया, तो भेड़ियों की भाँति अधिकारियों ने उन पर खूनी हमला किया था। सुखलाल के मन में यह चोट बार-बार उभर आती है। कभी वह सोचता है कि वह बुजदिल है, अन्यथा इस संघर्ष में उसे भी भाग लेना चाहिए था। अफसरों की मेहरबानी गरीबों के शोषण का एक हथियार है। उनको भी अपने हथियारों से मुकाबले के लिए तैयार रहना चाहिए। इस आखिरी लड़ाई में हरएक को भाग लेना चाहिए ताकि यह सड़ा-गला समाज टूट जाय।

उसे अपने पर काफी गुस्सा चढ़ा था। वह सोचता था कि किसी तिकड़म से छूट जायगा। वह अफसरों के धोखे में आ गया। अन्यथा

इस लड़ाई में डट कर भाग लेता। वह डरपोक निकला। अपने छुटकारे की भावना ने उसका मन डाँवा डोल कर दिया था। वह नहीं तो आगे बढ़ कर उस जुल्म का मुकाबला करता। आज अपने साथियों के साथ उसने गद्दारी की थी। अपने नेताओं का साथ उसने नहीं दिया। उसने आज तक कभी यह कोशिश भी नहीं की थी कि और अपराधियों से इस सम्बन्ध में बातचीत करे। उसे उनको कम्यूनिस्ट उसूलों को समझाना चाहिए, ताकि एक दिन इन जेलों से निकल कर वे भी बाहर अपने लोगों के बीच काम कर सकें।

एक, दो, तीन, चार..........! पन्द्रह कैदी ताला ठीक !

पड़ोस की पागलों वाली बैरिक का वार्डर चिल्लाया। तभी एक पागल चिल्लाया—'चुप बे.........पन्द्रह कैदी.....ताला ठीक !' और खिलखिला कर हँस पड़ा। उसकी आवाज को सुनकर ऊपर रेलिंग पर बैठे कबूतर फड़-फड़ा कर उड़ने लगे। सुखलाल ने चुपचाप लालटेन की बत्ती तेज की और आवाज लगाने की तैयारी कर रहा था कि जमादार की आवाज सुनाई पड़ी, "हरामजादे सो गया है।"

मशीन की भाँति तेजी से सुखलाल चिल्लाया ! एक, दो, तीन, पाँच......छै-सात......कैदी ! ताला बन्द ! सब ठीक है !!"

वहाँ पाँच कैदी हैं, छठे और सातवें कैदी वे दो 'अपराधी-वार्डर' हैं। उनको भी साधारण कैदियों की तरह ही रात को बन्द कर दिया जाता है। यह जमादार उनको बात-बात पर गालियाँ देता हुआ कहता है कि सालों का कोई पूछने वाला नहीं। मर भी जाँय तो क्या हो ?

सुखलाल आज अब उसकी बातों से मुरझाता नहीं है। उसकी पत्नी है, बच्चा है ; फिर उसके काफी तादाद में साथी हैं। वह छूटेगा तो बाहर उसके लिए बहुत काम है। आगे वह आसानी से पुलीस के चंगुल

में नहीं फँसेगा। वह आजकल पढ़ना-लिखना सीख रहा है। जब वह जेल से छूटेगा तो पहले की तरह मूर्ख नहीं रहेगा। वह वहाँ के खेतिहर मजदूरों का संगठन करेगा। डट कर पटवारी जमीन्दार, दरोगा, बनिया आदि के जुल्मों का मुकाबला करेगा। यदि सरकार उस पर मुकदमा चलावेगी, तो उसके साथी उसका काम करेंगे। क्या ये जेलें इसी तरह जनता के नेताओं से भरी रहेंगी-नहीं, यह संभव नहीं है। उसको पूरा-पूरा विश्वास है कि मजदूर-किसान का राज्य आवेगा।

उसने एक बार भीतर वार्ड का चक्कर लगाया। वहाँ काफी बदबू चल रही थी। वह चुपचाप अपने कम्बल पर लेट गया। अभी एक घंटा उसकी ड्यूटी और है, फिर वह अपने साथी को उठा कर स्वयं आराम करेगा। उसे दिन-रात मिला कर लगभग पन्द्रह-सोलह घंटे ड्यूटी करनी पड़ती है, काफी कड़ा काम करने पर भी सरकार एक रुपया भत्ता देती है। गरीब का शोषण जेल के भीतर भी होता है। यहाँ उनसे कड़ी मेहनत कराई जाती है। उनका वह किसान साथी ठीक ही कहता था कि अँग्रेजों ने ये जेलें कालों को जानवर समझ कर बनाई थीं। आज काँग्रेसी नेता गरीबों के त्याग पर आराम कर रहे हैं। अपने विरोधियों का मनोबल तोड़ने के लिए, वे और कड़े-कानून बना रहे हैं। रोटियाँ नहीं दे पाते तो जनता पर गोलियाँ चला कर, उनका मुँह बन्द करना चाहते हैं।

वह पास की पागलों वाली वार्ड! वहाँ दो-तीन पागल हँस रहे थे। एक, दो गंदी-गंदी गालियाँ जमादार को दे रहे थे। ऊपर कबूतर फिर फड़-फड़-फड़ कर उड़ने लगे। वे कबूतर दिन भर स्वतंत्रता पूर्वक आकाश में उड़ते हैं। कभी-यदि चील उनके बच्चों पर झपटती है, तो वे उसकी रक्षा करते हैं। लेकिन चील की हिंसा के आगे हार जाते हैं।

(२)

सुखलाल का साथी उठ गया था। उसकी ड्यूटी समाप्त हो चुकी थी। वह चुपचाप अपने कम्बल पर बैठ गया। उसने बीड़ी अपने साथी से माँगी और सुलगाकर चुपचाप फूँकने लगा। कुछ देर के बाद वह अपनी कंबल पर लेट गया। लेकिन उसे नींद नहीं आई। आज उसे न जाने क्यों अपनी पत्नी की याद आई। उसने कई लड़कियों में से उसे चुना था। वह बहुत सुन्दर नहीं थी, फिर भी उसके मन को भा गई। वह पास के गाँव की रहने वाली थी। उसके गाँव में उसकी रिश्तेदारी थी। वह बाग में महुआ बीन रही थी तो वह उधर से गुजरा। गाँव में उस अपरचित लड़की को देखकर उसका परिचय पूछा था। फिर दोनों की शादी हो गई थी। दोनों मजदूरी करते थे, पर गुजर नहीं होती थी। लड़की का पिता अभी भी वही खान्दानी चमार का पेशा करता था, पर उससे कोई आमदनी नहीं थी। पत्नी को वह था और उसकी किसी शिकायत को सुनने के लिए तैयार नहीं था। बहुत प्यार करता वह उसके लिए छींट का एक सुन्दर घाघरा बनवाने की सोच रहा था। गाँव का जीवन उसे भला नहीं लगता था। वहाँ काफी मेहनत करने के बाद भी दो जून पेट भर के खाना कहाँ मिलता था। अतएव वह शहर जाने की बात तय कर चुका था। पत्नी सहमत थी। शहर में पैसा काफी मिलता है।

उसकी सारी योजना बेकार हो गई। यहाँ जेल के भीतर मालूम हुआ कि शहर और देहात दोनों जगह एक सी हालत है। शहर में मजदूर रोज-बरोज बेकार हो रहा है। मंहगाई बहुत है। वहाँ स्वयं एक भारी लड़ाई मजदूर लड़ रहा है। उसका ज्ञान आज तक उसे नहीं था। शहर का मजदूर इतना आगे बढ़ गया, यह उसे पहले-पहल मालूम हुआ था। गाँव में तो लगता था कि दुनिया उसी पुराने रास्ते पर चल रही है। वह यह तय कर चुका है कि अब शहर जाना जरूरी

नहीं है। गाँव में रहकर वे उस सामन्ती-शोषण का डटकर मुकाबला करेंगे। अपनी अजेय शक्ति पर उसे पूर्ण विश्वास हो गया था। आज अब पुलीस का आतंक उसे नहीं डरा सकता है। यह पुलीस अपने आकाओं की रक्षा अब ज्यादा दिनों तक नहीं कर सकती है।

पत्नी की याद आज फिर भी आ रही थी। उसका बच्चा अब चलने लगा होगा। वह कुछ बोलता भी होगा। वह तोतली बोली वाले शब्द उसके मन में माँ-माँ…बा…बा के रूप में झंकारित हो उठे। उसका बच्चा! भविष्य में उसे कठनाइयाँ नहीं उठानी पड़ेंगी। सदियों से पड़ी गुलामी की बेड़ियों को उसका पिता तोड़ कर, खुद तो मुक्त होगा ही; अपने बच्चों के लिए एक नए युग का भी निर्माण करेगा। जिन्दगी का सुख संघर्ष करके विजय पाने में ही है। वह आज अब अपने को थका और हारा हुआ नहीं पाता है। जेलवालों ने उसके साथियों पर जो भारी अत्याचार किए, उससे उनका आन्दोलन दब नहीं सकता है। वह आन्दोलन तो अपने देश के भीतर सुलग चुका है। यह वही आन्दोलन है, जिसने रूस और चीन को नवजीवन दिया है।

वे सुनी बातें वह मन में दुहराने लगा। क्या सच ही वह देश ऐसा सुन्दर बन गया है! ये कम्यूनिस्ट बड़े-छोटे का भेद नहीं मानते; सब मिलकर मानों कि एक विशाल परिवार के लोग हों। उनमें अपनी व्यक्तिगत भावना नहीं है। वे और लोगों से उसे बिलकुल भिन्न लगते हैं। उनमें वह एक नई सद्भावना पाता है। वे अपने व्यवहार से सब कैदियों को मोह लेते हैं। अधिकारियों की वे कोई परवाह नहीं करते। जेल के अनुशासन को वे सेठों की सरकार की झूठी प्रतिष्ठा कहकर सबका मजाक उड़ाते हैं। अधिकारी उनसे घबड़ाते हैं। वह किसान का बेटा उनकी जेल-कमिटी का सिक्रेटरी है। उसकी बातें सब मानते हैं। मजदूर, किसान, बाबू लोगों के लड़के बिना भेद-भाव के साथ-साथ रहते हैं। उनके बीच कोई ऊँच-नीच का सवाल नहीं उठता है।

और जो विधान के बारे में वे कहते थे, सच ही २६ जनवरी के विधान ने नई बेड़ियाँ उनको पहनाई थीं। काँग्रेस के सुफेदपोश नेताओं ने जागीरदार, जमीन्दार पूँजीपतियों के वर्ग की हिफाजत के लिए उसमें नई-नई धाराएँ जोड़ी थीं। मजदूर और किसानों के बेटों के लिए गुलामी का एक नया पट्टा लिखा गया था, जिससे कि वे उनको मुक्त नहीं करना चाहते थे। गाँधी और उनके चेले सदा ही नीचेवाले तबकों के खिलाफ जालसाजी करते रहे। आज जब कि वे देश में खुद मुख्तार बने तो जिस आजादी की माँग वे करते थे, उसे बिलकुल भूल गये। गाँधी जी ने ताजिन्दगी मजूर-किसानों के भाग्य का फैसला खुद बिना उनसे पूछे किया था। आज नेताओं ने भी बिना उनसे पूछे हुए सुराजी हथकड़ी उनको पहनाई थी। वे जालिम अफसर, जिनको कि अंग्रेजों ने कालों के स्वतंत्रता-आन्दोलन को कुचलने के लिए चुना था; आज भी मौज उड़ा रहे थे। नेता उनकी बातों पर चलते हैं। गाँधी जी मर गए, पर उनके नाम का श्राद्ध पगपग पर लठियाँ, गोलियाँ चलाकर हो रहा था। मजूर-किसान, गाँधी के उस सेठ-परस्त मोरचे के खिलाफ लड़ रहा था।

उन कम्यूनिस्ट कैदियों ने विधान के खिलाफ प्रदर्शन किया तो जेल का शासन डोल उठा। उन पर जिस पशुता से हमला हुआ, सुखलाल उससे काँप उठा था। सन् १९४२ में अंग्रेजों ने जेलें भरी थीं, पर वहाँ गोली नहीं चली थी। आज किसान और मजदूरों के बेटों को यह खद्दरपोश सरकार कुचलना चाहती है। बड़े घरानों के बेटे, अंग्रेजों की चापलूसी करके जिनको बड़े-बड़े खिताब मिले थे, आज हुकूमत में फिर हिस्सा बँटा रहे थे। गरीबों का शोषण करने वाले टाटा-बिड़ला के एजन्ट केन्द्रीय सरकार के मन्त्रिमंडल में बैठकर भारत की नंगी-भूखी जनता पर हुकूमत कर रहे थे।

सुखलाल उन सुनी बातों पर विचार कर रहा है। वह जेल के

भीतर बन्द है, क्योंकि वह गरीब खेतहर मजदूर का बेटा था। ताजिन्दगी वह उसी शोषण में पड़ा रहेगा। आजादी के बाद भी उनको कोई नया रास्ता नहीं दीख पड़ा था। गाँव में अलबत्ते सुना करता था कि कम्यूनिस्ट डाका डालते हैं। बेकसूर बच्चों की हत्या करते हैं। वे मानवता के लिए श्राप हैं। वे गुंडे, बदमाश हैं। पर जेल के भीतर उसने पाया कि वे मजूर-किसानों के सच्चे और परखे हुए नेता हैं। रूस में सच ही उन लोगों ने बड़े-बड़े पूँजीपतियों का सामना किया था। आज तेलंगाना में भी तो उन सामन्ती जोंके के खिलाफ किसानों ने बगावत की है। वे वहाँ सफल हो रहे हैं। वहाँ कम्यूनिस्टों ने एक नई शासन-व्यवस्था कायम करके बताया है कि किसानों की खुशहाली का एकमात्र वही रास्ता है। काँग्रेस तो किसानों से झूठे वायदे करती आई है। अब किसान ने स्वयं ही सारा भार उठा लिया है।

वह सब बातें समझ लेता है। बहुत पढ़ा-लिखा नहीं; यहीं उसने थोड़ी शिक्षा इन लोगों से पाई है। पर वह अपने को फौलाद की भाँति मजबूत पाता है। उसे लगता है कि एक ठीक और सही रास्ता उसे मालूम हो गया है। वह उसी रास्ते चलेगा; वहाँ उसे बड़े मोरचे पार करने हैं। किसानों के एक बड़े आन्दोलन को नेतृत्व देना होगा। वह उसके लिए तैयार है। गाँव के नंगे-भूखे उसका साथ देंगे। वह गाँव का बनिया, दरोगा, जमीन्दार आदि उनकी महान् शक्ति के आगे झुक जावेंगे। यह विधान एक झूठी व्यवस्था को चालू किए हुए है। वे स्वयं अपना नया विधान बनावेंगे, जिसमें कि उनको रोजी और रोटी मिलने का पूरा-पूरा अधिकार होगा। वह जानता है कि जेल के भीतर कम्यूनिस्टों पर हमला, सरकार का एक बड़ा षड़यंत्र है। जिसके द्वारा कि वह मजूर-किसानों के आन्दोलनों की पीठ पर छुरा भोंकना चाहती है। पर गरीब उठ चुका है। वह आज गुलामी के बन्धनों को तोड़कर आगे बढ़ेगा।

सुखराम का मन उद्वेलित हो उठा। हृदय में पीड़ा थी । उसके साथी तनहाई में थे। उनके दवा-दारू की कोई व्यवस्था नहीं है। मानवता के प्रति ऐसे अत्याचार हिटलर ने किए थे। आज वही बातें कॉंग्रेस सरकार दुहरा रही है। पर इतिहास साक्षी है कि जनता के जागरूक प्रगतिशील आन्दोलनों की बाढ़ को कोई शक्ति नहीं रोक सकी है। वह शक्तिशाली इनसान तो प्रकृति से भी जंग छेड़ कर, उसे अपने अधिकार में कर रहा है। अन्धविश्वासों से वह नहीं घबराता है। यह आन्दोलन भी सफल होगा।

लेकिन उसका मन कमजोर अनायास पड़ जाता है। देश में अभी वह एक तेज उन्माद नहीं पाता। उसके अपने गाँव में कोई संगठित किसान मोर्चा नहीं है। दरोगा, पटवारी, जेलर व और अफसर ऐसे ही हैं। गाँधीजी की बातों का लोगों पर काफी असर है। वे अभी तक नहीं जानते हैं कि कम्यूनिस्ट पार्टी ही उनका सही नेतृत्व कर सकती है। उनकी समझ में कहाँ आता है कि यह सरकार खोखली हो गई है। एक ठोकर मारने से ही वह ढाँचा लड़खड़ा कर गिर पड़ेगा। वह सुन चुका है कि बलिया में पुलीस वालों ने खेत-मजदूरों की सभा पर गोलियाँ चलाईं और एक साथी मर गया था। देश भर में सैकड़ों जगह कम्यूनिस्टों ने विधान के विरोध में सभाएँ की थीं, हजारों को पुलीस ने पकड़ा था। कई जगह गोलियाँ चलीं, लाठियों की बोछारें हुईं।

सुना कि इन साथियों पर मुकद्दमा चलेगा कि उन्होंने बगावत की और फसाद मचाया। सरकार विद्रोहियों को सिर नहीं उठाने देगी। वह कैदियों से बातें करेगा कि वे गवाही दें। जेल के अत्याचारों के खिलाफ वे लोग कहेंगे। उसे अब और कैदियों को साथ लेकर लड़ाई लड़नी चाहिए। वह डरपोक नहीं है, मौत से नहीं घबराता है। वह बहुत छोटे परिवार में पैदा हुआ है। उसके पुरखे सदियों तक चमार का

पेशा करते रहे। इस समाज में उनको उठने की कोई जगह नहीं है। उसकी आँखें अब खुली हैं। काँग्रेस वाले अहिंसा की बातें करके भी अपने विरोधियों के खून के प्यासे हैं। वे झूठे वायदे करके अब जनता को ठग नहीं सकते हैं।

एक नेताजी पिछले दिनों जेल का मुआयना करने आए थे। उन साथियों ने उनका मजाक उड़ाते हुए पूछा था, कि चीनी की चोरबाजारी में कितने हजार रुपए कमाए हैं। एक तो बोला था कि आपकी चरबी का कोई उपयोग आज नहीं है, मजदूर एक दिन उसको आसानी से पिघला देगा। नेताजी बेशर्मी से हँसते हुए चले गए थे। जेल के अफसर कुत्ते की भाँति उनके पीछे चल रहे थे। उनके चले जाने के बाद एक बोला था——जनाब, ये भी इसी जेल में दो-तीन साल रहे हैं। आज इनकी हुकूमत आ गई है, तो हम उनके ही हुक्म के बंदे हैं। कल आप लोग.........

पर कभी जेलों के भीतर गोलियाँ नहीं चली थीं। यहाँ आकर तो नेता मोटी-मोटी किताबें लिखा करते थे। जेलयात्रा तो गया और बद्री-केदार की यात्रा की तरह थी। उसके पीछे स्वर्ग जाने का सा संकल्प था। पर ये कम्यूनिस्ट तो यहाँ भी अपनी शान को कम नहीं होने देना चाहते हैं। वे अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ते हैं। उनको अपनी पार्टी की इज्जत की चिन्ता लगी रहती है। वे लाल झंडे को ऊँचा उठा हुआ देखना चाहते हैं; वे बात की बात में शहीद भी हो जाते हैं।

उसे नींद नहीं आ रही थी, वह उठ बैठा। एकबार फिर बीड़ी पी। पाँचो कैदी अलग-अलग तनहाई में पड़े कराह रहे थे, उनको भारी-भारी चोटें आई थीं। चालीस घंटे से ज्यादा हो गया पर उनको देखने कोई नहीं आया। वह लालटेन उठा कर हर एक को बाहर सीकचों के पास से देखता रहा। उसे उन नौजवानों को देखकर बड़ी खुशी हुई।

उसे याद आया कि वे एक विशाल जन समुदाय के नेता हैं। अनायास उसके मुँह से निकला—कम्यूनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद !

उसने आश्चर्य से सुना कि सब साथियों ने उसके स्वर में स्वर मिला कर वह नारा और ऊँचा गुंजा दिया। रात के अंधकार में वह नारा जेल के बाहर गूँज उठा। वह बड़ी देर तक उनके साथ नारे लगाता रहा। ऊपर कबूतर उड़ रहे थे। बैरिक के भीतर बदबू चल रही थी। उसका साथी अवाक् उसे देख रहा था।

सुखलाल ने तभी एक साथी से जोर से कहा कि वह भी पार्टी का मेम्बर बनेगा। उसने इसे अपना प्रायश्चित समझा। उसे लगा कि इस सदस्यता के बाद सदियों से उसके पाँवों में पड़ी गुलामी की बेड़ियाँ टूट गई हैं। अब वह आजाद था और उसके आगे उसकी पार्टी का कार्यक्रम था।

चुपचाप लौट कर वह अपने बिस्तर पर आया और लेट गया। उसका हृदय शान्त था। वह गहरी नींद में सो गया।

अगले दिन सुखलाल को दो महीने तनहाई की सजा मिली थी। अधिकारियों ने बताया था कि जेल का अनुशासन भंग करने के लिए उस पर मुकदमा चलेगा। उसने इसकी कोई परवा नहीं की। आज वह एक बुज़दिल युवक नहीं है। उसने पार्टी की सदस्यता के लिए अपनी माँग पेश करदी थी। अधिकारियों ने उसके बेड़ियाँ डाल दी थीं। पर वे लोहे की बेड़ियाँ उसका मनोबल तोड़ने में असमर्थ रहीं। उसने ताव से उनसे कहा था कि वह कम्यूनिस्ट है, जो कि शहीदों की एक टोली है।

—सुखलाल में उस परिवर्तन को पाकर अधिकारी स्वयं दंग रह गए थे। उसने अपनी कोठरी की दीवार पर लकड़ी से खोद कर एक हँसिया-हथौड़ा बनाया था !

'मतवाला' सम्पादक के नाम पत्र

प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद २
१५, जुलाई १९४९

भाई,

कल रात को नैनी जेल से पूरे पाँच रोज की भूख-हड़ताल के बाद छूट कर आया हूँ। पूरा किस्सा इस प्रकार है:

१० जुलाई की शाम को शहर में पुलीस ने मुझे पकड़ा और हवालात में रखा। वहाँ सात और साथी भी दफा १४४ तोड़ने के अपराध में पकड़े गए तथा धारा १८८ के इंडियन पेनल कोड के अन्तर्गत हम पर सरकार मुकदमा चलावेगी।

हम सातों व्यक्ति एक कोठरी में, जहाँ टट्टी और पेशाब की गन्दगी थी, उन्नीस घंटे बन्द रहे। हमें बताया गया कि चार आना फी व्यक्ति एक बार खाने को मिलता है। इस मंहगाई के जमाने में कांग्रेस के रामराज्य का यह पहला नमूना है, कि राजनैतिक बन्दी किस भाँति सताए जाते हैं।

११ जुलाई को तीन बजे हम कचेहरी ले जाए गए। वहाँ दो घंटे लारी पर बैठे रहे। मालूम हुआ कि मजिस्ट्रेट साहब घर चले गए हैं। फर हमारी लॉरी चली और '.........' मजिस्ट्रेट के घर के बाहर खिड़ी हुई। मजिस्ट्रेट ने दो मिनट में ही आँखें मूँदे सातों वारंटों पर दस्तखत कर दिए। हम लोग साढ़े छै बजे शाम को नैनी जेल पहुँचे वहाँ ज्ञात हुआ कि हम साधारण सी क्लास 'क्रिमनल कैदी' करार दिए गए हैं। सबको एक गन्दी कोठड़ी में जानवरों की भाँति बन्द कर दिया गया। बिछाने को चटाई व ओढ़ने के लिए खटमल, पिस्सू और कीड़ों

से भरे हुए कम्बल हमें मिले। हमने १२ जुलाई को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट श्री आर० पी० भार्गव, आई० सी० एस० को लिखा कि हम चोर-बदमाश नहीं हैं। हमारे साथ राजनैतिक-बन्दियों की भाँति व्यवहार होना चाहिए। जब तक हमारी माँगें पूरी नहीं होतीं, हम 'भूख हड़ताल' करेंगे; किन्तु मजिस्ट्रेट ने कोई सुनाई नहीं का। कल रात को हम जमानत पर छूटे हैं।

श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री गोविन्द वल्लभ पंत तथा श्री पुरुषोत्तम दास टंडन गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते हैं कि राजनैतिक-बंदियों के साथ हम अच्छा व्यवहार करते हैं। क्या यही एक नमूना है।

सेठों के पत्रों का यह हाल है कि वे हमारी खबरें नहीं छापते। मैं आपके पत्र द्वारा अपने ईमानदार पत्रकार साथियों से निवेदन करना चाहता हूँ, कि वे इस समाचार को अपने पत्र में प्रकाशित करके इस फासिस्ट सरकार के रवैया का विरोध करें।

विनीत

पहाड़ी

नोट: डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने आश्वासन दिया था कि वे हमारे १२ जुलाई के पत्र का जवाब देंगे, पर आज तक नहीं मिला। उत्तर प्रदेश के 'श्रमजीवी पत्रकार संघ' ने इस प्रकार के व्यवहार की तीव्र आलोचना करते हुए प्रस्ताव पास करके इसकी जाँच करने की माँग की थी; पर आज तक होम-मिनस्टर ने इसका कोई जवाब नहीं भेजा है।

१० सितम्बर १९५०.